हिन्दी चल चित्र गीतों में काव्य एवं कला का अनुशीलन

बुन्देलखण्ड विश्व विद्यालय झाँसी की पी-एच.डी. (हिन्दी)
उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध

निदेशक-
डॉ. कृष्ण जी एम. ए. (अंग्रेजी, हिन्दी), पी-एच. डी., डी. लिट्०, वरिष्ठ प्रवक्ता, हिन्दी विभाग
दयानन्द वैदिक (स्नातकोत्तर) महाविद्यालय, उरई

अनुसंधित्सु
राम अवतार सिंह निरंजन
एम. ए. (हिन्दी)

डॉ० कृष्ण जी
एम०ए० (अंग्रेजी-हिन्दी), पीएच-डी०, डी० लिट्
दयानंद वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय
(बुन्देलखण्ड वि० वि०, झांसी)
उरई (जालौन) उ० प्र०
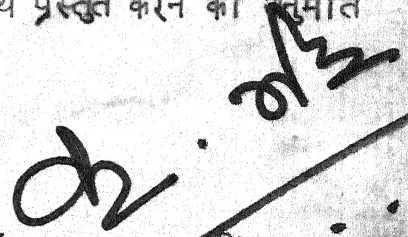
आवास :
५२/३ चन्द्रनगर, उरई

दिनांक 10.3.89

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि 'हिन्दी चलचित्र गीतों में काव्य एवं कला का अनुशीलन' विषय पर प्रस्तुत शोध प्रबंध अनुसंधित्सु श्री राम अवतार सिंह निरंजन, एम०ए०(हिन्दी) का मौलिक प्रयास है। मेरे निर्देशन के अनुकूल विषय का प्रस्तुतीकरण, विश्लेषण एवम् यथास्थान सांकेतिक सम्बोधन आदि के सन्दर्भ में अपेक्षित सम्पूर्ण शोध प्रक्रिया बड़ी तत्परता एवम् परिश्रम से पूरी की गयी है। इन्होंने हिन्दी-चलचित्र गीतों के संबंध में अनेक महत्वपूर्ण तथ्यों का उद्घाटन किया है जो नवीन, मौलिक एवम् अस्पृश्य हैं। प्रस्तुत अध्ययन १९४८ से लेकर १९८८ ई० तक के हिन्दी चलचित्र गीतों के परिप्रेक्ष्य में किया गया है।

अनुसंधित्सु ने २०० दिन से अधिक की उपस्थिति देकर मेरे निर्देशन में अपना शोध-कार्य किया है।

मैं इनके शोध कार्य एवम् आचार-व्यवहार से पूर्णरूपेण सन्तुष्ट हूं तथा मैं इसे बुन्देलखण्ड वि०वि० में परीक्षणार्थ प्रस्तुत करने की अनुमति देता हूँ।

(डा० कृष्ण जी)
वरिष्ठ प्रवक्ता हिन्दी,
दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर म०वि० उरई

'आत्म - निवेदन'

राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी की सुदृढ स्थिति करने और उसे अधिकाधिक लोकप्रिय बनाने के लिए उसके भण्डार को सभी प्रकार के विषयों के विवेचन एवम् विश्लेषण से भरना आवश्यक होगया है, जिससे वह वर्तमान की आवश्यकताओं की पूर्ति करती हुई एक समृद्ध भाषा के रूप में सबके द्वारा स्वीकार की जा सके ।

विभिन्न विषयों को लेकर हिन्दी में पर्याप्त शोध कार्य हो चुके हैं , यहाँ तक कि विषयों की पुनरावृत्ति होने के कारण शोध का स्तर भी दिनानुदिन गिर रहा है । अत: मैंने इस बात को ध्यान में रखते हुये अपने शोध कार्य हेतु घिसे-पिटे हिन्दी के विषयों को छोड़कर 'हिन्दी-चलचित्र गीतों में काव्य और कला का अनुशीलन' जैसा नवीन, अछूता एवम् लोक प्रिय विषय को चुनकर प्रस्तुत शोध प्रबंध लिखा ।

चलचित्र आज की सर्वाधिक लोकप्रिय कला है, जिसके नियमित दर्शक एवम् प्रशंसक करोड़ों की संख्या में हैं । चलचित्र कला में आधुनिक मनुष्य के अन्तरंग और बहिरंग स्वरूपों की जीवंत प्रतिकृति प्रस्तुत करने की अद्भुत क्षमता है, इसीलिए यह कला आधुनिक मनुष्य के अधिक निकट है ।

चलचित्र एवम् साहित्य की चर्चा अत्यधिक पुरानी है । चलचित्र एडीसन और उसके बाद के आविष्कारकों की देन मात्र नहीं है । उसके पीछे साहित्य और सभ्यता की एक अविरल प्रवहमान परम्परा है ।

जिन्हें हिन्दी के चलचित्रों एवम् उनके गीतों से सख्त चिढ़ है जो अपनी आलोचना में चलचित्रों के महत्वपूर्ण योगदान और उनके गीतों के सुन्दर, स्वस्थ एवम् साहित्यिक अंश को आँखों से ओझल कर दिया करते हैं, उनसे विनम्र निवेदन है कि प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में वर्णित गीतों के महत्व का अवलोकन करें , जिससे इन गीतों के विषय में जो उपेक्षा की भावना और गलत धारणा फैली हुयी है, दूर हो सकेगी।

साहित्यिक एवम् कलात्मक दृष्टि से हिन्दी चलचित्र गीत अत्यन्त भावपूर्ण एवम् रसात्मक हैं, जो साहित्य की अनुपम निधि बन सकते हैं।

प्रस्तुत शोध प्रबंध डा० कृष्ण जी, एम०ए०, पी-एच०डी, डी०लिट्० के कुशल निर्देशन में लिखा गया है। यह मेरा परम सौभाग्य है किमुझे परम श्रद्धेय गुरुवर डा० कृष्ण जी के निर्देशन में शोध कार्य करने का अवसर मिला। उनके उदार एवम् प्रतिभा शाली व्यक्तित्व का ही यह शुभ परिणाम है कि मैं एकाग्र भाव से शोध कार्य में संलग्न होकर इस कार्य को पूरा कर सका।

इसके अतिरिक्त अपने अनुसंधान कार्य में रत रहते हुये समय-समय पर जो सुझाव अपने पूज्य पिता श्री पूरन सिंह(प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, गांधी महाविद्यालय, उरई) जी से प्राप्त हुए हैं, उनके लिए मैं हृदय से कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

यह विनम्र प्रयास अपने अध्ययन एवम् ज्ञान की सीमाओं में कितनी आशा एवं अपेक्षाओं को पूरा कर सका है, यह मेरे लिए कहना कठिन है। सुधी जन ही इस पर प्रकाश डाल सकते हैं।

अन्त में मैं अपने उन मित्रों के प्रति भी आभार व्यक्त करना चाहूँगा जिन्होंने विषय से संबंधित सामग्री को जुटाने में मेरी यथाशक्ति सहायता की।

टंकणक श्री अशोक कुमार वर्मा ने जिस अथक परिश्रम से यह कार्य पूरा किया, वह सराहनीय है, इस हेतु वे धन्यवाद के पात्र हैं।

टंकण सम्बन्धी अशुद्धियों के लिए क्षमा प्रार्थी हूँ।

विनीत

रामअवतार सिंह निरंजन

दिनांक: 10-3-89 (राम अवतार सिंह निरंजन)

अनुक्रमणिका

पृष्ठ-संख्या

पृष्ठ-संख्या

अध्याय- ६ हिन्दी चलचित्र गीतों में भाषा का स्वरुप एवं गीत-(२३५-२३४)

- रचना प्रक्रिया -

पृष्ठ-संख्या

:-:-:-:

-: प्रस्तावना :-

प्रस्तावना

आज का युग विज्ञान का युग है। इस विज्ञान के युग में चारों ओर प्रगति ही प्रगति दिखलाई पड़ती है, तथा जो विद्युत गति से तीव्रता के साथ बढ़ रही है, लगता है इसने विश्राम करना सीखा ही नहीं है।

विज्ञान की पताका चारों ओर लहरा रही है। धरती से आकाश तक का सम्पूर्ण वातावरण और चारों दिशाओं का पवन विज्ञान के विजय गीत को गाने में लगा हुआ है। विज्ञान की प्रगति से विश्व की दूरियाँ मिट गई हैं। विज्ञान ने अंधों को नेत्रों का बहिरों को कानों का वरदान दिया है। मूक वाचाल हो रहे हैं और पंगु पर्वतों को भी पार करने की अपार शक्ति प्राप्त कर रहे हैं। विज्ञान की यह प्रगति तो विधि के विधान को भी पलटने में समर्थ प्रतीत हो रही है। विज्ञान के बल पर ही मनुष्य जगत का नियन्ता बन रहा है। चन्द्रमा तक मानव पहुंच चुका है।

विज्ञान के इस अपूर्व युग में मानव जीवन में भी क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए हैं। उनकीपुरानी मान्यताएँ पिछड़ गई और उनका स्थान जीवन के नये मानदण्डों ने ले लिया है। अत: पहले की अपेक्षा मानव जीवन आज अधिक व्यस्त जटिल तथा संघर्षरत बनकर चला आ रहा है। इन परिस्थितियों के बीच मनोरंजन के साधनों में भी कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन एवम् विकासभी हुए हैं। इनमें कुछ तो प्राचीन ही हैं जैसे नाटक, संगीत, चित्रकारी, विविध खेल गोष्ठियाँ, मेले, उत्सव आदि। दूसरी ओर कुछ चमत्कार एवं आकर्षक साधन परिष्कृत हुए हैं। जिनमें विशेष रूप से रेडियो, टेलीविजन तथा सिनेमा (चलचित्र) उल्लेखनीय हैं।

विज्ञान ने आज के मनुष्यों में कम से कम समय में अच्छे से अच्छे मनोरंजन के साधन जुटाने का अद्भुत प्रयास किया गया है - जो सस्ते एवं शिक्षाप्रद भी है। संसार के कोने-कोने में पहुँच कर आज ये साधन अधिकाधिक लोगों का मनोरंजन कर रहे हैं। आज भारत में पुराने ढंग की नाटक कम्पनियाँ नौटंकियाँ, रामलीलायें अब प्राय: लुप्त होती जा रही हैं। क्योंकि विज्ञान के रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा आदि अभिनव मनोरंजन के साधनों के सामने उनमें न अब कोई नूतनता दिखाई ब देती है और न कोई आकर्षण ही।

टेलीवीजन आधुनिक मनोरंजन के साधनों में विशेष महत्व रखता है, जिसने रेडियो के आकर्षण को कम कर दिया है। रेडियो केवल श्रव्य काव्य ही हैं जबकि टेलीविजन श्रव्य एवम् दृश्य दोनों ही हैं।

प्राचीन काल के ऋषि मुनियों के दिव्य दृष्टि विज्ञान ने आज हम तक टेलीविजन पहुँचाया जिसके सहारे हम घर बैठे जो दृश्य देखना ~~कहीं के~~ चाहें देख सकते है। विदेशों में टेलीविजन अधिक लोकप्रियता प्राप्त कर चुका है। यह टेलीविजन दृश्य एवं श्रव्य दोनों विशेषताओं से युक्त होने के कारण रेडियो के आकर्षण को बहुत दूर छोड़ चुका है। विदेशों में टेलीविजन और सिनेमा में एक दूसरे को परास्त करने की बड़ी स्पर्धा चली और अन्त में सिनेमा (चलचित्र)की विजय हुई।[१]

चलचित्र संप्रति इन दोनों मनोरंजनों के साधनों से अधिक सस्ता, लोकप्रिय एवं प्रभावशाली है।

टेलीविजन से चलचित्र की विशेषता एवम् आकर्षण का प्रमुख कारण यह है कि चलचित्र की चित्रपटी टेलीविजन की अपेक्षा अधिक विशाल है अत: दृश्यों का जैसा सजीव, स्वाभाविक और संश्लिष्ट अंकन उस पर सम्भव है, वह टेलीविजन पर नहीं।

टेलीविजन एक समय में थोड़ों का मनोरंजन प्रदान करता है, जबकि चलचित्र सैकड़ों, हजारों ~~व्यक्ति~~ लाखों का। फिर टेलीविजन मनोरंजन का इतना सस्ता साधन नहीं है जितना कि चलचित्र।

अत: कहा जा सकता है कि चलचित्र, रेडियो तथा टेलीविजन दोनों से अधिक लोकप्रिय प्रभावशाली, सस्ता और कलापूर्ण मनोरंजन का सर्वश्रेष्ठ साधन है।

१- Focal Encyclopaedia Of Philosophy.

Edited by Frederic Purves & Others, Page-168.

चलचित्र मनोरंजन का उत्तम साधन तो है ही पर साथ ही यह उच्चकोटि की कला भी है। नाट्यशास्त्र में भरत मुनि ने लिखा भी है --

न तच्छ्रुतं न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला।
न स योगो न तत्कर्म यन्नाट्येऽस्मिन्न दृश्यते।[१]

आज हम चलचित्र के लिए भी इसी सन्दर्भ में कह सकते हैं- न कोई ऐसा शिल्प है, न कोई ऐसी विद्या है और न कोई ऐसी कला है जो इसके विशाल कैनवास पर प्रदर्शित न की जा सकती हो। अतः चलचित्र वह संगम स्थल है, जहाँ अभिनव कहानी, गीत, संवाद, संगीत, चित्रकला, स्थापत्य कला और मूर्तिकला सभी समवेत होकर उपस्थित होते हैं।

काव्य कला ललित - कलाओं में सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है। अतः काव्यों में नाटक 'रम्य' कहा गया है - 'काव्येषु नाटकं रम्यम्'। यही कारण है कि नाटक में श्रव्य- दृश्य का गुण होने से रस निष्पत्ति की संभावना सर्वाधिक रहती है। सिनेमा उसी नाटक का आज विकसित, वैज्ञानिक एवं समृद्ध रूप कहा जा सकता है, जिसमें चलते-फिरते, बोलते- गाते छाया-चित्र हमें रोने के समय रुला देते हैं तथा हँसने के समय हँसा देते हैं।

इस प्रकार देखते हैं कि आज की निर्मित फिल्मों का इन्द्रधनुषी रंगों से किया गया श्रृंगार अनूठे संगीत की तान से डूबी हुई उनकी विमुग्धकारी स्वर माधुरी एवम् अद्भुत, कल्पनातीत नयनाभिराम अनूठी ग्राफी, सबने हमें विस्मित एवम् विभोर किया है। चलचित्र कला के क्षेत्र में यह उत्कर्ष एवम् विकास की घटना क्षणिक नहीं है। इसमें कई दशक लगें।[२] आज चलचित्र कला का निरूपित रूप इस बात का साक्ष्य है कि यह उन्नति इस क्षेत्र में अत्यधिक तीव्रगति से हुई।[३]

१- नाट्य शास्त्रम् - भरतमुनि(अनुवादक- भोलानाथ शर्मा)
प्रथम संस्करण, प्रथम अध्ययन, श्लोक संख्या - ११६

२- "यह एक अद्भुत नवीन कला होगी, जिसमें संपूर्ण कलाओं-चित्रकारी और नाटक, संगीत और शिल्प वस्तुशास्त्र और नृत्य, प्रकृति और मनुष्य दृश्य और संवाद का संकलन होगा- और यह नई कला सिनेमा(चलचित्र)है। "वाबु महाचार्य- फिल्म एक महान कला" लेख में उद्धृत(साप्ताहिक हिन्दुस्तान २१दिस० १९५१

चित्रपट आधुनिक जीवन का एक अनिवार्य एवं अभिमाज्य अंग बन चुका है। भारत के सामाजिक क्षेत्र मे, अन्य कलाओं की भाँति चित्रपट का अपना एक निजी सांस्कृतिक महत्व है। यह एक ऐसी दृश्यकला है, जिसे इस युग में गौण स्वरूप प्रदान नहीं किया जाना चाहिये। अपने कलेवर में विभिन्न कलाओं को समेटने वाली यह एक ऐसी स्वतन्त्र कला है, जो जीवन में सम-विषम रूपों, संकेतों और भावों को सर्वथा एक नवीन कला शिल्प के रूप सजीव और मार्मिक अभिव्यक्ति प्रदान करने की अद्भुत शक्ति रखती है।

सामाजिक क्षेत्र में चित्रपट ने अपना एक निजी सांस्कृतिक परिवेश धारण कर लिया है। और इस परिवेश में साहित्य कला के विभिन्न अलंकारों की जगमगाहट लक्षित की जा सकती है। साहित्य, संगीत, चित्रकला, शिल्प , नाट्यकला और छायांकन के विभिन्न रम्य और कलात्मक स्वरूपों को आत्मसात् किये हुए यह कला 'दृश्य-कला' के रूप में जीवन के अनेक मार्मिक रहस्यों को एक अनूठे ढंग से दर्शकों के सम्मुख प्रकट करती है।

अत: वर्तमान युग में चित्रपट के रूप में उदित बीसवीं शताब्दी की इस सर्वाधिक आश्चर्यजनक और लोकप्रिय कला के महत्व को गौणरूप नहीं दिया जा सकता। यह कला एक "मास-स्केल" वाली कला है ,जिसमें मानव के लिए शाश्वत् मनोरंजन, उसके जीवन का विश्लेषण ,संस्कृति के परंपरित स्वर, साहित्यिक संवेदनाओं की रम्य चित्रानुभूति समाविष्ट रहती है। और जिसे साहित्य एवम् कला के विभिन्न पक्ष, चित्रपट के रूप में अपने संगठित प्रयास में अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं। चित्रपट : विद्वानों एवम् कला मर्मज्ञों के विचार:-

फ्रांसीसी निर्माता निर्देशक आस्त्रुक का कहना है 'लिखे हुये शब्द की तरह फिल्म भी एक भाषा है जिसमें लिखने और पढ़ने के लिये नये दृष्टिकोण की आवश्यकता है।[१]

१- धर्मयुग, जून- १३, १९६५

मोशन पिक्चर एसोसियेशन के अध्यक्ष मि० एरिक जान्स्टन ने कहा है" चलचित्र , आज के समाज में संवहन का सर्वाधिक प्रभावशाली माध्यम है , जैसा कि यह शिक्षा और अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावनाओं की वृद्धि का एक सवलतम साधन है । यदि यह कहा जाये कि एक चित्र एक सहस्त्र शब्दों से अधिक मूल्यवान है तो निश्चय ही एक चलचित्र एक सहस्त्र चित्रों से अधिक गुणवान है ।"[1]

डा० कालिदास नाग की दृष्टि में - अपने वास्तविक अर्थों में चलचित्र केवल गतिशील खिलौने के चित्रमात्र ही नहीं है प्रत्युत जन-शिक्षण के बड़े ही प्रभावशाली माध्यम हैं । जैसा कि हम प्रतिदिन जीवन में अनुभव करते हैं ।[2]

भूतपूर्व सूचना प्रसारण मंत्री श्री सत्यनारायण सिंह के मत में - चलचित्र कलात्मक अभिव्यक्ति तथा जीवन की व्याख्या को वहन करने वाला एक ऐसा वाहन है , जो एक शक्तिशाली माध्यम के रूप में सांस्कृतिक और सामाजिक अभिप्राय को प्रकट करता है । यह कला का ऐसा प्रभावशाली स्वरुप है जो जीवन के कोमल, सूक्ष्म और व्यापक प्रभावों को मनोरंजन के आधार पर प्रस्तुत करता है ।[3]

भूतपूर्व राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन का विचार" सामान्य रूप से चलचित्र का आशय यह होता है कि वह दर्शक का मनोरंजन करे, उसके मानस को शिक्षित करे और उसकी भावनाओं को ऊँचा उठाये । यह राष्ट्रीय एकता और विश्व बन्धुत्व की भावना का पोषण कर सकता है ।[4]

डा० जाकिर हुसैन ने चित्रपट पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुये कहा है"चलचित्र विभिन्न संस्कृति तथा परम्परा के लोगों में सद्भाव बढ़ाने का एक प्रभावशाली साधन है।[5]

१- इण्डियन टाकी - १९३१ - ५६ , पृ० १
२- वही पृ० १३
३- फिल्मफेयर नवम्बर, १५,१९६३
४- फिल्म इंडस्ट्री आफ इण्डिया(१९१३-६३)आवनवेशन -बी- मे आदर्श ।
५- तृतीय अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह के अवसर पर दिए गए भाषण से ।

फिल्म इंस्टीट्यूट पूना के प्रोफेसर सतीश बहादुर की दृष्टि में - फिल्मभाषा- संवहन का दृश्य श्रव्य माध्यम है ।[१]

श्री अवनीन्द्र कुमार विद्यालंकार ने अपना दृष्टिकोण चित्रपट के संदर्भ में इस प्रकार व्यक्त किया है "क्रान्ति का निर्मंत्रण नहीं किया जा सकता - राजनीतिज्ञों और प्रचारकों के इस कथन को फिल्मों ने गलत सिद्ध कर दिया है । फिल्में मनोरंजन ही नहीं करतीं, नया विचार भी देती हैं, नई कल्पना देती हैं और उसके मधुर गीत की कड़ियाँ गुद-गुदाते हुये सौन्दर्य की नहीं, नये जगत को देखने की दृष्टि देती हैं ।[२]

श्री हमीदउद्दीन के शब्दों में "सिनेमा" जनता तक पहुँचाने वाला सबसे सशक्त एवं अच्छा साधन है ।[३]

श्री प्रसाद एम० ए० की दृष्टि में" एक ऐसा माध्यम जिसकी अनन्तशक्ति है । -- निम्न प्रकार अपने उपादानों में साहित्य कला और संगीत जीवन की अभिव्यक्ति करते हैं, उसी प्रकार फिल्म भी अपने उपादानों में जीवन की अभिव्यक्ति करती है ।[४]

सुप्रसिद्ध फिल्म समीक्षक श्री बच्चन श्रीवास्तव के शब्दों में - " सच तो यह है कि सिनेमा यथार्थ से भी अधिक प्रभावात्मक है । साक्षर और निरक्षर सब इसके धोखे में आ जाते है । यह जानते हुये भी कि वे जो कुछ भी देख रहे हैं प्रकाश और छाया के अतिरिक्त कुछ भी नहीं, वे रोते हैं हंसते हैं । यह स्वीकार करना पड़ेगा कि मनोरंजन के क्षेत्र में साधारणीकरण की शक्ति सबसे अधिक सिनेमा के पात्र हैं ।[५]

१- धर्मयुग, अप्रैल -२, १९६६

२- पृथ्वीराज अभिनंदन ग्रंथ(उत्तरायण) पृ० २९

३- फिल्मफेयर फरवरी २१, १९६४

४- पृथ्वीराज कपूर अभिनंदन ग्रंथ, पृ० २७

५- भारतीय फिल्मों की कहानी: बच्चन श्रीवास्तव, पृ० १

श्रीमती विजय चौहान की दृष्टि में-" सिनेमा आधुनिक घटना का एक स्वतंत्र और सशक्त माध्यम बन चुका है।[१]

चित्रपट की मानव जीवन की उपादेयता पर विचार करते हुये डा० रामप्रकाश अग्रवाल का कथन इस प्रकार है --" चित्रपट लोक शिक्षण का सबसे सफल और सुगमतम् माध्यम है, जो दृश्य- शिक्षा का सर्वोत्तम उदाहरण प्रस्तुत करते हुये राष्ट्र द्वारा लोक शिक्षण के दायित्व को पूर्ण करता है।"[२]

उपरिलिखित मतों के उपरान्त प्रश्न यह उठता है कि क्या चित्रपट वास्तव में अभिनंदनीय स्वम् गौरवान्वित यथार्थ साहित्य होता है ? साहित्य के मुख्य लक्ष्य की ओर यदि हम सोचे - साहित्य का मुख्य लक्ष्य है भावोद्बोधन, भाव परिष्कार और भाव संयमन। इस प्रकार यह अन्ततोगत्वा भावात्मक एकीकरण में सहायक बनता है। इसकी पूर्ति जिस तीव्र गति से चित्र-पट द्वारा होती है, उसकी तो कल्पना साहित्य ग्रंथ द्वारा नहीं की जा सकती।

अत: नेत्र और स्तोत्र- इंद्रिय के द्वारा चित्रपट की छाया-कृतियों की भावभंगिमायें और स्वर जिस क्षण दर्शक के हृदय में गहरे उतर कर अन्तस्तल में आन्दोलन उपस्थित करते हैं, वह क्षण साहित्य की सिद्धि का चरम क्षण होता है।

कतिपय प्रसिद्ध निर्देशकों स्वम् श्रेष्ठजन के विचार भी चित्रपट के विषय में जान लेना आवश्यक है।

चेतन आनंद चल चित्र को एक महान् कला के रूप में स्वीकार करते हुये कहते हैं--" फिल्म कहानी पेश करने का एक जरिया है। इसलिए फिल्म एक ज़ुबान है भाषा है। कहानी कई जरिये से पेश की जा सकती है--

---

१-श्रीमती विजय चौहान: माधुरी, फरवरी १०, १९६७

२- रामप्रकाश अग्रवाल - भारतीय चलचित्र, महेन्द्र मित्तल, पृ० ४

बोले हुये शब्दों में, लिखे हुये शब्दों में, नृत्य मे, कविता में, गीत मे, हाव-भाव में,तस्वीरों। फिल्मों में ये सब समा जाते हैं। अत: फिल्म कला ही नहीं वरन् समस्त कलाओं में महान कला है।[१]

अत: चेतन आनंद सिनेमा को एक बौद्धिक माध्यम नहीं मानते हैं। उनके अनुसार सिनेमा एक कविता है एक नाटक है।

सुप्रसिद्ध अभिनेता निर्माता निर्देशक राजकपूर की दृष्टि में चलचित्र निश्चय ही जनरुचि के परिष्कार में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।[२]

चल चित्र की शक्ति पर विचार करते हुये श्री सत्यजीवराय कहते हैं" सिनेमा साधन है चरित्र या स्थिति के विकास की सच्ची अभिव्यक्ति का। छायांकन की बारीकियों और गहराइयों में भावना की प्रखरता मे,साधनों के सीधे-सादे,सही और सशक्त उपयोग में चलचित्र की समानता कोई कला नहीं कर सकती।"[३]

बी०डी० बरुआ चल चित्र के व्यवसाइक पक्ष को दृष्टि में रखते हुये कहते हैं --"सिनेमा विश्व का सबसे बड़ा दृष्य व्यापार है।[४]

वी०के० आदर्श चल चित्र की समानता मानव शरीर से करते हुये कहते हैं --" चल चित्र का यह रूप बड़ा रोचक है और चलचित्र में मानव के आंगिक अथवा भौतिक स्वरूप को प्रगट करता है उनका सादृश्य मूलक आधार इस प्रकार है।"[५]

१- धर्मयुग सितम्बर १९६६, पृ० ३६

२- फिल्म इंडस्ट्री आफ इण्डिया १९१३-६३ (आवजरवेशन - आदर्श)

३- धर्मयुग मई- २,१९६४, पृ० ३६

४- इण्डियन टाकीज १९३१-५६, पृ० ७२

५- फिल्म इन्डस्ट्री आफ इण्डिया, पृ० ३९७

चलचित्र	मानव
कहानी	हृदय
पात्र	मुखड़ा
नृत्य संगीत	फेफड़े
शिल्प	शरीर
वातावरण वेश भूषा	वस्त्र आभूषण
गति	नाड़ी
निर्देशन	मस्तिष्क

चलचित्र काव्य पुरुष की समानता राजशेखर के काव्य पुरुष से बहुत अधिक मिलती है।

राजशेखर अपने ग्रंथ "काव्य मीमांसा में काव्य पुरुष की परिभाषा करते हुये कहते हैं -- शब्द और अर्थ तेरे शरीर हैं, संस्कृत भाषा मुख है, प्राकृत भाषा तेरी भुजायें हैं, अपभ्रंश भाषा जन्घा है, पिशाच भाषा चरण है, और भिन्न भाषायें वक्षस्थल है। तू सम्प्रसन्न, मधुर उदार और ओजस्वी हैं। तेरी वाणी उत्कृष्ट है। रस तेरी आत्मा है। चन्द्र तेरे रोम हैं। प्रश्नोत्तर, पहेली समस्या आदि तेरे बाल विनोद हैं और अनुप्रास, उपमा आदि तुझे अलंकृत करते हैं।[१]

इस तरह चलचित्र उद्योग से सम्बन्धित उसके प्रभाव व स्वरूप को अनुभव करने वाले अनेक मनीषियों तथा कलामर्मज्ञों ने अपने अपने ढंग से चित्रपट को परिभाषित करने का प्रयास किया है।

कहा जाता है कि चित्रपट मानव जीवन में उपलब्ध होने वाली सभी कलाओं- साहित्य, संगीत, नाट्य चित्र कला और शिल्प कला आदि- को एक रंग मंच पर संगठित करने वाली नवीनतम विधा है, जो जीवन के सम-

---

१- काव्य मीमांसा - राजशेखर, पृ० १३-१४

विषय- स्वरूपों सामाजिक और सांस्कृतिक अभिप्रायों तथा मशीनरी युग के गुण अवगुणों को प्रभावशाली ढंगों से -अभिव्यक्त करती है तथा राष्ट्र के भावात्मक एकीकरण ,विश्व बन्धुत्व एवम् मानवीय संवेदनाओं में वृद्धि करती है ।

डा० महेन्द्र मित्तल के शब्दों में "जीवन विश्लेषण के लिए नयी दृष्टि प्रदान करने वाली, नये विचारों की सृजक जन क्रान्ति की नियन्ता और जन शिक्षण तथा अन्तरराष्ट्रीय सदभावनाओं के पारस्परिक संवहन की यह एक ऐसी मनोरंजक कला है जो जन जीवन के सर्वाधिक निकट है ।[१]

निश्चय ही यह चित्र के द्वारा यह कला जीवन की सुन्दरतम, सजीव एवं मार्मिक अभिव्यक्ति करने में समर्थ है । चित्रपट के इस विश्लेषण में विद्वानों ने जो परिभाषायें प्रस्तुत की है, उनमें चित्रपट के प्रभाव और संभावनाओं को ही व्यक्त किया गया है । अतः चलचित्र वह स्वतंत्र और आधुनिक मार्मिक कला है, जो जीवन के सम-विषय और भौतिक-अभौतिक स्वरूपों , संकेतों तथा भावों को सर्वथा एक नवीन कला शिल्प के रूप में सजीव, सचित्र तथा मार्मिक अभिव्यक्त प्रदान करने की शक्ति रखती है ।

हिन्दी चलचित्र का स्वरूप

श्री एरिक बर्नाव तथा एस. कृष्णास्वामी चित्रपट के स्वरूप पर विचार करते हुये कहते हैं "भारतीय चलचित्र संगीत एवम् नृत्य के सूक्ष्म एवम् गहन उपदानों को व्यवहारिक रूप से प्रकट करने का अनूठा माध्यम है । यह उस भारतीय नाट्य परम्परा का अंग है, जो संस्कृत नाट्यों से हमें प्राप्त हुयी है ।[२]

१- भारतीय चलचित्र महेन्द्र मित्तल - पृ० ७

२- वही ,, ,,

इस कथन में सम्पूर्ण भारतीय चलचित्रों को ध्यान में रखकर कहा गया है, यदि ध्यान पूर्वक देखें तो इस कथन के मूल में हिन्दी चित्रपट के चलचित्र ही आते हैं या इनसे प्रभावित तमिल तेलगु के चलचित्र जिनमें नृत्य तथा संगीत की भरमार रहती है ।

देश की नित नवीन उपस्थित समस्याओं का निराकरण करने, समाज के सम्मुख जीवन का नया रूप रखने , राष्ट्रोत्थान में सहायक होने, साहित्य के स्वरूप को प्रकट करने तथा शताब्दियों से चली आ रही परम्परित रूढ़ियों और परिपाटियों को नष्ट भ्रष्ट कर देने के लिए चित्रपट एक शक्ति-शाली साधन है और भारतीय चित्रपट पर हिन्दी चित्रपट इन उद्देश्यों की प्राप्ति के निमित्त अग्रणी रहता है ।[१]

सामाजिक क्षेत्र में हिन्दी चित्रपट की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण रही है । उदाहरण के लिए सामाजिक चलचित्रों में व्यापक रूप से जिस सामाजिक असन्तोष, वर्ग - संघर्ष, प्रणय का उन्मत्त स्वरूप ,व्यक्तिगत कुंठायें तथा अन्य सामाजिक कुरीतियों और प्रथाओं आदि का दिग्दर्शन कराया जाता है , वह अत्यन्त हल्के स्तर का है । उसमें प्रौढ़ता नहीं है । यही दशा पारंपरिक चलचित्रों की है । भारतीय नारी के परम्परित पददलित स्वरूप के अतिरिक्त यहाँ और कुछ नहीं दिखाया जाता। नारी का अहं कहाँ कुंठित होकर रह जाता है ।

राष्ट्रीय जीवन की ज्वलंत समस्याओं को हिन्दीचित्रपट के रूपक चल चित्रों के बराबर नहीं उठाया गया है लेकिन राजकीय वृत्त चित्रों में अनेक राष्ट्रीय समस्यायें सुन्दरता के साथ चित्रित की गयी हैं । हिन्दी चित्रपट में पौराणिक- धार्मिक तथा ऐतिहासिक चलचित्रों की भी स्थिति प्राय: सामान्य ही है ।

१- इण्डियन फिल्म (प्रीफेस)

इसी प्रकार साहित्यिक क्षेत्र से वे हिन्दी चलचित्र, जिन्हें कतिपय हिन्दी के लब्ध- प्रतिष्ठित कथाकारों की कृतियों पर निर्मित किया गया है , प्राय: निम्न स्तर के हैं । साथ ही देश की अन्य प्रादेशिक भाषाओं के चलचित्रों की तुलना में हिन्दी चलचित्रों का स्थान संख्या की दृष्टि से सर्वाधिक और प्रथम होने पर भी पटकथा शिल्प की दृष्टि से उसे तीसरा स्थान प्राप्त है । प्रथम एवम् द्वितीय स्थान पर आने वाले भारतीय चलचित्रों में क्रमश: 'बंगला' एवम् 'मलयालम' भाषा के चलचित्र अपने गम्भीर एवम् प्रौढ़ परिवेश में हिन्दी चलचित्रों से बहुत आगे हैं ।

श्रीमती विजया चौहान के शब्दों में -' जब कुंठा और आस्था के वातावरण में कहानी 'अकहानी' बन गयी है, कविता 'अकविता' बनगयी है और ऐंटी थियेटर के इयोनेस्को जैसे नाटककार बेतुके नाटक लिख रहे हैं , तो फिल्म कला कैसे अछूती रह सकती है ।'[१]

आज के युग में हिन्दी साहित्य जहाँ हिन्दी चलचित्रों की गिरती हुयी दशा को ऊँचा उठाने में समर्थ है और उसे सशक्त कथा साहित्य उपलब्ध कराके एक कलात्मक मोड़ प्रदान कर सकता है, वहाँ यह भी विचारणीय है कि हिन्दी चित्रपट से हिन्दी साहित्य को भी कोई लाभ हुआ , हो सकता है या नहीं ?

चलचित्र : एक कला

वैज्ञानिक के घर जन्मी और कलाकार के यहाँ पली फिल्म कला के क्षेत्र में ऐसी उपलब्धि है , जिसमें विज्ञान की शक्ति है तो कला का एक सौन्दर्य भी, जो मस्तिष्क को खाद देती है तो हृदय को भी आंदोलित करती है , जो फिल्मकार के लिए दुष्कर और जटिल है, तो दर्शक के लिए उतनी ही सुगम और सहज सुलभ भी है ।[२] फिल्म वैज्ञानिक एवम् कलाकार का संयुक्त प्रयास है । वैज्ञानिक ने यांत्रिक उपकरणों से अभिव्यक्ति के नए माध्यम

१- माधुरी , फरवरी १६, १९६७- सिनेमा ,समाज और साहित्यकार ,पृ० ११
२- हिन्दी चित्रपट का गीति साहित्य: डा० ओमप्रकाश माहेश्वरी, विनोद,

को जन्म दिया जो प्रभाव और प्रसार सामर्थ्य में अपना प्रतिद्वन्द्वी नहीं रखती। फिल्म आज की सर्वाधिक लोक प्रिय कला है। फिल्म कला में आधुनिक मनुष्य के अंतरंग एवं बहिरंग स्वरूपों की जीवन्त प्रतिकृति प्रस्तुत करने की अद्भुत क्षमता है। अत: फिल्म आधुनिक मनुष्य के सर्वाधिक निकट है।

यद्यपि फिल्म की लोक प्रियता अधिक है, विश्व में उसके करोड़ों नियमित दर्शक हैं और वह हमेशा चर्चा का विषय बनी रहती हैं, फिर भी दर्शक उसे कला की उच्चतम भूमि पर प्रतिष्ठित नहीं करता। फिल्म को कला के रूप में न ग्रहण करने के कई कारण हैं:-

प्रथम कारण यह है कि फिल्म एक यांत्रिक कला है, जो बहुत ही संश्लिष्ट है। फिल्म का प्रदर्शित रूप जितना ही सरल एवम् बोधगम्य है, उसका निर्माण उतना ही तकनीकी, दुरूह, उलझन और परेशानियों से युक्त है। मनुष्य स्वाभावत: सरलता की ओर उन्मुख होता है। यही कारण है कि मनुष्य फिल्म की अन्तरंग बातों से अनभिज्ञ रहता है उसकी दृष्टि फिल्म के बहिरंग रूप पर अधिक केन्द्रित रहती है।

द्वितीय कारण यह है कि फिल्म का निर्माण ही कुछ इस ढंग का होता है कि बिना शिल्पज्ञान के भी फिल्म का भरपूर आनन्द लिया जा सकता है। फिल्म के साथ एक कठिनाई यह भी है कि यह बन्द विशाल कक्ष में बैठकर निश्चित समय की अवधि में देखी जाती है। दर्शक उसमें कुछ भी पलट कर नहीं देख सकता जैसा कि पुस्तक, चित्र, संगीत या मूर्तिकला के रूप में सम्भव है।

भारत, अमेरिका और इंगलैण्ड जैसे देशों में जहाँ व्यवसायिक फिल्मों की प्रधानता रही है, फिल्म के कला सम्बन्धी और सौन्दर्य शास्त्रीय मूल्यांकन पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया। इस दिशा में अग्रसर कुछ ही नाम बनलि हत्सर, दूरविन पैनी पल्की, जार्जब्लूस्टोन, रोगर, मानवैल, बार्नस्ट लिग्रेन आदि उल्लेखनीय है।

जबकि यूरोपीय देशों में फिल्म को कला के रूप में समादृत किया गया है और अनेक फिल्मकारों तथा फिल्म समीक्षकों ने फिल्म संबंधी सिद्धान्तों और उनका सौन्दर्य शास्त्रीय विवेचन, फिल्म तकनीक, फिल्म और अन्य कलाओं - मुख्यत: साहित्य से सम्बन्ध आदि विषयों पर पर्याप्त प्रौढ़ एवम् विस्तृत विचार किया है।

इन फिल्म सिद्धान्तों के प्रतिपादकों में - आइजनस्टाइन, रेनक्लेयर, ज्याँ एस्टाइन, एवेल गाँस, ज्याँ काकत्यू आदि प्रमुख हैं। भारत का प्रयास इस संदर्भ में शून्य ही है क्योंकि यहाँ फिल्म को सर्वदा घटिया, निम्न स्तरीय, सस्ते और मुख्यत: युवा पीढ़ी को गुमराह करने वाले कुरुचि-पूर्ण मनोरंजन से अधिक महत्व नहीं दिया गया। इधर कुछ वर्षों से भारतीय फिल्मों के शिल्पगत और सैद्धान्तिक पक्ष पर भी विचार किया जाने लगा है परन्तु भारतीय फिल्म विदेशी लेखन की बैसाखियों पर ही निर्भर रही है।

फिल्म को कला के रूप में मानने वालों में दो वर्ग उभर कर सामने आते है। इनमें पहला वर्ग कला की पारम्परिक धारणाओं के परि-प्रेक्ष्य में फिल्म को देखना पसन्द करता है और दूसरा कला संबंधी पारस्परिक प्रतिमाओं पर ही प्रश्न- चिन्ह लगाता है। दूसरे वर्ग में प्रमुख समर्थक जो फिल्म को कलाके रूप में मानते हैं वे सिगफ्रायड क्राशर है। क्राशर फोटो ग्राफी को फिल्म का मुख्य आधार मानते हैं। उनका कहना है कि यदि फिल्म को कला माना जाय तो यह भी मानना होगा कि फिल्म पारंपरिक कलाओं की श्रेणी में नहीं आती। यदि फिल्म कला है तो वह कला अन्तर लिए हुए है।[१]

---

१ "Once you start from the assumption that the cinema retains major characteristics of photography, you will find it impossible to accept the widly sanctioned belief or claim that film is an art like the traditional arts, works of art consume the raw material from which they are drawn whereas films as an outgrowth of camera work are bound to exhibit it.----If film is an art, it is art with difference. Along with photography, film is the only art which leaves its raw material more or less interes

— Siegfried Kracauer.
'The Theory of Film', Page X.

कला की परम्परागत धारणा के अनुसार जैसा कि प्लेटो कहते हैं --"कला जगत की वस्तुओं और व्यापारों की अनुकृति है।" अरस्तू ने काव्यशास्त्र में उक्त परिभाषा की व्याख्या करते हुये कहा है-अनुकृति का अभिप्राय साहित्य में जीवन का वस्तुपरक अंकन है, जिसे हम अपनी भाषा में जीवन का कल्पनात्मक पुर्ननिमाण कह सकते हैं।"[१]

अत: स्पष्टत: कहा जा सकता है कि मात्र जीवन या जगत की अनुभूति अथवा यथार्थ प्रतिकृति कला नहीं होती, जब तक कि कलाकार उसका पुर्ननिर्माण नहीं करता है। इसलिए वस्तुओं और विचारों का चयन तथा उसका विन्यास कला को सर्जनात्मक बनाते हैं।

आई०ए०रिचर्डस कला को संप्रेषण का सर्वोच्च साधन मानता है। फिल्म सौन्दर्य शास्त्र पर विचार करने वाले अनेक विचारकों ने रिचर्डस के उक्त कथन से सहमति व्यक्त करते हुये प्लेटो का कहना है -" कला जगत की वस्तुओं और व्यापारों की अनुकृति है।" अरस्तू ने काव्यशास्त्र में उक्त परिभाषा की व्याख्या करते हुये कहा है --" अनुकृति का अभिप्राय साहित्य में जीवन का वस्तुपरक अंकन है, जिसे हम अपनी भाषा में जीवन का कल्पनात्मक पुर्ननिर्माण कह सकते हैं।[२] अत: स्पष्ट हो जाता है कि मात्र जीवन या जगत की अनुकृति अथवा यथार्थ प्रतिकृति कला नहीं होती, जब तक कि कलाकार उसका पुर्ननिमाण नहीं करता है। इसीलिए वस्तुओं और विचारों का चयन तथा उसका विन्यास कला को सर्जनात्मक बनाते हैं।

आई.ए. रिचर्डस कला को संप्रेषण का सर्वोच्च रूप मानता है। फिल्म सौन्दर्य शास्त्र पर विचार करने वाले विभिन्न विचारकों ने रिचर्डस के उक्त कथन से सहमत व्यक्त करते हुये फिल्म और साहित्य की अनेक दृष्टियों से तुलना की है, अनुक्रम की तुलना परिच्छेद से, शाट की वाक्य से, शाट-संधि

१- अरस्तू का काव्यशास्त्र- अनुवादक, महेन्द्रनाथ एवं डा० नगेन्द्र ,पृ० ६४

२- अरस्तू का काव्यशास्त्र, अनुवादक ,डा० नगेन्द्र,पृष्ठ- १४

की अर्द्ध विराम से और दृश्यांत का पूर्ण विराम से । चलचित्र उच्चरित भाषा से सर्वथा भिन्न है, क्योंकि सिनेमा यथार्थ बिम्बों के माध्यम से अभिव्यक्त करता है जब कि भाषा अमूर्त रूपों का प्रयोग करती है ।[१]

समष्टि रूप से कहा जा सकता है-" कला एक प्रक्रिया है , जिसमें कलाकार अपनी अनुभूति, अन्तर्ज्ञान और प्रेरणा के सुनियोजित एवम् सुसम्बद्ध प्रस्तुतीकरण द्वारा सुन्दर तथा वास्तविक और कलात्मक विषयों की सृष्टि करता है , जो न्यूनाधिक रूप में यथार्थ की अनुकृति होते है और इन विषयों के द्वारा वह अनुभूति ग्रहीता को संप्रेषित करता है।[२]

उपरिलिखित परिभाषा के अनुसार कलात्मक कार्य-क्षेत्र को तीन रूपों में देखा जा सकता है --

(अ) अन्त: प्रेरणा

(आ) अभिव्यक्ति

(इ) ग्रहीता द्वारा अनुभूति का ग्रहण ।

प्रेरणा:- फिल्म की प्रेरणा का उत्स कोई कहानी, उपन्यास,नाटक, पटकथा या कोई विचार होता है । साहित्य की भाँति फिल्म वैयक्तिक नहीं होती अत: फिल्म का प्रेरणा स्रोत कहीं से भी हो सकता है । प्रेरणा स्रोत कुछ भी हो फिल्मकार को उसे फिल्म की भाषा में प्रस्तुत करना होता है, जो सरल कार्य नहीं है ।

कुछ फिल्मकार ऐसे भी हैं जिन्होंने साहित्यिक आधार को न लेकर व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर फिल्में निर्मित की है । इस सन्दर्भ में फ्लेहर्टी (FLAHARTY) का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है । इन्होंने एस्किमों के जीवन पर एक उत्कृष्ट चित्र का निर्माण किया -- 'Nanwk Of The North'

१- 'Cinema As An Art' — Stephenson & J.R. Devis. Page-16

२- Ibid Page-17

कुछ आलोचकों का विचार है कि महान रचना की सृष्टि किसी मूड विशेष या विशेष मन: स्थिति में अभिव्यक्ति के सतत प्रवाह के रूप में बहुत ही अल्प कालावधि में हुई। इससे स्पष्ट हो जाता है कि महान रचना की सृष्टि विशेष भाव- दशा में ही होती है। सुप्रसिद्ध फिल्मकार सत्यजीत राय के विचार इस सन्दर्भ में अवलोकनीय हैं--" साहित्य या चित्रकला के लिए भले ही सत्य हो, परन्तु फिल्म के लिए यह प्रयुक्त नहीं होता। फिल्म अत्यंत संश्लिष्ट कला सृष्टि है जो एक व्यक्ति द्वारा नहीं, अपितु समूह द्वारा की जाती है। फिल्म निर्माण अत्यन्त श्रम- साध्य है जिसके लिए फिल्मकार का एक मात्र श्रेष्ठ कलाकार होना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि एक कुशल प्रबंधक एवम् ऐसा समायोजक होना आवश्यक है, जो अन्य कलाओं के विशेषज्ञों का उपयोग फिल्म को एक निश्चित रूप देने में कर सके।[१]

फिल्म की मूल प्रेरणा व्यक्तिगत हो सकती है, परन्तु उसका निर्माण समूह द्वारा होता है। फिल्म निर्माण एक उद्योग है जहाँ हजारों मजदूर, तकनीशियन, कलाकार, अभिनेता आदि कार्य करते हैं। इन व्यक्तियों का सहयोग फिल्म को समूह की कला सृष्टि का नाम देता है। समूह की कला सृष्टि होने से कठिनाई यह है कि अनेक लोगों के सहयोग द्वारा निर्मित होने वाले कला माध्यम में मूल विचार को रूपान्तरित करना दुष्कर कार्य हो जाता है। फिल्म निर्माण, साहित्य लेखन एवम् चित्र कला की तुलना में कहीं अधिक कठिन कार्य होता है।

कला उत्कृष्टता के शिखर को तभी स्पर्श करने में सक्षम हो पाती है, जब कलाकार अपने 'स्व' को विराट में समर्पित कर देता है। यही कारण है कि मध्ययुगीन गिरजाघरों का निर्माण समूह - कला सृष्टि का उत्कृष्ट उदाहरण है क्योंकि इनका निर्माण त्याग- भावना से हुआ है, जहाँ प्रत्येक कलाकार ने बिना अपने नाम व व्यक्तित्व का आग्रह किये समर्पण की भावना से समूह की कला में अपना ष अप्रतिम योगदान किया है। फिल्म में

१- भारतीय फिल्मों का इतिहास: करुणाशंकर - पृष्ठ- २१०

समूह के प्रयास का आधार आर्थिक है। फिल्म एक व्यवसाय है। जिसमें बड़ी पूँजी लगती है और जिसकी सफलता बहुत अनिश्चित है, फिर भी कुछ ऐसे समर्थ फिल्म निर्देशक हुए हैं, जिन्होंने पूर्ण स्वच्छन्दता के साथ फिल्म निर्माण किया और कभी व्यवसायी के मुखापेक्षी नहीं रहे।

सर्जना:-

सर्जना ही कलात्मक क्रियाशीलता का सबसे महत्वपूर्ण कार्य है। फिल्म सर्जना और अन्य कलाकार में भी अन्तर है। अन्य कलाकार उत्पाद्य वस्तु को जिस रूप में प्रस्तुत करते हैं, फिल्म उससे सर्वथा भिन्न रूप में उसे सिनेमा प्रक्षेपी द्वारा प्रदर्शित करती है।

लेखक जिस रूप में लिखता है या चित्रकार जिस रूप में चित्र बनाता है, गृहीता उसी रूप में ग्रहण करता है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि गृहीता द्वारा कलाकार की उत्पादित वस्तु का ग्रहण उसी रूप में न्यूनाधिक होता है लेकिन फिल्मकार की कला-सृष्टि सेल्यूलाइड के रूप में होती है, जिसे गृहीता सिनेमा प्रक्षेपी के माध्यम से सिनेमा के पर्दे पर देखता है। फिल्म सर्जना की एक विशेषता और उल्लेखनीय है कि उसमें भौतिक यथार्थ को यथावत अंकित करने की सामर्थ्य है। चित्रकला की तुलना में फिल्म का यथार्थ अधिक वास्तविक होता है, या कह सकते हैं कि उसमें यथार्थ के वास्तविक दर्शन होते है। साहित्य में शब्दों के माध्यम से मानसिक बिम्ब ग्रहण किया जाता है जबकि फिल्मों में प्रत्यक्ष बिम्ब का आधार होता है। अतः कहा जा सकता है कि उसे साहित्य, संगित, चित्रकला आदि का सहयोग प्राप्त है। इसलिए कहा जा सकता है कि सिनेमा कलात्मक संप्रेषण का समग्र रूप है। लेखक, छविकार , अभिनेता , संगीतकार, वास्तुकला विशेषज्ञ, फिल्म संपादक और ध्वनि नियंत्रक आदि। इन्हीं कलाकारों के सामूहिक प्रयत्नों का नाम है - सिने कला।

कला के क्षेत्र में कर्ता का महत्व अधिक होता है। कला जो कुछ भी है, उसी की अभिव्यक्ति है। कर्ता का अपनी कला पर सम्पूर्ण और अबाधित स्वत्व होता है, क्योंकि कर्ता एक ही होता है। लेकिन फिल्म

एकाधिक कर्ताओं का सम्मिलित दृष्टि है। अब प्रश्न यह उठता है कि किसे इसका कर्ता माना जाये। फिल्म निर्माता एक व्यवसायी होता है - वह कला का सर्जक नहीं। फिल्म को किसके मस्तिष्क की उपज माना जाये? नाटक, संगीत और गायक में तो भेद किया जा सकता है, पर क्या इस सर्जक - प्रदर्शक कसौटी पर हम फिल्म लेखक को फिल्म कला का कर्ता घोषित कर सकते हैं?

साहित्यकार की श्रेष्ठता के मनोवैज्ञानिक कारणों के फलस्वरूप ही फिल्म में लेखक को सर्वाधिक महत्व प्रदान करने की बात उठायी जाती है। जहाँ तक महत्व की बात है तो इस सन्दर्भ में निर्देशक को ही फिल्म का कर्ता कहा जायेगा क्योंकि विषय का चुनाव, पटकथा, अभिनेताओं का चुनाव, उपयुक्त छविकार का चयन उसके ही हाथों में होता है। यहाँ तक कि फिल्म संपादन, ध्वनि अंकन और संगीत योजना तथा वे सभी गौण कार्य, जो एक फिल्म निर्माण के लिए आवश्यक होते हैं, अपनी देख रेख में करवाना है। अतः निर्देशक ही सिने कला को उत्कृष्टता प्रदान करता है। फिर भी यह सत्य है कि फिल्मांकन के दौरान अभिनेताओं को निर्देश देने और कैमरे के कार्य पर नियंत्रण रखने मात्र से ही निर्देशक को फिल्म का कला स्रष्टा नहीं कहा जा सकता।

यूरोप में फिल्म निर्देशक की स्थिति फिल्मकार की है, परन्तु अमेरिका में यह बात नहीं पायी जाती क्योंकि अधिकांश सर्जनात्मक कार्य फिल्म निर्माता स्वयं करता है और निर्देशक की स्थिति सामान्य तकनीशियनों की भांति होती है, जिसे पटकथा पूरी होने और अभिनेताओं का चयन होने के बाद निश्चित वेतन पर रखा जाता है और फिल्मांकन के अंतिम दिन फिल्म स्टूडियों से विदा हो जाता है।

फ्रांस के फिल्म समीक्षकों ने फिल्मकार के लिए "Auteur" शब्द का प्रयोग किया है। फ्रेंकोइस त्रूफो के अनुसार "Auteur" पूर्ण फिल्म का स्रष्टा या फिल्मकार है। वह ऐसा निर्देशक है, जिसका अपनी निर्माणाधीन फिल्म के सभी पहलुओं पर पूर्ण नियंत्रण होता है।[१]

१- 'Cinema Eye, Cinema Ear' — John Russel Tylor, Page 11.

प्रदर्शन:-

फिल्म लोक माध्यम (Mass-Media) है। अत: फिल्म सामाजिक स्थिति की उपेक्षा नहीं कर सकती। साहित्य की भाँति फिल्म व्यक्ति परक दृष्टिकोण लेकर चल ही नहीं सकती क्योंकि फिल्म एक व्यवसाय है और सन्तोष जनक प्रतिफल मिलने पर ही वह व्यवसाय जीवित रह सकता है। अत: स्वाभाविक है कि फिल्म सामग्री दर्शकों की रुचि के अनुकूल हो।

फिल्म का दर्शक एक औसत व्यक्ति होता है। अत: सिद्धान्त वादिता और कलात्मक आग्रह के बावजूद विश्व की ६५%. फिल्मों का स्तर सामान्यजन का ही स्तर है। अभिव्यक्ति की अप्रतिम सामर्थ, शिल्पगत कौशल, व्यापक प्रसार, कलात्मक सर्जना की असीम सम्भावनाओं के होते हुए भी फिल्म जनता की कला है, जिसे सुप्रसिद्ध रूसी फिल्मकार आइजन्स्टाइन ने सिनेमा को - जनता का और जनता के लिए (Of the People and for the People) आख्यायित किया है।

यदि फिल्म को कला मान लिया जाये तो स्वाभाविक है कि फिल्म का कर्ता कौन है ? क्योंकि अन्य कलाओं के समान फिल्म एक व्यक्ति की सर्जना न होकर व्यक्तियों के सहयोग से होती है। सहयोगी व्यक्ति मूल रूप से कलाकार ही होते हैं।-- कला प्रकृति का प्रतिबिंब है। अनादि काल से मानव प्रकृति के रम्य और विषाम रूपों को जीवन के विशाल कैनवासपर उतारता चला आरहा है। जीवन की इस पृष्ठभूमि पर प्राकृतिक बिम्बों की यह चित्रानुकृति कला- साधना के विभिन्न आयामों को पार करती हुयी अनेकानेक रूपों में अपने को प्रकट करती है। चित्र कला, संगीत- कला, साहित्य, शिल्प और नाट्य कला की भाँति चित्रपट उनमें एक नवीन रूपादि अभि-व्यक्ति है।

वर्तमान जीवन में मानव की अन्त: और बाह्य प्रकृति के चित्रमय प्रकाशन के लिए इससे अधिक शक्तिशाली कला का कोई अन्य माध्यम नहीं है। भले ही किन्हीं पूर्वाग्रहों के आधार पर अथवा साहित्य-शास्त्र की बंधी हुई परिपाटी के कारण चित्रपट को किसी साहित्यिक विधा अथवा कला का स्तर प्रदान न किया गया हो, किन्तु आज इस तथ्य की उपेक्षा नहीं की जा सकती कि सामाजिक क्षेत्र में चित्रपट ने अपना एक निजी सांस्कृतिक परिवेश धारण कर लिया है और इस परिवेश में साहित्य एवं कला के विभिन्न अलंकारों की जगमगाहट लक्षित की जा सकती है। साहित्य , संगीत चित्रकला, शिल्प , नाट्य कला और छायांकन के विभिन्न रम्य और कलात्मक स्वसर्जन को आत्मसात किये हुये यह कला 'दृश्य कला' के रूप में जीवन के अनेक मार्मिक रहस्यों को एक अनूठे अंदाज से दर्शकों के समक्ष प्रस्तुत करती है।

चलचित्र और साहित्य :-

चलचित्र एवम् साहित्य दो पृथक् विधाएँ है, लेकिन दोनों का पारस्परिकससंबंध अत्यधिक घनिष्ठ है। भारतवर्ष में ही नहीं, बल्कि विश्व के प्रत्येक सिने- उद्योग में साहित्यिक कृतियों पर चलचित्र का निर्माण किया गया है। विश्वभर के चल चित्रों पर दृष्टिपात किया जाये , तो निश्चित रूप से कहना होगा कि अधिकांश लोकप्रिय चल चित्रों की कथा का आधार साहित्य ही है।

चल चित्र और साहित्य को लेकर आज इस विज्ञान के युग में अधिक चर्चा है। चलचित्र जगत के कतिपय जागरुक निर्माता और निर्देशक, जहाँ चल चित्र को साहित्यिक विधा के रूप में मान्यता प्राप्त कराने के लिए सक्रिय दिखलाई पड़ते हैं , वहीं बहुत से समीक्षक ऐसे भी है जो किसी आधार पर चल चित्र को साहित्यिक सीमा में मानने को तैयार नहीं हैं।

चलचित्र को साहित्य की सीमा में प्रवेश कराया जाये या नहीं, इस सन्दर्भ में अपने-अपने तर्क हैं एवम् अपनी-अपनी मान्यतायें है।

एक वर्ग ऐसा भी है जो चल चित्र में जीवन के स्वरूप की स्वाभाविक, सजीव और चित्रमय दृश्याभिव्यक्ति के कारण चल चित्र को साहित्यिक विधा के रूप में स्वीकार करता है। दूसरे शब्दों में इसप्रकार भी कह सकते है कि यह साहित्यिक कृतियों का ही एक अभिनव और रोचक चित्रमय संस्करण है। चल चित्र में भी उसी प्रकार जीवन के विभिन्न रूपों की अभिव्यक्ति होती है अथवा की जा सकती है, जिस प्रकार साहित्यिक उपन्यासों एवम् कहानियों आदि में रहती है। उपर्युक्त विश्लेषण से एक बात तो यह स्पष्ट हो जाती है कि चित्रपट और साहित्य में जो साम्य एवम् वैषम्य दिखलाई पड़ता है, वह कला - पक्ष अथवा अभिव्यक्ति पक्ष को लेकर ही है। जहाँ तक भाव- पक्ष अथवा विषयवस्तु का क्षेत्र है, उसमें समानता है। चित्रपट और साहित्य, दोनों ही जीवन के खुले प्रांगण से विषय सामग्री का चयन करते हैं, पर चल चित्र कभी कभी साहित्य से कथावस्तु उधार ले लेता है, जब कि साहित्य सीधे जीवन से अपनी सामग्री का संकलन करता है। चल चित्र एवम् साहित्य सीधे जीवन से अपनी सामग्री का संकलन करता है, पर जीवन के विविध क्षेत्रों का दोनों ही उद्घाटन करते है। चल चित्र जब साहित्य से कथावस्तु का चयन करता है तो वह एक प्रकार से उस साहित्यिक कृति को पुन: साकार रूप में अथवा एक नयी शैली में उसका पुनर्प्रकाशन करता है।

(क) चलचित्र और उपन्यास :-

यह कहना समीचीन जान पड़ता है कि एक चलचित्र की रचना-प्रक्रिया अथवा निर्माण प्रणाली एक उपन्यास तथा 'नाटक' से कहीं अधिक कठिन और उलझन भरी होती है। उपन्यास और चल चित्र दोनों ही पृथक् कला-विधायें हैं।

एक उपन्यास को जिसकी अभिव्यक्ति का माध्यम भाषा है, अपने भाव- प्रकाशन में किसी निश्चित सीमा में नहीं बांधा जा सकता। अपने भावों की अभिव्यक्ति के लिए लेखक को पूर्ण स्वतंत्रता रहती है कि वह जो चाहे, जितना चाहे लिखे। किसी एक विशिष्ट शिल्प अथवा शैली में बंधकर लिखने के लिए वह बाध्य नहीं होता। उपन्यासकार की सफलता इसी बात

में है कि वह अपने द्वारा निर्मित मनोराज्य में पाठक को ठीक अनुभूति के अनुरूप कितनी गहराई और स्पष्टता के साथ ले जाता है । पाठक स्वम् लेखक की अनुभूति का तादात्म्य ही उसकी सफलता का मापदण्ड है ।

उपन्यासकार को अपनी भावनाओं स्वम् अनुभूतियों को पाठक के ऊपर थोपने अथवा उसकी भावनाओं को उत्तेजित करने के लिए, किसी भौतिक-माध्यम की कोई आवश्यकता नहीं होती । केवल कल्पना और अनुभूति की सूक्ष्म संवेदनायें ही पाठक के सम्मुख अमूर्त- सौन्दर्य को साकार रूप में प्रस्तुत करती है और वह अमूर्त- सौन्दर्य ही कल्पना में साकार होकर पाठक की चित्त-वृत्ति को अभिभूत कर देता है ।अत: एक उपन्यासकार के द्वारा प्रस्तुत सौंदर्य, कल्पना के स्वप्नवत् - संसार में मूर्त होकर भी अमूर्त ही रहता है ।

सुप्रसिद्ध बंगला निर्देशक ऋत्विक घटक उपन्यास स्वम् चलचित्र पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहते है--

The relationsip between the cinema and the Novel has now become a two-way affair. Literature is cramming in all kinds of cinema cliches and stock situations, which author's think will endear them to Film Producers. And films are based on such shiff, thereby, giving further fillip to such writing.[१]

१- Film-fair — July 8, 1966, Page-22.

अत: निर्विवाद रूप से यह माना जा सकता है कि एक चलचित्र जो पूर्ण ईमानदारी और विश्वास के साथ किसी साहित्यिक- कृति अथवा उपन्यास का सजीव चित्रांकन करता है, वह एक प्रकार से न केवल उपन्यास का सजीव चित्रांकन करता है, बल्कि उस उपन्यास की आत्मा की सही और सुन्दर व्याख्या भी करता है पर यह व्याख्या चलचित्र में उपन्यास की भांति अमूर्त नहीं होता। चलचित्र में उसे आकार लेना पड़ता है। पटकथा लेखक और निर्देशक की भावनाओं को मांसल रूप धारण करना पड़ता है। सेल्यूलाइड के पर्दे पर ये मांसल आकार अस्पृश्य होते हुए भी मूर्त होते हैं। इस प्रकार चलचित्र के पात्र उपन्यास के पात्रों से कहीं अधिक सजीव होते है। ये उपंयास से कहीं अधिक सजीवता, तीव्रता और शीघ्रता से अपनी भव्यता को प्रकट करते हैं।

उपन्यास और चलचित्र वस्तुत; दो अलग अलग स्वतंत्र शिल्प है। दोनों की रचना- प्रक्रिया और भावाभिव्यक्ति में कोई पारस्परिक मेल नहीं होता। एक चलचित्र जो किसी उपन्यास के आधार पर निर्मित किया जा रहा है, उपन्यास के धारावाहिक वाचन के अभाव में भी उसे पूरा का पूरा सजीवता से प्रस्तुत कर सकता है।

सामान्यत: एक उपन्यास, कथा को वर्णनात्मक ढंग से कहता है, पर चलचित्र, इसके विपरीत नाटकीय प्रणाली तथा संवादों का सहयोग प्राप्त करता है।

(ख) चलचित्र और नाटक:-

नाटक साहित्य की दृश्य विधा है और सिनेमा मूलत: दृश्य- कला। साहित्य के व्यापक अर्थ में यदि सिनेमा को साहित्य की एक विधा के रूप में स्वीकार करने का आग्रह करें, तो उसे हम दृश्य विधा भी कह सकते हैं, परन्तु सिनेमा केवल दृश्य विधा ही नहीं है, वह अभिव्यक्ति का स्वतंत्र माध्यम भी है।

फिल्म किसी भी प्रदर्शनात्मक कला का अंकन कर सकती है। वैजयन्ती माला का नृत्य, भीमसेन जोशी का गायन, पं० रविशंकर का सितार वादन, दारा सिंह एवं किंगकांग की कुश्ती का फिल्म द्वारा अंकन किया जा सकता है, परन्तु नाटक यह कार्य नहीं कर सकता, क्योंकि नाटक माध्यम नहीं है। नाटक फिल्म में रूपान्तरित किया जा सकता है पर फिल्म नाटक में रूपान्तरित नहीं की जा सकती। फिल्म की प्रकृति अंकन की अधिक होती है। इसलिए कृतिविधा (DOCUMENTARY) सिनेमा की मूल विधा है।

फिल्म रंगमंच की सीमित दायरे के बाहर उन्मुक्त विश्व को चित्रबद्ध करती है। नाटकीय कथानक में आबद्ध होकर सिनेमा दृश्यविधा का रूप लेता है। फिल्म के जन्मदाता ल्यूमियेरे और मेलिये के कुछ क्षणों वाले लघु-चित्र वृत्तात्मक है। अपने विकास के प्रथम चरण में ही फिल्म ने यह अच्छी तरह समझ लिया कि उसकी मुख्य धारा आख्यानमूलक है। वृत्तात्मक विधा के अतिरिक्त अवृत्तात्मक विधा भी फिल्मों में विकसित हुई। इस अवृत्तात्मक विधा को कथा चित्र के नाम से अभिहित किया गया।

कथा-चित्रों को दो श्रेणियों में रखा जा सकता है--
१- नाटकीय कथा और २- सिने-कथा।

नाटकीय कथा के रूप में प्रचलित होने वाली सर्वप्रथम फिल्म- Assassination of the Duc De Guise है। इस फिल्म के द्वारा सिनेमा को साहित्य के समकक्ष एक कला माध्यम के रूप में प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया गया तथा यह भी सिद्ध किया गया कि फिल्म नाटकीय अथवा औपन्यासिक कहानियों को अपने ढंग से अपनी-भाषा में प्रस्तुत करने में पूर्ण सक्षम है।

सिनेमा और नाटक का अन्तर मुख्यतया सामग्री के प्रस्तुतीकरण में देखा जा सकता है। सिगफ्रायड क्राशर के शब्दों में "सिनेमा कैमरे के माध्यम से भौतिक यथार्थ का उद्घाटन करता है।[1] सिनेमा यथार्थ के अंकन के लिए प्रतिबद्ध है जबकि नाटक का आधार आदर्शवादी है।

१- सिगफ्रायड क्रेशियर -

सिनेमा जनतांत्रिक युग की देन है। फिल्म को 'जनतांत्रिक कला' और 'जन समुदाय की कला' की संज्ञाओं से अभिहित किया गया है। पैनी पस्मा और प्राशर जैसे समीक्षक चाहते हैं कि सिनेमा जनतांत्रिक कला होने की शर्त को पूरा करे अर्थात उसका स्तर जन सामान्य के स्तर के अनुकूल ही हो। सिनेमा एक ही साथ श्रेष्ठ कला और जन साधारण की कला है। जब कि नाटक उच्च अभिरुचि वाले उच्च वर्ग की कला है। यह दूसरी बात है कि सिनेमा विश्वसनीय है, जबकि नाटक दिखावटी, छद्मवेशी और मिथ्या है।

हेनरी गोहियर ने नाटक एवम् चल चित्र के सन्दर्भ में अपना मत व्यक्त करते हुए कहा है -- "नाटक का सबसे बड़ा आकर्षण अभिनेता की सशरीर उपस्थिति है। रंगमंच में एक अभिनेता को छोड़कर सब कुछ भ्रमपूर्ण एवम् मिथ्या हो सकता है, जबकि सिनेमा में अभिनेता की भौतिक उपस्थिति को छोड़कर सब कुछ वास्तविक होता है।"[१]

नाटक में उपस्थिति की अवधारणा बहुत प्राचीन है और यह फोटोग्राफी के उदय के पूर्व की है। उपस्थिति को समय एवम् स्थान के परिप्रेक्ष्य में पारिभाषित किया जा सकता है। किसी की उपस्थिति का तात्पर्य हमारे इंद्रियबोध की सीमा में होता है। ऐसा नहीं है कि सिनेमा हमें अभिनेता की उपस्थिति का बोध करा सकने में असमर्थ है। सिनेमा यह कार्य एक दर्पण के समान करता है। जिसप्रकार हम दर्पण में वास्तविकता का दर्शन करते हैं, उसी प्रकार हम रजतपट पर अभिनेता की उपस्थिति का अनुभव करते हैं।

नाटक और सिनेमा में भी आनंद की अनुभूति होती है। पर दोनों के आनंद में अन्तर है। नाटक देखकर जो आनंद प्राप्त होता है, वह नैतिक मूल्यों पर आधारित होता है। अत: फिल्म के संतुष्टि प्रदान करने वाले

१- The Theory Of Film — Siegfried Kracauer
Oxford University Press-New-York.
1965.

आनन्द की अपेक्षा अधिक साहित्यिक और ~~विचारसंप्रेरक~~ विचारोत्तेजक होता है। नाटक से हम एक विशिष्ट चेतना ओर लौटते हैं। दूसरी ओर, अच्छी से अच्छी फिल्म में भी लगता है, कि कुछ खटक रहा है।

रोज़ेन क्रेन्ट्ज इस सम्बन्ध में अपनेविचार व्यक्त करते हुये कहते है -- रजत-पट केचरित्र सहज भाव से तादात्म्य का विषय होते हैं, जबकि रंगमंच के चरित्र मानसिक विरोध के विषय होते हैं, क्योंकि इनकी वास्तविक उपस्थिति उन्हें वस्तुपरक वास्तविकता प्रदान करती है। उनको काल्पनिक संसार में स्थापित करने के लिए प्रेक्षक को अपनी मानसिक शक्ति का विशेष उपयोग करना पड़ता है या यों कहें कि उनकी भौतिक वास्तविकता को अमूर्त रूप देना पड़ता है। यह अमूर्तिकरण बौद्धिक प्रक्रिया है, जो किसी चैतन्य व्यक्ति द्वारा ही संभव है।[१]

दूसरी ओर फिल्म दर्शक एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया द्वारा फिल्म के नायक से तादात्म्य स्थापित करता है। वह फिल्म दर्शकों की भीड़ में सम्मिलित होकर समान प्रतिक्रिया करता है।

जड़रूप में सिनेमा एक वस्तु है और नाटक एकप्रदर्शन। चित्रकला, मूर्तिकला या फिल्म की तरह 'वस्तुकला' हो या संगीत और नाटक की तरह 'प्रदर्शनकला', सभी अभिव्यक्ति का माध्यम हैं। पैनोपस्की सिनेमा और नाटक में वस्तु और प्रदर्शन के रूप में जो अन्तर करता है, उसका आधार यह है कि वह मानता है कि नाटक की तुलना में पटकथा का स्वतंत्र रूप से प्रदर्शन से परे कोई सौन्दर्य, शास्त्रीय अन्तर नहीं है। ये तो फिल्म अभिनेता हैं, जो उसे मूर्त रूप देते हैं।

जिस क्षिप्रगति से फिल्म का विकास हुआ है, और हो रहा है, उसे देखते हुये सभी समीक्षक एकमत है कि नाटक की अपेक्षा सिनेमा की संभावनाएँ असीम है, क्योंकि विज्ञान की संभावनाएँ चलचित्र को 'नाटक' की एक परवर्तित

१- Film- Theory And Critism
Oxford University Press, New York
1974. Page 219.

विधा के रूप में तो इसे स्वीकार करना ही चाहिए क्योंकि यह एक 'दृश्य-काव्य' है और जन-जीवन के अधिक निकट है ।

दूसरे वर्ग के समीक्षकों का कहना है कि चलचित्र अपने सस्ते मनोरंजन, अस्वाभाविक और कृत्रिम यथार्थ तथा व्यावसायिक- दृष्टिकोण रखने का कारण , साहित्यिक गरिमा को स्पर्श करने का अधिकारी नहीं है। शब्द-गत सौन्दर्य के अभाव में चलचित्र , जीवन की सुन्दर एवम् मार्मिक अभिव्यक्ति करने में भी असमर्थ है ।

दोनों वर्गों के समीक्षकों के मतों पर विचार करने पर हम एक निष्कर्ष पर पहुँचते है कि इन दोनों मान्यताओं में जहाँ कुछ सशक्त तर्क है , वहाँ कतिपय दुराग्रह भी हैं । चलचित्र को साहित्यिक विधा के रूप में स्वीकार कराने वाले समीक्षकों की बातों में थोथा तर्क दिखलाई पड़ता है क्योंकि यह चलचित्र के एक निजी स्वतंत्र और सशक्त माध्यम के विपरीत तथ्य है। जो व्यक्ति इस विधा की स्वतंत्र सत्ता को अभी तक पूर्ण रूप से समझ नहीं पाये है, वे ही ऐसी बाते करते हैं क्योंकि चलचित्र एक ऐसी स्वतंत्र आधुनिक विधा है, जो मानव जीवन की एक सर्वथा नवीन परिवेश में मौलिक अभिव्यक्ति करती है और यह नवीन परिवेश , जिसमें दृश्य और ध्वनि का साकार प्रकटीकरण किया जाता है , मूलतः चल चित्र को साहित्य से पृथक् कर देता है । चलचित्र की इस निजी विधा से हटाकर उसे साहित्यिक क्षेत्र में ढकेलना, चलचित्र के मौलिक अस्तित्व के प्रति अन्याय करना है और उसकी नवीन उपलब्धियों की ओर से मुख मोड़ना है ।

विपक्ष का स्पष्ट कहना है कि कतिपय साहित्यिक-कृतियों के असफल चित्रीकरण से वे इतने क्षुब्ध है कि चल चित्र को साहित्यिक - संगोष्ठि का एक सम्भावित अतिथि मानने को कतई तैयार नहीं हैं । ऐसे लोगों को यह ज्ञात नहीं है कि साहित्य के अनुरूप ही चलचित्र की भी एक भाषा होती है, एक शैली होती है, एक वातावरण होता है और कुछ आधार भूत सामग्री भी होती है, जो उसे साहित्य के निकट भी लाती है और तटस्थ भी रखती है ।

चलचित्र और साहित्य के साम्य तथा वैषम्य को स्पष्ट करते हुए `पूना फिल्म इंस्टीट्यूट आफ इण्डिया` के प्रोफेसर सतीश बहादुर ने कतिपय सुन्दर तथ्यों की ओर संकेत करते हुए कहा है कि मौखिक- भाषा की ही तरह `फिल्म` भी संवहन - माध्यम(Medium of Thought Communication) की एक भाषा है । जिस प्रकार भाषा कविता, गल्प, उपन्यास , नाटक आदि अभिव्यक्ति का कार्य करती है और अपने स्वरूप में शब्द - समूह तथा व्याकरण का आधार स्वीकार करती है, उसी प्रकार चल-चित्र भी भाषा संवहन का दृश्य - कला माध्यम है और गतिमान-दृश्य अंशों तथा ध्वनि अंशों के द्वारा वह अपना शब्द- समूह और व्याकरण रखता है ।

साहित्य की ही भाँति चलचित्र की भाषा का भी वर्णनात्मक प्रयोग सम्भव है । साथ ही इ दोनों में अन्तर भी है कि चलचित्र एक विशेष वातावरण में सामूहिक रूप से लगातार देखा जा सकता है । वहीं घटनाओं के अनुरूप दर्शकों के लिए अपनी मन: स्थिति को ~~किसे~~ निरन्तर गतिमय रखना पड़ता है, जबकि स्थिर चित्र, उपन्यास, कहानी, नाटक आदि को अपनी रुचि के अनुसार ही हम देखते हैं, पढ़ते हैं और बंद कर देते हैं । चलचित्र को अपने से अलग स्वतंत्र करके नहीं देखा जा सकता जबकि साहित्य में तादात्म्य किए बिना ही उसे पढ़ा जा सकता है । इस प्रकार कहा जा सकता है -- चल चित्र में, जहाँ गति और एकात्मक तत्व आवश्यक है वहाँ साहित्य में इसके बिना भी कार्य चल जाता है ।

साथ ही रंग मंचीय- नाटक में जहाँ दर्शक मंच के पास बैठते हैं और जहाँ अभिनेताओं का कार्य क्षेत्र रंगमंच की चहार दीवारी तक ही सीमित रहता है , वहाँ नाटकीय संवाद दर्शकों से प्रत्यक्ष सम्बन्ध स्थापित कर लेते है , पर चलचित्र में दर्शक पात्रों से तादात्म्य रखते हुए भी, प्रत्यक्ष संपर्क कुछ नहीं होता । दर्शक वहीं से देखते हैं, सुनते हैं, जहाँ स्वयं- अभिनेता होते हैं । वहाँ संवाद का साहित्यिक महत्व हो सकता है पर यहाँ संवाद का साहित्यिक महत्व नहीं होता । निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है -- " उपन्यास या कहानी का केन्द्रीय भाव, जिसे लेखक शब्दों की ध्वनियों और

अपने लेखन कौशल से कृति का रूप देता है, चलचित्र माध्यम में भिन्न सिद्धांतों के अन्तर्गत बिल्कुल बदल जाता है ।"[१]

इस प्रकार सामान्यत: यह कहा जा सकता है कि एक लघुकथा, एक उपन्यास तथा नाटक की समता में, कहीं अधिक विश्वास के साथ चलचित्र के लिए ग्रहण की जा सकती है । कभी-कभी ऐसा भी होता है कि एक चलचित्र, जो किसी नाटक का आधार लेकर बनाया गया है, नाटक से अधिक सुन्दरता से भावाभिव्यक्ति और जो एक चल चित्र, जिसका आधार कोई उपन्यास है, - उपन्यास से कम सुन्दर भाव प्रकाशन करे। लेकिन एक चलचित्र, जो कहानी का आधार लेकर निर्मित किया गया है, दोनों की तुलना में समान होता है । चलचित्र , मूलकथा से सुन्दर भी हो सकता है और नहीं भी । किन्हीं तथ्यों वगैरा से इस कथन को प्रमाणित नहीं किया जा सकता, साधारणत: ऐसा होता है । किसी भी चलचित्र को उत्तमता का आधार उसके लिए समान रूप से उपलब्ध साधनों पर बहुत अधिक निर्भर करता है । ये उपलब्ध साधन, मुख्य रूप से चलचित्र शिल्प का संयोजन करने वाले अनेकानेक सिनेमा उपकरणों के रूप में कथा तथा अभिव्यक्ति के विभिन्न रूपों के आधार पर प्रकट होते हैं। जिनमें बंधकर एक निर्देशक चलचित्र के कथाशिल्प को सुन्दरतम अभिव्यक्ति प्रदान करने का प्रयत्न करता है ।

किसी भी उपन्यास अथवा कहानी के आधार पर निर्मित किये जाने वाले चलचित्र में इसप्रकार के परिवर्तन अपरिहार्य होते हैं । माध्यम की भिन्नता के कारण इन परिवर्तनों का होना आवश्यक होता है । एक सुन्दर चलचित्र के निर्माण के लिए ऐसे परिवर्तनों का होना अस्वाभाविक नहीं माना जा सकता और यह परिवर्तन काव्य कथा में भी अधिक सरल है ।

चलचित्र और साहित्य में जहाँ मूलत: मूर्त- अमूर्त, भौतिक- अभौतिक, स्थूल- सूक्ष्म का अन्तर होता है, वहाँ एक चलचित्र नाटक

१- धर्मयुग - ३ अप्रैल १९६६, पृ० १६ (सारांश)

भी है, क्योंकि यह पुनरावृत्ति करता है , एक उपन्यास भी है, क्योंकि इसकी प्रणाली वर्णनात्मक एवम् व्याख्यात्मक होती है और क्योंकि यह विभिन्न प्रकारों से कहानी कहता चलता है, इसलिए यह कहानी भी है । वैसे चलचित्र का प्रमुख गुण नाटक के बहुत ही महत्वपूर्ण गुण नाटकीयता से ही सम्बन्धित होता है। किसी चलचित्र को नाटक की भाँति ही सामूहिक रूप से भीड़ के एक सदस्य के रूप में देखा जा सकता है । नाटक के दृश्य- बिम्ब जिसतरह दर्शकों की मनोदशा को तुरन्त आकर्षित करते हैं, उसी तरह चल-चित्र के दृश्य बिम्ब अपना तीव्रगामी और व्यापक प्रभाव की अन्तश्चेतना पर डालते हैं । उपन्यास और कहानी में, जिन जीवन अनुभूतियों की कल्पना की जाती हैं, उन्हें पाठक की काल्पनिक शक्ति पर छोड़ देना पड़ता है । प्रत्येक पाठक अपनी कल्पनाशक्ति के अनुरूप जीवन की विविधता और विचित्रता की कल्पना अपनी सामर्थ्य के आधार पर करता है, परन्तु चलचित्र में जीवन की विविध अनुभूति चलचित्र के दृश्यों, प्रसंगों और चरित्रों के रूप में होती है -- इसतरह चलचित्र की सीमायें, नाटक की संकुचित सीमाओं से कहीं अधिक विशाल होती है तथा उनके अधिक भव्य दृश्यावलियाँ प्रस्तुत की जा सकती हैं । इस तरह एक चलचित्र को नाटक, उपन्यास और कहानी से कहीं अधिक सजीव और आकर्षित करने वाली विधा स्वीकार किया जाना चाहिए ।

डा० रिखबदास जैन के शब्दों में --" जो कथानक साहित्यिक कृति के रूप में होते है, उनमें लोक का उल्लास, उसकी पीड़ा, दिन-प्रति-दिन की मानसिक समस्यायें, अनुभव आदि प्रकट होते है । वास्तव में जीवन कथानक मे लिपिबद्ध रहता है, किन्तु फिल्मों में वही साकार हो उठता है । यही साकारता का रूप फिल्मों और साहित्यिक कृतियों में एक अन्तर उत्पन्न कर देता है । इसी भिन्नता के कारण साहित्य और फिल्में जीवन की अभिव्यक्ति और अभिव्यंजना के सशक्त दर्पण होते हुये भी भिन्न रहे हैं ।"[१]

१- 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' २१ मई ,१९६७ , पृष्ठ ४२

अत: चलचित्रों में साहित्यिक आधार तो ग्रहण किया जा सकता है , पर अभिव्यक्ति पक्ष में दोनों विधाओं में अन्तर है । एक चलचित्र किसी भी नाटक, उपन्यास और कहानी का आधार ग्रहण करके भी, उनको अपने ढंग पर अभिव्यक्ति करता है , जो उसे एक पृथक् ललित कला का स्तर प्रदान करती है ।

::::::::-::::::::

अध्याय - १

हिन्दी चलचित्र : उद्‌भव एवम् विकास

हिन्दी चलचित्र : उद्भव एवम् विकास

चलचित्र के उद्भव एवम् विकास की कहानी अत्यन्त मनोरन्जक है। इस कला का जन्म १९वीं शताब्दी में हुआ था। उस समय इसके लिए `किनेमैटोग्राफ` शब्द का प्रयोग किया जाता था। `किनेमैटोग्राफ` मूल रूप में यूनानी भाषा का शब्द है। इसमें `सिनेमा` शब्द का अर्थ `गति` (MOTION) और `ग्राफ` (GRAPH) शब्द काप्रयोग `आलेखन` के अर्थ में लिया गया है। अत: `किनेमैटोग्राफ` शब्द का प्रयोग वहाँ गतिमान के अर्थ में होता है।

सिनेमा में भी उसके रजत-पट पर गत्यात्मकता ही उसके सौन्दर्य का प्रमुख और मूल आधार है। अत: सिनेमा के लिए यह शब्द उपयुक्त होने से चल पड़ा। फ्रेन्च भाषा में `किनेमैटोग्राफ` शब्द का पर्यायवाची शब्द `सिनेमैटोग्राफ` (CINEMATOGRAPH)[१] है। इसी `सिनेमैटोग्राफ` शब्द का संक्षिप्त रूप[२] आज का `सिनेमा` शब्द है, जिसका हिन्दी रूपान्तर `चलचित्र`[३] है।

चलचित्र अधुनातम् वह साधन यंत्र है, जिसमें द्रुतगति से एक दृश्य-माला इसप्रकार दिखलाई जाती है कि दृष्टि-स्थिरता के सिद्धान्त के कारण द्रष्टा को उसमें एक अबाधगति एवम् सुसम्बद्धता प्रतीत होने लगती है।

१- A New English Dictionary On Historical Principles.
— Edited by James A.H. Muray, Vol. V, H to K.
Clarendon Press, Oxford, Page-703.

२- Dictionary Of World Literature.
— Edited by T. Shipley, New York, Page - 97.

३- Comprehensive English & Hindi Dictionary.
Edited by Dr. Raghuvir. Page 342.

चलचित्र-कला के द्वारा नेत्रों के सामने आने वाले स्थिर-चित्र भी द्रुतगति से अग्रसरित होने के कारण गत्यात्मक प्रतीत होते हैं। इस आभास का मुख्य आधार मनुष्य की दृष्टि- सम्बन्धी एक विशेषता है, जिसे दृष्टि- स्थिरता कहते हैं। जब हम किसी चित्र या दृश्य को देखते हैं तो हमारी आँखों के सामने Retina पर जो चित्र अंकित होता है, वह १।१६ सेकेण्ड तक बना रहता है। यही दृष्टि-स्थिरता का नियम अथवा सिद्धान्त है। इस प्रकार जब एक सेकेण्ड में सोलह चित्रों की गति से लगातार चित्र आँखों के सामने गुजरते हैं, तब दृष्टा को उन चित्रों में शान्ति की अनुभूति होने लगती है। चित्र-कला का यही आधार है जो चित्रपट पर दिखाई देता है।

दृष्टि-स्थिरता के सिद्धान्तों की महत्ता पर विभिन्न शोध कार्य हुए जिनमें प्रमुख रूप से पी०एम० रागेट, जान हर्शल, माइकेल फैराडे के नाम शोधकर्ता के रूप में उल्लेखनीय हैं।

सन् १८२६ में जे.ए.पेरिस ने `थाम ट्राप` खिलौने के माध्यम से दृष्टि स्थिरता के सिद्धान्त के आधार पर कुछ चित्र प्रस्तुत किए।

सन् १८२६ में जे.ए. प्लेटो ने `फेनाकिसटिस्कोप` नामक यंत्र तैयार किया। १८३४ में डब्ल्यू० जी० हार्नर ने इस दिशा में एक अभिनव प्रयोग किया जो आगे चलकर `जेट्राप` नाम से अत्यधिक प्रचलित हुआ। यह यंत्र एक गोल सिलिंडर (cylinder) के रूप में था। इसके निचले हिस्से में घोड़े और आदमियों के चित्र इस प्रकार लगाये गये थे कि सिलेन्डर के घुमाने से चलते हुए प्रतीत होते थे। `जेट्राप` में कुछ कमियां थी। एक तो इसमें जो चित्र लगाये जाते थे, वे तूलिका द्वारा हाथ से चित्रित किये जाते थे, जिसमें एक- से न होने के कारण `जेट्राप` में देखते समय कुछ अवरोध सा होता था। दूसरी त्रुटि यह थी कि इस यंत्र में एक समय में एक व्यक्ति ही चित्र दर्शन का आनंद ले सकता था, अनेक नहीं।

'जैट्राप' के पहली कमी को कैमरे के आविष्कार ने दूर कर दिया। इस कमी को दूर करने का श्रेय अंग्रेज फोटोग्राफर एडवर्ड मैब्रिज था। उसने एक पंक्ति में पचास कैमरे लगाकर एक भागते हुए घोड़े के चित्र लेने में सफलता प्राप्त की। इस सफलता से प्रेरित होकर मैब्रिज ने 'जूफेस्कोप' नामक यंत्र बनाया, जिसे चलचित्रों के कैमरे का प्रारम्भिक रूप कहा जा सकता है।

चलचित्रों के निर्माण के विकास में टामस एल्वा एडीसन का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उन्होंने इस क्षेत्र में प्रयोग करके 'किनेटोस्कोप' नामक यंत्र का निर्माण किया तथा १८६१ में उसे पेटेन्ट करा लिया। इसमें भी कुछ त्रुटियाँ थी। पहली त्रुटि यह थी कि इसमें चित्र इतने छोटे-छोटे दिखते थे जो दूरबीन की सहायता से भी छोटे ही दिखते थे। दूसरी त्रुटि यह थी कि एक व्यक्ति ही चित्रों को देखने का आनन्द ले सकता था।

१८८६ में जार्ज इस्टमैन ने सिलोलाइड फिल्म का निर्माण किया। इससे 'किनेटोस्कोप' के लिए जो अलग - अलग प्लेटों पर चित्र लेने तथा कभी-कभी उसकी टूट- फूट की असुविधा होती थी, वह समाप्त हो गई। किनेटोस्कोप पर सिलोलाइड की नई फिल्म चढ़ाकर एडीसन ने १८८६ में The West Orange (वेस्ट ओरेंज) में चित्र प्रदर्शित किया, अत्यधिक सफलता प्राप्त हुई और भविष्य में चलचित्रों के निर्माण की संभावनाएं और दृढ़ हो गयी।

इतना सब होते हुए भी चलचित्र जनसमुदाय के लिए नहीं बन सका था, यह कमी रह गयी थी जिसको पूर्ण किया प्रोजेक्टर के अविष्कार ने।

इस सन्दर्भ में वाशिंगटन के थामस ऐरमट कानाम विस्मृत नहीं किया जा सकता, जिन्होंने १८६५ में आधुनिक प्रोजेक्टर की विशेषताओं

की खोज निकाला । उन्होंने एक मशीन बनाई, जिसका प्रथम प्रदर्शन काटन स्टेट्स प्रदर्शनी एटलान्टा में हुआ । इसने एडीसन के `किनेटास्कोप` के चित्रों का सफल प्रदर्शन किया । यह यंत्र आगे चलकर `वीटास्कोप`[१] कहा जाने लगा ।

चलचित्र कला में धीरे- धीरे विकास हो रहा था । १८९६ में न्यूयार्क में एडीसन ने किनेमेटोग्राफ`[२] का प्रथम प्रदर्शन सार्वजनिक रूप में किया । एडीसन ने जो फिल्में बनाईं, उनमें कथा न थी , वरन् स्फुट दृश्य थे । कुछ वर्षों पश्चात् अर्थात् १९०३ में पहली बार एक ऐसी फिल्म निर्मित हुई, जिसमें एक सजीव घटना का चित्रण था । इस फिल्म का नाम`लाइफ आफ एन अमेरिकन फायर मैन` था । कुछसमय पश्चात `दी ग्रेट ट्रेन राबरी` नामक फिल्म बनी, जो एक लघु कथा पर आधृत थी । एडविन एस०पोर्टर की इस फिल्म को रूपक चित्रों की प्रथम कड़ी कहा जा सकता है ।

१- देखिए- Encyclopaedia Britannica Vol. XV, Page-856.

२- देखिए - भारतीय फिल्मों की कहानी- बच्चन श्रीवास्तव , पृष्ठ- १-४

३- देखिए -

This picture occupying a whole real in length established the Story-picture and founded art of narration for the motion picture and placed them on an independent basis.

—Encyclopaedia Britannica Vol. XV Page 859.

अमेरिका के अतिरिक्त इंगलैण्ड और फ्रान्स जैसे देशों में भी चलचित्र का निर्माण- कार्य और प्रदर्शन बड़े उत्साह और जोर-शोर से प्रारम्भ हो गया था । सन् १६०३ में ब्रिटेन में 'लाइफ एण्ड डैथ आफ चार्ल्स पीयर्स' का निर्माण हुआ । इसके कुछ समय पश्चात् 'रेस्क्यूड बाई रिवर' नाम की फिल्म वहाँ बनी। इसे ब्रिटेन का प्रथम चित्र कहा जाता है ।[१]

लुमियरे- बन्धुओं - ने फ्रान्स में इस क्षेत्र में सराहनीय कार्य किये सन् १८६५ ई० में इन लोगों ने सिने मैट्रोग्राफ मशीन तैयार की जिसमें कैमरा, प्रिन्टर तथा प्रोजेक्टर सब जुड़े थे ।[२] इस यंत्र की मुख्य विशेषता यह थी कि इसे आसानी से लाया- लेजाया जा सकता था । इन बन्धुओं ने १८६५ में पेरिस में जनता के सामने 'ग्रांड -कैफ़े' चित्र का प्रदर्शन किया । इस प्रदर्शन में उन्हें अपार सफलता मिली चलचित्र को व्यापार का रूप देने में इन बन्धुओं का योगदान अत्यन्त सराहनीय है।

१६वीं शताब्दी के उतरार्ध में एडीसन और लुमियेर- बन्धुओं द्वारा प्रदर्शित इन छोटे-छोटे चलचित्रों को प्रदर्शनों को चित्रपट का प्रथम चरण कहा जायेगा ।

विदेशों में सिनेमा का विकास जिस क्रमबद्ध रूप में हुआ, वैसा भारत में नहीं हो सका । सत्यजितराय के आगमन के पूर्व तक स्थिति यह थी कि सिनेमा की भाषा और उसकी अभिव्यक्ति के ढंग से भारतीय फिल्मकार अपरिचित थे । विदेशों में होने वाले तकनीकी प्रयोगों नई उपलब्धियों और सिनेमा की नई प्रवृत्तियां आदि का उन्हें कोई अता पता नहीं था। इस अनभिज्ञता का मुख्य कारण यह है। कि भारतीय और विशेष रूप से हिन्दी चलचित्रों का विकास पश्चिमी देशों से सर्वथा भिन्न ~~प्रकरिल~~ रूप में हुआ ।

१- देखिये- भारतीय फिल्मों की कहानी- बच्चन श्रीवास्तव,पृ० १६
२- देखिये- इनसाइक्लोपीडिया आफ फोटोग्राफ- संपादक फ्रेडरिक एवम् अन्य, पृष्ठ ११६

२०वीं शताब्दी के प्रारम्भ में यह स्पष्ट होगया था कि सिनेमा मनोरंजन का अत्यन्त लोकप्रिय साधन है, किन्तु उस समय जो फिल्में हमारे देश मे प्रदर्शित होती थी। वे सब विदेश से बनकर आती थी। सिनेमा की लोकप्रियता और बढ़ते हुए प्रभाव ने भारतीयों को स्वयं फिल्म निर्माण की आवश्यकता अनुभव करायी। अत: बहुत से लोग इस क्षेत्र में काम करने लगें।

इस दिशा में सबसे पहले दादा फाल्के साहब का प्रयत्न सराहनीय है। जिस समय दादा साहब ने फिल्म निर्माण के क्षेत्र में पदार्पण किया था उस समय भारत में इस नूतन कला के यंत्र उपलब्ध न थे। अत: वे इंग्लैण्ड गये और वहाँ से एक प्रोजेक्टर, एक कैमरा तथा एक फिंटिंग मशीन लेकर १९१२ के प्रारम्भ में भारत लौटे।

उन्होंने एक छोटे से चित्र का निर्माण किया और इस लघु चित्र का नाम (" The Growth Of A Plant " था) जो पचास फुट लम्बा था। दादा फाल्के के इस प्रयास की सर्वत्र प्रशंसा हुई।

कुछ समय उपरान्त उन्होंने राजा हरिश्चन्द्र के जीवन वृत को आधार बनाकर लम्बी फिल्म का निर्माण शुरु किया। राजा हरिश्चन्द्र की भूमिका स्वयं उन्होंने की, और तारामती की भूमिका महिला पात्र के अभाव में ए०सालुके नामक पुरुष को करनी पड़ी, और रोहिताश की भूमिका उनके पुत्र भालचन्द ने की। यह चलचित्र १७ मई १९१३ को बम्बई के सैण्डहर्स्ट रोड पर स्थिति कोरोनेशन थियेटर में प्रदर्शित कियागया था।[१]

१- इण्डियनटाकी १९३१-५६, पृ० २०(फाल्के :भारतीय चलचित्र उद्योग के पिता हरीश एस०बूच)तथा पृ० ७५ और ७८ भी देखे, फिल्मफेयर, मार्च८, १९६३, पृ० १५ (भारतीय चलचित्रों के पचास वर्ष-बी०डी०गर्ग) "भारतीय फिल्मों की कहानी पृ०१३ (बच्चन श्रीवास्तव), पृथ्वीराज कपूर अभिनंदन ग्रन्थ पृ० ५६(द्वारिका प्रसाद शास्त्री) फिल्म इन इण्डिया, पृ०१(सूचना-और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार। फिल्म आकाईव्ज, फिल्म इन्स्टीट्यूट आफ इण्डिया, पूना।

साथ ही इस चलचित्र को इसके हिन्दी टाईटिल्स के कारण भारत का प्रथम हिन्दी चलचित्र[१] कहा जायेगा ।

कतिपय दावेदार राजा हरिश्चन्द्र चलचित्र को भारत का प्रथम चलचित्र नहीं मानते हैं । येँ दावेदार निम्न है:-

१- सखाराम ने अपना दावा प्रस्तुत करते हुये कहा था कि फाल्के के इस चलचित्र से पूर्व १८९७ में उन्होंने एक लघु चित्र निर्मित किया था जो मल्ल युद्ध पर आधारित था ।[२]

२- बम्बई के आर०जी० तोरणे का दावा था, कि उन्होंने १९०७ में `सन्त पुण्डलिक` नामक एक चलचित्र का निर्माण किया था ।

३- कलकत्ता निवासी हीरालाल सेन का दावा था कि उन्होंने १९०० में लोक प्रिय नृत्य- नाटक `अलीबाबा` के कतिपय दृश्यों को चित्रित किया था। तथा १९११ में महारानी विक्टोरिया के भारत आगमन पर दिल्ली दरबार पर उन्होंने एक चलचित्र बनाया था।[२]

४- कतिपय विद्वानों का विचार है कि श्री ज्योतिष सरकार ने १९०५ में `बंग- भंग` के जन आंदोलन एक लघु चित्र निर्मित किया था।[३]

५- कुछ लोगों का विचार हैकि १९११ में कारन्धर पाटनकर, और दिवाकर ने `सावित्री` नामक चलचित्र का निर्माण किया था, परन्तु असफल होने के कारण यह प्रकाश में नहीं आ सका। १९१२ में ही नारायणराव पेशवा के जीवन पर एक अन्य चलचित्र भी निर्मित किया गया पर वह भी प्रकाश में न आ सका ।[४]

१- भारतीय चलचित्र- डा०महेन्द्र मित्तल, पृ०३०, अलंकार प्रकाशन दिल्ली।
२- फिल्मफेयर मार्च २२, १९६३, पृ०१९(प्रादेशिक चित्रपट के पचास वर्ष- (बी०डी०गर्ग), फिल्मफेयर, जुलाई-, १९६६, पृ०४७(`निर्देशक का चित्रपट`- आर०डी०बंसल), पृथ्वीराज कपूर अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ०२९(बंगला चित्रपट`- विमल बोस, ए०ए०)।
३- भारतीय फिल्मों की कहानी- बच्चन श्रीवास्तव, पृ० ११
४- पृथ्वीराज कपूर अभिनन्दन ग्रंथ - द्वारिका प्रसाद शास्त्री, पृ० ५६१

६- एक अन्य सूचना के अनुसार भारत में सर्वप्रथम निर्मित होने वाला लघु चित्र `पैनोरमा आफ कैलकटा` था ।[१]

लेकिन उपर्युक्त भावों में ठोस प्रमाणों आदि का पूर्णतया अभाव है । निश्चित प्रमाण केवल दादा साहब फाल्के के चलचित्र `राजा-हरिश्चन्द्र` के लिए ही प्राप्त होते हैं । एक अन्य सूचना के अनुसार दादा फाल्के के इस चलचित्र को हिन्दी चित्रपट का सर्वप्रथम हिन्दी चलचित्र कहा गया है । लेकिन हिन्दी चलचित्र कहने के लिए कोई प्रमाण आदि इस सूचना से प्राप्त नहीं होते । जबकि प्रमाण यही है कि इस चलचित्र में कथा-विराम को दर्शाने के लिए `हिन्दी टाइटिल्स` का प्रयोग किया गया है । और साथ में अंग्रेजी अनुवाद भी दिया गया है। इस तरह मराठी भाषा होते हुए भी दादा साहब फाल्के ने महात्मा गाँधी की भाँति ही हिन्दी भाषा के राष्ट्रव्यापी स्वरूप को पहचान लिया था और उसी को उन्होंने अपने इस प्रथम मूक चलचित्र को समझने का माध्यम स्वीकार किया था। मराठी और बंगाली भाषा का प्रयोग उन्होंने नहीं किया ।

दूसरे , इस चलचित्र को उन्होंने भरतमुनि की नाट्य परम्परा के अनुरूप ही रंगमंचीय स्वरूप प्रदान करके हिन्दी साहित्य की नाट्य परम्परा के रूप में हमारे सामने रखा था ।

साथ ही इस चलचित्र के निर्माण की एक पूरी रील भी आज उपलब्ध होती है ।

अत: हिन्दी चित्रपट के इतिहास का समारम्भ इसी चलचित्र से माना जाना चाहिए ।१९१७ तक इस क्षेत्र में दादा साहब फाल्के ही एक मात्र निर्माता थे ।

१- पृथ्वीराज कपूर अभिनन्दन ग्रन्थ- द्वारिकाप्रसाद शास्त्री- पृ० ५६

राजा हरिश्चन्द्र की सफलता से प्रेरित होकर उन्होंने तेईस चलचित्रों का निर्माण किया। जिनमें कुछ के नाम इस प्रकार हैं:- 'भस्मासुर मोहिनी', 'सावित्री', 'कृष्ण जन्म', 'कालिया मर्दन', 'लंकादहन' आदि ।

दादा साहब फालके के निर्मित चित्रों पर भारतीय चलचित्र की कहानी सन् १९१२-१३ से प्रारम्भ होती है दादा साहब फालके की पहली फिल्म 'राजा हरिश्चन्द्र' इसकी पहली कड़ी है । ये फिल्म-निर्माण के प्रारम्भिक वर्ष थे जिनमें मूक अभिनय होता था और आंगिक चेष्टाओं के द्वारा भावाभिव्यक्ति करने का प्रयत्न किया जाता था । सन् १९१७ ई० तक दादा साहब इस क्षेत्र मे अकेले थे । उनके चित्रों ने यह सिद्ध कर ही दिया था कि फिल्म निर्माण एक लाभदायक व्यवसाय भी है । अत: इस समय के बाद और लोग भी द्रुतगति से इस क्षेत्र में उतर आये तथा उन्होंने अनेक नाटक- कम्पनियाँ स्थापित कर फिल्म निर्माण का कार्य प्रारम्भ कर दिया, परन्तु दादा फालके को फिल्म की शक्ति और उसके उपयोग की जो समझ थी वह उनके समकालीन चलचित्रों के निर्माताओं में नहीं थी ।

दादा फालके ने फिल्म का निर्माण जन साधारण के लिए किया । उनकी दृष्टि में फिल्म का दर्शक उच्चवर्गीय संस्कार युक्त सभ्यता और कलाभिमानी सहृदय न होकर, सामान्य व्यक्ति था। इस सामान्य व्यक्ति की रुचियों, आकांक्षाओं, संस्कारों, अन्धविश्वासों और सामाजिक व्यवहार के अनुकूल ही उन्होंने अपनी फिल्म का स्तर रखा। अपनी प्रथम फिल्म से ही फालके ने इस तथ्य की घोषणा कर दी कि इस नवजात कला की गृहीता सामान्य जन हैं । सिने-माध्यम में दृष्टि-विषय को व्यापक, मोहक, चमत्कार पूर्ण और मनचाहे ढंग से दिखा सकने की अपूर्व क्षमता है। फालके ने इस क्षमता का उपयोग, पौराणिक कथाओं को रजत-पट के माध्यम से प्रस्तुत करने में किया । भारतीय पौराणिक

आख्यानों में दार्शनिक पक्ष के अतिरिक्त जो चमत्कारों का पक्ष है, वह सिनेमा के बहुत अनुकूल था। किसी मुनिकी कृपा से चुहिया का स्त्री रूप में परिवर्तित हो जाना, या उनके शाप से किसी मनुष्य का पशु योनि में चला जाना, अगस्त मुनि का समुद्र-पान, शंकर के नेत्र से कामदेव का नाश कृष्ण का उँगली पर पर्वत उठाना , युद्धभूमि में मंत्रों के प्रयोग से शत्रु का नष्ट नाश आदि न जाने कितने ही उदाहरणों से रामायण, महाभारत, श्रीमद् भागवत और दूसरे पुराण भरे पड़े हैं , दैवी शक्ति का एक ही अर्थ है - चमत्कार पूर्ण कार्य । धार्मिक प्रवृति के कारण जन-मानस इन चमत्कारों को सहज भाव से स्वीकार कर लेता है । फालके को सिने- माध्यम में दैवी शक्ति के चमत्कारों को प्रदर्शित करने की अपार संभावना दिखाई दी । मेलिए ने अपनी फिल्मों में जादू के करिश्मे दिखाए थे, परन्तु फालके ने उन करिश्मों को दैवी- चमत्कार रूप देकर जन-मानस की धार्मिक भावना से जोड़ दिया । भारतीय रजत पट की पहली फिल्म से ही फिल्मकार का वह कार्य शुरु हुआ जिसे अंग्रेजी में exploit करना अर्थात अपने स्वार्थ के लिए किसी वस्तु का उपयोग करना कहते हैं । दर्शकों की धार्मिक भावनाओं को उभाड़कर धन कमाने की फिल्म निर्माता की नीयत का संकेत इसी फिल्म से मिल जाता है । जिन दैवी शक्ति के कार्यों और चमत्कारों को सामान्य जन सदियों से सुनता आया था, एक मात्र फिल्म ही ऐसी कला थी जो उसे प्रत्यक्ष कर सकती थी। ऐसी कला की ओर जन सामान्य का उन्मुख होना स्वाभाविक ही थी। फालके की सबसे बड़ी विशेषता जहाँ एक ओर सिने-माध्यम की क्षमता की पहचान है वहीं दूसरी ओर सामान्य जन की भावनाओं, रुचियों और विचारों की पकड़ है । इसीलिए फालके ने अपनी फिल्मों में पुराण के उसी पक्ष को लिया है जिसमें कहानी है ,चमत्कार है, भावात्मक स्थितियां हैं जिन्हें सामान्य व्यक्ति सरलतासे हृदयंगम कर सकता है ।

दादा फालके के समय अन्य फिल्म कम्पनियोंकी स्थापनाएँ हुई । जिनमें हिन्दुस्तान फिल्म कम्पनी, फ्रेन्ड एण्ड कम्पनी, कोहनूर फिल्म कम्पनी, तथा कृष्णा फिल्म कम्पनी विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

हिन्दुस्तान फिल्म कम्पनी के `कृष्ण जन्म`, `कालिया मर्दन`, चित्र अत्यधिक प्रसिद्ध है, इनका श्रेय दादा फालके को है क्योंकि वे इस कम्पनी सेजुड़े हुए थे। बाद में वे इससे अलग हो गये। फ्रेन्ड कम्पनी ने `राम बनवास` चित्र का निर्माण किया, पर उसे सफलता प्राप्त नहीं हुई। इस कम्पनी का एक अन्य चित्र `सती देवयानी` जनता द्वारा बहुत पसंद किया गया।

बाबूराव पेन्टर ने महाराष्ट्र फिल्म कम्पनी की स्थापना की। भारतीय फिल्म कला के विकास में योगदान देने की दृष्टि से यह संस्था चिरस्मरणीय रहेगी। इस कम्पनी ने `सैरन्ध्री` नामक चित्र का निर्माण किया। यह पहला भारतीय चित्र है, जिसके कुछ दृश्य सरकार द्वारा काटे गये थे। `सिंहगढ़` इस कम्पनी की अत्यधिक प्रसिद्ध फिल्म थी। जिसने लोकप्रियता के झण्डे गाड़े। इस कम्पनी का एक प्रमुख चित्र `माया बाजार` प्रदर्शित हुआ, जिसमें पहली बार ट्रिक फोटोग्राफी चमत्कार दिखाया गया था।

फ्रेन्ड एण्ड कम्पनी ने `सती पार्वती`, `भक्त विदुर` आदि सफल चित्र बनाये।

कोहनूर कम्पनी के `भीमसेन`, `गुण सुन्दरी` `मालती माधव` तथा `सती अनुसुईया` सफल फिल्में थी।

१९१७ ई० से लेकर १९२५ तक की फिल्म कम्पनी और उसके चित्रों पर दृष्टिपात करने से यह स्पष्ट हो जाता है। कि पश्चिमी भारत में फिल्म व्यवसाय काफी फैल चुका था और उत्साही निर्माताओं के द्वारा अनेक चित्रों का प्रदर्शन किया जा चुका था। किन्तु यह व्यवसाय अब ऐसा नहीं रह गया था, जो भारत के विभिन्न प्रदेशों और दिशाओं में बिना फैले रह जाता। इसीलिए जिन दिनों पश्चिमी भारत में उक्त फिल्म कम्पनियाँ अपना कार्य द्रुतगति से कर रही थी, लगभग उसी समय बंगाल, मद्रास, और पंजाब में भी लोगों ने फिल्म कम्पनियाँ

स्थापित कर दी थीं। और फिल्म- प्रदर्शन द्वारा जनता का मनोरंजन किया था ।

फिल्म निर्माण के क्षेत्र में बंगाल की तत्कालीन दो फिल्म संस्थायें विशेष रूप से उल्लेखनीय है --

(१) मदन थियेटर , (२) इण्डो ब्रिटिश फिल्म कम्पनी ।

मदन थियेटर का पहला चित्र `नलदमयन्ती` था इस संस्था की अन्य फिल्मों में `बिल्वमंगल`, `इन्द्रसभा` तथा `स्लैव गर्ल` आफ आगरा उल्लेखनीय हैं ।

इण्डो ब्रिटिश फिल्म कम्पनी ने `इंग्लैण्ड रिटर्ण्ड` नामक चित्र बनाया था । बंगाल की इन दो फिल्म कम्पनियों से प्रेरित होकर दक्षिण भारत के लोगों ने भी फिल्म निर्माण किया। १६२१ में दक्षिण भारत में `भीष्म - प्रतिज्ञा` नामक फिल्म बनी। इसके अतिरिक्त दक्षिण भारत की कुछ और फिल्म निर्मात्री संस्थाये उल्लेखनीय है ।- एसोसियेटेड फिल्म कम्पनी, जनरल पिक्चर्स कॉरपोरेशन आदि ।

बम्बई, कलकत्ता, और मद्रास से प्रभावित होकर पंजाब ने भी फिल्म निर्माण की और कदम रखा । सन् १६२४ के आस-पास पहले पहल इस दशा में प्रयास हुआ । वहाँ - जिस फिल्म निर्मात्री संस्था की स्थापना हुई थी, उसका नाम था-`दी ग्रेट ईस्टर्न फिल्म कोरपोरेशन लिमिटेड, इसके संस्थापको में श्री हिमांशु राय का नाम अत्यधिक महत्वपूर्ण है । यही हिमांशु राय थे, जिन्होंने आगे चलकर बौम्बे टाकीज जैसी विख्यात फिल्म संस्था का कुशल संचालन किया। तथा अशोक कुमार और देविका रानी जैसे जोड़ी कलाकार हिन्दी चलचित्र जगत को दी ।

`लाइट आफ एशिया` `लव आफ ए मुगल प्रिंस` नामक इस कम्पनी ने दो फिल्में बनाई जिनमें लाइट आफ एशिया का अद्भुत

सफलता मिली । यह प्रथम कलात्मक भारतीय चित्र था। जिसने हमारे देश की चलचित्र कला को विश्व के लोगों के सामने रखा और उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा प्राप्त की । और यह फिल्म निरन्तर दस महीने तक चली । इस प्रकार भारतीय फिल्म उद्योग का विकास सन् १९२५ ई० के आस-पास काफी हो चुका था । देश के उत्तर दक्षिण ,पूर्व और पश्चिम,- सभी ओर अनेक फिल्म कम्पनियों द्वारा फिल्म निर्माण का कार्य होने लगा । जगह जगह पर नये नये सिनेमा घर बन गये । ज्यों-ज्यों सिनेमा उद्योग का विकास हुआ त्यों-त्यों एक से एकसुन्दर सिनेमा घर खुलते गये, सिनेमा उद्योग की इस द्रुतगति को देखकर सरकार ने सन् १९१८ मे पहली बार 'सिनेमेटोग्राफ' एक्ट पास किया। दो वर्ष पश्चात ही सन् १९२० में बम्बई में प्रथम भारतीय सेंसर बोर्ड की स्थापना होगयी ।

सन् १९१२ से १९१७ के मध्य बनने वाली दादा फालके के युग की फिल्मों का कथानक पौराणिक था। सन् १९१७ से १९२५ तक बनने वाली अधिकांश फिल्मों का कथानक भी इसी कोटिका था। इसके अतिरिक्त नाटक मण्डलियों के घिसे पिटे पर लोकप्रिय कथानकों को फिल्माने के लिए उस समय निर्माता लोग चुन लिया करते थे । ऐसा करने में उन्हें व्यापारिक दृष्टि से कोई घाटा नहीं होता था कभी-कभी इतिहास के वीर पात्रों की झलक भी दिखाई दे जाती थी । परन्तु निर्माताओं का ध्यान सामाजिक समस्यायें तथा नूतन विषयों की ओर नहीं गया था ।

सन् १९२५ से आगे १९३० तक का समय मूक चित्रों का समृद्ध और विकसित काल कहा जासकता है, जिसे कुछ लोगों ने स्वर्णयुग भी कहा है । [१] इसका प्रमुख कारण यह कहा जा सकता है कि इस युग की फिल्मों मे विषय वस्तु की दृष्टि से विविधता और ठोसपन आया, तथा कला की दृष्टि से निखार भी , समाज और उसकी समस्याओं के चित्रण की ओर झुकाव पहलीबार फिल्म'बीसवी सदी'मे दिखाई पड़ता है 'बगदाद का चोर' रजत जयन्ती मनाने वाला पहला भारतीय चित्र है ।

१- भारतीय फिल्मों की कहानी- बच्चन श्रीवास्तव- पृ० ४६

सन् १९२७ ई० में बम्बई में एक और महत्वपूर्ण तथा प्रसिद्ध फिल्म कम्पनी की स्थापना हुई । उसका नाम था-`इंपीरियल फिल्म कम्पनी`, यह वह फिल्म- निर्मात्री संस्था थी, जिसका हमारे देश के फिल्म- इतिहास में बड़ा योगदान रहा है । इसी कम्पनी ने हमें पहला सवाक् चित्र दिया था । यही वह कम्पनी है ,जिसे प्रथम अंग्रेजी तथा प्रथम सफल रंगीन चित्र बनाने का श्रेय प्राप्त है । कुशल निर्माता -निर्देशक `महबूब और `ए०आर० कारदार` तथा विख्यात कलाकार याकूब इसी कंपनी की उपज है । इस संस्था ने पहला चित्र` मेवाड़ का सिंह` बनाया ।इसकी दूसरी भेंट `ख्वाब-ए मस्ती` थी, जो अपने समय की प्रसिद्ध कृति था। इस कम्पनी की अन्य प्रसिद्ध मूक फिल्में`बाम्ब``सिनेमा गर्ल` तथा `अनारकली` थी । `बाम्ब` की नायिका सुलोचना थी, और निर्देशक आर०एस० चौधरी थे । सेन्सर बोर्ड ने इसके प्रदर्शन की अनुमति नहीं दी थी । क्योंकि उस समय देश में हिंसात्मक आन्दोलन था जिसे इस फिल्म द्वारा और बल मिलने की आशंका थी । अत: `बाम्ब` की काट छांट कर `खुदा का बन्दा` के रूप में प्रदर्शित किया गया था । सिनेमागर्ल` में अभिनेताओं के सिरमौर पृथ्वीराज कपूर (जो अब स्वर्गीय है) पहली बार नायक के रूप में `स्पं-लाइन` नायक महिला के साथ अवतरित हुए थे । सुलोचना को अनारकली के रूप में प्रस्तुत करने वाली इस कम्पनी की `अनारकली` वही फिल्म है । जिसने पंजाब की `ग्रेट ईस्टर्न `फिल्म कारपोरेशन की प्रसिद्ध फिल्म `लव आफ ए मुगल-प्रिंस` से पहले ही बम्बई में प्रदर्शित होकर उसे पूर्ण विफल बना दिया था ।

इस युग की दूसरी फिल्म कम्पनी प्रभात फिल्म कम्पनी के नाम से स्थापित हुयी । इस फिल्म कम्पनी ने `उदय काल`, `महात्मा तुकाराम` ;`दुनिया ना माने``सन्त ज्ञानेश्वर` ;`आदमी ;`रामशास्त्री` , `गोपालकृष्ण`, `खूनीखंजर`, `चन्द्रसेना` , `जुल्म`आदि । फिल्मों का निर्माण किया, जिन्हें वर्षों तक नहीं भुलाया जा सकता है । और अपने समय की अत्यन्त कलापूर्ण सफल रचनायें मानी जाती है।

इस काल की रणजीत फिल्म कम्पनी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इस कम्पनी के संस्थापक 'चन्दूलाल शाह' थे। रणजीत फिल्म कम्पनी के द्वारा निर्मित चित्र- 'पति-पत्नी', 'राज-पुतानी', आदि है।

इण्डिया आर्ट प्रोडक्शन फिल्म कम्पनी ने 'बसन्तसेना' नामक चित्र बनाया। यह चित्र भी विदेशों में प्रदर्शित किया गया। इस चित्र ने अद्भुत सफलता प्राप्त की। निःसन्देह, यह अपने समय की उत्कृष्ट फिल्म थी।

सन् १९२५ से १९३० के बीच फिल्म व्यवसाय की सराहनीय प्रगति बंगाल में भी हुयी। सन् १९२७ से ३० के मध्य वहाँ कई जागरूक निर्माता एवम् कलाकार फिल्म क्षेत्र में आये। जिनमें बी०एन० सरकार, देवकीबोस, पी०सी०बरुआ, आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

भारतीय फिल्म उद्योग ने १९३० तक पश्चिमी तथा पूर्वी भारत में मूक चित्रों के क्षेत्र में अच्छी प्रगति की। इस काल में पंजाब का कोई विशेष उल्लेखनीय योगदान नहीं रहा।

इसी समय पश्चिमी संसार के वैज्ञानिकों ने चलचित्रों में स्वर उत्पन्न कर दिया। मूक चित्रों के स्थान पर बोलती-गाती फिल्में बनने लगी। यह अद्भुत सफलता थी, जिसने इस क्षेत्र में क्रान्ति कर दी। भारत में सबसे पहले कलकत्ता में एस,प्लेनेड पिक्चर पैलेस में ऐसी बोलती विदेशी फिल्म 'मैलोड़ीक्वीन', प्रदर्शित हुयी। जिसे देखकर द्रष्टा दाँतो तले उँगली दबा गये। फलस्वरूप, भारतीय फिल्म निर्माताओं का भी इस प्रकार से सवाक् चित्र बनाने की ओर ध्यान गया। यहाँ से भारतीय चलचित्र की कहानी एक नया मोड़ लेती है। इससे पूर्व हमें यहाँ मूक फिल्मों के युग की सामान्य विशेषता पर संक्षेप में विचार कर लेना चाहिये। जिससे सवाक् चित्रों की पृष्ठभूमि का स्पष्ट चित्र हमारे सामने आ जाय।

भारत में मूक फिल्मों का युग सन् १६१२ से प्रारम्भ हुआ। और सन् १६३० के अन्त तक समाप्त होगया। सन् १६१३ से १६२५ तक के इस पौराणिक युग में चलचित्रों की पट-कथा पूरी तरह विकसित नहीं हो पायी थी। पौराणिक चलचित्रों पर पारसी थियेट्रिकल कम्पनियों का नाटकीय प्रभाव प्रचुर मात्रा में दिखाई पड़ता था। सन् १६२५ के बाद भारतीय चलचित्र के इतिहास में मूक चलचित्रों का स्वर्णयुग प्रारम्भ होता है। सन् १६२५ से १६३० तक के मध्य अधिकतर ऐतिहासिक चलचित्रों का प्रदर्शन किया गया। विशेष रूप से महाराष्ट्र के कतिपय `वीर मराठों` और राजस्थान के कुछ लोकप्रिय प्रणय प्रसंगों पर ऐतिहासिक चलचित्रों का निर्माण किया गया। जिनमें पृथ्वी वल्लभ, अनारकली, उदयकाल, राजपूताना, बसन्तसेना, चित्तौड़ की पदमिनी आदि चलचित्र विशेष रूप से उल्लेखनीय कलात्मक चित्र थे।

इस समय की राजनैतिक और सामाजिक चेतना का प्रभाव चलचित्रों पर पड़ा था। इससे पूर्व के पौराणिक चलचित्रों पर जो नाटकीयता और अविकसित शिल्प के दर्शन होते थे। वे यद्यपि हो रहे थे, फिर भी उनमें सुधार होता जा रहा था।

इस प्रकार कह सकते है कि सन् १६१२ से लेकर १६३१ तक मूक चलचित्रों का प्रदर्शन हुआ। पूर्वार्द्ध अर्थात सन् १६१६ तक का समय मुख्यतया पौराणिक, धार्मिक और सन्त महात्माओं की जीवनियों पर आधारित चित्रों का काल है। इन चलचित्रों का ढाँचा वही है, जिसे फाल्के के `हरिश्चन्द्र` के रूप में प्रस्तुत किया था। फाल्के की प्रतिस्पर्धा में अनेक फिल्म कम्पनियों की स्थापना हुई और खोज-खोजकर पौराणिक, धार्मिक विषयों पर फिल्में बनायी जाने लगीं। इस युग की कोई विशेष उल्लेखनीय उपलब्धि नहीं है। सिवाय इसके कि एक व्यवसाय के रूप में सिनेमा प्रतिष्ठित हो गया, और आर्थिक लाभ से आकृष्ट होकर अनेक लोग इस क्षेत्र में आ गये। इस क्षेत्र में प्रवेश करने वाले लोगों में उल्लेखनीय नाम -`बाबूराव` पेंटर का है, जिन्होंने कोल्हापुर

में महाराष्ट्र फिल्म कम्पनी की स्थापना की। पेन्टर खानदानी चित्रकार थे। उन्होंने भारतीय फिल्मों को वह कलात्मक और दृश्यात्मक आकर्षण प्रदान किया, जो अब तक उनमें नहीं आ पाया था। यही कारण है कि उनके योगदान को फाल्के के बाद नम्बर दो पर माना जाता है। चित्रकार होने के नाते पेन्टर मे सिनेमा की अच्छी समझ थी। चित्रों के माध्यम से कहानी कहने की कला का अपेक्षाकृत निखरा हुआ रूप उनकी फिल्मों में दिखायी देता है। पेन्टर के ही संरक्षण में रहकर वृही०शान्ताराम ने प्रशिक्षण प्राप्त किया व्ही० शान्ताराम ने आगे चलकर अनेक फिल्मे बनायी। और चलचित्रों की एक विशेष शैली निर्मित की। मूक युग के उत्तरार्द्ध उत्पत्ति १९२० से १९३० के बीच पौराणिक, धार्मिक, चलचित्रों के अतिरिक्त ऐतिहासिक चित्र, `पृथ्वी वल्लभ`, `सिंहगढ़ ; आदि व्यंग्य चित्र (धीरेन गांगुली का इंग्लैण्ड रिटर्न्ड) सामाजिक समस्या प्रधान चित्र (कन्या विक्रम), नवी सेठानी (आज-कल की वेश्या), जासूसी चित्र (कालानाग), प्रेम प्रधान चित्र, (शीरींफरहाद), लैला-मजनू, अनारकली, आदि) और हलके स्तर के मनोरन्जक चित्र (टैलीफोन गर्ल, टाइपिस्ट गर्ल, बम्बई की बिल्ली, अलादीन आदि) तथा साहित्य पर आधारित चित्र (के०एम० मुन्शी का (पृथ्वी वल्लभ), बंकिम बाबू की (कृष्ण कान्त की वसीयत) (टैगौर का त्याग) विसर्जन आदि प्रदर्शित हुये।

इस युग में मूक युग के सर्वोत्कृष्ट चित्र प्रदर्शित हुए, परन्तु पश्चिमी देशों के ग्रिफिथ, आइजन्स्टाइन, पुडोव्किन, कार्ल ड्रेयर या फ्लैहर्टी जैसे फिल्मकार, जिन्होंने सिने- माध्यम की भाषा और उसके व्याकरण का निर्माण किया, उस माध्यम की बारीकियों को समझा और सिने- विधा को समर्थ तथा स्वावलम्बी कला के रूप में प्रतिष्ठित करने का प्रयत्न किया, भारत में नहीं हुए, और न ही फिल्म को एक माध्यम समझने और उस दृष्टि से उस पर विचार करने और उसका प्रयोग करने का कोई प्रयत्न हुआ। यद्यपि बहुत से फिल्मकार और

कैमरा-मैन विदेशों से प्रशिक्षण प्राप्त कर लौटे थे, परन्तु उनमें भी सिनेमा की अभिव्यक्ति सम्बन्धी मौलिक विशेषताओं का सर्वथा अभाव था । फिल्म की वह विशेषता, जिसके कारण वह पश्चिमी देशों में स्वस्थ विधा के रूप में प्रतिष्ठित हुई और अपनी अभिव्यक्ति सामर्थ्य में साहित्य का मुकाबला करने लगी, उसका यहाँ कोई विकास नहीं हुआ ।

भारतीय फिल्मकारों ने फिल्म को कथा कहने के एक माध्यम के रूप में ग्रहण किया । मुख्य रुप से कथा कहने की उनकी अवधारणा रंगमंचीय नाट्यकला पर आधारित थी। जिस प्रकार रंगमंच पर घटनाएं घटित होती है । उसी प्रकार रजत-पट पर प्रदर्शित की जाने लगी। समय और स्थान का जैसा गतिशील उपयोग पश्चिमी देशों की फिल्मों में दिखाई देता है, उसका हमारे यहाँ सर्वथा अभाव है । भारतीय फिल्मकारों में सिनेमा के ढंग से सोचने की समझ का विकास ही नहीं हुआ । उनकी दृष्टि में फिल्म का तात्पर्य चित्रों के माध्यम से कहानी कहना भर था । किन्तु चित्रों के संकलन द्वारा एक नया अर्थ दिया जा सकता है, या उससे कोई विशिष्ट प्रभाव उत्पन्न किया जा सकता है,इस पर किसी का ध्यान नहीं था । इन फिल्मकारों के सामने मोटे रूप में फिल्म के माध्यम से कहानी कहने की बात थी । इसलिए वे शीघ्र ही पौराणिक , धार्मिक विषयों से हट कर सामाजिक विषयों की ओर प्रवृत हुए । मूक युग की उपलब्धि फिल्म के क्षेत्र में विषय की विविधता का होना है । साहित्यिक ,गैर साहित्यिक, राजनीतिक, सामाजिक सभी प्रकारों को फिल्मों में ग्रहण किया गया । फिल्मकार को कहानी चाहिये थी, वह कहीं से भी ली जा सकती थी । फिल्मकार कहने की तकनीक का यथेष्ठ विकास नहीं हुआ । साहित्यिक कृतियों पर आधारित फिल्मों के हेतु उक्त रचना का रूपान्तरण नहीं था, बल्कि उक्त कहानी के अतिरिक्त और कोई दिलचस्पी नहीं थी। साहित्यिक कृतियों में वर्णितचरित्रों, वातावरण , विचारों आदि में उसकी कोई रुचि नहीं थी। यह कहा जा सकता है कि इस युग के चलचित्र न तो साहित्यिक है और न ही

सिनेमीय । कोई भी विषय लेकर कहानी को रंगमंचीय ढंग से प्रस्तुत करना ही फिल्मकार का एक मात्र अभीष्ठ था ।

प्रथम सवाक् चलचित्र : "आलमआरा"

भारत वर्ष में चलचित्रों के प्रारम्भ के समय परिस्थितियाँ कुछ ऐसी थी कि चलचित्रों को सर्जनात्मक सम्भावनाओं के विकास में कोई विशिष्ट स्तर प्राप्त नहीं था । केवल मनोरंजन - वृति सन्तुष्टि के लिए उसे कहानी कहने का एक माध्यम ही समझा गया था और क्योंकि चलचित्र के माध्यम से कहानी अधिक से अधिक लोगों को बतायी जा सकती थी , इसलिए चलचित्र में ध्वनि के प्रवेश करते ही चलचित्र मनोरंजन का सबसे अधिक सरल और लोकप्रिय साधन स्वीकार किया जाने लगा ।

भारत वर्ष में सर्व प्रथम जिस चलचित्र में ध्वनि का संयोजन किया गया, वह सबसे पहला भारतीय चलचित्र 'आलमआरा' था, जिसे सन् १६३१ में श्री आर्देशर ईरानी की चलचित्र- निर्मात्री संस्था इम्पीरियल फिल्म कम्पनी ने बनाया था । वही वह भारतीय चलचित्र है । जिसके प्रदर्शन से वास्तविक रूप से हिन्दी चित्रपट का शुभारम्भ होता है । इस चलचित्र का प्रदर्शन १४ मार्च १६३१ को मैजेस्टिक सिनेमा, बम्बई में किया गया था ।[१]

हिन्दी चित्रपट के इतिहास में 'आलमआरा' का प्रदर्शन - सन् १६१३ से भारतीय चित्रपट के आरम्भ होने के बाद की सबसे महत्वपूर्ण घटना थी। इस चलचित्र की भाषा के विषय में स्वयं इस चलचित्र के निर्माता श्री आर्देशर ईरानी ने उस समय दिये गये अपने भाषण में

१- इण्डियन टाकी- १६३१, ५६,पृ० ७८ पृ० फिल्म फेयर,मार्च ८,१६१३ पृ० ३१ ,फिल्म फेयर, जनवरी २२,१६६५,पृ० ५७,भारतीय फिल्मों की कहानी, पृ० ४०, पृथ्वीराज कपूर अभिनन्दन ग्रन्थ ,पृ० ६२(उत्तरायण)

स्पष्टीकरण करते हुये कहा था `आलमआरा` की भाषा जो खास उर्दू और जो खास हिन्दी अर्थात दोनों की मिली जुली हिन्दुस्तानी भाषा है, यह हिन्दुस्तानी भाषा हिन्दी भाषा का ही एक रूप है।

इस चलचित्र के प्रदर्शन में आर्देशर ईरानी ने जो प्रयोग किया वह अत्यन्त सफल रहा और अन्य निर्माताागण द्रुतगति से इस व्यवसाय की ओर आकृष्ट हुए। शनैः शनैः मूक चलचित्रों का स्थान सवाक् चलचित्रों ने ग्रहण कर लिया और सन् १९३५ के अन्ततक मूक चलचित्रों का निर्माण पूर्णतया वन्द कर दिया गया।

मोहन भवनानी के निर्देशन में बना इम्पीरियल फिल्म कम्पनी का दूसरा प्रमुख सवाक् चलचित्र `नूरजहां` था। इस ऐतिहासिक चलचित्र को अंग्रेजी और फारसी भाषा में भी रूपान्तित किया गया था। यह चलचित्र भी सन् १९३१ में प्रदर्शित किया गया था।

इम्पीरियल फिल्म कम्पनी के इन सवाक् चलचित्रों ने न केवल हिन्दी चित्र-पट और निर्माताओं को आकर्षित किया था। बल्कि प्रादेशिक भाषाओं में भी चलचित्र निर्माण की शक्तिशाली प्रेरणा प्रदान की थी जिससे बंगाल, मद्रास ,पंजाब और महाराष्ट्र आदि में भी अपनी-अपनी भाषाओं में द्रुत गति से सवाक् चलचित्रों का निर्माण किया जाने लगा और यह व्यवसाय दूब की नाल की भांति फैलने लगा।

बंबई में मैजेस्टिक सिनेमा में १४ मार्च १९३१ को आर्देशर ईरानी की फिल्म `आलमआरा` की प्रदर्शन से मूक युग की समाप्ति और सवाक् युग का आरम्भ हुआ। प्रारम्भ में तो मूक फिल्मों के निर्माताओं ने सवाक् फिल्मों का विरोध किया।परन्तु शीघ्र ही उन्होंने युग की वास्तविकता को स्वीकार कर लिया और कुछ समय में ही मूक फिल्में बनना बन्द हो गई। अमेरिका के वार्नर ब्रदर्स हों या भारत के आर्देशर ईरानी, फिल्म में ध्वनि का आगमन व्यावसायिक

दृष्टिकोण के कारण हुआ । ध्वनि के साथ जहाँ हिन्दी चलचित्रों में संवादों का आगमन हुआ , वहीं गीत, संगीत तथा नृत्य की अपार , संभावनाओं का मार्ग खुल गया । बाद के वर्षों में नृत्य, संगीत तथा गीत फिल्म के अनिवार्य अंग बन गये । प्रथम सवाक् फिल्म होने के अतिरिक्त आलमआरा एक सामान्य फिल्म थी । इस फिल्म की आकर्षण उर्दू के सम्वाद और गाने थे । प्रारंभिक दिनों में ऐसी अनेक फिल्में बनी जिनमें गानों की भरमार थी । उदाहरणार्थ-'लैला-मजनू' में २२ गाने थे तथा शकुंतला मे ४१ । लेखकों , संगीत निर्देशकों तथा गायक अभिनेताओं का महत्व बढ़ गया और वे फिल्म उद्योग के विशेष स्तम्भ बनगए। रंग मंचीय कलाकारों का मान बढ़ गया । कई ऐसे सितारे डूब गए जिनमें गाने एवम् संवाद बोलने की क्षमता नहीं थी । ध्वनि के विशेष प्रवेश के कारण फिल्म आवश्यकता से अधिक रंगमंचीय बन गयी। संवाद, गीत, संगीत, नृत्य आदि के कारण सिनेमा की गतिशीलता बाधित हुयी । घटना क्रम को बढ़ाने के पूर्व फिल्म का हीरो एक गाना गा लेना चाहता था । फिल्म में नृत्य, संगीत, गीत आदि के अवसर खोज- खोज कर निकाले जाते थे । अधिकांश स्थितियों में वे जबरदस्ती ठूंसे गए प्रतीत होते थे । फिल्म का रंगमंचीय झुकाव तो पहले ही था। ध्वनि के आगमन से वह पूर्णत: रंगमंचीय होगया । सवाक् चित्रों के विशिष्ट शिल्प से अब अनभिज्ञ लेखक और निर्देशक रंगमंच के परिचित मार्ग पर चल पड़े । उस युग की फिल्में रंगमंच की सिनेमा की कापी से अधिक कुछ नहीं थी । उन दिनों फिल्मों से मुख्यतया उर्दू लेखकों का सम्बन्ध था इस लिए उर्दू के भारी- भरकम संवादों और शेरो- शायरी से हिन्दी फिल्में लद गयी । ये प्रारम्भिक कठिनाइयां कुछ वर्षों में क्रमश: दूर होती गई और आगे चल कर फिल्मों में ध्वनि का नियंत्रित उपयोग होने लगा।

सवाक् युग के प्रारम्भ में बनी फिल्मों की ध्वनियोजना सदोष एवम् अस्पष्ट थी । उस समय फिल्म में भी ध्वनि भरी जाती थी और रिकार्डों में भी । इस दृष्टि से निर्दोष एवम् सही अर्थों में

'टाकी' माने जाने वाला फिल्म प्रभात फिल्म कम्पनी की 'जलती निशानी' था जिसका निर्देशन जा. तेम्बे ने किया था ।

रंगीन फिल्मों का निर्माण सन् १९३३ ई० से प्रारम्भ हुआ । यह प्रयोग सर्वप्रथम प्रभात कम्पनी के संचालकों ने किया था। व्ही० शान्ताराम के निर्देशन में इस कम्पनी ने 'सैरन्ध्री' नामक रंगीन फिल्म काई, परन्तु यह फिल्म असफल रही । क्योंकि इसके रंग अस्पष्ट थे । इससे कम्पनी को बड़ी हानि उठानी पड़ी ।

सवाक् युग को हम अपने विवेचन की सुविधा के लिए तीन भागों में रख सकते है जो निम्न हैं:--

१- प्रथम सवाक् युग :-

हिन्दी चलचित्रों के मुख्य निर्माण केन्द्र बम्बई और बंगाल थे । यद्यपि इस युग में पंजाब और मद्रास में भी हिन्दी चित्र निर्मित हुए, परन्तु प्रधानत: बम्बई और कलकत्ता की ही रही। बम्बई के प्रमुख फिल्म निर्माताओं में बाम्बे टाकीज के हिमांशु राय, रणजीत फिल्म कम्पनी के चन्दूलाल शाह, वाडिया ब्रदर्स, व्ही०शान्ताराम, महबूब खां, सोहराब मोदी, किशोर साहू, विजय भट्ट, चेतनआनन्द, जागीरदार, और कारदार है । बंगाल के प्रमुख फिल्मकार बरुआ, देवकी बोस, नितिनबोस फणी मजूमदार, विमलराय आदि हैं । मद्रास के हिन्दी फिल्म निर्माताओं में प्रमुख है - जैमिनी, ए०वी०एम०-प्रसाद और एम०एस०वासन ।

१९३६ से लेकर १९४२ तक का युग हिन्दी चित्रपट के इतिहास में ठोस प्रगति का युग था । इस युग में कितने ही ऐसे महत्वपूर्ण चलचित्र प्र प्रदर्शित किये गये, जिनकी कलात्मकता एवम् रम्य शिल्प ने उन्हें इतिहास में एक सम्मानित स्थान उपलब्ध कराया है, साथ ही इस समय कतिपय प्रसिद्ध फिल्म कम्पनियों ने अपने स्टूडियों भी बना लिये और उनमें चलचित्र उद्योग के नवीनतम वैज्ञानिक उपकरणों को एकत्र किया गया।

फिल्म के विषय का चुनाव, उसका ट्रीटमैन्ट, सिने माध्यम की समझ, फिल्म निर्माण की तकनीक और फिल्म निर्माण के मूल में निहित दृष्टिकोण आदि की दृष्टि से इन फिल्मकारों को विभिन्न श्रेणियों में रखा जा सकता है। मोटे तौर पर बंगाल के फिल्मकारों को बंगाल स्कूल के अन्तर्गत, बम्बई और पंजाब के फिल्मकारों को बम्बई स्कूल के अन्तर्गत और मद्रास के फिल्मकारो को मद्रास स्कूल के अन्तर्गत रखा जा सकता हैं।

बंगाल के न्यू थियेटर ने प्रथम सवाक् फिल्म 'मुहब्बत' के आंसू' का निर्माण किया। इसके बाद की दो फिल्में असफल रही। इन दो फिल्मों की असफलता के बाद इस कम्पनी की 'पूरन भगत' फिल्म हिट हुई। जिसका निर्देशन - देवकी बोस' ने किया था। इस फिल्म में धर्म प्राण, राजकुमार पूरन की लोक गाथा बड़े ही कलात्मक ढंग से, संवादों का स्वभाविक और रचनात्मक उपयोग करते हुये की गयी थी।

<u>बच्चन श्रीवास्तव के शब्दों में :-</u>

"पूरन भगत' की सर्वाधिक प्रमुख विशेषता उसका संगीत था। यद्यपि पार्श्वसंगीत का प्रयोग प्रभात वाले अपने चित्रों में पहले कर चुके थे, तद्यपि सही अर्थों में नेपथ्य - संगीत का प्रयोग न्यू थियेटर्स के इसी चित्र में किया गया था। बिना संवाद बोले केवल नेपथ्य -संगीत द्वारा मूक पात्रों के अर्न्तद्वन्द को अभिव्यक्त कराने का आश्चर्यजनक 'कमाल सर्वप्रथम" पूरन भगत में देखने को मिला। [१]

१- भारतीय फिल्मों की कहानी - बच्चन श्रीवास्तव
पृष्ठ- ५२

'पूरन मल' के पश्चात दूसरा सफल चित्र 'यहुदी की लड़की', प्रदर्शित हुआ था। इस फिल्म का संगीत बड़ा मधुर था। पूरन मल और 'यहुदी की लड़की' में प्रथमवार ध्वनि नियन्यंण की ओर ध्यान दिया गया था।

इस युग के महत्वपूर्ण चलचित्रों में कतिपय इतिहास प्रसिद्ध चलचित्रों की सूची अवलोकनीय है:--

'अमृत मन्थन,' 'धर्मात्मा,' 'श्यामसुन्दर,' 'माता', 'देवदास', 'धूपछांव', 'अमर ज्योति', 'सन्त तुकाराम', 'दुनिया ना माने', 'गोपालकृष्ण', 'आदमी', 'पड़ोसी', 'विद्यापति', 'मुक्ति', 'प्रेसीडेन्ट', 'स्ट्रीट सिंगर', 'अधिकार', 'जिन्दगी', 'डाक्टर', 'अछूत कन्या', 'कन्गन', 'पुनर्मिलन', 'बन्धन', 'झूला', 'पुकार', 'सिकन्दर', 'नरसीभगत', 'जीवन नाटक', 'बरान्डी की बोतल', 'चरणों की दासी', आदि।

कतिपय अन्य निर्माताओं ने चलचित्रों में तत्कालीन राजनीतिक और सामाजिक चेतना का व्यापक प्रभाव प्रस्तुत किया। इस सन्दर्भ में हमारा देश, हिन्दुस्तान हमारा, अपना घर, आदि उल्लेखनीय हैं, किन्तु पट कथा की अशक्तता के कारण राष्ट्रीय भावनाओं तथा तत्तकालीन जन आन्दोलन की मूल भावनाओं को उल्लेखनीय ढंग से प्रस्तुत नहीं कर पाये। फिर भी कुछ चलचित्रों पर प्रभाव देखा जा सकता है। जैसे- 'इन्कलाब', 'धरतीमाता', कपालकुन्डला, आदि।

बंगाल स्कूल के बी०एन० सरकार, पी०सी०बरुआ, नितिनबोस, फणी मजूमदार, विमलराय, आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। जिन्होंने अनेक चलचित्र निर्मित एवम् निर्देशित किये।

न्यू थियेटर्स के इन निर्देशकों की समष्टि रूप से 'बंगाल स्कूल' का नाम देना उपयुक्त ही है, क्योंकि इन्होंने हिन्दी फिल्मों को अपनी क्षेत्रीय विशेषताओं अर्थात बंगला संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में निर्मित

किया। न्यू थियेटर्स की अधिकांश फिल्में बंगला साहित्य की श्रेष्ठ कृतियों के रूपान्तर है। इसलिए इन फिल्मों में बंगला साहित्य के कथा सम्बन्धी गुण सहज भाव से आगये है। बंगला कथा साहित्य में कथानक पर विशेष बल दिया जाता था। आज भी जब कहानी अकहानी की ओर और प्लाट बन्धन से मुक्त होने के लिए प्रयत्नशील है, बंगला कहानियों में प्लाट का आकर्षण कम नहीं हुआ है। बंगला कथा साहित्य का दूसरा महत्वपूर्ण तत्व है - चरित्र चित्रण। बंकिम और शरत् दोनों ने ही जिन चरित्रों की सृष्टि की है वे फिल्म माध्यम के लिए बहुत उपयुक्त है। बंगला साहित्य से प्रभावित चुस्त और आकर्षक कथानक, घटनाओं का संगीत की लयबद्धता सा विकास, भावनात्मक चरित्र चित्रण और शालीन वातावरण 'बंगाल स्कूल' की फिल्मों का प्रमुख विशेषताएँ हैं। चकाचौंध, भागदौड़ और शोर शराबे वाली बम्बइया फिल्मों की तुलना में बंगाल स्कूल की फिल्में विनम्र, सुशील और संयत होती है। निष्कर्षत: बंगाल स्कूल के हिन्दी चित्र साहित्योन्मुखी होकर भी व्यवसायिक परिधि का उल्लंघन नहीं कर पाते।[१]

फिल्म निर्माण के क्षेत्र में बम्बई स्कूल का क्षेत्र बंगाल स्कूल से कहीं अधिक व्यापक एवम् विस्तृत है। बम्बई स्कूल के अन्तर्गत एक ओर प्रभात कम्पनी के आदर्शवादी चित्रों के निर्माता व्ही०शान्ताराम है, तो दूसरी ओर मारधाड़ फिल्म बनाने वाले वाडिया ब्रदर्स, यदि एक ओर ऐतिहासिक फिल्मों के निर्माता 'सोहराब मोदी' है तो दूसरी ओर यथार्थ का चित्रण करने वाले मेहबूब खां, यदि एक ओर आम आदमी के पसन्द की फिल्में बनाने वाली बॉम्बे टाकीज है। तो दूसरी ओर रामराज्य, बैजूबावरा, जैसी उत्कृष्ट फिल्मों के निर्माता प्रकाश पिक्चर्स। इनके अतिरिक्त इम्पीरियल, रणजीत, कारदार, जैसी निर्माण संस्थायें है।

१- हिन्दी चल चित्रों का विकास क्रम- विश्वनाथ मिश्र (साप्ताहिक हिन्दुस्तान : फ़िल्म विशेषांक, पृष्ठ ४८)।

हिन्दी फिल्मों के विकास में बाम्बे टाकीज का महत्वपूर्ण योगदान है। बाम्बे टाकीज ने सफल चित्रों का निर्माण करके हिन्दी फिल्मोद्योग में अपनी सफलता का झण्डा फहराया। इस सन्दर्भ में कतिपय फिल्मों की सूची अवलोकनीय है :--

'अछूत कन्या', 'पुनर्मिलन', 'कंगन', 'बसन्त', 'किस्मत', हमारी बात', 'तेरे घर के सामने', 'ज्वारभाटा', 'मिलन', 'मजदूर', 'महल' आदि।

फिल्मस्तान ने 'चल चल रे नौजवान', सिन्दूर, शहीद, शबनम आदि फिल्में बनाईं जो जनता के मनोरंजन करने में अत्यन्त सफल रही।

इम्पीरियल कम्पनी द्वारा निर्मित चित्र 'किसान कन्या', एवम् 'मदर इण्डिया', है। रणजीत कम्पनी ने 'गुण सुन्दरी', 'अछूत', 'भक्त सूरदास', 'तानसेन', 'विषकन्या', तथा 'जोगन' आदि फिल्मों का निर्माण किया जो अपने समय की अत्यधिक सफल फिल्में मानी जाती थीं।

सोहराब मोदी ने ऐतिहासिक फिल्मों को बनाकर हिन्दी फिल्म उद्योग में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाया सोहराब मोदी निर्मित फिल्में - 'पुकार', 'पृथ्वी वल्लभ', 'झाँसी की रानी', 'सिकन्दर' आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इसी समय मेहबूब का अवतरण निर्माता एवम् निर्देशक के रूप में हिन्दी फिल्म उद्योग में हुआ। जिन्होंने यथार्थवादी चित्र बनाकर प्रसिद्धि प्राप्त की। इनकी उल्लेखनीय फिल्में - 'एक ही रास्ता', 'औरत', 'रोटी', 'नजमा', 'तकदीर', 'अनमोल घड़ी', 'अन्दाज', 'ऐलान', 'नतीजा', आदि हैं।

निर्माता वाडिया से मारधाड़ की फिल्मों का युग आरंभ होता है। इस सन्दर्भ में 'हन्टरवाली', 'नौजवान', 'थीफ आफ बगदाद', और 'तूफानी टारजन', फिल्में उल्लेखनीय है। वैसे वाडिया ने एक सामाजिक फिल्म भी बनाई थी- 'मेला'।

बम्बई स्कूल में सबसे पृथक दिखने वाले निर्माता निर्देशक शान्ताराम हैं ।
जिन्होंने राजकमल,कला मन्दिर संस्था के अन्तर्गत अनेक महत्वपूर्ण फिल्मों
का निर्माण किया और निर्देशन तथा अभिनय भी। इस सन्दर्भ में -
`अयोध्या का राजा`, `अमृत मन्थन`, `चन्द्रसेना`, `अमर ज्योति`, `सन्त -
तुकाराम`, `दुनिया ना माने`, आदमी`, सन्त ज्ञानेश्वर` और `पड़ोसी तथा
अपनी निर्माण संस्था के अन्तर्गत उनके द्वारा निर्मित फिल्में - `शकुन्तला`,
`परछाईं`, `अपना देश, `दहेज`, डाक्टर कोटनीस की कहानी`, अत्यधिक
प्रसिद्ध हैं ।

धार्मिक फिल्मों के क्षेत्र में सफलता का पताका फहराने
वाले प्रकाश पिक्चर्स के संस्थापक विजय भट्ट का नाम कम महत्वपूर्ण नहीं
है । 'रामराज्य' का निर्माण करके विजय भट्ट अमर हो गये । उनकी एक
फिल्म बैजूबावरा, संगीत प्रधान होने के कारण आज भी याद की जाती
है ।

बम्बई स्कूल के अन्य निर्माताओं में पंचोली,जागीरदार ,
कारदार,किशोर साहू, केदार शर्मा, चेतन आनन्द,अब्बास , अमिय चक्रवर्ती,
रमेश सहगल, कृष्ण चोपड़ा राजकपूर आदि प्रमुख है जिन्होंने मूल्यवान और
उद्देश्य परक फिल्मों का निर्माण किया । इन फिल्मों में चेतनआनन्द
के `नीचा नगर` को केन्स फिल्म समारोह में ग्रान्डप्रिक्स, पुरस्कार
प्राप्त हुआ । ख्वाजा अहमद अब्बास के ` धरती के लाल` को सोवियत
संघ में प्रदर्शित किया गया ।केदार शर्मा की `चित्रलेखा`, भगवती चरण
वर्मा के सुप्रसिद्ध उपन्यास पर आधारित थी। जबकि `सुहागरात`,पहाड़ी
जीवन , का बड़ा ही यथार्थपरक और काव्य मय चित्रण थी। `बरसात`,
कश्मीर की पृष्ठ भूमि पर बनी संगीत प्रधान प्रेम कहानी थी , जो
रमणीय दृश्यों और आकर्षक गीतों के कारण जबर्दस्त हिट हुई ।
मद्रास स्कूल की पहली हिट फिल्म `चन्द्रलेखा`, सन् १९४८ में प्रदर्शित हुई ।
दक्षिण भारत में हिन्दी में बनने वाला यह प्रथम चित्र था ।जिसने एक
नई शैली और एक नया मार्ग अपनाया । यद्यपि इस फिल्म का कथानक

स्टन्ट चित्रों जैसा ही था। फिर भी परिष्कृत तकनीक और भव्य साज सज्जा ने इसे आकर्षक चित्र बना दिया था।

जैमिनी ने `निशान` फिल्म का निर्माण किया। यह दो जुड़वां भाइयों की कहानी थी, डबलरोल को रजत पट पर देखकर दर्शक चमत्कृत हो गये। निशान से ही डबलरोल की परम्परा हिन्दी चलचित्र जगत में हुई। दूसरे सवाक् युग में दक्षिण में काफी संख्या में हिन्दी चलचित्र निर्मित हुए।

२- द्वितीय सवाक् युग:-

यह युग हिन्दी चित्रपट के इतिहास में कलात्मक और भव्य चलचित्रों के निर्माण की आधार शिला रखने वाला युग है। इस युग की फिल्में स्वतन्त्र भारत की फिल्में हैं।

वैसे तो बंगाल के चित्रपट- उद्योग में साहित्यिक कृतियों पर आरम्भ से ही चलचित्रों का निर्माण होता आ रहा था किन्तु स्वाधीनता के बाद हिन्दी चित्रपट पर बंगला की कतिपय साहित्य कृतियों का निर्माण किया गया। सही अर्थों में सामाजिक चलचित्रों का युग भी यहीं से प्रारम्भ होता है।

सन् १९५५ में सत्यजित राय की `पथेर पांचाली` का प्रदर्शन भारतीय फिल्म इतिहास की एक अविस्मरणीय घटना है, जिसने भारतीय फिल्म कला को एक नयी दिशा दी। इस फिल्म के द्वारा विश्वरजत पट पर भारत का भी पदार्पण हुआ। सत्यजित राय ने विश्व के महान फिल्मकारों में स्थान प्राप्त किया। पथेर पांचाली` ने ६: अन्तरराष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किये। हिन्दी फिल्मकारों ने सत्यजित राय के मार्ग का अनुसरण तो नहीं किया किन्तु उनमें सिनेमाध्यम के प्रयोग की समझ अवश्य पैदा हो गयी। हिन्दी फिल्मकारों में सबसे अधिक चैतन्य और जागृत, 'बंगाल स्कूल' के फिल्मकार हैं, जिन्होंने नये युग

के साथ चलने का पुरा प्रयत्न किया ।

विमल राय ने 'दो बीघा जमीन', 'बाप बेटी', 'नौकरी', 'मधुमती', 'सुजाता', 'परख', 'प्रेम पत्र', 'परिणीता', 'बिराज बहू', 'काबुली वाला', 'देवदास', 'उसने कहा था', आदि फिल्में बनायी। एवं उनका निर्देशन भी किया। उन्हें 'दो बीघा जमीन' के लिए राष्ट्रीय सम्मान के साथ ही कैन्स के अन्तरराष्ट्रीय समारोह में पुरस्कृत किया गया।

विमल राय की अधिकांश फिल्में साहित्यिक कृतियों पर आधारित है, उन्होंने शरत् चन्द्र के जो रूपान्तर किये, वे तो सफल हुए, परन्तु रवीन्द्रनाथ ठाकुर की 'काबुली वाला' और गुलेरी जी की 'उसने कहा था' कहानियों के रूपान्तर सफल नहीं हुए।

बंगाल स्कूल के हिन्दी फिल्मकारों में ऋषिकेश मुखर्जी, बासु भट्टाचार्य, का नाम विस्मृत नहीं किया जा सकता। इन्होंने सर्वश्रेष्ठ फिल्मों का निर्माण एवम् निर्देशन किया। ऋषिकेश मुखर्जी निर्देशित फिल्में निम्नलिखित है जो हिन्दी फिल्म जगत में मील का पत्थर बन गई - 'मुसाफिर', 'अनाड़ी', 'अनुराधा', 'अनुपमा', 'आशीर्वाद', 'सत्य काम', 'आनन्द', और 'गुड्डी'। ऋषिकेश मुखर्जी की कहानियों में अनवरत प्रवाह रहता है जो उन्हे नाटक की अपेक्षा उपन्यास के अधिक निकट ले जाती है।

बासु भट्टाचार्य:-

फणीश्वर नाथ 'रेणु' की कहानी पर आधारित शैलेन्द्र निर्मित 'तीसरी कसम', बासु की पहली निर्देशित फिल्म है। जिसमें नौटंकी की 'बाई' का अन्तर्द्वन्द्व का चित्रण है। 'अनुभव', 'आविष्कार' भी इनके द्वारा सफल निर्देशित फिल्में हैं।

इसप्रकार देखते है कि बंगाल स्कूल के प्रथम सवाक् युग के फिल्मकारों और द्वितीय सवाक् युग के फिल्मकारों में अन्तर यह है कि द्वितीय युग के फिल्मकार अपेक्षाकृत अधिक यथार्थवादी है और चरित्र चित्रण में उनकी विशेष रुचि है। उनका चरित्र चित्रण केवल बाह्य क्रियाओं तक ही सीमित नहीं है, वे मुख्यत: पात्रों की आन्तरिक हलचल का चित्रण करते है। जहाँ प्रथम युग के फिल्मकार नाटक की अपेक्षा उपन्यास की और उन्मुख है, वही इस युग के फिल्मकार उपन्यास की अपेक्षा सिनेमा की ओर उन्मुख है। उनकी फिल्मों में घटना-चक्र की अपेक्षा कथा-सूत्र का सहज विकास और स्थान का वृत्तात्मक चित्रण होता है। इस युग के फिल्मकार अपेक्षाकृत अधिक सिनेमावादी है।

हिन्दी फिल्मकारों मे बम्बईया स्कूल के पुराने महारथियों में व्ही० शान्ताराम का स्थान अग्रणी एवम् महत्वपूर्ण है। इनके द्वारा निर्मित एवम् निर्देशित फिल्मों के 'तीन बत्ती चार रास्ता', 'सुरंग', 'दो आंखें बारह हाथ', 'झनक-झनक पायल बाजे', 'सेहरा', 'स्त्री', 'नवरंग', 'गीत गाया पत्थरों ने', 'पिंजड़ा', 'जल बिन मछली नृत्य बिन बिजली', 'बूंद जो बन गयी मोती', आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

'दो आंखे बारह हाथ' एक ऐसे जेलर की कहानी है, जो गाँधी जी की अहिंसा नीति और पश्चिम के मुक्त जेल के सिद्धान्त का प्रयोग छ: खूंखार अपराधियों को सुधारने में करता है। विषय की अभिनवता की दृष्टि से इस फिल्म की देश विदेश में प्रशंसा हुई। सन् १९५८ में यह राष्ट्रपति स्वर्णपदक से पुरस्कृत हुई। 'झनक-झनक पायल बाजे', शास्त्रीय नृत्यों को कथा सूत्र में पिरोकर प्रस्तुत करने का बड़ा ही सफल प्रयोग था। गोपीकृष्ण और संध्या के मोहक नृत्यों से भरपूर यह फिल्म अपने ढंग की अनोखी फिल्म थी।

'झनक-झनक पायल बाजे', इस युग की शान्ताराम की सबसे हिट फिल्म थी। 'गीत गाया पत्थरों ने, भी मूर्तिकला के निखार का बड़ा ही सुरम्य और दर्शनीय प्रयत्न था। नयनाभिराम मूर्तियों का

चित्रण इन फिल्मों `दुनिया ना माने`,`पड़ोसी` या आदमी` आदि में दिखाई देता है। वह बात इस युग में नहीं रह गयी। `शकुन्तला` के पुनर्निर्माण,`स्त्री``नवरंग` `झनक-झनक पायल बाजे`, और गीत गाया पत्थरों ने , में विशाल पैमाने पर भव्य साज सज्जा और स्थापत्य के सौन्दर्य को रंगों के माध्यम से चित्रित करने में व्ही०शान्ताराम कृतचित्र प्रतीत होते है। उनकी फिल्में अतीत के गौरव और विशाल स्वरूप का उद्घाटन करती है। वर्तमान कटु यथार्थ से लगता है , उनका नाता दूर हो चुका है। इस युग में हमे एक भिन्न व्ही० शान्ताराम के दर्शन होते है , जो अपनी फिल्मों को अधिकाधिक क्लासीकल रूप देने के लिए प्रयत्नशील है।--

व्ही०शान्ताराम के उपरान्त इस युग के सर्वाधिक सफल फिल्मकार स्वर्गीय पृथ्वीराज कपूर के बड़े सुपुत्र `राजकपूर` है। राजकपूर की प्रसिद्ध फिल्में -`आवारा` `आह` ,`बूट पालिश`, `श्री चार सौ बीस`,`जागते रहो`, `जिस देश में गंगा बहती है`, `संगम`,`मेरा नाम जोकर`, आदि है। इन फिल्मों ने राजकपूर को श्रेष्ठनिर्माता के रूप में प्रतिष्ठित किया। `आवारा` राजकपूर की सर्वश्रेष्ठ फिल्म है। इसकी कहानी मार्क्सवादी विचार धारा में विश्वास रखने वाले ख्वाजा अहमद अब्बास ने लिखी थी। इस फिल्म में गरीबी और अमीरी को अन्तर्विरोध के रूप में चित्रित किया गया है। कोई जन्मजात बुरा नहीं होता, परिस्थितियाँ उसे बुरा बनाती है। यह सन्देश भी इस फिल्म में दिया गया है। `आवारा` लड़के की भूमिका राजकपूर ने इस कुशलता और संजीदगी में अभिनीत की है कि वह नई पीढ़ी के लिए अनुकरणीय बन गयी है।

अभिनव तकनीक का उपयोग, कुशल प्रस्तुतीकरण, सुरम्य दृश्य ,शंकर जयकिशन का मधुर संगीत, यथार्थ और भव्यता का समानांतर चित्रण आदि विशेषताओं के कारण यह फिल्म ~~सुपर~~ सुपर हिट हुई।

'जागते रहो' राजकपूर की सर्वश्रेष्ठ कलात्मक फिल्म है। इसके बंगला संस्करण पर कारलोवी वैरी में ग्रण्ड फिल्म पुरस्कार दिया गया। शंकर मित्रा और अमित मित्रा लिखित एवम् निर्देशित इस फिल्म में एक रात का वृतांत है, जिसमें पानी की तलाश में एक बिल्डिंग में घुसे एक देहाती को चोर समझ लिया जाता है, जो अनजाने और भोले-भालेपन में सफेदपोश चोरों का पर्दाफाश कर देता है। कहानी की अभिनवता, कसाव, उसका व्यंग्य, औत्सुक्य आदि इस फिल्म की प्रमुख विशेषताएँ हैं। यद्यपि यह फिल्म आर्थिक दृष्टि से सफल रही, परन्तु कलात्मक कृति के रूप में यह अविस्मरणीय फिल्म है।

बी०आर० चोपड़ा, मोहन सहगल, देवेन्द्र गोयल, गुरुदत्त, सुनील दत्त, दिलीपकुमार, चेतन आनन्द, एस० मुखर्जी, आर०के० नैय्यर, कृष्ण चोपड़ा, यश चोपड़ा, कमाल अमरोही, के०सी० बोकाडिया, मनोज कुमार, आदि फिल्मकारों ने हिन्दी चलचित्र के विकास में सफल फिल्मों का निर्माण करके महत्वपूर्ण योगदान दिया। आइये, उपरिलिखित फिल्मकारों द्वारा निर्मित एवं निर्देशित फिल्मों पर एक विहंगम दृष्टि डालते चलें--

१- <u>बी०आर०चोपड़ा</u> :- 'एक ही रास्ता', 'नया दौर', 'साधना', 'धूल का फूल', 'कानून', 'धर्म', 'आदमी और इन्सान' 'धर्म पुत्र', 'धुंध', 'वक्त', 'इन्साफ का तराजू', 'वक्त की आवाज', 'निकाह', 'मजदूर' आदि।

२- <u>मोहन सहगल</u>:- 'औलाद', 'अधिकार', 'नई दिल्ली', 'साजन', 'शिकस्त' आदि।

३- <u>देवेन्द्र गोयल</u>:- 'एक फूल दो माली', 'दस लाख', 'वचन', 'रिश्ता कागज का', आदि।

४- महेश कौल:- 'गोपी नाथ', सौतेला भाई, तलाक, सपनों का सौदागर, आदि।

५- गुरुदत्त:- बाजी, मिस्टर एण्ड मिसिज पचपन, प्यासा, कागज के फूल, चौदहवीं का चाँद, साहब बीवी और गुलाम, ।

५- सुनीलदत्त:- मन का मीत, मुझे जीने दो, चोर, रेश्मा और शेरा, दर्द का रिश्ता, आदि।

६- दिलीपकुमार:- गंगा जमुना।

७- चेतन आनन्द:- हीररांझा, हकीकत, हिन्दुस्तान की कसम।

८- मनोज कुमार:- उपकार, रोटी कपड़ा और मकान, क्रान्ति, शोर, कलर्क, सन्तोष, नया भारत, पूरब पश्चिम, ।

९- एस० मुखर्जी:- हम हिन्दुस्तानी, दिल दे के देखो, एक हसीना एक मुसाफिर, आदि।

१०-कृष्ण चोपड़ा:- हीरा मोती, गबन आदि।

११- कमाल अमरोही:- पाकीजा, सल्तनत, आदि

१२- त्रिलोक जैतली:- गोदान।

इन फिल्मकारों से थोड़ा भिन्न एक अन्य फिल्मकार है। जिनकी फिल्मे यथार्थपरक, समस्या प्रधान होने के साथ साथ मार्क्स वादी विचारधारा में पगी होती है। वे है - ख्वाजा अहमद अब्बास। इनकी प्रसिद्ध फिल्में निम्न है:- अनहोनी, मुन्ना, परदेशी, शहर और सपना, आसमान महल, बम्बई रात की बाहों में,

तात हिन्दुस्तानी, दो बून्द पानी आदि ।

मद्रास स्कूल के हिन्दी फिल्में अत्यधिक प्रसिद्ध हुई जिनमें मि० सम्पत, घूंघट, घर गृहस्थी, तीन बहू रानियाँ, पैगाम, संसार , हम पंछी एक डाल के, शारदा, राजा और रंक , मामी, खिलौना , एक भूल , हिम्मत वाला , मकसद , जिगरी दोस्त आदि ।

मद्रास में निर्मित हिन्दी फिल्मों मे पारिवारिक विघटन , संगठन, परम्पराओं के प्रति निष्ठा। एवम् आदर्शवादिता, ट्रीटमेन्ट मे वस्तुओं और व्यक्तियों की भारी संख्या, विशाल साज सज्जा आदि विशेषताएँ देखने को मिलती है । इन फिल्मों में आँसुओं और कहकहों की, प्यार की लम्बी चौडी पेंगे दिखाई पड़ती है , जो काल्पनिक अधिक है। दूसरे शब्दों मे कह सकते है - इन फिल्मों का पैटर्न नाटकीय है, जिसका फिल्म के सौन्दर्य शास्त्र की वर्तमान विकासधारा से कोई सम्बन्ध नहीं है ।

२- नव सिने युग:-

जिस प्रकार सन् १९५५ मे सत्यजित राय की `पथेर पांचाली` से बंगला फिल्मों मे यथार्थवादी सिनेमा के नया युग का प्रारम्भ हुआ था उसी प्रकार १९६९ मे मृणालसेन के हिन्दी फिल्म ` भुवनशोम`, के प्रदर्शन से हिन्दी सिनेमा के एक नये युग का प्रादुर्भाव हुआ । हिन्दी नव सिनेमा में मृणाल सेन अकेले नहीं है, और न ही वे नव सिनेमा आन्दोलन के जन्मदाता है । मृणाल सेन के अतिरिक्तकई नव सिनेमावादी फिल्मकार है -- बासु चटर्जी-` सारा आकाश`,`रजनी गन्धा`; बासु भट्टाचार्य - `अनुभव` `अविष्कार`; `शिवेन्द्र सिन्हा`- फिर भी `एक गर्म हवा` ; अवतार कौल - ` २७ डाउन`;`श्याम बेनेगल-`अंकुर`, ` निशांत` ,`भूमिका`,` गोधूलि`; मणिकौल -` आषाढ़ का एक दिन` , `उसकी रोटी`,`दुविधा`; `कुमार शाहनी -`माया दर्पण `; `गिरीश रंजन - `डाक बंगला`; प्रेम कपूर - `बदनाम बस्ती`; राजाभारप्रोस-

'त्रिसंध्या', बा०आर० ईशारा- 'जरुरत', 'दस्तक', आदि।

लीक से हटकर बनी इन फिल्मों को नव सिनेमा, आफ बीट फिल्म आदि अनेक नाम दिये गये है। व्यवसायिक बड़े बजट की फार्मूला बद्ध फिल्मों की तुलना मे इन छोटे बजट वाली फिल्मों ने, जिनमे अधिकांश फिल्म वित्त निगम के ऋण से निर्मित हुई है, हिन्दी चलचित्रों के इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थानप्राप्त कर लिया है - 'सारा आकाश', 'रजनी गन्धा', 'अंकुर', और 'अनुभव' की आशातीत व्यवसायिक सफलता ने व्यावसायिक फिल्मों के उस दावे पर भी प्रश्न चिन्ह लगा दिया है कि दर्शक केवल फार्मूला फिल्मे ही पसन्द करते है।

नव सिनेमा का उद्देश्य एक ऐसे वर्ग को, जो वर्षों से अच्छे स्तर की फिल्मों के लिए आतुर था, सन्तुष्ट करना है। कलात्मक अभिरुचि जागृत करने वाला इन नव सिनेमावादी चित्रों को देखकर ऐसा प्रतीत करता है कि वह अब सही मार्ग पर चल पड़ा है, और उसे एक नयी दिशा का ज्ञान होगया है, वैसे तो समय समय पर अनेक फिल्म-कारों ने यथार्थवादी और सिनेमीय चित्र बनाये है। चेतनआनन्द की नीचानगर, महबूब की रोटी, शान्ताराम की पड़ोसी, कोटनीस की अमर कहानी, और दो आंखे बारह हाथ, राजकपूर की 'जागते रहो', इसी श्रेणी की फिल्में है।

आरम्भ में नव सिनेमावादियों को किताबी कीड़े, जनता से कटे हुए, पर्सनल सिनेमा और ना जाने क्या क्या कहकर मखौल उड़ाया गया। इन फिल्मों को प्रदर्शित होने से रोका गया। फिर भी जब भी इनका प्रदर्शन हुआ, ये फिल्मे जनता द्वारा सराही गयी। फलस्वरुप नव सिनेमा वादी फिल्मों की अनेक सम्भावनाओं के द्वार खुल गये। नव सिनेमा के नाम पर अनेक अधूरे पूरे प्रयत्न व्यवसायिक फिल्मकारों ने भी किये। जिनमे - खुशबू, कोशिश, मौसम, गुड्डी, पिया का घर, उपहार, दस्तक, चेतना, जरुरत, कोराकागज, छोटी २ बाते, रजनीगन्धा, राहगीर, अन्जान राहें, पार्टी, गिद्ध, आक्रोश, जाने भी दो यारों,

आदि फिल्मे इसका उदाहरण है। नव सिनेमावादी युग की फिल्में श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियों के रूपान्तर है --'भुवन शोम'(वनफूल), 'आषाढ़ का एक दिन'(मोहन राकेश), 'माया दर्पण'(निर्मल वर्मा) , 'स्वामी',(मुन्नू भण्डारी), 'सारा आकाश'(राजेन्द्र यादव), 'डाकबंगला' (कमलेश्वर) । नव सिनेमा वादी युग में बनी हिन्दी फिल्मे फ्रांस से प्रभावित है, नव सिनेमावादी फिल्मकार गोदार, तुफो, आदि से व प्रेरित है इन फिल्मों में आज के जीवन मे जो यथार्थ के कारण कटुता आयी है उसका जीता जागता चित्रण करता है।

लघु बजट पर निर्मित हिन्दी फिल्मे अत्यन्त प्रचलित हुई है। जिनमे-- आनन्द , गुड्डी, बावर्ची, कोशिश ,बाधे अधूरे ,आदि।

कुछ आलोचको ने नव सिने युग की फिल्मो को सार्थक सिनेमा का संज्ञा दी है। सार्थक सिनेमा मे प्रयोग अधिक थे।प्रयोगवादी दौर मे फिल्मकारो ने पाया कि आम फिल्मी नुस्खे देकर वह पढ़े लिखे, लोगो को फिल्म से वंचित कर रहे है। क्योकि कमोवेश हर फिल्म की कहानी मे एक रूपता होती थी। कहानी के इस क्रम को तोड़ते हुए कुछ निर्देशको मृणाल सेन, श्याम बेनेगल जैसे लोग सामने आये और अंकुर, निशांत, सारा आकाश, जैसी फिल्मों की शुरुआत हुयी। हालांकि शुरुआती दौर मे इन फिल्मो से अधिकांश दर्शक वर्ग नहीं जुड सका। लेकिन इन फिल्मो ने अपने प्रवलदर्शक जरूर जल्दी कैसे तोड़ा जा सकता है। आम सिने दर्शको का मानना था कि सिनेमा हाल पर वह मनोरंजन करने जाता है, सार्थक सिनेमा की बेहूदगी देखने नहीं।

यद्यपि सन् १९६९ से ही नव सिनेमा चर्चा का विषय बना हुआ है फिर भी अब तक प्रदर्शित हिन्दी फिल्मो मे नव सिनेमावादी फिल्मो की संख्या दाल मे नमक के बराबर है।इस युग मे जहाँ एक ओर `बाबी` जैसी रोमांटिक फिल्मो को भारी सफलता मिली है, वहीं 'सन्तोषीमाता' ,जैसी धार्मिक फिल्मो ने रिकार्ड तोड़े है।यदि एक ओर समस्याओं के नाम पर धन जुटाने वाली फिल्म `रोटी कपड़ा और

और मकान है, तो वहीं दूसरी और मारधाड वाली और दहशत वाली फिल्में होती है। जिसने दोनों हाथों से पैसे बटोरे है। इन सबके बीच नव सिनेमा की पतली ही सही, पर शीतल जल धारा का प्रवाहित होना शुभ लक्षण है। निश्चित ही हिन्दी चलचित्रों का भविष्य उज्ज्वल है।

सम्प्रति जिन फिल्मों का निर्माण हो रहा है वे हिंसा, पाश्चात्य संगीत शैली से प्रभावित, सामाजिकता के संघर्ष आदि से युक्त हैं --

हिंसात्मक हिन्दी फिल्मों का युग:-

वैसे तो सन् १९५६ से ही हिंसात्मक चलचित्रों का निर्माण आरंभ हो गया था। सन् १९५६ से लेकर १९६० तक हिंसात्मक एवम् आपराधिक फिल्मों की भरमार रही। इस युग मे, सी०आई०डी, पाकेटमार, अपराधी कौन, उस्तादो के उस्ताद, नाईट क्लब, रोंग नम्बर, दो उस्ताद, आदि। हिंसात्मक फिल्मों की धारा कुछ समय तक सामाजिक एवम् धार्मिक फिल्मो की बाढ़ आ जाने से दब गयी। जैसे जैसे सामाजिक एवम् धार्मिक फिल्मो के प्रवाह में गतिहीनता आयी वैसे वैसे युग कीपरिस्थिति के अनुसार हिंसात्मक फिल्मे धड़ाधड़ बनने लगी।

सम्प्रति हिंसात्मक फिल्मो का निर्माण तेजी से हो रहा था जिसमें दक्षिण भारत के फिल्मकारो का योगदान हिन्दी फिल्मो के क्षेत्र में अधिक रहा है। इस सन्दर्भ - मे कतिपय हिंसात्मक फिल्मो के नाम निम्नलिखित है :-

शहंशाह, कुली, मरते दम तक, वतन के रखवाले, मि०इंडिया, हवालात, लोहा, कर्मा, जान हथेली पर, आग ही आग, मुकद्दर का फैसला, प्रतिघात, अन्धा कानून, महान, पुकार, हीरो, बाजी, जवरलाल, धर्म अधिकारी, आखिरी रास्ता, मुकाबला, मुलजिम, सिंहासन, पाताल, भैरवी, जुर्म और कानून, हिंसा, आदि।

डिस्को से सम्बंधित हिन्दी फिल्में:-

रोमांस और मारधाड के सफल नुस्खे में फिल्मकारों ने एक और फार्मूला डाला डांस (डिस्को तथा कैबरे)। ऐसी फिल्मों में कहानी के नाम पर कुछ न होने के बावजूद वह दर्शकों की भीड़ जुटाती रही। ऐसी फिल्मों के नायक अधिकांशत: मिथुन चक्रवर्ती ही रहे, जितेन्द्र ने भी इन फिल्मों में खूब काम किया। अब ऐसी फिल्मों का एक नया सितारा है गोविन्दा। कतिपय फिल्में डिस्को के कारण अत्यधिक प्रचलित रही है, जिनमें विशेष रूप से उल्लेखनीय फिल्मे निम्नलिखित है :--

हथकड़ी, डिस्को डान्सर, प्यार करके देखो, खुदगर्ज, खून भरी मांग, कमाण्डो, परिवार, लवर बाय, इन्साफ की आवाज, जवाब हम देंगे, कर्मा, इन्सानियत के दुश्मन, आवाम, हवालात, विरासत, हुकूमत, कलयुग और रामायण, वक्त की आवाज आदि।

पारिवारिक फिल्मों का पुन: आगमन:-

हिंसा से ऊब कर जनता जनदिन के मनोरंजन हेतु हिन्दी फिल्मकारों ने पारिवारिक फिल्मों का पुन: निर्माण किया और उन्हें इस क्षेत्र में अभूतपूर्व सफलता मिली। दक्षिण भारतीय निर्माताओं ने भी पारिवारिक फिल्मों का हिन्दी में निर्माण किया। कुछ पारिवारिक हिन्दी फिल्मे विशेष रूप से उल्लेखनीय है :---

संसार, खानदान, हमारा खानदान, परिवार, चरणों की सौगन्ध, प्यार का मन्दिर, सौ दिन सास के, खुदगर्ज, सिन्दूर, औलाद, बाबुल, अवतार, अर्पण, सौतन, अपनापन, तेरीकसम, घर-घर की कहानी, ऐसा प्यार कहाँ, नसीब अपना अपना, कब तक चुप रहूँगी, नजराना आदि-आदि।

अन्य शैली के कुछ चलचित्र :-

प्रादेशिक भाषाओं मे विशेष रूप से भोजपुरी, राजस्थानी, हरियाणवी में चलचित्रों का नाम लिये बिना हिन्दी चल चित्रों के विकास परम्परा पुरी नहीं कही जा सकती । भोजपुरी भाषा मे हिन्दी फिल्मों की भरमार है ,जैसे -- गंगा मैया तोहे पियरि चढ़ैवो , विदेशिया, सजनवा से मिलन कब हुइये हमार ,नानी बाई को मायरो , भौजी, हमार भौजी, लोहासीह , दंगल , नानक नाम जहाज है , नानक दुखिया सब संसार , फौजी चाचा, दो कुड़ियां , मेंहदी रंग लाग्यो , लाज राखो राणी सती , नानी बाई को मायरो, आदि ।

इस प्रकार देखते है कि मूक युग से लेकर आज तक जितनी फिल्मों का निर्माण हुआ वे प्राय: कुछ न कुछ समस्या को लेकर चली हैं । फिल्मकारों ने धार्मिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, स्वम् मनोरंजन पूर्ण चलचित्रों का निर्माण किया। आज फिल्म उद्योग अत्यधिक/विशाल वट वृक्ष की भाँति होगया है , इस वृक्ष की जड़े पूर्व, उत्तर, दक्षिण, स्वम् पश्चिम तक फैल गयी है । जहाँ तक पश्चिम की बात है, इसके जीवन्त उदाहरण के लिए एटनवरो की फिल्म "गाँधी" हमारे सामने हैं ।

:-:-:-:-:-:-:

अध्याय - २

गीति काव्य और हिन्दी चलचित्रगीत

अध्याय - २

गीतिकाव्य और हिन्दी-चल-चित्र-गीत

हिन्दी चलचित्र के गीतों का अध्ययन करने के लिए साहित्य में निर्धारित गीत के तत्व, परिभाषा, आदि पर विचार कर लेना आवश्यक है, जिससे इनके आधार पर हिन्दी चलचित्र गीतों की समीक्षा की जा सके --

संगीत की माधुरी से परिपूर्ण आत्मपरक काव्य को गीतिकाव्य कहते हैं। इस काव्य मे हृदयस्थ मनोभावों को संगीत की सुमधुर लय एवम् तान के माध्यम सेप्रस्तुत किया जाता है, यह अनुभूति प्रधान होता है। इसमें आत्मानुभूति ही संगीत के मधुर आरोहो- अवरोहों के साथ व्यक्त होती है और यह शिल्प सौष्ठव से अलंकृत होता है।

गीति मधुर भावों का उच्छ्वास, काव्य की करुण लगन है, अत: साहित्य के अन्तर्गत गीति का विशेष महत्व है। साहित्य का कोमलतम् अंश काव्य माना गया है, और कविता का मधुरिम उच्छ्वास है गीति।

मानव हृदय मे भावो का ज्वार उठा। वह ज्वार छन्दों व शब्दों मे साकार होकर संगित की लहरी मे थिरक उठा। संगीत भावो में डूब गया और भाव संगित में। दोनों के इसी सुखद मिलन ने गीतों को जन्म दिया।

गीत का जितना विस्तृत विवेचन और विश्लेषण ग्रीक और अंग्रेजी साहित्य मे हुआ है - उतना हिन्दी मे नहीं। हिन्दी मे जो हुआ भी है, वह अधिकांश में उक्त विदेशी विवेचन पर आधृत है। अत: गीति की परिभाषा और लक्षण निर्धारित करने के लिए प्रमुख पश्चिमी और भारतीय विद्वानों द्वारा गीति की प्रतिपादित विशेषताओं पर संक्षेप में विचार कर लेना आवश्यक होगा।

अंग्रेजी में `गीत` के लिए `लिरिक` (LYRIC)शब्द है जिसकी व्युत्पत्ति `लायर` शब्द से हुई है। प्रारम्भ मे, इस `लायर` नामक वाद्ययंत्र के सहारे गाये जाने के लिए जो कविता रची गयी, वह `लिरिक` कहलाई।[१] परन्तु आगे चलकर `लिरिक` की परिभाषा और स्वरूप मे परिवर्तन होगया। `लायर` उपेक्षित होकर एक ओर रख दिया गया और `लिरिक` में संगीतात्मकता के साथ आत्मतत्व का उत्तरोत्तर प्राधान्य होता गया।

अंग्रेजी की `लिरिक कविता` का विवेचन करते हुये पाश्चात्य समीक्षाशास्त्रियों ने लिखा है कि उसमे किसी एक विचार, भाव या घटना का चित्रण होता है।[२]

इस प्रकार गीत-गेयता और संगीतात्मकता की स्वानुभूति का प्रकाशन है।

गीत की परिभाषा

(क)- पाश्चात्य विद्वानो के अनुसार :

१- हीगल -- जर्मन के प्रसिद्ध सौन्दर्य शास्त्री `हीगल` के अनुसार-

---

१- "Lyric Poetry, in the original meaning of the term, was poetry composed to be sung to the accompaniment of Lyre or Harb."

— William Henry Hudson,
Edition - March 1960, Page-26

२- "....... each poem shall turn upon some single thought, feeling or situation."

— The Lyric Poetry.

'गीत में व्यक्तिगत भावना, विचार, इच्छा अर्थात आन्तरिक जीवन के रहस्यों, उसकी आशाओं, हर्ष और शोक आदि का उद्घाटन किया जाता है।[१]

२- अर्नेस्ट राइस -

"गीति- काव्य उन शब्दों में संगीतमय अभिव्यक्ति है, जो एक ओर तीव्रतम मनोभावों से शासित रहते हैं और दूसरी ओर प्रभावशाली सुन्दर लय से उन्मुक्त।' राइस के गीति काव्य सम्बन्धी विचारों से स्पष्ट हो जाता है कि तीव्रतम मनोभावों का प्रकाशन एवम् संगीतात्मकता गीत के प्रमुख तत्व हैं।

३- जान ड्रिंक वाटर:-

'गीति और कविता में कोई अन्तर नहीं है, प्रत्युत् वे एक दूसरे के पर्याय है।'[२] प्रसिद्ध कवि कालरिज की 'कविता श्रेष्ठतम शब्दों का श्रेष्ठतम क्रम है।'- ड्रिंकवाटर-"गीतिकाव्य में कवि के जीवन की तीव्रतम भावानुभूति सर्वोत्तम शब्दों के माध्यम से श्रेष्ठतम् क्रम मे अभिव्यक्त होती है"।[३] सर्वोत्तम से अभिप्राय यह है कि गीतकाव्य में ऐसे शब्दों का प्रयोग होता है, जो कवि की श्रेष्ठतम अनुभूति के सच्चे प्रतिपादक होते है।

१- "The lyric has the function of revealing in terms of pure art, the secrets of inner life, its hopes, its fantastic joys, its sorrows, its delirium."
—Encyclopaedia Brit. Vol. xvii, Page 181.

२- "......and that Lyric and Poetry are synonymous terms."
—The Lyric by John Drinkwater. Page 64.

३- काव्य रूपों के मूल स्रोत और उनका विकास-ले०डा०शकुंतला दुबे, पृ०२८३ प्रथम संस्करण - १९५८

-

जान ड्रिंकवाटर,श्रेष्ठतम क्रम का आशय:-

'गीति काव्य में वह अनुभूति ऐसे छन्दो बद्ध रूप में संजोयी जाती है कि छन्दों एवम् शब्दों के थोड़े से हेरफेर से ही सौंदर्य मे कमी आ जाती है' से लेते हैं।

प्रोफेसर एफ० बी० गमेरे के मतानुसार-'वैयक्तिक अनुभूति जन्य अन्तर्वृत्ति - निरूपिणी उस कविता को गीति काव्य कहते हैं, जो घटनाओं से सर्वथा परे भावनाओं से सम्बद्ध होती है। उसके द्वारा मानव की इच्छा ,आकांक्षा, भय आदि सेसम्बन्धित मनोभावों की अभि-व्यंजना होती है।[१]

इस परिभाषा से स्पष्ट है कि गमेरे वैयक्तिक भावनाओं को ही गीत की एकमात्र कसौटी मानते हैं। इसलिए उनके अनुसार ज्यों-ज्यों समाज व्यक्तिवादी होता गया है, कविता गीतात्मक होती गयी है।

एफ०टी० पालग्रेव का मत है कि गीति काव्य में किसी एक ही विचार ,भाव या स्थिति के प्रकाशन पर बल दिया जाता है और उसमे किसी एक ही भाव, विचार या अवस्था की संक्षिप्त ,किन्तु अखंड मनोवेग पूर्ण अभिव्यंजना होती है।[२]

प्रसिद्ध समीक्षक प्रो० हडसन गीत का विवेचन करते हुए स्पष्ट रूप मे कहते है--'गीति काव्य मे सर्वश्रेष्ठ भावना सच्चाई या हार्दिकता से की जाती है। गीति का उद्देश्य एक ही भाव या चित्रवृति का संक्षिप्त रूप में प्रकाशन करना होता है। अति विस्तार से उसकी

१-Hand-Book Of Poetics by F.B. Gummere, Chapter II, P.40.

२-Golden Treasury by Palgrave, Page-9

प्रभावात्मकता नष्ट हो जाती है ।[१] उसमे भाव और भाषा शैली का पूर्ण सामन्जस्य रहता है जो प्रत्येक कला के लिए अपेक्षित है ।

ब्रिटेन विश्वकोष के आधार पर गीतिकाव्य इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है- "गीतिकाव्य वह है, जिसमें विशुद्ध कलात्मक धरातल पर कवि के अन्तर्मुखी जीवन का उद्घाटन मुख्यतया होता है और जो उसको हर्ष उल्लास ,सुख-दुख एवम् विषाद को वाणी प्रदान करता है ।[२]

गीति के सन्दर्भ में प्रोफेसर हडसन द्वारा दी गयी परिभाषा अत्यधिक समीचीन जान पड़ती है । उनकी परिभाषा से गीति के तत्व स्पष्ट हो जाते हैं --

१- गीत में श्रेष्ठ भावना की हार्दिक अभिव्यंजना होती है ।
२- वह एक ही भाव या चित्त-वृत्ति विशेष की अति लघु रचना है ।
३- वैयक्तिक होते हुये भी उसकी भावना सार्वजनीन होती है ।

प्रो० ए० आर० एन्ट्रिविस्टिल गीतों में भावों की तीव्रता को अधिक महत्व देते है उनका कहना है कि कवि के अन्तर्जगत की अर्थात उसके हर्ष और शोक तथा उत्साह और उल्लास की गूंज है । चूंकि हृदय के ये तीव्रतम भाव क्षणभर स्थिर रहते है, अत: उनकी कलात्मक अभि-व्यन्जना करने वाला गीत भी अत्यन्त छोटा होता है । इसके अतिरिक्त एक ही भाव-विशेष से सम्बद्ध होने के कारण अन्य काव्यरूपों की अपेक्षा गीत में पूर्ण भावैक्य होता है । उसकी शैली मे अनूठापन और आकर्षण तथा उससे भी बढ़कर मनोहारिणी लय होती है।इन विशेषताओं के

१- An Introduction To The Study Of Literature
— William Henry Hudson, Page-97.

२- Encyclopaedia Britannica
Vol. XVII Page-181

अतिरिक्त ' एन्द्विस्टिल ' संगीतात्मकता एवम् विषय प्रधानता को भी गीत के तत्व के रूप में स्वीकार करते है । सारांश यह है कि उनके अनुसार भाव की तीव्रता संक्षिप्तता ,भाव की पूर्ण एकता , अनूठी शैली संगीतात्मकता, आत्म प्रधानता आदि गीत के प्रमुख तत्व है ।[१]

भारतीय विद्वानों के मत:-

पश्चिमी समीक्षकों के इन विचारों के पश्चात् भारतीय विद्वानों द्वारा निर्दिष्ट गीति के तत्वों और विशेषताओं का विवेचन संक्षेप में प्रस्तुत है --

१- बाबू श्यामसुन्दर दास:

' गीतिकाव्य में कवि अपने अन्तरतम् को दृष्टव्य कर देता है वह अपने अनुभवों और भावनाओं से प्रेरित होकर उनकी भावात्मक अभिव्यक्ति करता है उसमें शब्द की साधना के साथ साथ स्वर की साधना भी होती है ।[२]

बाबू श्यामसुन्दर दास ने गीति-काव्य को आत्माभिव्यन्जन सम्बन्धी कविता कहा है और बतलाया है कि गीति काव्य के छोटे-छोटे गेय पदों में मधुर भावनापन्न स्वाभाविक आत्म-निवेदन रहता है । इन पदों में शब्द की साधना के साथ-साथ संगीत के स्वरों की भी उत्कृष्ट साधना रहती है । इनकी भावना प्राय: कोमलहोती है और एक-एक पद में पूर्ण होकर समाप्त हो जाती है आधुनिक गीतिकाव्य- एवम् प्राचीन गीतों में सबसे बड़ा अन्तर यह है कि ये आत्माभिव्यन्जन की

१- The Study Of Poetry — Entwistle, Page 45-46.

२- हिन्दी गीतिकाव्य- ओ०प्र० अग्रवाल, प्रथम संस्करण ,पृ० ४

श्रेणी में आते हैं और प्राचीन 'आल्हखण्ड', 'बीसलदेव रासो' आदि वस्तु - वर्णन - विधायक कविता के उदाहरण है ।[१]

स्वर्गीय बाबू गुलाबराय गीतिकाव्य को गेय मुक्तक भी कहते है उनके अनुसार निजी भावातिरेक का प्राधान्य इस विधा का मूल है, संगीत से जुड़ा हुआ है, अत: संगीत उसका शरीर है तो निजी भावातिरेक उसकी आत्मा हैं ।[२]

बाबूजी का कहना है कि गीति काव्य मे निजीपन के साथ रागात्मकता रहती है और रागात्मकता मे तीव्रता बनाये रखने के लिए उसका छोटा होना आवश्यक है । आकार की इस संक्षिप्तता के साथ भाव की एकता एवम् अन्विति रहती है ।[३]

अत: बाबू जी के मत से स्पष्ट हो जाता है कि संगीतात्मकता और उसके अनुकूल सरस प्रवाह मयी कोमलकान्त पदावली, निजी रागात्मकता (जो प्राय: आत्म- निवेदन के रूप मे प्रकट होती है) संक्षिप्तता और भाव की एकता गीत के प्रमुख तत्व है वस्तुत: गीतके प्राय: ये ही तत्व पश्चिमी विद्वान एन्ट्रिविस्टिल ने निर्धारित किये है ।

२- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल:-

आचार्य शुक्ल ने गीतिकाव्य की विशिष्टता की ओर संकेत करते हुये बताया है कि 'गीतकाव्य उस नई कविता का नाम है , जिसमें प्रकृति के साधारण-असाधारण सब रूपों पर प्रेम-दृष्टि डालकर, उसके रहस्य भरे सच्चे संकेतों को परखकर ,भाषा को अधिक चित्रमय,

---

१- साहित्यालोचन - श्यामसुन्दर दास, पृ० ११५- ११६

२- काव्य के रूप - बाबू गुलाबराय, द्वितीय संस्करण ,पृ० १२१

३- ,, वही ,, पृ० १२२

सजीव और मार्मिक रूप देकर कविता का जो एक अकृत्रिम, स्वच्छंद मार्ग निकाला गया हो यह सर्वाधिक अन्त: भावाभिव्यन्जक होता है ।[१]

३- बाबू गुलाबराय:-

बाबू गुलाबराय का विचार है - ' गीतिकाव्य में निजीपन के साथ रागात्मकता रहती है और यह रागात्मकता भाव की एकता एवम् संक्षिप्तता के साथ संगीत की मधुर लय में व्यक्त होती है। इस लिए संगीत यदि गीति-काव्य का शरीर है तो निजी भावातिरेक उसकी आत्मा है । [२]

४- बाबू जयशंकर प्रसाद :-

' प्रसाद जी के अनुसार - ' गीति काव्य वह है जिसमें पौराणिक युग की घटना अथवा देश-विदेश की सुन्दरी के बाह्य वर्णन से भिन्न वेदना के आधार पर स्वानुभूतिमयी अभिव्यक्ति होती है , इसमें आभ्यान्तर - सूक्ष्म- भावों की प्रधानता रहती है और ध्वन्यात्मकता, लाक्षणिकता, सौंदर्यमय - प्रतीक विधान तथा उपचार वक्रता के साथ स्वानुभूति की विवृति होती है ।[३]

५- डा० रामखिलावन पाण्डेय:-

डा० पान्डेय भी अन्य विद्वानों की भांति संगीतात्मकता, आत्मनिष्ठा, आदि को गीति-काव्य का प्रमुख तत्व मानते है ।[४]

१- हिन्दी साहित्य का इतिहास- रा०चं० शुक्ल, पृ० ६५०

२- काव्य के रूप - बाबू गुलाबराय - पृ० १०७- १०८

३- काव्य और कला तथा अन्य निबन्ध - पृ० १२३- १२८

४- गीति काव्य - डा० रामखिलावन पाण्डेय - पृ० ३६

६- सुश्री महादेवी वर्मा:-

गीति के सम्बन्ध में सुश्री महादेवी वर्मा अपने विचार व्यक्त करते हुए कहती है --`सुख-दुख की भावावेशमयी अवस्था -विशेष का गिने- चुने शब्दों मे स्वर- साधना के उपयुक्त चित्रण कर देना ही गीत है । इसमें कवि को संयम की परिधि में बंधे हुए जिस भावातिरेक की आवश्यकता होती है - वह सहज प्राप्त नहीं, कारण हम प्राय: भाव की अतिरूपता में कला की सीमा लांघ जाते हैं । और उसके उपरान्त भाव के संस्कार मात्र मे मर्मस्पर्शिता का शिथिल हो जाना अनिवार्य है ।[१]

आगे वे गीति में वैयक्तिकता पर जोर देती हुई लिखती हैं-- `गीति यदि दूसरे का इतिहास न कहकर वैयक्तिक सुख- दुख ध्वनित कर सके तो उसकी मार्मिकता विस्मय की वस्तु बन जाती है - इसमें सन्देह नहीं है ।[२]

अत: गीति के अनुभूति की सामान्यता अथवा सर्वव्यापकता पर जोर देते हुए महादेवी वर्मा लिखती है --`सफल गायक वही है, जिसके गीत में सामान्यता हो, अर्थात् जिसकी भाव-तीव्रता में दूसरों को अपने सुख-दुख की प्रतिध्वनि सुन पड़े और यह तब स्वत: सम्भव है, जब गायक अपने सुख-दुखों की गहराई में डूबकर या दूसरे के उल्लास-विषाद के सच्चा तादात्म्य कर गाता है ।[३]

महादेवी वर्मा के उक्त विचारों के आधार पर कहा जा सकता है कि वे गीति के प्रमुख तत्व भावावेश,संगीतात्मकता उत्कृष्टशैली, वैयक्तिकता तथा अनुभूति को सामान्यत: मानती है।

१-`सान्ध्यगीत`- महादेवी वर्मा - पृ० ४(अपनी बात)

२- साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निवन्ध-चयन- गंगाप्रसाद पांडेय, गीति काव्य, पृ० ११६

३- साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निवन्ध-गीतिकाव्य-पृ० १२३, गंगाप्रसाद पाण्डेय।

डा० दशरथ ओफा:-

डा० ओफा की गीति के सम्बन्ध मे यह मान्यता है -- " जिस काव्य में एक तथ्य या एक भाव के साथ-साथ एक ही निवेदन , एक ही रस , एक ही परिपाटी , हो तो वह गीति काव्य है ।[१]

कवीन्द्र रवीन्द्र:-

गीति काव्य के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करते हुये कवीन्द्र रवीन्द्र लिखते है --" मन में जब एक वेगवान अनुभव का उदय होता है तब कवि उसे गीति काव्य मेंप्रकाशित किये बिना नहीं रह पाता ।"[२]

इस प्रकार कवीन्द्र रवीन्द्र के अनुसार गीति काव्य कवि के मन में उत्पन्न हुआ वह वेगवान भावावेग है, जिसका प्रकाशन हुए बिना नहीं रहता ।

इस प्रकार विविध विद्वानों के मतों का गहन अनुशीलन करने पर ज्ञात होता है कि गीति - काव्य उस आत्मानुभूतिव्यन्जक कविता को कहते है, जिसमे आन्तरिक मनोभावों की लघु आकार मे संगीतमयी सुकुमार अभिव्यक्ति होती है । इस दृष्टि से गीतिकाव्य की अधोलिखित प्रमुख विशेषातायें हैं । --

१- आत्माभिव्यन्जकता अथवा उसमे वैयक्तिक सुख- दुखात्मक अनुभूति की अभिव्यन्जना होती है ।

१- समीक्षाशास्त्र - पृष्ठ- ८३

२- काव्य रूपों के मूलस्रोत और उनका विकास - डा० शकुन्तला दुबे पृष्ठ- २८७

२- रागात्मकता, अर्थात् उसमे कविता के राग- तत्व की प्रवलता होती है ।

३- काल्पनिकता अर्थात् उसमे कल्पना-तत्व भी विद्यमान रहता है ।

४- संगीतात्मकता, अर्थात् उसमे संगीत की मधुर लय-तान विद्यमान रहती है ।

५- भावगत एक रूपता अर्थात् उसमे आदि से अन्त तक एक भाव रहता है ।

६- आकारगत लघुता - अर्थात् सरसता हेतु उसका आकार अपेक्षाकृत लघु होता है ।

७- शैलीगत सुकुमारता, अर्थात् उसमें कोमलकान्त पदावली का सुकुमार सौन्दर्य रहता है ।

अत: भारतीय एवम् पाश्चात्य विद्वानों ने गीति काव्य के अ उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम गीति के निम्नलिखित तत्व निर्धारित कर सकते है:--

१)- संगीतात्मकता

२)- वैयक्तिकता

३)- तीव्रतम भावावेश का सहज स्फुरण

४)- भाव- ऐक्य एवम् संक्षिप्तता ,

५)- उत्कृष्ट और अनूठी भाषा शैली ।

१- संगीतात्मकता:-

संगित गीति काव्य का मूलाधार है, क्योंकि बिना संगित के वह आगे नहीं बढता , विना संगीत के उसके पद नहीं चलते और बिना संगित के उसका निर्माण नहीं होता । संगीत की मधुर स्वर - लहरियों पर चढकर ही उसके चरण थिरकते हैं, संगित ही उसमें प्राण - चेतना का संचार करता है , संगीत ही उसमे अखण्ड रस- धारा प्रवाहित करता है , सन्गीत ही उसे भाव- मुखर बनाता है , सन्गीत ही उसकी गहन अनुभूति को जगाता है । और संगीत के विशिष्ट आरोह-अवरोह ही उसके मार्मिक उद्गारों की अभिव्यन्जना प्रदान करते हैं ।

२- वैयक्तिकता:-

यह गीत का दूसरा मुख्य तत्व है , जिसे सभी विद्वानों ने एक स्वर से स्वीकार किया है । यों तो काव्य के सभी रूपों में कवि के व्यक्तित्व की छाप रहती है । पर उसके अन्तरतम् की अपनी शुद्धतम भावना का प्रकाशन गीत में ही होता है । और उसी मे उसके व्यक्तित्व को स्पष्ट रूप से पढ़ा जा सकता है । किन्तु इसका अभिप्राय यह कदापि नही समझ लेना चाहिये कि कवि की ये निजी अनुभूति कुछ ऐसी विलक्षण होती है कि वह उसी तक सीमित रहकर संसार में और किसी के हृदय से मेल नहीं खाती । किसी कविता में यदि ऐसी सकुंचित वैयक्तिकता की अनुभूति होगी तो वह कविता रसास्वादन की वस्तु न बनकर तमाशे की चीज बन जायेगी ।[१] सारांश यह है कि गीति काव्य में कवि अपनी भावनाओं को अपनी कहकर प्रत्यक्ष रूप में रखता

१- इसी ओर लक्ष्य कर पं०रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है- 'दूसरी ओर जिसे वह स्वानुभुति कहकर प्रकट करता है और वह यदि संसार में किसी की अनुभूति से मेल नहीं खायेगी, तो एक कौतुक मात्र होगी,काव्य नहीं, (पृ० ८६ - गोस्वामी तुलसीदास, रामचन्द्र शुक्ल)
ऐसा काव्य और उसका कवि दोनों तमाशा देखने की चीज ठहरेंगे, तुलसी की काव्य पद्धति :पृ० ८६ गोस्वामी,तुलसीदास,रा०च०शुक्ल ।

अवश्य है । उन पर आवरण डालने का प्रयत्न भी वह नहीं करता प्रत्युत निस्संकोच अपने हृदय को खोलकर वह पाठक के सामने रख देता है परन्तु फिर भी उसकी आत्मा निखिल विश्व की आत्मा के साथ मिलकर ही प्रकाशित होती है । अर्थात् उसकी आत्माभिव्यन्जना का स्वरूप व्यक्तिगत होते हुए भी सार्वजनीनता अथवा सामान्यता को अपनाये रहता है।[१]

२- तीव्रतम भावावेग:-

तीव्र भावानुभुति के बिना गीतिकाव्य का निर्माण हो ही नहीं सकता । कवि की तीव्र भावनाऐं अनुभूति द्वारा भाव बनकर ही अभिव्यक्त होती है।अत: यदि भावावेग नहीं है तो काव्य का स्वरूप ही क्या होगा।अत: गीतिकाव्य की आत्मा भाव है, तो काव्य किसी प्रेरणा के भार से दबकर एक साथ गीत रूप में फूट पड़ता है । एक कवि ने लिखा भी है --

'गीत तुम कहते जिसे हो, प्रेरणा का व्रण है आकुल ।
और है वह शक्ति जिससे, वेदना व्रण भी सके घुल ।।

इसी से गीतिकाव्य मे हार्दिकता(Spontaniety) तत्व आवश्यक है और यह तत्व भाव ही है । 'ब्रूनलियर' ने भी स्पष्ट लिखा है । 'गीति काव्य से कवि भावानुकूल लयों में अपनी आत्मनिष्ठा, वैयक्तिक भावना का प्रकाशन करता है ।' विलियम वर्डसवर्थ ने भी कविता की जो परिभाषा दी है, वह भी भावतत्व को ही ध्यान मे रखकर दी है । क्योंकि , कविता तीव्र भावों का तीव्र उच्छलन है ।

१- काव्य- रूपों के मूलस्रोत और उनका विकास ,डा०शकुन्तला दुबे , पृष्ठ- २८७

४- भाव ऐक्य एवम् संक्षिप्तता:-

गीतिकाव्य में प्राय: एक ही भाव आदि से अन्त तक विद्यमान रहता है। कवि जिस भाव को अपनी सुललित पदावली में अभिव्यक्त करना चाहता है। उसे गीति के साँचे मे ऐसा ढालता है कि उसकी सीमाओं में आबद्ध गीति-काव्य इसीलिए पृथक् होता है क्योंकि अन्य साहित्यिक विधाओं मे विविध भावों का संयोजन होता है जबकि गीतिकाव्य का प्रत्येक गीत एक ही भाव को लेकर चलता है।

गीत का कलेवर छोटा होता है, इसका कारण है- जिस तीव्रतम भावावेश के कारण अथवा चित्त वृत्ति- विशेष में उसकी सृष्टि का भी विस्तृत न होकर संक्षिप्त होना स्वाभाविक है यदि यह कहा जाय कि वस्तु की अति विस्तृत- व्याख्या में वह मार्मिकता और प्रभावशालिता नहीं रह जाती, जो उसके संक्षिप्त रूप में सन्निहित रहती है तो अनुचित न होगा। गीत की संक्षिप्तता में उसकी मार्मिकता गुंथी हुई है इसीलिए यदि कवि द्वारा उसका अति विस्तार किया गया तो उसके समस्त प्रभाव और आकर्षण को खो बैठने का भय रहता है।

५- उत्कृष्ट और अनूठी भाषा शैली:-

प्रत्येक कला में उसके भावपक्ष को व्यक्त करने के लिए पुष्ट कलापक्ष की आवश्यकता होती है। इसीलिए उत्कृष्ट कला में दोनों का सदा मणिकांचन संयोग रहता है। गीत का भी जैसा मधुर और हृदयस्पर्शी आन्तरिक भाव लोक होता है। उसकी तीव्रतम कोमल अनुभूतियों के प्रकाशन के लिए कवि कलाकार बनकर मंजुल और मसृण पदावली चुनकर लाता है, जो अनुरूप और उपयुक्त होने से गीत को अभिनव सौन्दर्य से मण्डित कर देती है। गीत का एक एक शब्द अपने स्थान पर हार के नग के समान जड़ा रहता है। जिसके स्खलन से सारे गीत की शोभा विनष्ट हुए बिना नही रह पाती। किन्तु कवि का यह सारा व्यापार अयत्नज होता है। तात्पर्य यह कि गीत की अभिव्यक्ति अत्यन्त

कलात्मक होते हुये भी नितान्त सहज और अकृतिम होती है।

अतः गीति के आधारभूत तत्व एवम् विशेषताओं के आधार पर हम गीति की परिभाषा यों कर सकते हैं --

' गीति अनूठी भाषा शैली में तीव्रतम वैयक्तिक भावावेश की अति संक्षिप्त और संगीतात्मक सहज अभिव्यक्ति है।'

गीतों की विविधता एवम् उनका वर्गीकरण:-

हिन्दी का आधुनिक - युग गीत प्रधान है। भक्तिकाल का पद-साहित्य भी गेय होने के कारण समस्त गीति तत्वों से युक्त है।

सुश्रीमहादेवी वर्मा के शब्दों में:-

' हमारा व्यक्ति प्रधान जीवन आज अपनी प्रत्येक सांस का इतिहास लिख देना चाहता है। वह अपने प्रत्येक कम्पन को अंकित करने के लिए उत्सुक है और प्रत्येक स्वप्न का मूल्य पा लेने के लिए विकल है। इसलिए इस समय गीतों की सृष्टि बहुलता से हो रही है।'

गीतों के इस बाहुल्य में उनकी विविधता भी दर्शनीय है। ' इनमें कुछ गीत मलय- समीर के झोंके के समान हमें बाहर से स्पर्श कर अन्तर सिहरा देते हैं, कुछ अपने दर्शन के बोझिल पंखों द्वारा हमारे जीवन को सब ओर से छू लेना चाहते हैं, कुछ किसी अलक्ष्य डालीं पर छिपकर बैठी हुई कोकिल के समान हमारे ही किसी भूले स्वप्न की कथा कहते रहते हैं और कुछ मन्दिर के पूत- धूप- धूम के समान हमारी दृष्टि को धुंधला परन्तु मन को सुरभित किये बिना नहीं रहते।'[१] सारांश यह कि हमारे यहाँ विविध प्रकार के गीत लिखे जा रहे हैं। परन्तु उनके अन्तर्बहिर दोनों को अंग्रेजी गीति-काव्य ने विशेष रूप से प्रभावित किया है।

१- साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबन्ध- गीतिकाव्य- - लेखिका: महादेवी वर्मा, पृ० १२०

हिन्दी में जो गीति लिखे गये है -- उन्हें वस्तु और शैली के आधार पर निम्नलिखित शीर्षकों में विभक्त किया जा सकता है --

१- शृंगारिक -गीत:-

प्रेम मानव जीवन की महान् भावना है, जो सारे जीवन पर छाई है । बिना उसके जीवन में सूनापन सा लगने लगता है । यही कारण है कि विश्वभर के काव्यों में प्रेमभावना सर्वाधिक अंकित की गयी है । गीति के माध्यम से यही प्रेम भावना हृदय की कोमलतम् और मधुरतम अनुभूति के रूप में मार्मिकता को व्यक्त करते हुये अद्वितीय बन जाती है। हिन्दी में ऐसे शृंगार गीत सर्वाधिक लिखे गये है जिनका पूर्ण उत्कर्ष मध्यकालीन पद साहित्य और आधुनिक काल के छायावादी शैली के प्रेम और सौन्दर्य के गीतों में दिखलायी देता है । इस सन्दर्भ में विद्यापति , सूर ,मीरा तथा प्रसाद एवम् महादेवी वर्मा रचित पद एवम् गीत उल्लेखनीय है ।

२- भक्ति परक गीत:-

भक्ति-परक गीतों में भक्त अपने इष्ट के प्रति आत्म-निवेदन करता है । उन गीतों मे भक्त-हृदय की सच्ची और तीव्रतम अनुभूति रहती है । ऐसे गीतों के श्रवण से मन का मैल धुल जाता है । और हृदय कमल-प्रफुल्लित हो उठता है । हिन्दी मे कबीर ,सूर, तुलसी,मीरा, नानक, दादू, भारतेन्दु आदि के भक्ति परक गीत इसी प्रकार के हैं । छायावादी कवियों के रहस्य भावनाओं से सम्बन्धित गीत भी इसी श्रेणी में रखे जा सकते है ।

३- सामाजिक- गीत:-

समाज के विभिन्न पहलुओं का चित्रण कवि इस प्रकार के गीतों के माध्यम से करता है । समाज की रूढ़ियाँ ,कुरीतियाँ,वर्गभेदों ,

आदि के प्रति वह विद्रोह और आक्रोश की अग्नि उगलता है । ऐसे गीतों में समाज का यथार्थ चित्रण अधिक होता है ।

४- राष्ट्रीय- गीत:-

वे गीत जिनमें देश प्रेम की गूंज रहती है , राष्ट्रीय गीत कहलाते है । ऐसे गीतों में अतीत के गौरव पूर्ण इतिहास का अंकन, शत्रु को पीस डालने का संकल्प, अमर शहीदों के प्रति श्रद्धांजलि होती है । हिन्दी मे इस प्रकार के देश- प्रेम के गीत आदि- काल में लिखे गये ।परन्तु वे प्रबन्धात्मक होने से गीत न कहलाकर, वीर भावात्मक खण्ड काव्य की श्रेणी मे रखे गये । सच्ची देश-भक्ति के गीतों का सृजन आधुनिक काल के प्रारम्भ मे भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के समय से हुआ । इन गीतों में राष्ट्रीयता की प्रबल लहर थी । कवियों के कण्ठ से देश भक्ति के अनेक प्रेरणास्पद सुंदर गीत फूट पड़े । इन गीतों ने हमारे साहित्य को बड़े ओजस्वी और वीर भावों की उत्कृष्ट गीत- सम्पति देकर उसे गौरवान्वित किया ।

५- व्यंग्य- गीत:-

व्यंग्य के माध्यम से कवि का उद्देश्य समाज सम्प्रदाय आदि की विभिन्न बुराइयों को समूल नष्ट करना होता है । ऐसे गीतों में वचन-वक्रता का पुट अधिक होता है । हिन्दी मे सूर के उपालम्भ भरे पदों में व्यंग्य और परिहास देखते ही बनता है । प्रगतिवादी और आधुनिक हिन्दी कविता में भी सुन्दर व्यंग्य गीत मिलते है ।

६- शोक-गीत:-

शोक गीत की रचना के मूल में आत्यन्तिक दुख की भावना होती है । इन गीतों मे दुख: की भावना ही प्रधान होती है ये अधिकतर

शोक आदि को व्यक्त करने के लिए ही लिखे जाते है । इसके मूल मे हृदय का गहन आघात होता है जो मानव हृदय को भाव-विह्वल करके झकझोर डालता है । श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी `निराला` का `सरोज-स्मृति` गीत इसी प्रकार की सशक्त रचना है ।

७- सम्बोधन -गीत:-

इसे अंग्रेजी में `ओड` कहते हैं , इन गीतों मे किसी को सम्बोधित करके स्तुतिपरक भावनाओं की अभिव्यक्ति की जाती है। किसी महान् तथा आदरणीय व्यक्ति के प्रति कवि अपनी भावनाओं को गम्भीर तथा आदर भाव से व्यक्त करता है । वस्तुत: इस प्रकार के काव्य की कुछ-कुछ झलक हमें कालिदास के `मेघदूतम्` जैसे सन्देश काव्य में मिलती है । हिन्दी के आधुनिक काल के छायावादी -युग में अंग्रेजी ढंग के सम्बोधन गीत लिखे गये है । ऐसे कवियो मे प्रसाद, पन्त ,निराला, का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है ।

८- बाल-गीत:-

आधुनिक काल के हिन्दी के कुछप्रमुख कवि बालोपयोगी सुन्दर तथा प्रेरणात्मक गीत लिखने की ओर विशेष रूप से उन्मुख हुए है । ऐसे बालोपयोगी-गीत -साहित्य का हिन्दी में अभाव रहा है । किन्तु स्वाधीन भारत की राष्ट्रीय सरकार केप्रोत्साहन से अब इस प्रकार के गीतों के कई अच्छे संग्रह सामने आ रहे है । जिनमें प्रमुख कवियो के रूप मे पं० सोहनलाल द्विवेदी ,द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी, निरन्कार देव सेवक, आदि के नाम विशेष रूप से प्रचलित है ।

विभिन्न प्रकार के गीतों के अतिरिक्त हिन्दी में प्रकृति सम्बन्धी गीत, नृत्यगीत, आदि भी लिखे गये है। इधर वर्तमान काल में छायावादी कवियों द्वारा स्वतन्त्र प्रकृति के सौन्दर्य पर मुग्ध होकर सुन्दर गीत लिखे गये। नृत्य गीत, समूह रूप में गाये जाने वाले गीत होते है। नृत्य गीत प्रायः लोक गीतों में अधिक उपलब्ध हैं, पर साहित्यिक - गीतों में कम मिलते है।

६- लोक-गीत:-

लोकगीतों में गांव के लोग अपने भोले-भाले, सरल -सीधे, भावों और मनोवेगों को सरल भाषा में अभिव्यक्त करते है इनमे लेखक के व्यक्तित्व की प्रधानता रहती है। और उसका अन्तर्वेग तीव्रोच्छ्वास, स्वतः गीतिकाव्य का रूप धारण कर लेता है। इसमें सजीवता, मर्मस्पर्शिता तथा हार्दिकता प्रचुर मात्रा में होती है। सहज गेयता इनका प्रमुख गुण है, इन लोकगीतो के दो रूप होते है --

(१) - अकेले गाए जाने वाले लोकगीत,और
(२) - समूह रूप में मिलकर गाए जाने वाले लोकगीत। ये गीत लोक-मानस से अपना पूर्ण तादात्म्य बनाये रखते हैं।

साहित्यिक गीत और लोक-गीत:-

हिन्दी का यह पूरा गीति साहित्य दो श्रेणियों में विभक्त है - एक तो लिखित रूप में उपलब्ध होने वाले गीत और दूसरे अलिखित रूप में प्राप्य मौखिक गीत। लिखित गीतों की धारा शिष्ट कवियों की धारा है और मौखिक गीतो की धारा लोक की निजी धारा है, जिसमे लोक-हृदय अपने सहज रूप मे खुल पड़ा है। विद्वानो ने पहले प्रकार के गीतो को साहित्यिक गीत कहा है और दूसरे प्रकार के गीतों को लोकगीत।

१- साहित्यिक गीतों और लोक गीतों में साम्य:-

███████████ - महाकाव्य ही लोक गीतों के विकसित और संगठित रूप हैं।[१] जिस प्रकार साहित्यिक गीतों में लोक गीतों से सामग्री ग्रहण की गयी है उसी प्रकार लोक-गीत भी जातीय साहित्य से सामग्री ग्रहण करते है। इस प्रकार कह सकते है - कि लोक साहित्य और शिक्षित - लोगों के साहित्य में सदैव आदान-प्रदान होता रहता है।

२- साहित्यिक गीतों और लोक गीतों में वैषम्य:-

साहित्यिक गीतों और लोक गीतों में भाषा शैली का सबसे बड़ा अन्तर पाया जाता है। साहित्यिक गीतों की भाषा परिष्कृत ,परिमार्जित, प्रांजल स्वम् कलात्मक होती है। जबकि लोक गीतों की भाषा अनगढ़ अनलंकृत , सीधी-सादी होती है। `पेरी` के मतानुसार - लोक-गीत आदि मानव का उल्लासमय संगीत है। जिस प्रकार अपने आप ही हरे जंगल मे पंछी गा उठते है, ठीक उसीप्रकार लोक-गीत स्वाभाविक रीति से हृदय से फूट पड़ते है।'[२]

१- `प्राय: जब प्रबन्धों के शंखनाद में गीत का मधुर स्वर मूक हो जाता है, तब उसकी प्रतिध्वनि लोक- हृदय के तारों में गूंजती रहती है। इसी प्रकार गीत की रागिनी जब काव्य के कथा-साहित्य की ओर से वीतराग बना देती है, तब वे कथाएं सरल आख्यान और किंवदन्तियों के रूप मे लोक-काव्यों में कही सुनी जाती है। जब आधुनिक जीवन की कृतिम चकाचौंध मे प्रकृति का रूप बनाये रखना कठिन हो जाता है। तब लोक और ग्राम में वह जीवन के पार्श्व में खड़ी रहती है। जब बदली परिस्थितियों मे रण-कंकण खुल जाते हैं, केसरिया बाने उतर चुकते हैं तब लोक-गीत वीर रस का पुनर्जन्म देते रहते है। इस प्रकार ना जाने कितनी काव्य -समृद्धि हमे लोक गीत लौटाते रहते है।'
महादेवी वर्मा- पृ०१४०- गीति काव्य साहित्यकार की आस्था तथा अन्य- - निबन्ध।

२- भारतीय लोक साहित्य- डा० श्याम परमार ,पृ० ५२,५४

साहित्यिक गीतो मे राग-रागिनियों पर आश्रित वाद्य संगीत भी हो सकता है। परन्तु लोक-गीत एक ऐसे अनूठे लोक संगीत से युक्त होते है जिसका माधुर्य ही अपना अलग है। लोकगीत प्राय: ढोलक, मंजीरे, चिमटे, ढपली, मटका, हारमोनियम, कैंकडिया आदि वाद्य यंत्रों के सहारे गाये जाते है।

साहित्यिक विधाओं में गीति का महत्व :-

साहित्य के दो रूप हैं- गद्य और पद्य। गद्य के अन्तर्गत नाटक, उपन्यास, कहानी, निबन्ध, आदि रखे जाते है। गद्य में लेखक की भावना गौण और बौद्धिक विचारों की प्रधानता रहती है। पद्य के अन्तर्गत महाकाव्य, खण्डकाव्य, तथा मुक्तक काव्य आते हैं। जिनमे भावना का प्राधान्य रहता है। गीति इसी वर्ग की रचना है।

समीक्षकों की दृष्टि मे गीति काव्य ही सच्ची कविता है। कहने का तात्पर्य है कि गीति पद्यात्मक साहित्य में वह सर्वोत्कृष्ट रचना है, जिसमे कवि के अन्तरतम को तीव्र अनुभूतियों का कलात्मक ढंग से प्रकाशन होता है।

हिन्दी गीति साहित्य परम्परा: एक विहंगम दृष्टि:-

भारतीय अर्थात् संस्कृत गीतिकाव्य की परम्परा अति प्राचीन है` भारतवर्ष की यह विशेषता है कि यहाँ विश्व के प्राचीनतम ग्रन्थ `एक `ऋग्वेद` मे ही गीतिकाव्य का समुज्ज्वल स्वरुप दृष्टिगोचर होता है। सामवेद तो सुमधुर गीतियों का अक्षय भण्डार है। जिसमे नाद सौन्दर्य, कल्पना, सौन्दर्य अनुभूति- वैशिष्ट्य आदि अनेक विशेषताएँ विद्यमान है संगीत की सुमधुर तान एवम् लय से परिपूर्ण सामवेद की ऋचाएँ ललित गीतियों का का अजस्र स्त्रोत प्रवाहित कर रही है। तत्पश्चात् बौद्धकालीन पालिसाहित्य मे भी गीतिकाव्य पर्याप्त मात्रा मे मिलता है बौद्ध की मेरी -गाथाएँ तो

पुलकित गीति-काव्य के उज्ज्वल उदाहरण है, जिनमें कोमल-कान्त पदावली के अन्तर्गत मधुर भावनाओं की सरिता प्रवाहित हो रही है। लौकिक संस्कृत का साहित्य भी सुमधुर गीतियों से परिपूर्ण है। महाकवि कालिदास कृत 'शकुन्तला', 'मेघदूत', 'मालविकाग्नि मित्र' आदि काव्य भवभूति- कृत 'उत्तररामचरिता' हर्ष -कृत 'रत्नावलि' आदि काव्यों में गीतिओं की भरमार है। जो संस्कृत एवम् प्राकृत भाषा के लालित्य से परिपूर्ण है, और जिनमें तत्कालीन जन रुचि के अनुकूल संगीतात्मकता एवं नाद सौन्दर्य विद्यमान है।संस्कृत की गीति-काव्य- परम्परा का चरम विकास जयदेव - कृत 'गीत गोविन्द' से दृष्टि-गोचर होता है। जयदेव का यह गीतिकाव्य संस्कृत साहित्य का श्रृंगार है जिसमे गीति काव्य की सरसता, स्निग्धता, मृदुलता एवम् कोमलता के साथ साथ शब्द और अर्थ की मंजुलता विद्यमान है।

संस्कृत तथा प्राकृत के युग की समाप्ति पर हिन्दी के आदिकाल मे अनेक कवियो ने सुमधुर गीतियों का निर्माण किया है। इनमे से नरपति नाहल्कृत 'बीसलदेव रासो', हिन्दी का सर्वप्रथम गीति काव्य कहलाता है। इसमे गेयता का प्राधान्य है। और पुलकित पदावली में बीसलदेव के विवाह तथा उसके रुठकर विदेश जाने का अत्यन्त रोचक एवं मधुर शैली में वर्णन किया गया है यह श्रृंगारिक रस की दृष्टि से अधिक सरस और सजीव है। वैसे यह वीर गीत पद्धति पर लिखा गया है। किन्तु जीवन की कोमल भावनाओं से परिपूर्ण होने तथा श्रृंगार भरी भावनाओं का आधिक्य होने के कारण इसे वीर-गीत कहना न्यायसंगत प्रतीत नहीं होता इसी काल का दूसरा गीति काव्य जगनिक कृत आल्ह खण्ड है। यह वीर रसात्मक एक वीर गीत है जिसमें आल्हा-ऊदल के शौर्य एवम् पराक्रम का अत्यन्त रोचक एवम् सजीव शैली में निरूपण किया गया है। इस गीतिकाव्य में आत्माभिव्यक्ति के स्थान पर कथा तत्व एवम् संगीत का ही प्राधान्य है, और इसका प्रचार मौखिक रूप मे भी अधिक है इसी आदिकाल में

हिन्दी के विख्यात गीतकार `विद्यापति` के सुमधुर गीतिकाव्य के भी दर्शन होते है। विद्यापति अपनी सरल सुमधुर एवम् सुललित गीतियों के कारण ही `मैथिल कोकिल` कहलाये है। उनकी सम्पूर्ण गीतियाँ विद्यापति की पदावली मे संकलित है। यह गीति काव्य मुख्यत: जयदेव के 'गीत- गोविन्द' के ही समान है। इसमे श्रृंगार की प्रधानता है और भाव माधुर्य का अद्भुत चमत्कार है। इन सभी गीतियों में कल्पना का अद्भुत चमत्कार है। इन सभी गीतियों मे कल्पना का अद्भुत कौशल, भावनाओं का अनुपम माधुर्य, संगीत का अद्वितीय नाद-सौन्दर्य तथा काव्य का अलौकिक चमत्कार विद्यमान है। किन्तु इनमे भी आत्मभिव्यन्जन का अभाव है।

हिन्दी- साहित्य के मध्यकाल में अनेक गीतकाव्यों का निर्माण हुआ है। इनमे से ज्ञान मार्ग के प्रमुख प्रवर्तक महात्मा कबीर का गीतिकाव्य लोक प्रियता, मधुरता सरसता एवम् आध्यात्मिकता की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है। कबीर के "सबद", "रमैनी" पूर्णतया गीतिकाव्य है। जिनमें सुन्दर गाने योग्य पदों का संकलन किया गया है। कबीर के गीतिकाव्य मे विषय की विविधता के साथ साथ संसार की निस्सारता, ब्रह्म की सत्यता एवम् जीवों की हृदय शुद्धि पर विशेष बल दिया गया है। ये सभी गीत संगीत की नाद- माधुरी के साथ साथ भावों की कोमल अभिव्यन्जना से परिपूर्ण है। किन्तु इनकी भाषा न तो परिष्कृत है और न परमार्जित, अपितु वह विविध बोलियों का संगम बनी है। इसी युग में कृष्ण काव्य के प्रवर्तक सूरदास का `सूरसागर` प्राप्त होता है। जो गीतिकाव्य का अक्षय भण्डार है। कृष्ण भक्ति के अखण्ड रस से परिपूर्ण सूर का गीतिकाव्य ब्रजभाषा का श्रृंगार है। तथा भगवत विषयक रति का भण्डार है। इसमे वात्सल्य रस का अलौकिक चमत्कार प्रकट किया है गया है। यह श्रृंगार के संयोग और वियोग दोनों पक्षों की ललित अभिव्यक्तियों का मार्मिक उद्गार है। इसी युग मे राम भक्ति शाखा के प्रमुख प्रवर्तक गो० तुलसीदास के मधुर गीति काव्य के दर्शन देते है। जो कवितावली गीतावली, विनय पत्रिका, पार्वतीमंगल, जानकी मंगल आदि रूपों में विद्यमान है।

गोस्वामी जी की इन गीतियों में काव्य मर्मज्ञता सरसता, भावुकता, गम्भीरता, एवम् सजीवता के साथ साथ संगीत की अलौकिक मधुरता विद्यमान है। विनय पत्रिका में आत्माभिव्यक्ति का अत्यन्त प्रांजल एवम् प्रौढ़ रूप दृष्टिगोचर होता है। परन्तु गीतिकाव्य का चरम विकास इसी युग की कृष्ण-भक्त कवियत्री मीराबाई के पदों में दृष्टिगोचर होता है। मीरा की गीतिया आत्मनिवेदन की चरमसीमा पर पहुँची हुई है और उनमे कल्पना - कौशल, रस माधुर्य,संगीत सौन्दर्य आदि गुण भी पर्याप्त मात्रा में विद्यमान है। उपासना के माधुर्य- भाव से परिपूर्ण मीरा का गीतिकाव्य आत्मानुभूति की प्रौढ़ता, आनन्द की पराकाष्ठा, विरह- वेदना की गम्भीरता, दाम्पत्य रति की मधुरता एवं भक्ति भावना की सरसता से आप्लावित है। यद्यपि इसी मध्यकाल में स्वामी हरिदास, सूरदास, मनमोहन, हरीराम व्यास, ध्रुवदास रहीम, नागरीदास, भगवत रसिक,आदि कितने ही गीति-काव्य के निर्माता कवि हुए है, तथापि सभी कवियों का गीति-काव्य मीरा के सम्मुख फीका जान पड़ता है। मीरा इस युग की सर्वोत्कृष्ट गीति-रचयिता कवयित्री है।

भक्तिकाल के पश्चात रीतिकाल मे श्रृंगारी तथा नीति-विधायक मुक्तकों की रचना हुई। कविगण स्वानुभूति मे न डूबकर पारितोषिक के प्रलोभन मे नवाब-बादशाहों को प्रसन्न करने के लिए उक्ति वैचित्र्य का कमाल दिखाने लगे। अत: कविता में भावपक्ष दब गया और गीतों की रचना न हो सकी।

आधुनिक युग के आरम्भ में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के गीति-काव्य के दर्शन होते है। इस युग में आकर गीतिकाव्य दो प्रमुख धाराओं में प्रवाहित होने लगा था -- एक तो आरम्भ युग से चली आयी हुई आत्मनिवेदन धारा में गीति काव्य का निर्माण हो रहा था, और दूसरे पराधीन देश की दुर्दशा ग्रस्त दीन हीन दशा को देखकर राष्ट्रीय भाव धारा भी प्रवाहित होने लगी थी। भारतेन्दु जी ने उक्त दोनों

धाराओं को अपनाकर अपने गीतों का निर्माण किया इस प्रकार उनके भक्ति विधायक पद आत्मनिवेदन की धारा के अन्तर्गत आते हैं और `भारत दुर्दशा` तथा `नीलदेवी` नाटक में लिखे गये गीतों के अन्तर्गत राष्ट्रीय भाव धारा विद्यमान है। काव्य के द्वितीय चरण में आकर राष्ट्रीय भावधारा ही प्रमुख होगया। क्योंकि द्विवेदी युग के समस्त कवियों ने देश की दुर्दशा, आन्दोलनों की निराशा, प्राचीन भारत का उत्कर्ष, परतन्त्र भारत की दयनीय अवस्था आदि पर भी अपने गीति काव्यों का निर्माण किया है। इस युग के प्रमुख कवि मैथलीशरण गुप्त हैं।

छायावादी हिन्दी गीतिकाव्य पर अंग्रेजी के गीतिकाव्य (लिरिक पोइट्री) का विशेष प्रभाव है। अंग्रेजी में वैयक्तिकता, संगीतात्मकता, तीव्रतम भावानुभूति, संक्षिप्तता, भाव की एकता, मनोहारिणी लयात्मक भाषा शैली आदि विशेषतायें गीति के तत्व के रूप में स्वीकार की गयी है। ये ही सारी विशेषतायें हिन्दी के छायावादी गीतों में परिलक्षित होती हैं। इसके अतिरिक्त छन्द का बन्धन न मानकर इस काल के कवियों ने पिटी लकीर से हटकर चलना सीखा और अपना एक नया मार्ग प्रशस्त किया।

इन गीतों का मुख्य विषय प्रकृति प्रेम, आध्यात्मिक विरह मिलन, राष्ट्रीयता तथा लौकिक प्रेम एवम् सौन्दर्य का चित्रांकन करना है। प्रसाद, निराला, पन्त तथा महादेवी वर्मा इस काल के श्रेष्ठ गीत कवि हैं। प्रसाद के गीतों में सौन्दर्य चित्रण और वेदना की विवृति अनुपम है। निराला के गीतों में ओज और प्रभाव दर्शनीय है। पन्त जी के गीतों मे उनकी अनन्य कोमल भावना का सौन्दर्य है और महादेवी वर्मा के गीतों मे रहस्यानुभूति एवम् पीड़ा का अखण्ड साम्राज्य है। इन गीतों में जिस कोमलकान्त और मधुर मसृण पदावली का प्रयोग किया जाता है। वह इन महाकवियों की खड़ी बोली हिन्दी को महान् देन है।

इनके अतिरिक्त इसी आधुनिक युग में अन्य कितने ही ऐसे कवियों का प्रादुर्भाव हुआ है जिनकी ललित एवम् मधुर गीतियों ने हिन्दी -काव्य के भण्डार की पूर्ति की है। इनमे सर्व श्री डा० रामकुमार वर्मा, बालकृष्ण शर्मा नवीन, भगवती चरण वर्मा, उदयशंकर भट्ट, हरिकृष्ण प्रेमी, रामधारी सिंह दिनकर, हरवंशराय बच्चन, नरेन्द्र शर्मा, रामेश्वर शुक्ल अंचल, जानकी वल्लभ शास्त्री, हंसकुमार तिवारी, गिरजा कुमार माथुर, अज्ञेय, शिवमंगल सिंह सुमन, डा० सुधीन्द्र, देवराज दिनेश, बलवीर सिंह रंग, गोपालदास नीरज, चिरंजीत आदि के नाम प्रसिद्ध हैं। इतने विपुल गीति भण्डार के रहते हुए भी महादेवी वर्मा का गीति-काव्य सर्वोत्कृष्ट है। वे आज भी गीतिकाव्य के क्षेत्र में मूर्धन्य स्थान पर स्थित है। इसका सबसे प्रमुख कारण यह है कि उनके गीतों मे सहज स्वाभाविकता है। वैयक्तिकता एवं साधना की प्रबलता है और छन्द एवम् लय पर उनका असाधारण अधिकार है।

इन हिन्दी कवियों के गीतों मे अनेक भावों और विषयों को वाणी बद्ध किया गया है। कही उनमे मजदूरों के प्रति सहानुभूति तथा पूंजीपति एवम् शोषक वर्ग के प्रति विद्रोह की भावना प्रकट हुई है, तो कहा उन्मुक्त प्रेम के मिलन-विरह की मार्मिक अनुभूति अभिव्यक्त हुयी है। कहीं समाज का यथार्थ चित्रण करते हुये उसकी और कुरीतियों पर करारा व्यंग है तो कही मानववाद का पावन सन्देश दिया गया है। कही उनमे अनूठी रहस्यानुभूति है तो कही देश की उत्तरी सीमा पर आक्रमण करने वाले चीनी शत्रु को चुनौती दी गयी है। और देश की रक्षा के लिए सर्वस्व बलिदान कर देने का संकल्प दुहराया गया है। इसप्रकार कहा जा सकता है कि अब हिन्दी का गीति- साहित्य अत्यन्त समृद्ध हो रहा है। व्यक्ति-प्रधान युग होने के कारण अब गीत अधिक लिखे जा रहे हैं। महाकाव्य और खण्डकाव्य जैसी प्रबन्धात्मक कृतियों का सृजन जैसे रुक गया है पर, इस वैज्ञानिक युग की बौद्धिकता से गीत भी अछूता नहीं रह पा रहा। इसलिए उसमे तीव्रतम भावावेश की कमी होती जा रही है। यह उसका उत्कर्ष नहीं, ह्रास कर सकते है।

हिन्दी चलचित्र गीत:-

हिन्दी के फिल्मी गीत साहित्यकारों की रुचि में उपेक्षा और अवहेलनाकेभाव देखे जाते हैं। इसका प्रमुख कारण है यह साहित्यिक वर्ग साहित्य को शास्त्रीय समीक्षाओं से बाहर नहीं ले जाना चाहता, हिन्दी वाले पढ़ेंगें, पढ़ायेंगे, तो शास्त्रीय साहित्य को और शोध भी शास्त्रीय विषयों पर करवायेंगे, जिनपर कम से कम आधे दर्जन से अधिक कार्य हो चुका होता है। ऐसे पिछड़े और घिसे पिटे विचारों वाले हिन्दी सेवियों को अब कट्टर न होकर उदारता की नीति अपनाना चाहिये। इस सन्दर्भ में उन्हे प्रगतिशील होना चाहिये।

डा० ओ०प्र० माहेश्वरी के शब्दों में :-

' हिन्दी चित्रपट के गीत ऐसे ही धूल के फूल है जिन्हें हम न उठाकर और उचित स्थान न देकर अपनी बहुत बड़ी साहित्य- सम्पति को नष्ट कर रहे है। जो जनजीवन मे इस प्रवल वेग से समाये जा रहे है। जो नगर के वीथी-वीथी और गांवोंको हर पगडण्डी के मन को भा गये है। इन गीतों की अद्भुत शक्ति, अचूक प्रभाव, माधुर्य एवम् महत्ता हमे स्वीकार करना ही होगा। उन्हे एक सांस में, एक तरफ से कूड़ा करकट कहकर हम उनके साथ न्याय नहीं करते। सच तो यह है कि इन फिल्मी गीतों का जो श्रृंगारी अंश है उसी को लेकर हम उनकी आलोचना करने बैठ जाते है। यह ठीक है कि उनका अंश वासनोत्तेजक है। और भोग को बढ़ावा देता है इसीलिए विकृतिजनक होने से अग्राह्य एवम् हेय है। पर फिल्मी गीत साहित्य की यहीं तो इति श्री नही हो जाती। उनका वह अंश भी तो है जिसका स्वर, स्वस्थ, समाजोपयोगी एवम् परिष्कृत है तथा साहित्यिक दृष्टि से भी जो अत्यन्त मूल्यवान है। हम उस पर गर्व भी कर सकते है। और साहित्य की उच्च पंक्ति में उसे निसंकोच रख भी सकते है।[१] ⟶ ⟶

१- हिन्दी चित्रपट का गीति साहित्य - डा०ओ०प्र० माहेश्वरी, पृ०७६

चलचित्र हमारे जीवन का अंग बन गया है उसके आकर्षणों ने सारे विश्व हृदय को विमोहित कर लिया है। इन आकर्षणों में उनके मधुर एवम् लोकप्रिय गीतों का आकर्षण प्रमुखतम है।अत: इस दृष्टि से भी हिन्दी को आज जन-प्रिय भाषा और साहित्य के रूप में तैयार करने के लिए इन फिल्मी गीतों के साहित्यिक स्तर के अध्ययन की नितान्त आवश्यकता है। इस विज्ञान युग की नयी परिस्थितियों से उत्पन्न नये से नये विषयों को ग्रहण करके ही हमें चलना होगा। अन्यथा हम और हमारी हिन्दी दोनों पिछड़े हुए कहे जायेंगे।

गीतितत्व और हिन्दी चलचित्र गीति:-

संगीतात्मकता, वैयक्तिकता , तीव्रतम भावावेश का सहज स्फुरण, भावस्वैय एवम् संक्षिप्तता तथा उत्कृष्ट अनूठीभाषा के विकास पर जब हम चलचित्रों के गीतों को कसते है, तो वे सही उतरते है। आइये इन्हीं पाँच तत्वों के परिप्रेक्ष्य मे चलचित्र गीतों का समीक्षात्मक आकलन करते चलें :--

१- संगीतात्मकता:-

फिल्मी गीतों मे नई-नई और मधुरतम संगीत- धुनों का बड़ा आकर्षण रहता है। गायक अथवा गायिका के मीठे स्वर अभिनेता, नृत्य योजना तथा विविध वाद्य यंत्रों की सधी हुई ताल और लय से युक्त मोहक ध्वनि से उनका यह आकर्षण और भी बढ़ जाता है।अभिप्राय यह है कि फिल्मी गीतों में संगीतपक्ष प्रधान है। साहित्यिक गीतों मे संगीत का ऐसा प्रबल आग्रह नहीं होता कि वह अन्य तत्वों का भी शासक बन बैठे और न वे चित्रपटीय गीतों के समान पूर्व-नियोजित संगीत धुनों पर ही लिखे जाते है।

फिल्मी गीतो मे इस संगीतात्मकता के प्राधान्य का सबसे बड़ा कारण यह है कि वे जनसाधारण के मनोरंजनार्थ होते है । फिल्म कला के साथ व्यवसाय भी है । उसे अधिकाधिक जनता को आकृष्टकर उनका मनोरंजन करना पड़ता है । इसी लिए फिल्म-निर्माता अपने फिल्म के गीतो मे संगीत की मोहिनी-शक्ति का प्रयोग करता है । संगीत ने मनुष्य क्या, पशु-पक्षियों तक को प्रभावित कर विमोहित किया है । अत: फिल्मी गीत भी विभिन्न प्रकार के सुमधुर और प्रवाह-पूर्ण फिल्म संगीत के साहचर्य से बहुत शीघ्र ही लोक हृदय का हार बन जाते है । हमारे शब्दो मे अनूठी संगीत योजना उनका प्राण है। यही कारण है कि जब हम फिल्म देखते समय अथवा रिकार्डिंग केसमय गीत सुनते है, तो उसके सुललित गतिपूर्ण संगीत पर झूम उठते है । परन्तु यदि उन्हीं गीतो को पढ़ते है तो उनका आकर्षण आधा भी नहीं रह जाता । अत: हिन्दी चलचित्र गीतो में शास्त्रीय राग रागनियाँ, एवम् लोक धुनो के कारण श्रोता झूमने लगता है ।

२- <u>वैयक्तिकता</u>:-

साहित्यिक गीतो के समान ही चलचित्र गीतो मे वैयक्तिक भावना का प्रकाशन होता है । वैयक्तिक होते हुए भी इन गीतो की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि उनमे उन्ही भावनाओं को व्यक्त किया जाता है जो सामान्य व्यक्ति के हृदय मे उठती है । अत: श्रृंगार ,देशप्रेम भक्ति आदि चलचित्र गीतो के प्रिय विषय है । गीति भावनाओं का कोमलतम उच्छ्वास है एवम् सहजोद्गार है अत: उनसे वैयक्तिकता आना स्वाभाविक है।इस सन्दर्भ मे कतिपय हिन्दी चलचित्र गीतो के उदाहरण अवलोकनीय है --

१- ये आंसू मेरे दिल की जुबान है
मैं रोऊ तो रो दे आंसू
मैं हंस दू तो हंस दे आंसू ।[१]

२- भूली हुई यादों, मुझे इतना ना सताओ
अब चैन से रहने दो, मेरे पास न आओ ।[२]

३- राम करें ऐसा हो जाये, तेरी निदिया मोहे लग जाये
मैं जागू तू सो जाये।[३]

४- आज पुरानी राहों से, कोई मुझे आवाज ना दो
दर्द में डूबा गीत ना दो ,गम का सिसकता साज न दो ।[४]

५- ओ दुनिया के रखवाले , सुन दर्द भरे मेरे नाले
+++- -+++- -++- +++-
लुट गई मेरे प्यार की नगरी अब तो नीर बहाले
ओ दुनियां के रखवाले ।[५]

इसी प्रकार प्रियतम की प्रतीक्षा में बैठी विरहणी की अंतिम अभिलाषा एक चित्र देखिये --

---

१- फिल्म - हमराही (१९६३), गीतिकार, हसरत जयपुरी
२- फिल्म - संजोग (१९६१), गीतिकार, राजेन्द्र कृष्ण
३- फिल्म - मिलन (१९६५), गीतकार , आनन्द बक्शी
४- फिल्म - आदमी (१९६८),गीतकार , शकील बदाउंनी
५- फिल्म - बैजूबावरा (१९५१) ,गीतकार , शकील बदाऊंनी

तेरी याद में जलकर देख लिया
अब आग मे जलकर देखेंगे
इस राह में अपनी मौत सही
ये राह भी चलकर देखेंगे ।

दीपक की चमक में आग भी है
दुनियां ने कहा परवानों से
परवाने मगर यह कहने लगे
दीवाने तो जलकर देखेंगे ।[१]

कुछ फिल्मी गीत है, जो कथाश्रित होने से लम्बे और वर्णनात्मक है ऐसे गीतों में विषयि- प्रधानता की अपेक्षा विषय प्रधानता हो जाती है । ऐसे गीतों का उद्देश्य चित्रपट पर न दिखाई जाने वाली कथा को गेय रूप मे वर्णन करना होता है । इससे कथा का रूप भी जुड़ जाता है और नीरसता भी बच जाती है । पारिभाषिक शब्दावली मे यह कथानक का सूच्य अंश कहलायेगा। उदाहरण के लिए -- भरतव्यास का लिखा- फिल्म ` कवि कालिदास ` का वह गीत ऐसा है जिसमे ` अभिज्ञान शाकुन्तलम् ` कीपुरी कथा वर्णन की गयी है ।

२- तीव्रतम भावानुभूति:-

गीति का वाह्य आकर्षण यदि गेयता है, तो भावों की तीव्रतम अनुभूति उसका आन्तरिक सौन्दर्य है । दोनो का सम्मिश्रण सुन्दर गीत को जन्म देता है । हिन्दी चलचित्र गीतो मे भावों की तीव्रतम् अनुभूति से सम्बन्धित अनेक गीत है , जो मनोरन्जन स्वम् आनन्द की अनुभूति करने मे सक्षम है । इस सन्दर्भ मे कतिपय गीत अवलोकनीय है।--

---

१- फिल्म - नागिन (१९५३) गीतकार - राजेन्द्र कृष्ण

१- आज छेड़ो मुहब्बत की शहनाईयाँ
दिल के टुकड़े होंगे जिगर लुट गया
गम किसी को मिला और किसी को खुशी
एक घर बस गया, एक घर लुट गया
दिल के टुकड़े .... ।[१]

२- चलो एक बार फिर से अजनबी बनजायें हम दोनों
ना मै तुमसे कोई उम्मीद रखूँ दिल नवाजी की
ना तुम मेरी तरफ देखो, गलत अन्दाज नजरों से ।[२]

३- तेरे हुस्न की क्या तारीफ करूँ,
कुछ कहते हुए भी डरता हूँ
कहीं भूल से तू ना समझ बैठे
कि मैं तुझसे मुहब्बत करता हूँ।[३]

४- फिर वही शाम, फिर वही गम ,
फिर वही तनहाई है
दिल को समझाने तेरी याद चली आई।[४]

वैसे गीतों का जन्म तीव्रतम अनुभूति मे ही होता है सहजता इसकी आत्मा है , उपरोक्त गीत मे कहीं प्रेम की टूटन है तो कहीं प्रेमिका के प्रति उदासीनता, तो कहीं प्रेमिका के विमुक्त होने पर हृदय मे उठने वाली टीस एवम् कसक है । भावों की तीव्रतम अनुभूति सुख और दुख दोनों मे समान रूप से स्वत: फूट पड़ती है ।

१- फिल्म - सन आफ इण्डिया (१९६२) गीतकार - शकील बदाऊनी
२- फिल्म - गुमराह (१९६५) गीतकार - साहिर
३- फिल्म - लीडर (१९६८) गीतकार - शकील
४- फिल्म - जहांआरा (१९६५) गीतकार - राजा मेंहदीअलीखां

हिन्दी चलचित्र गीत कुछ ऐसे भी है, जिनमें अनुभूति का अभाव और अर्थहीन तथा बेतुके शब्दों की भरमार दिखलाई पड़ती है। ऐसे गीतों में भावआत्मक सौन्दर्य स्वत: समाप्त हो जाता है और उसकी शब्दावली कानों को अप्रिय लगने लगती है। अटपटे, बेतुके, तथा अर्थहीन शब्दावली से युक्त कुछ गीतों के नमूने द्रष्टव्य है --

१- डम डम डिगा डिगा मौसम है भीगा भीगा
बिन पिये मैं तो गिरा, मैं तो गिरा हाय अल्ला ।[१]

२- लारा लप्पा लारा लप्पा लाई रख दा
अड़ी टप्पा अड़ी टप्पा लाई रख दा ।[२]

३- मैं ख्वाबों की शहजादी हूँ हर दिल पर छाई
-++- -++- -++-
बिजली गिराने मैं आई हूँ, ओहो बिजली
कहते है मुझको हवा हवाई ।[३]

४- ईना मीना रीका टीका, डे डाई डाम बीका
माका नाका बीका पीका ठ्रोला रीका
रम्म पम्म पोला --- ।[४]

५- आज बाजू नाजू काज रे उुई पुई
दिल में है लगी तेरे नैनवा की उुई उई ।[५]

१- फिल्म- छलिया (१९६४) गीतकार - कमल जलालाबादी
२- फिल्म- एक थी लड़की (१९३९) गीतकार - अजीज कश्मीरी
३- फिल्म- मि० इण्डिया (१९८७) गीतकार - जावेद अख्तर
४- फिल्म- आशा (१९५७) गीतकार- राजेन्द्र कृष्ण
५- फिल्म- शारदा ( ) गीतकार -राजेन्द्र कृष्ण

१- सी ए टी कैट , कैट माने बिल्ली
आर ए टी रैट, रैट माने चूहा
दिल है तेरे पंजे में तो क्या हुआ ।[१]

परन्तु दूसरा अभिप्राय यह नहीं है कि हिन्दी चित्रपट के गीतों में न भाव की सच्चाई है और न अनुभूति की तीव्रता ही । यदि ऐसा होता तो सुमधुर संगीत के होते हुये भी न वे लोक प्रिय होकर महीनों गुन गुनाये जाते और न वर्षों याद किये जाते । अनूठे संगीत और भाव प्रवणता के कारण ही पुरानी फिल्मों के पूरन भक्त, चण्डीदास , देवदास , बन्धन, किस्मत, रतन, आदि। नई फिल्मों में जोगन, शबाब, नागिन, नागपंचमी , जागृति, प्यासा , मदर इण्डिया ,बैजूबावरा, चौदहवीं का चाँद , तूफान और दिया, तलाक, भाभी की चूड़ियां , मुगल ए.आजम , साहिब बीबी और गुलाम , जिसदेश में गंगा बहतीहैं, जीवन-मृत्यु, उपकार, पूरब पश्चिम, रोटी कपड़ा और मकान, कभी-कभी, बॉबी , जय सन्तोषी माँ आदि ।

४- संक्षिप्तता एवम् भाव ऐक्य :-

हिन्दी चलचित्र गीतों में संक्षिप्तता एवम् भाव ऐक्य का मणिकांचन योग देखने को मिलता है। लम्बे गीतों का निर्वाह भावानुभूति में बाधक होता है। गीतों की अधिकता एवम् लम्बे गीतों के प्रयोग से कथा की धारा मे टूटन आती है। इसलिए चलचित्र के गीत प्राय: संक्षिप्त ही होते है जिनका समय अधिक से अधिक तीन मिनट का होता है। पुराने चलचित्र गीतों में संक्षिप्तता थी, पर वर्तमान चलचित्र गीतों में यह बात देखने को नहीं मिलती । लम्बे गीतों का प्रयोग हिन्दी चलचित्र गीतों में

१- फिल्म - दिल्ली का ठग ( ) गीतकार - राजेन्द्रकृष्ण

कव्वाली के रूप में मिलता है। प्यार की प्यास, नई उमर की नई फसल, जब जब फूल खिले, ज्वैल थीफ , नौनिहाल, हमराज, मिलन, फर्ज , बूँद जो बन गयी मोती, आदमी और इन्सान, पूरब और पश्चिम, कलयुग और रामायण, आदि चलचित्रों के कुछ गीत आवश्यकता से अधिक लम्बे है।

फिल्म "प्यार की प्यास " का कवि भरत व्यास : का लिखा वह गीत जिसमें हिन्दी के अतिरिक्त छे: प्रादेशिक भाषाओं का प्रयोग किया गया है , दस मिनट का है ।[१] गीत की संक्षिप्तता से ही भाव की एकता गुथी हुई है। अधिक लम्बी और वर्णनात्मक रचनाओं में भाव संगठित न होकर बिखर जाता है , इसीलिए छोटी रचना होने से गीत मे भाव की एकता के लिए पूरा अवकाश रहता है। फिल्मी गीतों में भाव की एकता रहती है।

१- उत्कृष्ट और अनूठी भाषा शैली:-

हिन्दी चित्रपट गीतों में हिन्दुस्तानी भाषा का प्रयोग प्राय: प्रचुरता के साथ किया जाता है । अत: गीतों में प्राय: सभी क्षेत्रों के शब्द दिखाई देते है । इन गीतों की भाषा जनता की भाषा होती है अत: साहित्य के पैमाने पर चलचित्र गीतों की भाषा को नापना असंगत मालूम पडता है । डा० कैलाश चन्द्र भाटिया के शब्दों में " इन फिल्मों की भाषा जनता की भाषा है - सम्पूर्ण भारत मे हिन्दी के प्रचार तथा प्रसार करने का श्रेय किसी भी हिन्दी प्रचारिणी संस्था के समान ही इन फिल्मों को दिया जा सकता है-- किसी भाषा का प्रसार पुस्तकों से अधिक उसके बोल चाल के रुप मे होता है और इस दृष्टि से इन फिल्मों की देन निर्विवाद है ।"[२]

१- फिल्म-संगीत (मासिक -पत्र) नवम्बर-दिसम्बर १९६० का अंक,पृ०८६

२- पृथ्वीराज कपूर - अभिनन्दन ग्रन्थ , (उत्तरायणा), पृ० ६-१३

चलचित्र गीतों की भाषा जनभाषा होने के कारण उसमें तोड़मरोड़ और व्याकरण हीन शब्द भी मिलते हैं। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि चल चित्र के व गीतों में संगीत का प्राधान्य है और भाषा को उसकी दासी बनकर चलना पड़ता है इसलिए उनमें ह्रस्व को दीर्घ मानना और तत्सम का तद्भव शब्द कर देना एक साधारण सी बात है।

चलचित्र गीतों में साहित्यिक गीतों के समान भाषा परिष्कृत , परिमार्जित, कोमल कान्त, पदावली, और व्याकरण सम्मत रूप नहीं होता। वहाँ तो अरबी फारसी तथा अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग काफी मात्रा में मिलता है। यह ठीक है यह शैली जनता की भावना को उभाड़ने में तेजी से काम करती है परन्तु इनमें प्रयुक्त हल्की फुल्की शब्दावली, कहीं भी शिष्ट और शोभाजनक प्रतीत नहीं होती।

हमें यह स्वीकार करना पड़ेगा कि चित्रपट गीतों की भाषा जनता के बीच बोली जाने वाली सरल भाषा होती है निस्संदेह गीत की सफलता के लिए भाषा सीधी सादी और सरलतम ही होनी चाहिए , जिससे वह गीत सबके गले का हार बन सके। दूर दूर अहिन्दी प्रदेशों में भी हिन्दी चित्रपट के गीतों के प्रचार का सबसे बड़ा कारण यही है कि उनकी भाषा जनता की भाषा है, लोक की भाषा है।

गीति- तत्वों की दृष्टि से फिल्मी गीतों की उक्त समीक्षा से स्पष्ट है, कि साहित्यिक गीतों में जहाँ भावानुभूति की तीव्रता का प्राधान्य है, वहाँ फिल्मी गीतों में संगीत की प्रधानता रहती है। इसके अतिरिक्त दोनों में दूसरा मुख्य अन्तर भाषा का है साहित्यिक गीतों को इसीलिए 'साहित्यिक' विशेषण मिला है ,कि उनमें उच्चकोटि के भावों के साथ भाषा भी परिष्कृत, मधुर और व्याकरणानुकूल होती है। परन्तु फिल्मी गीतों की भाषा सरल होते हुए भी परिमार्जित नहीं होती।

भाषा शैली की दृष्टि से हिन्दी चलचित्र गीत लोकगीतों के अधिक निकट है क्योंकि दोनों की भाषा अत्यन्त सरल और बोल चाल की है। जिसमें अलंकारों की तड़क भड़क न होकर सादगी है, बहुत से लोकगीत हिन्दी चलचित्र गीतों में ज्यों के त्यों अथवा आंशिक रूप में अपना लिये गये हैं। -- यथा --

१- लल्ला लल्ला लोरी दूध में कटोरी
दूध में बताशा मुन्नी करे तमाशा।[1]

२- चन्दा मामा दूर के पुड़ी पकावे पूरि के
आप खाये थाली मे मुन्ने को दे प्याली मे।[2]

३- अक्कड़ बक्कड़ बम्बे बोल, पूरे सौ,
सौ में लागा ताला व चोर निकल के भागा।[3]

४- इंचक दाना बीचक दाना, दाना ऊपर दाना।[4]

५- कौन रंग मुंगवा कौने रंग मोतिया,
कौन रंग ननदी तोरे बिरना
लाल रंग मुंगवा सफेद रंग मोती।[5]

कुछ लोक प्रचलित भजन भी हिन्दी चलचित्र के गीतों में लोक धुनों पर आधारित है, हू बहू रूप में ले लिये गये है जैसे--

---

१- फिल्म - मुक्ति
२- फिल्म - बचन गीतकार - प्रेम धवन
३- फिल्म - किरायेदार गीतकार - हसन जमाल
४- फिल्म - श्रीचार सौ बीस ,, - शैलेन्द्र
५- फिल्म - हीरा मोती ,, - शैलेन्द्र

१- तुम बिन कौन खबर ले गोवर्धन गिरधारी ।[१]

२- तुम राखो प्रभु लाज हमारी ।[२]

लोक गीतों में कजरी, बिरहा, सोहर, होली बहुत लोक प्रिय रहे है। हिन्दी चलचित्र गीतों में इस प्रकार की शैली के गीत अधिक मिलते है। यथा --

अमृत मन्थन, फिल्म में `बरसन लागी` कजरी, `गोदान` में बिरहा, सोहर, का प्रयोग गीतों के रूप में देखने को मिलता है।[३]

होली गीतो की तो हिन्दी चलचित्र के गीतो में भरमार है इस सन्दर्भ में कतिपय उदाहरण अवलोकनीय है --

१- होली आई रे कन्हाई रंग छलके सुनादे जरा बांसुरी ।[४]

२- खेलो रंग हमारे संग आज रंग रंगीला आया ।[५]

होली गीत फिल्म- बिरादरी, फूल पत्थर, होली आई रे, नवरंग, प्यार की प्यास, हरियाली और रास्ता, बहूरानी, शोले, सिलसिला, सुहाग, आदि में मिलते है जो भाव और भाषा की दृष्टि से लोक गीतों से अधिक निकट है।

लोक धुनों पर आधारित विवाह गीत `बन्ना बन्नी`, जच्चा गीत, बिदाई गीत, आदि भी चलचित्र गीतों में देखने को मिलते है--

---

१- फिल्म - पुकार गीतकार - राजेन्द्र कृष्ण
२- फिल्म - देख कबीरा रोया ,, - राजेन्द्र कृष्ण
३- हिन्दी चित्रपट का गीत साहित्य - ओमप्रकाश माहेश्वरी -पृ० ८८
४- फिल्म - मदरइण्डिया - गीतकार - शकील बदाऊंनी ।
५- फिल्म - आन - गीतकार - शकील

१- मेरा प्यारा बहिनियां , बनेगा दुल्हनियां
सजके आयेंगे दूल्हे राजा
भइया राजा बजायेगा बाजा । [१]

२- मेरे बन्ने की बात ना पूछो
मेरा बन्ना हरियाला है । [२]

३- मेरे भइया है , मक्खन और भाभी हैं, मलाई । [३]

४- खुशी खुशी कर दो विदा, बिटिया रानी राज करें। [४]

५- बाबुल की दुआये लेती जा, जा तुझको नया संसार मिले। [५]

६- बाबुल तोरे अंगना की चिड़िया, आज यहां तो कल पराये । [६]

७- हिन्दी चलचित्र गीतों में लोक गीतों की धुनें तो ना जाने कितनी ग्रहण की गयी है/सन् १९४१ में बनी चित्रों से लेकर आज तक बनने वाली फिल्मों में इसके उदाहरण देखे जा सकते है । कुछ प्रमुख फिल्मों के गीतों के मुखडे उदाहरण के लिए प्रस्तुत हैं --

१- नगरी नगरी द्वारे द्वारे ढूंढो रे सावंरिया । [७]

२- पी के घर आज प्यारी दुल्हनियां चली

+++- -++- -++-

भइया बहिना के दिल को लगी ठेस
मेरी किस्मत में जाना था परदेश रे । [८]

१- फिल्म - सच्चा झूठा गीतकार - इन्दीवर
२- ,, - घराना ,, प्रेम धवन
३- ,, तपस्या ,, अन्जान
४- ,, अनोखी रात ,, कैफीआजमी
५- ,, नीलकमल ,, शाहिर
६- ,, कालेज गर्ल ,, राजेन्द्रकृष्ण
७- ,, मदर इण्डिया ,, शकील
८- ,, वही ,, वही

३- उमरिया कटती जाये रे ।[१]

४- ता थइया करके आना
 ओ मेरे जादूगर सइंया ।[२]

५- मेरे सइया जी उतरेंगे पार नदिया धीरे बहो ।[३]

६- रमइया वस्ता वइया मैंने दिल तुझको दिया ।[४]

७- मत जइओ नौकरिया छोड़ के पइयां पड़ूं बलमा ।[५]

८- हाय हुड़गवा मन में मोरे तिरछीनजर का हल्ला ।[६]

९- ढूंढो -ढूंढो रे साजना , मोरे कान का बाला ।[७]

इसके साथ ही लोक गीतों की भाषा को--

`पिया`, मितवा, सजना , सजनवां , अंगना, बलमा, नदियां , चुनरियां, छतियां बतिया , राजा, रामा, आदि को फिल्मी गीतों ने अधिकता से अपनाया है ।

फिल्मी गीतों की धुनों पर आज अनेक विवाह गीत एवम् भजन समाज में अत्यधिक प्रचलित हो रहे हैं । जैसे --

---

१- फिल्म - मदर इण्डिया - गीतकार - शकील
२- फिल्म - पंचायत गीतकार - शैलेन्द्र
३- फिल्म - उडन खटोला गीतकार - शकील
४- फिल्म - श्रीचार सौबीस गीतकार - शैलेन्द्र
५- फिल्म - दो बदन गीतकार - शकील
६- फिल्म - गंगा जमुना गीतकार- शकील
७- फिल्म - वही वही

(क) फूलों का हार है, छाई बहार है, आजा प्यारे बन्ना ।[१]

(ख) द्वारिका के नाम हाथ मेरा आज थाम ।[२]
लुटी मेरी लाज हुआ दुष्टों से सामना ।

इस प्रकार देखते है हिन्दी चित्रपट के गीत और उनके मनो मुग्धकारी संगीत की ऐसी जनप्रियता एवम् प्रभावात्मकता देखकर कह सकते है। कि वे जनता के लिए स्वस्थ मनोरंजन प्रदायक है। इन गीतों मे मानव हृदय की तीव्रतम भावनाओं की अभिव्यक्ति, सरलतम एवं प्रवाहपूर्ण भाषा तथा संगीत की करणप्रिय माधुरी विराजमान है। चलचित्र गीतों की कड़ी से कड़ी आलोचना भले ही कोई करे, उसे टोकना किसी की सामथ्र्य नहीं। गली गली और स्त्री- पुरुष, बालक वृन्द सबकी जवान पर फिल्मी गीतों के अतिरिक्त आज और कौन से गीत है। जिन्हें वे हर समय गुनगुनाते रहते है। हिन्दी साहित्य में एक युग सूर - तुलसी के गीतों का आया था। आज फिल्मी गीतों का युग है। इन गीतों ने, और तो और, लोक गीतो को भी अपने रंग में रंग लिया है।

:-:-:-:-:-:

१- (क) और (ख) पर फिल्म-बूट पालिस, तथा आन, का प्रभाव देखा जा सकता है।

अध्याय - ३

हिन्दी चलचित्रगीत : वर्गीकरण

अध्याय - ३

हिन्दी चल-चित्र गीत : वर्गीकरण

हिन्दी चलचित्र गीतों का वर्गीकरण निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत किया जा सकता है :-

क- विषय की दृष्टि से
ख- गायन की दृष्टि से

क- विषय की दृष्टि से हिन्दी चलचित्र गीतों को निम्नांकित उपशीर्षकों में विभक्त किया जा सकता है --

१- धार्मिक-गीत
२- प्रेम-गीत
३- राष्ट्रीय- गीत
४- सामाजिक -गीत
५- अन्य विषयों से सम्बन्धित गीत।

१- धार्मिक-गीत:-

अनादिकाल से भारत वर्ष की पावन भूमि पर विभिन्न सभ्यताओं एवम् संस्कृतियों का एक विचित्र सम्मिलन रहा है। भिन्न-भिन्न जातियों, सम्प्रदायों एवम् धर्मावलम्बियों का पोषण यहाँ की सोंधी माटी ने किया है, किन्तु प्राचीन काल से ही भारतीय जन-मानस में जिन कथाओं की दुन्दुभि गूंजती रही है, उनका सम्बन्ध धार्मिक - कथाओं, पुराणों, उपनिषदों आदि से रहा है और जनमानस भी उन्हीं धार्मिक कथाओं में आकण्ठ निमग्न रहकर ईश्वरोपासना में लीन रहा है।

भारत के महान् दार्शनिक भूतपूर्व राष्ट्रपति डा०सर्वपल्ली राधाकृष्णन् ने हिन्दू धर्म के विषय में अपना विचार प्रकट करते हुए कहा है --' हिन्दू-धर्म भारत वर्ष के आध्यात्मिक साक्षात्कार की प्रतिकृति है। यह परमात्मा की पूर्णता और एकता के अन्तर्ज्ञान पर अवलम्बित् है। ईश्वर के साथ मनुष्य के वैयक्तिक सम्बन्धों की विभिन्न स्थितियाँ हैं, जिनमें परमेश्वर के सम्मुख अत्यन्त दीन भाव से लेकर, उस प्रेममय प्रभु के साथ एकत्व का समावेश तक होता है, जिसकी महान कृपा बड़े - बड़े पापी को भी प्राप्त होती है।'[१]

निस्सन्देह इसी भावना के आधार पर सांसारिक मोह माया के उलझे हुये मानव का पीड़ित मन दैन्य भाव से 'ईश्वर' पुकारता है और उसकी कृपा प्राप्त करके उसके साथ तादात्म्य करना चाहता है।

जन-मानस की इसी भावना से प्रेरित होकर हिन्दी चलचित्र निर्माताओं ने अपने चलचित्रों में धार्मिक गीतों को रखकर प्रभावशाली बनाया। हिन्दी चलचित्र निर्माताओं ने आध्यात्मिक भावना को ध्यान में रखकर अनेक धार्मिक, पौराणिक, विषयों को आधार बनाकर चलचित्रों का निर्माण किया। फिल्म निर्माताओं ने इन विषयों पर फिल्मों का निर्माण करके अपार यश और लोक प्रियता प्राप्त की।

हिन्दी चलचित्रों में धार्मिक गीत वातावरण और कथानक के अनुकूल रखे जाते हैं। धार्मिक गीत प्राय: सभी फिल्मों में(सिचुएशन के आधार पर) मिलते हैं। फिल्म निर्माता उस परिस्थिति को अवश्य निकालता है जहाँ भगवान की प्रार्थना, स्तुति या भजन रखा जा सके जिससे दर्शक प्रभावित हों।

१- कल्याण (ईश्वरांक) पृ० ३६४ (हिन्दू-धर्म में ईश्वर-डा०राधाकृष्णन्)

आज के वैज्ञानिक युग में मानव चाहे कितना शक्तिशाली बन ले, कितनी ही उन्नति कर ले, परन्तु वह फिर भी अक्षम ,अशक्त, और दुर्बल है -- कारण -- क्योंकि उसके ऊपर भी कोई सत्ता विशेष कार्य करती है । यही सत्ता सृष्टि का संचालन करती है । मनुष्य जब संकटों में फंस जाता है तब वह विवश होकर उस परम सत्ता को सहायता के लिए करुण कण्ठ से पुकार उठता है । अत: ऐसी परिस्थितियों में प्रत्येक फिल्म- निर्माता जन मानस की भावना को देखते हुये भक्ति-भावना प्रधान गीत अवश्य रखता है । धार्मिक और पौराणिक चित्रों में तो इस प्रकार के गीत होते ही हैं, पर अन्य फिल्मों में भी इनसे सुन्दर एवम् भावनात्मक धार्मिक गीत मिलते हैं ।

हिन्दी चल चित्रों में अनेक भक्ति - गीत उपलब्ध होते हैं । जिनमें व्यक्त धार्मिक भावना बड़ा व्यापक एवम् विविध रुप मे मिलती है । हिन्दी चलचित्र गीतों में उपलब्ध धार्मिक गीतों में निम्नलिखित भाव दृष्टिगोचर होते है --

अ- ईश्वर में आस्था और विश्वास

ब- ईश्वर की सामर्थ्य एवम् सर्वव्यापकता

स- ईश्वर के प्रति भक्ति-भावना (आत्मनिवेदन)

द- जीवन और संसार की नश्वरता

य- ईश्वर की स्तुति ।

(अ) <u>ईश्वर में आस्था और विश्वास</u> :-

वैज्ञानिक-युग की अतिशय भौतिकता ने आज के मानव को स्वार्थी, धन लोलुप एवम् नीरस बना दिया हैं । धन-दौलत सबकुछ होते हुए भी आज का मानव अन्दर से सुखी नहीं हैं , अशान्त एवम् दुखी है, इसका कारण हैं -- ईश्वर से विमुखता ।

वैज्ञानिक उपलब्धियों से पूर्व मनुष्य सीधा सादा एवम् ईश्वर के प्रति आस्थावान था, वह ईश्वर से डरता था परन्तु भौतिक वैज्ञानिक उन्नति ने मनुष्य को नास्तिक बनाने में कोई कसर न छोड़ी। यही कारण है , कि वैज्ञानिक उन्नति से प्रभावित होकर ८०प्रतिशत से अधिक लोग ईश्वर को मानना छोड़ गयें ।

मनुष्य जब चारों ओर से संकट में फंस जाता है, ऐसी स्थिति में ईश्वर का स्मरण करता है । वह अपने हाथ उस सर्वशक्तिमान प्रभु के आगे फैला कर उससे सहायता की भीख मांगता है । ईश्वर दयालु , करुणा-सागर होने के नाते तुरन्त सहायता के लिए दौड़ पड़ता हैं । मानव को उसके अस्तित्व में विश्वास करना ही पड़ता है । ईश्वर पर आस्था एवम् विश्वास रखने पर ही मानव सुख और शान्ति का अनुभव कर सकता है --

मेरा आन , भगवान
मेरी जान भगवान   कण कण से लड़ी
हैं तो तुमसे भी आज लड़ेगी
मेरी बात तुम्हें रखनी पड़ेगी ।[१]

कभी- कभी संसार की विचित्रता को देखकर भी परमात्मा के अस्तित्व के प्रति मन में सन्देह उठ खड़ा होता है । हम देखते हैं कि इस संसार में जो धर्म के मार्ग पर चलते है, वे ही अन्याय की ज्वाला मे जीवित जलते है और जो स्वयं लुटेरे है वे ही न्याय के ठेकेदार बने बैठे हैं । जिस दुनियाँ में नफ़रत का नंगा नाच होता रहे, धर्म लुटता रहे, और ईमान बिकता रहे - उसी दुनियाँ के मन्दिर में गुलाम बना भगवान चुपचाप बैठा रहे- यह देखकर कौन उस पर विश्वास करेगा ।[२]

१- फिल्म - तूफान और दीया - गीतकार - भरत व्यास

२- फिल्म - हमसफर - गीतकार - साहिर

झूठ के सिर पर ताज सजे और सच को उघड़े बाल ,
धर्मी बन्दे कष्ट उठाये, मौज करे चण्डाल ,
मथुरा काशी सूने हो गये , भर गये चोर बाजार ।

फिल्म जनम- जनम के फेरे के एक गीत में कविवर भरत व्यास ने संसारी मनुष्य के मन में उठने वाले ऐसे ही अनेक सन्देहों और प्रश्नों को सामने रखते हुये उनका पुष्ट प्रमाणों द्वारा समाधान प्रस्तुत किया है और इस प्रकार यह स्पष्ट कर दिया है कि ईश्वर की सत्ता में सन्देह करना निर्मूल है । हमें चाहिये उस प्रभु को हम श्रद्धा के नेत्रों से देखें, भक्ति की भावना से पहचानें और उसके अस्तित्व पर विश्वास करें ।

तू है या नहीं भगवान, तू है या नहीं भगवान ।
कभी होता भरोसा कभी होता भरम, पड़ा उलझन में है इंसान ।

-++- -++-- -++-

दिया जिसने जनम , दिया जिसने ये तन, क्यों न उसको
सका पहचान ।[१]

हिन्दी चलचित्र गीतों में जितने धार्मिक गीत मिलते है,उन गीतों में ईश्वर के प्रति श्रद्धा और विश्वास का भाव निहित रहता हैं । उसकी सत्ता के प्रति आस्था एवम् विश्वास पर गीतकार अधिक जोर देते हैं ।

ईश्वर सत्य है , सत्य ही ईश्वर है ।
२

१- फिल्म - जनम-जनम के फेरे - गीतकार - पं० भरत व्यास
२- फिल्म - सत्यम् शिवम् सुन्दरम्- गीतकार - पं० नरेन्द्र शर्मा

अतिशय बौद्धिकता का यह युग बड़ी द्रुतगति से नास्तिक होता जा रहा है। नास्तिकता की इस आंधी को देखकर फिल्मी गीतकार प्रदीप चुप न रह सके। उन्होंने क्षुब्ध होकर ऐसे नास्तिक युग को करारी चुनौती दी है ---

दुनियाँ भर के नास्तिक जितने ,कितने नमक हराम।
अपना दोष न देखते, प्रभु को करें बदनाम।[१]

इसी वैज्ञानिक युग ने मानव की बुद्धि भ्रष्ट कर दी है वैज्ञानिक उन्नति एवम् अपार धन कमाने की लालसा ने मनुष्य को भगवान की बुराई की ओर उन्मुख कर दिया। कवि प्रदीप मानव की इस दशा को देखकर अत्यधिक दुखी है ---

देख तेरे संसार की हालत क्या हो गई भगवान
कितना बदल गया इन्सान ,
सूरज ना बदला चाँद ना बदला बदल गया इन्सान।

-+++-- -+++-- -+++- -+++-

राम के भक्त, रहीम के बन्दे, रचते आज फरेब के फन्दे
कितने मक्कार ये अंधे , देख लिये इनके भी फंदे ,
इन्हीं की काली करतूतों से , हुआ ये मुल्क मसान
कितना बदल गया इन्सान।[२]

ईश्वर की कृपा से मानव दुख और कष्टों से मुक्त हो सकता है, यदि वह सच्चे हृदय से ईश्वर की प्रार्थना करें क्योंकि ईश्वर बड़ा कृपालु, दयालु और सर्वशक्तिमान है। अत: सच्चे हृदय से प्रार्थना करने पर मनुष्य सुख-शान्ति प्राप्त कर सकता हैं ---

---

१- फिल्म - नास्तिक - गीतकार - पं० प्रदीप
२- फिल्म - नास्तिक - गीतकार - पं० प्रदीप

जब चारों तरफ अंधेरा हो ,
जीवन को मृत्यु ने घेरा हो ,
तब मन में रख विश्वास ,
श्वास में आस नई इक भर ,
प्रार्थना कर प्रार्थना कर ।
जगत के जीवन दाता से
प्रार्थना कर प्रार्थना कर ।।
हरिओम -- हरिओम -- हरिओम ।[1]

ईश्वर ही मानव में शक्ति भरने वाला है तथा अपनी शक्ति से वह मानव में धैर्य , शान्ति स्वम् साहस प्रदान करता है । ये सब बातें ईश्वर से प्रार्थना करने पर ही प्राप्त होती है।अत: उस परम -प्रभु परमात्मा के आगे झुककर उससेप्रार्थना करनी होगी --

अल्ला तेरो नाम, ईश्वर तेरो नाम ।
सबको सम्मति दे भगवान ।।
इस धरती का रूप न उजड़े ,
प्यार की ठंडी धूप न उजड़े ,
सब को मिले सुख का वरदान ,
अल्ला तेरो नाम । --
मांगो का सिन्दूर न छूटे ,
मां बहनों की आस न टूटे ,
देह विना न भटके प्राण
अल्ला तेरो नाम ।.....
ओ सारे जग के रखवाले,
निर्बल को बल देने वाले ,
बलवानों को दे दे ज्ञान ,
अल्ला तेरो नाम ।[2]....

१- फिल्म - कर्म - गीतकार - पं० भरत व्यास
२- " - हमदोनों - " - साहिर

मनुष्य ईश्वर के हाथ का खिलौना है और ईश्वर उन खिलौनों से खेलता है । जब उसका जी भरजाता है तब वह उसे फेंक देता है ---

हम है खेल खिलौने ,
जी भर के खेलो राम ।[१]

अत: मानव स्वतन्त्र न होकर ईश्वर के अधीन है । जैसा ईश्वर चाहेगा, वैसा मनुष्य करेगा । --

सोचने को लाख बातें सोचे इन्सान
होती वही हैं पूरी, जिन्हें चाहे भगवान ।[२]

मानव ईश्वर के आधीन होने में अपना गौरव समझता है विशेष्ट रूप से भक्ति में अभिभूत मानव --

ओ दुनियाँ के मालिक राम, तेरी मरजी के हम है गुलाम ,
तुम्हें लाखों प्रणाम् , कोटि-कोटि प्रणाम ।।
तेरी इच्छा से हम जग में आये
कुछ दिन हँस के, औ रोके चले जाये ,
सदियों से चलता है ये आना-जाना ,ये जीने मरने के काम ।[३]

निसन्देह ऐसा कृपालु,दयालु और सर्वशक्तिमान ईश्वर ही इस विश्व का स्वामी है । यह संसार उसकी लीला है ,उसकी इच्छा का परिणाम है ---

' एकोऽहं बहुस्याम् ' ?

१- फिल्म - चक्रधारी - गीतकार - पं० भरत व्यास
२- फिल्म - ,, ,, ,,
३- फिल्म - ,, ,, ,,

मनुष्यों का आना- जाना रोना- हंसना, उनके सुख-दुख और हार-जीत सब उसी के आधीन तो हैं। इसलिए मनुष्य यदि गर्व करे कि उसकी अपनी कोई शक्ति और अस्तित्व है तो व्यर्थ है, क्योंकि वह तो ईश्वर की इच्छा का गुलाम है जैसे - तिनका हवा का।

अत: मनुष्य का जहाँ वश नहीं चलता वहाँ ऐसे समर्थ और सर्वशक्तिमान प्रभु पर विश्वास रखकर अपने किये हुये को उसके चरणों में सच्चे हृदय से समर्पित कर देना चाहिये ---

जब तुझसे न सुलझे तेरे उलझे हुये धन्धे,
भगवान के इन्साफ पे सब छोड दे बन्दे।
खुद ही तेरी मुश्किल को वह आसान करेगा।
जो कुछ है तेरे दिल में, सब उसको खबर है,
बन्दे। तेरे हर हाल पे, मालिक की नज़र है।[१]

(ब) ईश्वर की सामर्थ्य और उसकी सर्वव्यापकता:-

भगवान के भक्तों ने अपने आराध्य के प्रति जहाँ अपनी आस्था और निष्ठा व्यक्त की है, वहाँ उसकी अलौकिक शक्ति और सामर्थ्य की महिमा भी गाई है। तथासाथ ही कण-कण में समाई हुई उसकी मनोहर मूर्ति की झाँकी भी देखिये।

ईश्वर सर्वव्यापी है। प्रत्येक जीव में उसका वास हैं --

कलियों में राम मेरा, किरणों में राम हैं।
धरती गगन में मेरे प्रभु जी का धाम है, कहां नहीं राम हैं।

--++-- --++-- --++--

१- फिल्म - नयादौर - गीतकार - साहिर

वहा फूल- फल में वहा पात-पात में
रहता हैं राम मेरा सभी के साथ में ।[१]

ईश्वर की अलौकिक शक्ति, सामर्थ्य एवम् महिमा का वर्णन हिन्दी चलचित्र के अनेक गीतों में देखने को मिलता है इस सन्दर्भ में कतिपय उदाहरण अवलोकनीय है ---

क- मत भूल करे इन्सान, तेरी नेकी बदी, नहीं उससे छिपी -
सब देख रहा भगवान ।[२]

ख- बेदर्द जमाना तेरा दुश्मन है तो क्या ?
दुनिया में नहीं जिसका कोई उसका खुदा है ।[३]

ग- तेरा इन्सान घबड़ा रहा हो, रहा बेखबर कुछ ना आता नजर ,
सुख का सूरज छुपा जा रहा, तेरी रोशनी में वो दम ,
तु अमावस्य को कर दे पूनम ,
नेकी पर चले, और बदी से टले ,
ताकि हँसते हुए निकले दम । [४]

घ- हरी है हजारों हाथो वाला ।[५]

ङ- मारने वाला है भगवान बचाने वाला है भगवान ।[६]

ईश्वर के महान कृतित्व को देखकर उसकी अलौकिकता में कोई सन्देश नहीं रह जाता,ऐसी अलौकिक सृष्टि विधायिनी सत्ता के राज्य में मनुष्य को अपना कर्तव्य करते चलना है, उसे फल की आसक्ति में डूबकर नहीं रह जाना है --

---

१- फिल्म - पवन पुत्र हनुमान - गीतकार - गोपाल शरण सिंह नेपाली
२- फिल्म - मस्ताना ,, फारूख कैसर
३- फिल्म - मेंहदी ,, खुमार बारांबकी
४- फिल्म - दो आँखेंबारह हाथ ,, पं० भरत व्यास
५- फिल्म - हरिदर्शन ,, पं० भरत व्यास
६- फिल्म - ,, ,, ,,

कर्म करे जा , फल की इच्छा मत कर रे इन्सान ,
यह है गीता का ज्ञान । [१]

'कारीगर' फिल्म में अनासक्ति कर्मयोग का प्रभाव इस गीत के मुखड़े में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है :---

चिन्ता करेगा वही जगत् की, जो इस जगत का नाम है ,
हम अपने - अपने कर्तव्य करें, पर फल तो उसी के हाथ हैं
जो कुछ भी पायें, मेहनत की खायें, मेहनत में सीताराम है ,
काम करें विश्राम करें ना , आराम करना हराम है । [२]

हिन्दी फिल्मों में परमात्मा की सर्व व्यापकता का प्रतिपालन करने वाले एक नहीं अनेक गीत हैं जिनमें दार्शनिक विचार धाराओं का प्रभाव किसी ना किसी रूप में दिखायी पड़ता है । वेदान्त दर्शन का महावाक्य है--' सर्वं खल्विदं ब्रह्म ' फिल्मी गीतों में इसी वेदान्त दर्शन के मूल स्वर को अत्यन्त सरल रूप में अभिव्यक्त किया गया है ।

(ख) <u>ईश्वर के प्रति भक्ति भावना :-</u>

हिन्दी चलचित्र गीतों में भक्ति भावना का जो स्वरूप हमें देखने को मिलता है वह अत्यन्त उदात्त है। इसीलिए इन गीतों में विष्णु, शंकर, राम कृष्ण दुर्गा,गणेश, सूर्य,हनुमान, नाग देवता आदि विभिन्न देवी देवताओं के प्रति श्रद्धा और पूज्य भावना व्यक्त हुयी है ।

१- फिल्म - सन्यासी - गीतकार - विश्वेश्वर

२- फिल्म - कारीगर - गीतकार - राजेन्द्र कृष्ण

भागवत में भक्ति के नौ प्रकार बतलाये गये है --
महिमा, गुण, कीर्तन, नामस्मरण, अर्चना, बन्दना , चरणों की सेवा, दास्य भाव , सख्यभाव, और आत्मनिवेदन। इसे नवधा भक्ति कहते हैं।[१]

हिन्दी चलचित्र गीतों में भक्ति के इन नौ प्रकारों में से कई उदाहरण मिलते है पर अधिकांश में `वन्दन` और `दास्यभाव` के रूप में भक्ति भावना की अभिव्यक्ति अधिक हुई है।

१- <u>कीर्तन :-</u>

क- कब दरशन दोगे सांवरे ,
मेरे नैना भये बावरे ,
कब बाजेगी तेरी मुरलिया ,
कब झनकेगी मेरी पायलिया ।[२]

ख- दरशन दो घनश्याम, आज अखियाँ हैं प्यासी ।[३]

ग- तेरा मनवा क्यों घबड़ाये रे, राम जी के द्वारे ।[४]

घ- कृष्ण मुरारी गिरधारी जै-जै राधेश्याम ,
तुम हो हो पितु मात हमारे श्याम-श्याम ।[५]

ङ- जय रघुनन्दन जैसिया राम ।[६]

च- मुरली वाले मुरली बजा सुन सुन मुरली को नाचे जिया।[७]

१- श्रवणं कीर्तनं विष्णो: स्मरणं पादसेवनम् ।
अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यं, आत्मनिवेदनम् ।।
२- फिल्म - गृहलक्ष्मी - गीतकार - पं० भरत व्यास
३- फिल्म - नरसीभगत - ,, - पं० प्रेम धवन
४- फिल्म - साधना ,, - साहिर
५- फिल्म - बहूरानी ,, - दीनानाथ मधोक
६- फिल्म - घराना ,, - प्रेमधवन
७- फिल्म - दिल्लगी ,, - शकील

छ- वृन्दावन का कृष्ण कन्हैया ,सबकी आंखों का तारा ।
मन ही मन क्यों जले राधिका, मोहन तो हैं सबका प्यारा ।।[१]

ज- मेरो आन भगवान
मेरो जान भगवान
कण-कण से लड़ी ।
है तो तुमसे भी आज लड़ेगी तुम्हे मेरी बात रखनी पड़ेगी ।[२]

२- स्मरण:-

क- ले ले जाओ प्रभु का नाम थोड़ा थोड़ा ,
दौड़ा जाये रे समय का घोड़ा ।[३]

ख- बोलो सभी मई राम, बने सभी के बिगड़े काम ।[४]

ग- दो अक्षर की महिमा है नाम की ।
एक स्वर में बोलो जै- श्रीराम की ।[५]

घ- ओ दुनियाँ के रखवाले , सुन दर्द भरे मेरे नाले ।[६]

ङ- गोविन्द बोलो हरि गोपाल बोले राधारमण हरि
गोपाल बोलो ।
जय जय श्याम राधेश्याम ।[७]

१- फिल्म - मिस मेरी गीतकार - राजेन्द्रकृष्ण
२- फिल्म - तूफान और दिया ,, - पं० भरतव्यास
३- फिल्म - बसंत पन्चमी ,, - पं० भरतव्यास
४- फिल्म - सम्पूर्ण रामायण ,, - वही
५- फिल्म - वही वही
६- फिल्म - बैजूबावरा ,, - शकील
७- फिल्म - जानी मेरा नाम ,, - इन्दीवर

२- अर्चनवन्दन सेवा :-

१- मैं तो आरती उतारु रे सन्तोषी माँकी
जय जय जय सन्तोषी माता जय जय ।[१]

२- मां गौरी रुप तेरा सुखकारी
तेरे चरणों में हम सब वारी वारी ।[२]

फिल्मी गीतों में विभिन्न देवी, देवताओं की स्तुति, आरती और वन्दना में श्रीकृष्ण तथा शंकरजी सर्वथा लोकप्रिय दिखाई देते हैं ,शंकर जी और श्रीकृष्ण जी से सम्बन्धित अधिक आरती वन्दन के गीत हिन्दी फिल्मों में लिखे गये । इस सन्दर्भ में कतिपय उदाहरण अवलोकनीय है --

क- आरती करो शंकर की करो नटवर की करो
बोल हरि हर की ।[३]

ख- जय जय शिव शंकर कांटे लगे ना कंकड़ ।[४]

ग- शिव शंकर अविनाशी
मैं तो तेरे चरणों की दासी ।[५]

घ- ओम नमो: शिवाय ओम नमो: शिवाय ।[६]

१- फिल्म - सन्तोषी मां गीतकार - पं० प्रदीप
२- फिल्म - महासती बिहुला ,, - पं० भरतव्यास
३- फिल्म - नागपंचमी ,, - गोपाल शरण सिंह नैपाली
४- फिल्म - आपकी कसम ,, - आनन्द बक्शी
५- फिल्म - शिवरात्रि ,, - प्रेमधवन
६- फिल्म - मशाल ,, - आनन्द बक्शी

ड- ऊंगा के चरण पखार , ऊंगा के वसन सवाँर
नयन करी बार बार युगल मूर्ति में सजाओं राधेश्याम ।[१]

च- मेरी लाज रखो गिरधारी,
मै लाख जतन कर हारी ,
बहुत सहा अब सहा ना जाये ,
और किसी से कहा ना जाये ,
चरणों में दो आँसू चढ़ाने ,
आई शरण तिहारी ।[२]

छ- ओम जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे ।[३]

ज- ओम जय लक्ष्मी रमणा स्वामी लक्ष्मी रमणा ।[४]

झ- आनन्द मंगल करु आरती जय गायत्री माता ।[५]

ण- मैं तो आरती उतारुं रे, सन्तोषी मां की ।[६]

त- माँ गौरी रूप तेरा सुखकारी
तेरे चरणों में हम सब वारी वारी । [७]

१- फिल्म - कंगन गीतकार - राजेन्द्र कृष्ण
२- फिल्म - गौरी पूजा गीतकार - प्रदीप
३- फिल्म - पूरब-पश्चिम गीतकार - इन्दीवर
४- फिल्म - सत्यनारायणकथा ,, - प्रदीप
५- फिल्म - जय गायत्रीमाता ,, - पं० भरत व्यास
६- फिल्म - जय सन्तोषी माँ ,, - प्रदीप
७- फिल्म - जय माँ दुर्गे ,, - वीरेन्द्र मिश्र

थ- जय जय जय जगदम्बे माता
द्वार तुम्हारे जो भी आता
बिन मांगे सब फल पाता ।[1]

द- चलो बुलावा आया है - माता ने बुलाया है -
जय माता दी जय माता दी ।[2]

ध- गणपत बब्बा मोरिया ।[3]

न- जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा
माता तेरी पार्वती पिता महादेवा ।[4]

हिन्दी चलचित्र गीतों में दास्य एवम् सख्य दोनों प्रकार की भक्ति भावना व्यक्त हुयी है । इसमें दास्य- भावना की भक्ति के स्वर अधिक सुनाई पड़ते हैं । यथा --

१- सुख के सब साथी दुख में ना कोय ।[5]

२- मुझे अपनी शरण में लेलो राम ।[6]

३- अपनी छाया में भगवन् बिठा ले मुझे ,
मैं हूँ तेरा तु अपना बना ले मुझे ।[7]

१- फिल्म - गंगा की लहरे गीतकार - आनन्द बक्शी
२- फिल्म - अवतार ,, - नरेन्द्र चंचल
३- फिल्म - दर्द का रिश्ता ,, - आनन्द बक्शी
४- फिल्म - गणेश जी की महिमा ,, - प्रदीप
५- फिल्म - गोपी ,, - राजेन्द्रकृष्ण
६- फिल्म - तुलसीदास ,, - पं० भरतव्यास
७- फिल्म - इन्सानियत ,, - राजेन्द्रकृष्ण

सख्य- भाव की भक्ति में भक्त और भगवान का सम्बन्ध बराबरी का होता है। हिन्दी चलचित्र गीतों में भी इस प्रकार की भक्ति भाव के उदाहरण मिलते हैं --

> `मेरी आन भगवान, कण- कण में लड़ी है
> तो तुमसे भी आज लड़ेगी
> मेरी बात तुम्हें रखनी पड़ेगी।[१]

(८) जीवन और संसार की नश्वरता से सम्बन्धित फिल्मी गीत:-

फिल्मी गीतों में जीवन और संसार की क्षण भंगुरता का प्रतिपादन अनेक स्थलों पर हुआ हैं। शान्त रस के स्थायी भाव `निर्वेद` के उदय के लिए इस प्रकार की भावना हमारे यहाँ के मध्यकालीन सन्तों की रचनाओं में बहुलता से देखने को मिलती है। ये ऊँचे महल, सोने - चाँदी की ये चकाचौंध और थिरकते यौवन की यह चहल-पहल- सब नाशवान है। मिट्टी के अनन्त रूप अन्त में मिट्टी में ही मिल जायेंगे।

इस सन्दर्भ में कतिपय हिन्दी चलचित्र गीत विशेष रूप में उल्लेखनीय हैं जिनमें संसार की क्षण भंगुरता का चित्रण हुआ है --

१- दौलत के झूठे नशे में हो चूर, गरीबों की दुनियाँ से रहते हो दूर,
अजी एक दिन ऐसा आयेगा ,जब माटी में सब मिल जायेगा ,
माटी ही ओढ़न माटी बिछावन ,माटी का तन बन जायेगा ,
बाकी माटी में सब मिल जायेगा।[२]

१- फिल्म - तूफान और दीया - गीतकार - पं० भरतव्यास

२- फिल्म - ऊंची हवेली गीतकार - पं० भरतव्यास

२- कहते हैं ज्ञानी, दुनियाँ है फानी
पानी में लिखी लिखाई है सबकी देखी है,
सबकी जानी किसी के न हाथ आई
कुछ तेरा ना मेरा, मुसाफिर जायेगा कहाँ ।[१]

३- दुनियाँ है मौजे - दरिया ,
कतरे की जिन्दगी क्या,
पानी में मिलके पानी,
अन्जाम है कि पानी
ये जिन्दगी के मेले...... [२]

४- ना घर मेरा ना घर तेरा
चिड़िया रैन बसेरा ।[३]

५- आदमी मुसाफिर है, आता जाता है ।
आते जाते रास्ते पर, यादें छोड़ जाता है ।[४]

६- है बहारे- बाग दुनियाँ चन्द रोज,
देख लो इसका तमाशा चन्द रोज ।
लाख दारा और सिकन्दर हो गये
आई हिचकी मौत की, सब सो गये ,
है बहारे - बाग...... ।[५]

१- फिल्म - गाइड गीतकार - शैलेन्द्र
२- फिल्म - मेला ,, - शकील
३- फिल्म - गोपी ,, - राजेन्द्र कृष्ण
४- फिल्म - अपनापन ,, - आनन्द बख्शी
५- फिल्म - दिल्ली का ठग ,, - राजेन्द्र कृष्ण

७- ऐ भाई जरा देख के चलो ,
आगे भी नहीं पीछे भी नहीं ,
दायें नहीं बायें नहीं,
दुनियाँ एक सर्कस है ।
एक मास्टर के कोड़े पर
हँसना रोना पड़ता है ।
ये नहीं वो नहीं, दुनियाँ एक सराय है ,
हर आदमी को आना जाना पड़ता है ।[१]

हिन्दी चलचित्र गीतों में नियतिवाद का स्वर भी सुनाई पड़ता है जो जैसा करेगा उसे वैसा ही फल मिलेगा। इस जन्म के किये हुए कर्म ही अगले जन्म के भाग्य बनते हैं । नियतिवाद के चक्र से कोई बच नहीं पाया --

किस्मत का लिखा ना टले ना बस चले ,
किरणों के पंख पसारे ,ले जीवन के उजयारे
धरती की मांग संवारे लेकिन तकदीर के मारे ,
नित शाम को रोज ढले चिता भी जले
किस्मत का लिखा, टाले ना टले ।[२]

सुप्रसिद्ध गीतकार राजेन्द्र कृष्ण ने फिल्म'कर्म' में नियति के सम्बन्ध में अपने विचार निम्न रूप में व्यक्त किये है --

---

१- फिल्म - मेरा नाम जोकर - गीतकार - नीरज

२- फिल्म - परिचय - गीतकार - पं० भरत व्यास

कर्म कहो किस्मत कहो, चाहे कहो तकदीर ,
पहले बना प्रारब्ध , और पाछे बना शरीर ।
कर्म की गठरी बाँधि के, जग में फिरे इन्सान ,
जैसा करे वैसा भरे, विधि का यही विधान ।
कर्म करे किस्मत बने, जीवन का यह मर्म ।
प्राणी तेरे हाथ में तेरा अपना कर्म ।[१]

नियति के खेल अत्यन्त विचित्र हैं। मानव का हँसना और रोना उसी के हाथ मे है --

इन्सान हँसे या रोये
जो होना है सो होय
क्या होना है, कब होना है ,
लिखने वाला जाने ।
कहानी किस्मत की
कभी अर्श है कभी फर्श है ,
दुनियां की यह रीति पुरानी ।
कहीं पै सरगम कहीं पै मातम ,
हर एक शह है आनी जानी ।
क्यूं दुख - सुख के मौसम बदले ,
लिखने वाला जाने। कहानी किस्मत की ।[२]

हिन्दी चलचित्र के भक्ति गीतों में उपदेशात्मकता का भी स्वर दिखलाई पड़ता है । सन्तों, महात्माओं एवम् भक्तों की वाणी को हिन्दी चलचित्र गीतों ने अपनाया है । -- कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं--

---

१- फिल्म - कर्म गीतकार - राजेन्द्र कृष्ण
२- फिल्म - कहानी किस्मत की ,, - राजेन्द्र कृष्ण

१- सजन रे झूठ मत बोलो ,खुदा के पास जाना है ।
हाथी है ना घोड़ा है, वहाँ पैदल ही जाना है । [१]

२- इक दिन बिक जायेगा माटी के मोल ,
जग में रह जायेंगे प्यारे मीठे बोल ,
दूजे के होठों को देकर अपने गीत,
कोई निशानी छोड़, फिर दुनियाँ से डोल । [२]

३- ले ले दर्द पराया, कर दे दूर गम का साया
तेरी खुशी तुझे मिल ही जायेगी । [३]

४- रामायण से और गीता से मिलता है यह ज्ञान,
देख लो मन के नयन खोल के, कण-कण में भगवान ।
चाहे देखो जल में चाहे देखो थल में,
चाहे नील गगन में निहार लो
भगवान समाये संसार में । [४]
वही है सबके मन में ,
वही है कण-कण में ।

५- मालिक तेरा कैसा संसार,
कोई ढूंढे तुझे बद्रीनाथ मे, कोई ढूंढे हरिद्वार ,
कोई ढूंढे काशी में तुझको, कोई रामेश्वर द्वार ।

१- फिल्म - तीसरी कसम गीतकार - शैलेन्द्र
२- फिल्म - धरम करम गीतकार - आनन्द बख्शी
३- फिल्म- छोटे बाबू गीतकार - राजेन्द्र कृष्ण
४- फिल्म - भगवान समाये संसार में ,, - मदन

तू तो घर घर में बस रहा ,
महिमा तेरी अपरम्पार ।[1]

६- तोरा मन दर्पण कहलाये[2]

७- काल का पहिया घूमे भइया ।[3]

(य) ईश्वर-स्तुति अथवा प्रार्थना परक भक्ति गीत:-

हिन्दी चलचित्र गीतों में प्रार्थना-परक गीत भी उपलब्ध होते हैं । इन गीतों में ईश्वर की महिमा का तथा आत्मग्लानि का भाव निहित रहता है । कतिपय नमूने देखिए:--

१- तू प्यार का सागर है ।
तेरी एक बूँद के प्यासे हम,
लौटा जो दिया तूने चले जायेंगे यहाँ से हम,
तू प्यार का सागर है...... ।[4]

२- ऐ मालिक तेरे बन्दे हम, ऐसे हों हमारे करम,
नेकी से चलें और बदी पर टलें ,
ताकि हँसते हुए निकले दम ।
बड़ा कमजोर है आदमी
अभी लाखों है इसमें कमी
पर तू जो खड़ा है दयालु बड़ा
तेरी कृपा से धरती थमी.....।[5]

१- फिल्म - भगवान परशुराम गीतकार - बी०डी०मिश्र
२- फिल्म - काजल ,, - साहिर
३- फिल्म - चंदा और बिजली ,, - आनन्दबख्शी
४- फिल्म - सीमा ,, - शैलेन्द्र
५- फिल्म - दो आंखें बारह हाथ ,, - पं० भरतव्यास

३- मन की शक्ति हमें देना ।[१]

४- पितु मातु सहायक, स्वामि, सखा, तुमही इक नाथ हमारे हो ।[२]

हिन्दू धर्म में गाय को अत्यधिक महत्व दिया गया है उसे माँ की तरह पवित्र, निर्मल, शुद्ध एवं स्वच्छ माना गया है हिन्दी चलचित्र गीतों में गाय के महत्व पर भी प्रकाश डाला गया है । इस सन्दर्भ में 'नव रात्रि', 'सती मदालसा,' गाय और गौरी, के गीत विशेष रूप से उल्लेखनीय है ---

१- दुखियों को बचाने वाले गैया को आज बचा लें,
गंगा जमुना जैसी पावन, गैया के दूध की धार
हो खून अगर माता का तो फिर कैसे चले संसार ।[३]

२- गैया को लात मत मारो,
गैया ही लाखों की मइया ।[४]

इस प्रकार हिन्दी चलचित्रों के भक्तिगीत ईश्वर की महिमा, उसकी शक्ति, सर्व व्यापकता, आदि का चित्रण करने में सफल है यह गीत मानव के हृदय में भक्ति भावना भरते है । ईश्वरोन्मुख होने के लिए प्रेरणा देते है ।

१- फिल्म- गुड्डी गीतकार - गुलजार
२- फिल्म - आंदोलन ,, - पं० प्रताप नारायण मिश्र
३- फिल्म - नवरात्रि ,, - पं० भरत व्यास
४- फिल्म - सती मदालसा ,, - गोपाल शरण सिंह नेपाली

उपदेशात्मक:-

चलचित्र गीत मानव को सन्देश देते हैं कि यह संसार क्षण भंगुर , नाश्वान अनित्य एवम् स्वार्थ से युक्त है। अत: भगवत भक्ति ही इससे मोक्ष दिला सकती है । यही कारण है कि ये भक्तिगीत अधिक लोक प्रिय है। इन गीतों मे राम, कृष्ण गौतम बुद्ध,ईसा ,दार्शनिकों का अमर सन्देश भरा हुआ है । इन सन्देशों को सुनकर मानव का नैराश्य एवम् विषाद धुल जाता है और उसके हृदय में जीवन के प्रति आशा की किरण का संचार होने लगता है ।

२- प्रेम गीत:-

मानव हृदय में उठने वाले असंख्य भावों में रतिभाव सर्वाधिक व्यापक एवम् महान् है। रति भाव के बिना जीवन में कोई आकर्षण नहीं रहता । सारा संसार इसी भाव के बल पर चल रहा है । इस भाव को प्रेम का नाम दिया गया है । प्रेम की इस महत्ता से प्रभावित होकर हिन्दी फिल्म निर्माताओं ने भी प्रेम चित्रण को ही अपनी फिल्मों का मुख्य विषय बनाया और प्रेम से सम्बन्धित जो गीत उनमें प्रयुक्त हुए है उनमें विशेष रूप से रति-भाव की ही व्यन्जना हुई है ।

भारतीय काव्य शास्त्रीयों ने रति भाव की विवेचना करते समय उसके तीन रूपों पर विशेष बल दिया है, जो निम्न है --

१- भगवद्-विषयकरति

२- दाम्पत्य-विषयक-रति

३- वात्सल्य- विषयक -रति

लेकिन हिन्दी चलचित्र गीतों में हमें रति भाव के पांच रूप दृष्टिगोचर होते है जो चलचित्र गीतों के माध्यम से फिल्मकारों ने अभिव्यक्त किये है , वे इस प्रकार --

क- भगवत् विषायक रति

ख- विवाह पूर्व प्रेमी-प्रेमिका विषायकरति

ग- दाम्पत्य विषायक-रति

घ- वात्सल्य विषायक -रति

ड.- भाई बहिन विषायक रति

उपरिलिखित पांच रति भावों को भक्ति, प्रेम वात्सल्य, तथा स्नेह कह सकते हैं ।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने चार प्रकार के प्रेम का उल्लेख किया है:--

१- विवाहोपरान्त प्रेम - जैसे - राम और सीता का

२- विवाह से पूर्व का प्रेम जैसे - दुष्यन्त और शकुन्तला का

३- राजाओं के अन्त: पुर,उधान,आदि में उत्पन्न होने वाला प्रेम जैसे -- रत्नावली आदि में वर्णित प्रेम ।

४- नायक-नायिका के गुण श्रवण, चित्र दर्शन, स्वप्न दर्शन, आदि से ~~कक्क~~ उत्पन्न प्रेम- जैसे ऊषा और अनिरुद्ध अथवा पद्मावती और रत्नसेन का प्रेम ।

प्रेम के इन चार प्रकारों में से हिन्दी-फिल्मों में दूसरे प्रकार का प्रेम अर्थात विवाह से पूर्व अवस्था के प्रेम का चित्रण अधिक हुआ है ।

हिन्दी फिल्मों में यौवन के तूफान में उन्मत्त नायक - नायिकाओं आखें मिलती है और उनमें प्रेम का बीज अंकुरित हो उठता है । नायक-नायिका के हृदय में फूल खिलने लगते है । एक नये रंग की बहार आ जाती है ----

दो नैन मिले , दो फूल खिले ,
दुनियाँ में बहार आई ।[१]

प्रेमिका के हृदय में प्रेमी का वास हो जाता है और प्रेमिका रात-दिन प्रेमी के विषय में सोचती रहती है --

जाने भी जिगर , पहचाने नजर
ये कौन मेरे दिल में समाया
मेरा अंग अंग तड़ पाया ।[२]

कभी कभी प्रेमिका प्रेम में अभिभूत होकर सब कुछ भूल जाती है और उसके हृदय से यह आवाज़ फूट पड़ती है --

दिल में बजने लगी शहनाईयाँ
वो आ गये, मिट गईं तनहाईयाँ ।[३]

एक प्रेमिका के हृदय की उत्कट- प्रेम भावना के उल्लास और उमंग का एक चित्र अवलोकनीय है --

हो गई रे, हो गई रे ,
मैं तो अपनी बालमा की हो गई रे ।[४]

प्रेमी और प्रेमिका एक दूसरे के प्रेम में इतने डूब जाते हैं कि उन्हें कुछ भी सुध नहीं रहती और वे एक ऐसे प्रेम संसार में खो जाते है जहाँ प्रेम ही प्रेम की वर्षा होती रहती है ---

---

१- फिल्म - घराना गीतकार - हसरत जयपुरी
२- फिल्म - आह ,, - शैलेन्द्र
३- फिल्म- कोहनूर ,, - शकील
४- फिल्म- घराना ,, - प्रेम धवन

झूम झूम के नाचो आज, नाचो आज
गाओ खुशी के गीत। आज किसी की हार हुई है,
आज किसी की जीत। झूम झूम के नाचो आज।[१]

विवाह से पूर्व प्रेम गीतों का हिन्दी चलचित्रों में वर्णन मिलता है इस सन्दर्भ में कतिपय अन्य उदाहरण भी अवलोकनीय है जिनमें मिलन और विछोह के सुन्दर चित्र मिलते है ---

१- मैं तेरा राग तू मेरी रागिनी
नहिं दिल का लगाना, कोई दिल्लगी।[२]

२- मिलते ही आखें, दिल हुआ दिवाना उसी का।[३]

३- झूमे झूमे दिल मेरा, झूमे झूमे दिल मेरा,
चन्दा की चांदना में, झूमे झूमे दिल मेरा।[४]

४- नैनों से नैन हुए चार, आज मेरा दिल आ गया।[५]

५- मन डोले, मेरा तन डोले,
मेरा दिल का गया करार रे।
यह कौन बजाये बासुरिया।[६]

६- नैन मिले, चैन कहाँ, दिल है वहीं तू है जहाँ
ये क्या किया सइयां सांवरे।[७]

१- फिल्म - अन्दाज गीतकार - मजरूह सुल्तानपुरी
२- फिल्म - दिल्लगी ,, - नौशाद
३- फिल्म - बाबुल ,, शकील
४- फिल्म - पूनम ,, शैलेन्द्र
५- फिल्म - औरत ,, शैलेन्द्र
६- फिल्म - नागिन ,, राजेन्द्रकृष्ण
७- फिल्म - बसन्तबहार ,, हसरत जयपुरी।

७- आंखों ही आंखों में इशारा हो गया,
बैठे बैठे ही जीने का सहारा हो गया ।[१]

प्रेमिका के अभाव में प्रेमी के हृदय में क्या बीतती है, उसका सुन्दर चित्रण हिन्दी फिल्मी गीतकारों ने अत्यन्त मार्मिक एवं सजीव ढंग से प्रस्तुत किया है - जो देखते ही बनता है कतिपय उदाहरण अवलोकनीय है --

१- दम भर जो इधर मुंह फेरे हो चंदा
मै तुमसे प्यार कर लूंगा ।[२]

२- टूटे हुए ख्वाबों ने हमको यह सिखाया है,
दिल ने जिसे पाया न था, प्राणों ने गंवाया था ।[३]

३- आंसु भरी है जीवन की राहें,
कोई उनसे कह दे, हमें भूल जायें ।[४]

४- आ, लौट के आजा मेरे मीत
तुझे मेरे गीत बुलाते हैं ।[५]

५- कह दो, करे ना यहां कोई प्यार ।
इसमें खुशियां है कम,
बेशुमार हैं ग़म,
एक हंसी और आंसू हजार ।[६]

१- फिल्म - सी०आई०डी० गीतकार - मजरुह
२- फिल्म - आवारा ,, - शैलेन्द्र
३- फिल्म - मधुमती ,, - शैलेन्द्र
४- फिल्म - परवरिश ,, - हसरत जयपुरी
५- फिल्म-रानीरुपमती ,, - पं० भरतव्यास
६- फिल्म- गूंज उठी शहनाई ,, - पं० भरत व्यास

६- जाने कैसे लोग थे वे, जिनको प्यार से प्यार मिला ,
हमने तो कलियां मांगी ,कांटों का हार मिला ।[१]

७- तेरी दुनियाँ में दिल लगता नहीं ,
वापस बुलाले ।[२]

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के शब्दों में वही प्रेम उत्कृष्ट होता है जो वासना से रहित हो तथा उसमें रूप लिप्सा और साहचर्य दोनों का योग हो, पर हिन्दी फिल्मों में जो प्रेम भाव चित्रित किया जाता है वह रूप लिप्सा पर ही आधृत होता है ।वहाँ साहचर्य का स्थान गौण ही रहा है , हिन्दी चलचित्र , गीतों में संस्कृत हिन्दी कवियों की भांति नख-शिख सौन्दर्य का वर्णन भी मिलता है इस सन्दर्भ में कतिपय उदाहरण प्रस्तुत है । --

१- जिन्दगी भर नहीं भूलेगी वह बरसात की रात ,
एक अनजान हसीना से मुलाकात की रात ।
फूल से गालों पे रुकने को तरसता पानी,
डर के बिजली से अचानक वह लिपटना उसका
और फिर शर्म से बल खा के सिमटना उसका
सुर्ख आंचल को दबाकर जो निचोड़ा उसने
दिल पे जलता हुआ एक तीर- सा छोड़ा उसने
आग पानी में लगाते हुए ,हालात की रात
जिन्दगी भर नहीं.......... ।[३]

१- फिल्म - प्यासा गीतकार - साहिर
२- फिल्म - बावरे नैन गीतकार - केदार शर्मा
३- फिल्म - बरसात की रात ,, - साहिर

१- श्यामल श्यामलवरन , कोमल कोमल रचन,
तेरे मुखड़े पे चन्दा गगन का जड़ा ,
बड़े मन से विधाता ने तुझको गढ़ा ,
श्यामल श्यामल वरन ।[१]

२- चौदहवीं का चाँद हो या कि आफताब हो ,
तुम जो भी हो, खुदा की कसम, लाजवाब हो ।
जुल्फें हैं जैसे कांधे पे बादल झुके हुए ,
आंखे हैं, जैसे मय के प्याले भरे हुए ,
मस्ती है जिसमें प्यार की तुम वो शराब हो,
चौदहवीं का चांद हो, या कि आफताब हो ।[२]

३- हुस्न वाले, तेरा जवाब नहीं ,
तेरी आंखों में ऐसी मस्ती है ,
जैसे छलके हुए हों पैमाने ।
तेरे ओठों पर वह खामोशी है
जैसे बिखरे हुए हों अफसाने ।
तेरी जुल्फ़ों में ऐसी रंगत है ।
जैसे हो काली घटा बहारों में ।[३]

४- तेरी बात में गीतों का सरगम ,
तेरी चाल में है पायल छुम-छुम ।[४]

१- फिल्म - नवरंग गीतकार - पं० भरतव्यास
२- फिल्म - चौदहवीं का चाँद ,, - शकील
३- फिल्म - घराना ,, - हसरत जयपुरी
४- फिल्म - लीडर ,, - साहिर

३- ये काम- कमान भवें तेरा ,
पलकों के किनारे कजरारे ।
माथे पर सिन्दूरी सूरज ,
ओठों पर दहकते अंगारे ।[१]

४- ये रेशमी जुल्फें, ये शरबती आँखें ,
इन्हें देखकर जी रहे हैं सभी ।[२]

५- हीरे से जड़े तेरे नैन बड़े
जिस दिन से लड़े तेरे दर पर खड़े ।[३]

६- मधुवन की सुगन्ध है सांसों में
बाहों में कमल की कोमलता ।[४]

७- चेहरे में घुल गया है हंसी- चाँदनी का नूर,
आंखों में चमन की जमा रात का सरूर ।[५]

८- हर सुबह किरन की लाली, रंग तेरे गालों का,
हर शाम की चादर काली, साया है तेरे बालों का ।[६]

१- फिल्म - सरस्वती चन्द गीतकार- इन्दीवर
२- फिल्म - दो रास्ते ,, आनन्दबक्शी
३- फिल्म - जानी मेरा नाम ,, इन्दीवर
४- फिल्म - सफर ,, इन्दीवर
५- फिल्म - भारती ,, मजरूह सुल्तानपुरी
६- फिल्म - काश्मीर की कली ,, एस० एच० बिहारी

इस प्रकार देखते हैं कि हिन्दी फिल्मों मे अधिकतर विवाह से पूर्व प्रकार के प्रेम का चित्रण हुआ है। इसके अतिरिक्त अन्य प्रेम के प्रेम का रतिभाव की व्यन्जना भी हमें दीख पड़ती है। ऐसी रचनायें संख्या में अपेक्षाकृत कम है। विवाह के पश्चात विकसित होने वालेप्रेम का चित्रण करने वाली फिल्मों और उनमें प्रयुक्त प्रेम की संयोग एवम् वियोग के गीतों का रूप भी दिखाई पड़ता है। विवाह से पूर्व प्रेम गीतो मे जो रूप-चित्रण, प्रेमोल्लास, और विरह की मार्मिक पीड़ा दिखाई देती है वही विवाहोपरान्त वाले प्रेम-गीतों में भी। अन्तर केवल परिस्थितियों का है विवाहोपरान्त गीतों में एक मर्यादा है पर विवाह के पूर्व गीतोमें मर्यादा का अभाव एवम् कामुकता का प्रभाव मिलता है।

दाम्पत्य- प्रेम के संयोग और वियोग काल के अनेक सुन्दर गीत हिन्दी फिल्मों में रखे गये हैं। ऐसे गीतो के उदाहरण `साहब बीवी और गुलाम, `चौदहवीं का चाँद,` मदरइण्डिया`, आदि जैसी फिल्मों में देखे जा सकते हैं।

विवाहोपरान्त कुछ प्रेम गीतों की बानगी प्रस्तुत है :--

१- मैं तो प्यार से तेरे पिया माँग सजाऊँगी।
तेरे अंगना में सारी उमरिया बिताऊँगी।[१]

२- मेरे जीवन साथी, मैं तो कली थी प्यासी,
तूने देखा, हुई खिलके बहार..।[२]

३- बहारों फूल बरसाओ, मेरा महबूब आया है।[३]

१- फिल्म - साथी गीतकार - मजरूह
२- फिल्म - शादी ,, - मजरूह
३- फिल्म - सूरज ,, - हसरत जयपुरी

४- घूंघट नहिं खोलूंगी, सइयाँ तोरे आगे ,
उमर मोरी बारी, सरम मोहिं लागे ।[१]

५- चली बन के दुल्हन, उनसे लागी लगन
मोरा मैके में जी घबरावत है ।[२]

६- दो सितारों का जमीं पर मिलन है ,
आज की रात ,
मुसकराता है उमीदों का चमन आज की रात,
रंग लाई है मेरे दिल की लगन आज की रात
सारी दुनियां नजर आती है दुल्हन ,आज की रात ।[३]

७- अरे तू कहाँ खो गया बलम मतवाला,
मैं ढूंढू तुझे गलियों और चौबारा ।[४]

८- बादलो बरसो नयन की ओर से । [५]

९- कहाँ छुपे हो मन के मितवा, नैना भये उदास,
छलक रहा है सुख का सागर, हम प्यासे के प्यासे ,
सावन के झूले पडे सइंयां जी हमें क्यों भूले पडे ।[६]

१- फिल्म - मदर इण्डिया गीतकार - शकील
२- फिल्म - सुबह का तारा ,, नूर लखनवी
३- फिल्म - कोहनूर ,, शकील
४- फिल्म - सिंगापुर ,, शैलेन्द्र
५- फिल्म - सम्पूर्ण रामायण ,, पं० भरतव्यास
६- फिल्म - प्यार की प्यास ,, पं० भरतव्यास

१०- इक रात में दो-दो चाँद खिले, इक आंगन में ,इक बदली में।[१]

११- जीवन में पिया तेरा मेरा साथ रहे ।[२]

प्रेम के उपर्युक्त रूपों के अतिरिक्त संसार में उसके अन्य रूप भी दिखाई पड़ते है इनमें हमारे समाज में माँ- बेटे, भाई-बहिन आदि का प्रेम- चित्रण सर्वाधिक महत्वपूर्ण है । प्रस्तुत प्रकार का प्रेम-चित्रण अनेक चल-चित्र-गीतों में व्यन्जित किया गया है ।

माँ- बेटे के प्रेम को वात्सल्य, और भाई-बहिन के प्रेम को स्नेह कहा जाता है । हिन्दी साहित्य में विशेष रूप से सूर रचनाओं में वात्सल्य के दोनों पक्षों का चित्रण हुआ है, जैसे ही कुछ फिल्मी - गीतों में भी दोनों पक्षों का चित्रण मिलता है, इस सन्दर्भ में हिन्दी फिल्मी गीतों से कुछ उदाहरण प्रस्तुत है:--

१- मेरा नन्हा सा कन्हैया घर आया रे ,
जिसे देख जिया हरसाया रे ।[३]

२- यशोमति मइया से पूछे नंदलाला ,
राधा क्यों गोरी, मैं क्यों काला....।[४]

३- मुन्ना बड़ा प्यारा , अम्मी का दुलारा ,
कोई कहे चाँद , कोई कहे आंख का दुलारा ।
हंसे तो भला लगे, रोये तो भला लगे ,
अम्मी को इसके सिवा कुछ न अच्छा लगे ।

१- फिल्म - बरसात गीतकार - राजेन्द्र कृष्ण
२- फिल्म - गूंज उठी शहनाई ,, - पं० भरत व्यास
३- फिल्म - भाभी की चूड़ियां ,, - पं० नरेन्द्र शर्मा
४- फिल्म - सत्यम् शिवम् सुन्दरम्,, - पं० नरेन्द्र शर्मा

तुमको लगे मेरी उमरिया ,जियो मेरे लाल ,
जिओ मेरे लाल ।[१]

४- तू मेरे प्यार का फूल है कि मेरी भूल है, कुछ कह नहीं सकती,
पर किसी का किया तू भरे, यह सह नहीं सकती ,
आज पिलाऊँ तुझे दूध कल ज़हर पियेगा ।[२]

५- बच्चो । तुम तकदीर हो कल के हिन्दुस्तान की,
बापू के वरदान की, नेहरू के अरमान की ।[३]

६- मैं गाऊँ तू सो जा, मैं जागूं तू सो जा ।[४]

७- जीवन की बगिया महकेगी, महकेगी,
जीवन की खुशियां चहकेगी चहकेगी। [५]

८- ओ मेरे लाल आजा, तुझको गले लगालूं ।[६]

९- मैया मैं नहिं माखन खायों ।[७]

१०- माता ओ माता- जो तू आज होती,
मुझे आज यों बिलखता देख लेती, तो तेरा दिल टूट जाता ।[८]

१- फिल्म - मुसाफिर गीतकार - शैलेन्द्र
२- फिल्म - धूल का फूल ,, - साहिर
३- फिल्म - दीदी ,, - साहिर
४- फिल्म - दो आंखे बारह हाथ ,, - पं० भरतव्यास
५- फिल्म - तेरे मेरे सपने ,, - नीरज
६- फिल्म - मदर इण्डिया ,, - शकील
७- फिल्म - चरनदास ,, - सूरदास
८- फिल्म - अब दिल्ली दूर नहीं ,, - शैलेन्द्र

११- ठेलो ठेलो दुआरें माँ- बाप की,
सर से उतरेगी गठरी पाप की ।
गोद में माँ की आंख खुली जग देखा ,
बाप के कन्धे.......... ।
माता पिता के चरन छुये जो, चार-धाम तीरथ फल पाये ,
ठेलो ठेलो दुआरें माँ- बाप की । [१]

भाई- बहिन के स्नेह की प्रतीक हमारे यहां पुनीत राखी है । जो रक्षा बन्धन के त्योहार पर भाई की कलाईपर बांधा जाता है इस अवसर पर कितने ही दूर भाई बहिन क्यों न हों , बहिन भाई के पास राखी बांधने या भाई बहिन के पास राखी बंधवाने पहुंचते हैं । इस पुनीत स्नेह में अभिव्यक्ति भी फिल्मी गीतों में कुछ स्थलों पर हुई है । इस सन्दर्भ में कुछ राखी- गीतों के उदाहरण दृष्टव्य हैं:--

१- भैया मेरे । राखी के बन्धन को निभाना,
भैया मेरे । छोटी बहिन को न भुलाना
देखो । ये नाता निभाना, निभाना । [२]

२- ये राखी धागों का त्योहार ।
बंधा हुआ है इन धागों में भाई-बहिन का प्यार ।[३]

३- चन्दा रे । मेरे भैया से कहना, बहिना याद करे ।
राखी के धागे कुमंलाने , कहना अब घर वापस
आजा ,बहिन पराया धन है मइया ।[४]

१- फिल्म - माँ- बाप गीतकार - राजेन्द्रकृष्ण
२- फिल्म - छोटी बहिन गीतकार शैलेन्द्र
३- फिल्म - राखी गीतकार - साहिर
४- फिल्म - चम्बल की कसम गीतकार - साहिर

४- ये राखी बंधन है ऐसा । जैसे चंदा और किरन का ।
जैसे धरती और गगन का......... ।[१]

भाई बहिन के स्नेह के अतिरिक्त वियोग पक्ष का भी एक फिल्मी गीत मार्मिकता एवम् भावुकता की दृष्टि से सुन्दर बन पड़ा है । --

राखी के पावन त्योहार पर एक बहिन भाई से दूर है । उसके हाथ में सोने की थाली , पान ,सुपाड़ी रोली, आरती और टीके का सारा सामग्री सब बेकार हैं क्योंकि भाई बहुत दूर है और उसपर परिवार का कठोर बन्धन है । ऐसी स्थिति में वह भाई तक पहुंचने मे मजबूर है । उसके हाथों में राखी है और नयनों में सावन की बरसात है :---

१- कैसे ले जाऊं रखिया मैं भैया, मोरे पांव में बेड़ी पड़ी
हो, पांव में बेड़ी पड़ी ।

सास बैरिन बड़ी, घात में हर घड़ी ,
राह को रोके खड़ी, हो पांव में बेड़ी पड़ी,

सोने की थारी, पान सुपारी ,सब कुछ बेकार ,
जिस घर मे न आवे वीर मोरा , वहा न आए त्योहार,
आई हो शुभ घड़ी , चोट सी दिल पे पड़ी ,
सीने मे बहीं गड़ी , हो पाव मे बेड़ी पड़ी
जग की बहिने नाचे गाये , धूम मचाये वीर ,
अपनी सूनी कलाई लेकर राह तके मोरा वीर
हू जो बेबस बड़ी, राखी लिए खड़ी रोती मे
हर घड़ी , हो पाव मे बेड़ी पड़ी ।

१- फिल्म - बेइमान गीतकार - शैलेन्द्र
२- फिल्म - बहू बेटी गीतकार - राजेन्द्रकृष्ण

राखी गीतों में कुछ गीत विशेष रूप से उल्लेखनीय है --

१- चन्दा रे मेरे भइया से कहना बहिना याद करे । [1]

२- राखी बन्धन है, ऐसा जैसे नाता धरती और गगन का ।[2]

३- मेरे भइया मेरे चन्दा, मेरे अनमोल रतन ।[3]

४- मेरे भइया को संदेशा पहुंचाना रे चन्दा तेरी ज्योति बढे।[4]

हिन्दी चलचित्र गीतों मे वर्णित प्रेमगीत मे मादकता, विलासिता, के उद्दाम भाव देखने को मिलते है । इन गीतों में रीतिकालीन शृंगारिक भावना का प्रभाव देखा जा सकता है प्रेम के दोनों पक्षों के चित्र गीतों के माध्यम से सुन्दर बन पडे है। प्रेम गीतों में प्रेम स्नेह एवम् वात्सल्य के नानों रूप दृष्टि गोचर होते है । उर्दू की शैली प्रयुक्त होने के कारण इन गीतों में कहीं-कहीं अश्लीलता और उत्तेजकता का भाव भी दिखलाई पडता है यथा --

१- ओठ गुलाबी, गाल कटोरे, नैना सुरमेदार।[5]

२- लचके मेरी पुतली- सी कमरिया ।[6]

३- पतली कमर ने लूटी खुदाई, रब ने फुरसत मे सूरत बनाई तेरी। [7]

४- पुराना तेरा खूंटा और धक्का लगा टूटा ।
चलायेगा क्या गाडी , उतार अपनी धोती और बांध मेरी साडी।[8]

१-	फिल्म -	चम्बल की कसम	गीतकार	साहिर
२-	,,	बेईमान	,,	आनन्दबक्शी
३-	,,	काजल	,,	साहिर
४-	,,	दीदी	,,	साहिर
५-	,,	घर संसार	,,	रवि
६-	,,	मौसम	,,	कैफी आजमी
७-	,,	धरम करम	,,	अन्जान
८-	,,	अभिमन्यु	,,	फारूख कैसर

फिर भी प्रेम गीतों में कुछ गीतों को छोड़कर मार्मिकता भावुकता एवम् सजीवता पायी जाती है । यदि हिन्दी चलचित्रों में से प्रेम-गीतों को निकाल दिया जाये तो उसमें मनोरन्जन के नाम पर कुछ भी नहीं रह जाता ।

२- राष्ट्रीय गीत:-

धार्मिक एवम् प्रेम गीतों के अतिरिक्त हिन्दी चलचित्रों में राष्ट्रीयगीतों का भी अपना विशेष महत्व है । इन गीतों का विषय है पुनीत राष्ट्रप्रेम एवम् मांगलिक वीर भावना की अभिव्यक्ति । चलचित्रों में प्रयुक्त राष्ट्रीय गीतों में जो राष्ट्रीय चेतना तथा जागरण की लहर पैदा की है उसके लिए हमें इस संस्था का और उसके गीतकारों का ऋणी होना पड़ेगा ।

फिल्मी-गीत-कारों ने समय समय पर अवसर मिलते ही राष्ट्र की सोई हुई चेतना को जगाने वाले गीत- शब्दों का घोष किया । उन्होंने राष्ट्रीयता से ओतप्रोत उथल-पुथल मचाने वाले गीत ही सिने जगत को नहीं दिये अपितु हिन्दी को उस जगत में सम्मानित और प्रतिष्ठित भी किया । राष्ट्रीय गीतकारों में पं० प्रदीप,पं०भरतव्यास कैफी आजमी, जाँनसार अख्तर, आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है ।

राष्ट्र की धरोहर बच्चे और नौजवान होते है, वे अदम्य उत्साही होने के कारण मरना जानते है गिडगिड़ाना नहीं । अत: राष्ट्रीय गीतकारों ने किशोर,युवकों , के शक्ति और सामर्थ्य को पहचानकर सदैव उनका आह्वान किया है । साहित्य- क्षेत्र के गीतकारों के समान फिल्मी गीतकारों ने भी उन्हे आवाज दी है । यथा--

१- तुम अर्चना करो , अबाध अर्चना करो तुम अर्चनाकरो
निज राष्ट्र के शरीर के श्रृंगार के लिए
तुम कल्पना करो , नवीन कल्पना करो ,तुम कल्पना करो ।[1]

२- चल चल रे नौजवान, कहना मेरा मान ,चल चल रे नौजवान
रुकना तेरा काम नहीं, चलना तेरी शान ।[2]

३- आज हिमालय की चोटी से फिर हमने ललकारा है ,
दूर हटो ऐ दुनिया वालो ? हिन्दुस्तान हमारा है ।[3]

उपरिलिखित गीतों में स्वदेश प्रेम की भावना, आत्मविश्वास निर्भीकता स्वम् अदम्य उत्साह का प्रवाह देखने को मिलता है ।

पं० प्रदीप के कुछ गीत ऐसे भी है जिनमे बच्चों को देशप्रेम राष्ट्रीयता का संदेश दिया गया है और ऐसे गीत अमर हो गये है उनमे काल का दाग नहीं लग सकता -- यथा :-

४- आओ बच्चों तुम्हे दिखाये झाँकी हिन्दुस्तान की,
इस मिट्टी से तिलक करो ,ये धरती है बलिदान की।[4]

एक गीत में पं० प्रदीप बच्चों से देश को सुरक्षित रखने के लिए कह रहे है --

---

१- फिल्म - अपनाघर	गीतकार -	प्रेम धवन
२- फिल्म - किस्मत	,,	पं० प्रदीप
३- फिल्म - किस्मत	,,	पं० प्रदीप
४- फिल्म - जागृति	,,	पं० प्रदीप

१- हम लाये हैं तूफान से किश्ती निकाल के,
इस देश को रखना मेरे बच्चों संभाल के।
तुम हो भविष्य हो मेरे भारत विशाल के,
इस देश को रखना मेरे बच्चों संभाल के।
देखो कहीं बरबाद ना हो जावे ये बगीचा
इसको हृदय के खून से बापू ने है सींचा।[१]

साहिर लुधियानवी ने फिल्म 'दीदी' के गीत में बच्चों को भारत की तकदीर बताते हुये कहा है :--

२- बच्चों। तुम तकदीर हो कल के हिन्दुस्तान की।
बापू के वरदान की, नेहरु के अरमान की।

आज के टूटे खण्डहरों पर तुम कलका देश बसाओगे
जो हम लोगों से नहीं हुआ वह तुम करके दिखलाओगे।
तुम नन्हा सी बुनियादें हो, दुनिया के नये विधान की
बच्चों। तुम तकदीर हो कल के हिन्दुस्तान की।[२]

गीतकार शैलेन्द्र बच्चों के मुख से नये भारत की कल्पना को इन शब्दों में व्यक्त करते है:--

३- ये चमन हमारा अपना है, इस देश पर अपना राज्य है
मत कहो कि सर पर टोपी है, कहो सर पर हमरे ताज है।[३]

शकील बदाऊनी ने फिल्म 'सन आफ इण्डिया' के एक गीत के माध्यम से एक बच्चे की भावना को व्यक्त किया है जो बड़ा होकर देश का सिपाही बनकर देश की रक्षा करेगा:--

---

१- फिल्म - जागृति गीतकार - प्रदीप
२- फिल्म - दीदी ,, प्रदीप
३- फिल्म - अब दिल्ली दूर नहीं ,, शैलेन्द्र

१- नन्हा मुन्ना राही हूँ, देश का सिपाही हूँ।
बोलो मेरे संग, जयहिन्द। जयहिन्द ।। जयहिन्द।।![1]

'गंगा जमना' फिल्म के एक गीत में शकील साहब बच्चों को कल का नेता तथा देश का रक्षक बताते हुये कहरहे हैं --

२- इन्साफ की डगर पे, बच्चों दिखाओ चलके,
ये देश है तुम्हारा, नेता तुम्हीं हो कल के।
दुनिया के रंज सहना और मुख से कुछ ना कहना,
सच्चाइयों के बल पर, आगे को बढ़ते रहना,
रख दोगे एक दिन तुम, संसार को बदल के।[2]

राष्ट्रीय भावना बड़ी व्यापक भावना है। वह अनेक रूपों में अभिव्यक्त होती है, स्वदेश प्रेम उसके मूल में सर्वत्र झलकता है। एक ओर यदि उसमें देश को पराधीनता के भार से मुक्त करने के लिए जान उठाई का संकल्प और उत्साह रहता है तो दूसरी ओर देश के भीतर से सुसंगठित कर राष्ट्रीय एकता स्थापित करके सुदृढ़ बनाने का प्रयत्न दिखाई पड़ता है।

इन राष्ट्रीय गीतों में कहीं देश भक्ति का प्रकाशन किया जाता है तो कहीं जन्मभूमि की महिमा के गीत गाये जाते हैं। देश-प्रेम देश की गाथा, महापुरुषों एवम् नेताओं का गुण कीर्तन, विविध फिल्मों में देखने को मिलता है। ये प्रसंग हमें ऐतिहासिक फिल्मों में प्रसंग वश आये हुए महापुरुषों एवम् नेताओं के गुण कीर्तन, मातृ-भूमि की वन्दना एवम् राष्ट्रीय एकता का उद्घोष करने वाले गीतों में दिखलायी पड़ता है।

१- फिल्म - सन ऑफ इण्डिया - गीतकार - शकील
२- फिल्म - गंगा जमना - ,, - शकील

१- ऐतिहासिक फिल्मों में वर्णित राष्ट्रीयगीत:-

'महा राणा प्रताप', छत्रपति शिवाजी ,पृथ्वीराज चौहान, महारानी झान्सी , झाँसी की रानी, जय चित्तौड़ , वीर दुर्गादास आदि फिल्मों में फिल्मी गीतकारों ने सुन्दर राष्ट्रीय भावनाओं से युक्त गीतों की रचना की है जिनमें ओजस्विता का स्वर प्रमुख है। इन फिल्मी गीतों मे देश की स्वाधीनता और प्रतिष्ठा के लिए जान की बाजी लगाने वाले देश-भक्तों का दृढ संकल्प दर्शनीय है --

हिन्दुस्तान की खातिर हम जान लड़ा देंगे ,
हम शेरों की औलाद हैं, दुनिया को बतला देंगे ।[१]

पं० भरत व्यास ने केसरिया पगड़ी का भावपूर्ण एवं ओज-गुण से युक्त चित्र खींचा है जो किसी के सामने झुक नहीं सकती और वीरों का राज मुकुट वह है -- केसरिया पगड़ी बनी रहे --

इसमे स्वदेश का प्यार भरा, नव जीवन का अंगार भरा,
इसके बांकड़ले पेंचों पर सुन्दरता का सार भरा ,
ये मुकुट हमें बीते युग के वीरों की याद दिलाता है ।[२]

वीर दुर्गादास फिल्म में पं० भरतव्यास वीरों को देश की रक्षा के लिए आगे बढ़ने के लिए सम्बोधित करते है--

१- बढ़े चलो !
सिंह से दहाड़ के, जुल्म के पहाड़ पे, चढ़े चलो
बढ़े चलो, बहादुरों ! बढ़े चलो ।
बढ़े चलो...... बढ़े चलो ।

१- फिल्म - महारानी झाँसी - गीतकार - गोपालशरण सिंह
२- फिल्म - जय चितौड़ - गीतकार - पं० भरत व्यास

पत्थर जो आए सामने, ठोकर से उड़ा दो
चट्टान आए बीच में, सीने से हटा दो ।[१]

फिल्म `जयचित्तौड' में एक वीरांगना के हृदय का भाव देखें जो घोड़े से अपने पति की लाज रखने के लिए कह रही है कि तुम दुश्मन के छक्के छुड़ा देना क्योंकि तुम पर मेरे पति सवार है अतः तुम मेरा सुहाग अमर रखना --

ओ पवन वेग से उड़ने वाले घोड़े !
तुम पे सवार है जो, मेरा सुहाग है वो, रखियो रे उनकी लाज ।
तेरे कन्धों पर आज भार है मेवाड़ का
करना पड़ेगा तुझे सामना पहाड़ का

---- --- ---

छक्के छुड़ा देना तू, दुश्मन की चाल के,
उनकी छाती पर चढ़ना, पांव को उछाल के ।[२]

२- स्वाधीनता आन्दोलन और हिन्दी चलचित्र गीत :-

स्वाधीनता आन्दोलन हमारे देश के इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना है इस आन्दोलन में न जाने कितनी दुल्हनों के माथे के सिंदूर पुछ गए और न जाने कितनी माताओं की गोदें सूनी हो गयीं। देश-भक्तों की टोलियां फाँसी के फन्दों पर झूल गयी । इस देश व्यापी आन्दोलन और संग्राम से हिन्दी फिल्में भी प्रभावित हुई । इन फिल्मों के गीतों में स्वतन्त्रता प्राप्ति के हर्ष और उल्लास को अमर शहीदों की गुणकीर्ति

१- फिल्म - वीरदुर्गादास गीतकार - पं० भरत व्यास

२- फिल्म - जय चित्तौड़ गीतकार - पं० भरत व्यास

की अभिव्यक्ति की गया है। इस सन्दर्भ में कतिपय राष्ट्रीय गीत अवलोकनीय हैं - जिनमें ओजस्विता का स्वर मुखरित हो रहा है --

१- वतन की राह में वतन के नौजवां शहीद हो ।
पुकारती है ये जमीं और आसमां शहीद हो ।
वतन की लाज रखना अजीज अपनी जान से
वो नौजवां है जा रहा है, आज कितनी शान से ।
---- ---- ----
खिलेंगे फूल उस जगह पे , तू जहां शहीद हो ।[१]

२- सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है ,
देखना है जोर कितना बाजुये कातिल में है ।
वक्त आने पर बता देंगे तुझे , ओ आसमां
हम अभी से क्या बतायें, क्या हमारे दिल में है ।[२]

३- चलो झूमते सर से बांधे कफन ,
लहू मांगता है जमाने वतन ।
जहां पर जिये वहां पले ,
जमां है दुश्मनों के तले ।
जमां मत कहो यह है अपना वतन ।[३]

४- मेरा रंग दे वसन्ती चोला,
माहे रंग दे वसन्ती चोला ।
जिस चोले को पहन शिवाजी
खेले अपनी जान से ,
जिसे पहन झाँसी की रानी, मिट गई अपनी आन पे,
आज उसी को पहन कर, निकला हम मस्तों का टोला ।[४]

१- फिल्म- शहीद - गीतकार - राजा मेंहदी अली खां
२- ,, - शहीद(नयी) ,, - रामप्रसाद
३- ,, - काबुली वाला ,, - मजरूह
४- ,, - शहीद(नयी) ,, - प्रेमधवन

५- बिगुल बज रहा है आजादी का, गगन गूंजता नारों से
मिला रही है मिट्टी हिन्द की नजर सितारों से
एक बात कहनी है लेकिन ,आज देश के प्यारों से
संभल के रहना अपने घर में, छिपे हुए गद्दारों से ।[१]

६- रामकृष्ण की धरती पर पापों ने पांव पसारा है,
बढ़ो जवानों आज विदेशी ने हमको ललकारा है ।

----- ----- -----

कश्मीर से अन्तरीप तक, यही हमारा नारा है ,
हिन्द महा सागर लहरों ने, सुन लो यही पुकारा है ।[२]

इतना ही नहीं, चीन के आक्रमण के फलस्वरूप कुछ ऐसी फिल्में बनी जिनके गीतों में देश की सुरक्षा के लिए सरपर कफन बांधकर आगे बढ़ने और देश मे हर फूल को अंगारा बन जाने का सन्देश दिया गया।

इस सन्दर्भ में विशिष्ट रूप से 'फूल बने अंगारे', हकीकत, हिन्दुस्तानकी कसम, सिकन्दर ए- आजम , हम एक हैं, आदि फिल्में उल्लेखनीय है । जिनमें राष्ट्रीयता का स्वर मुखरित हो रहा है ।- तथा सोये हुए प्राणियों को जागृत करने का सन्देश भी निहित है।कतिपय उदाहरण प्रस्तुत है --

१- हिमालय की बुलन्दी से,सुनो आवाज ये आई ।
कहो माँओं से दें बेटे, कहो बहिनों से दें भाई ।।
वतन पर जो फिदा होगा, अमर वो नौजवां होगा
रहेगी जब तलक ये दुनियां, अफसाना बयां होगा ।[३]

१- फिल्म - तलाक गीतकार - भरतव्यास
२- फिल्म - अमर शहीद ,, - पं० अर्जुन
३- फिल्म - फूल बने अंगारे ,, - आनन्दबक्शी

२- कर चले हम फिदा जानो तन साथियो ,
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों
कर चले हम फिदा. .. ....

-++-　-++-　-++-

कट गये सर हमारे तो कुछ गम नहीं
सर हिमालय का जो हमने ना झुकने दिया ।
मरते मरते रहा बांकपन साथियों ,
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों ।
जिन्दा रहने के मौसम बहुत है मगर ,
जान देने का ऋतु रोज आती नहीं ।[१]

३- हिन्दुस्तान की कसम न झुकेगा सर वतन का
हर जवान की कसम, हिन्दुस्तान की कसम
जिन्हें प्यार है वतन से वो जां से खेलते है ।[२]

४- हम एक है हम एक है
~~बक्क~~ मजहब जुदा जुदा सही वतन तो एक है
मजहब के लिए मुल्क गाफिल नहीं हो हम
है बब अमन के साथी कोई बुजदिल तो नहीं हम
झुक सकता नहीं जुल्म के आगे ये तिरंगा
इस पर तो हम बहा सकते है खून की गंगा ।[३]

५- इस देश सरहद को कोई छू नहीं सकता
जिसे मुल्क का सरहद का निगेहबान है आंखें

१- फिल्म - हकीकत　गीतकार- कैफीआजमी
२- फिल्म - हिन्दुस्तान की कसम　,,- कैफी आजमी
३- फिल्म - हम एक है　,, इन्दीवर

हर तरह के जजबात का ऐलान है आंखे
शबनम कभी शोला ,कभी तूफान हैं आंखे ।[१]

६- ऐ मेरे वतन के लोगों ! तुम खूब लगा लो नारा
यह शुभ दिन है हम सबका, लहरा लो तिरंगा प्यारा
जो शहीद हुए हैं उनको जरा याद करो कुर्बानी
जब घायल हुआ हिमालय, खतरे में पड़ी आजादी
जब तक था सांस लड़े वो, फिर अपना लाश बिछा दी
संगीन पे रख के माथा ,सो गये अमर बलिदानी
जो शहीद हुए............ ।[२]

इस गीत को सुनकर पं० जवाहर लाल नेहरू रो पड़े थे तथा पं० प्रदीप को पुरस्कृत किया था ।

हिन्दी चलचित्र के इन स्वस्थ और स्फूर्ति दायक गीतों को हमे अपने साहित्यिक राष्ट्रीय गीतो के समान उचित सम्मान और महत्व देना चाहिये । हिन्दी में राष्ट्रीय गीतो का साहित्य चलचित्र गीतों की अपेक्षा कम है , क्योंकि इस देश की गुलामी का इतिहास बडा लम्बा रहा हैं । इस पर भी फिल्म के नाम से चिढने के कारण लोग ऐसे सुन्दर गीतों की उपेक्षा कर देते है लेकिन हिन्दी चलचित्र गीतों में निहित राष्ट्रीय भावना का यदि हम अध्ययन करे तो निश्चितरूप से कह सकते है ये गीत राष्ट्र की धरोहर हो सकते है ।

१- फिल्म - आँखे गीतकार - साहिर

२- फिल्म - देश भक्ति ,, - प्रदीप

३- महा पुरुषों एवम् नेताओं से सम्बन्धित राष्ट्रीयगीत :-

राष्ट्रीय भावना के मूल में देश प्रेम एवम् देश भक्ति का स्वर प्रमुख होता है और यह स्वर अनेक प्रकार से हिन्दी चलचित्र गीतों में मुखरित हुआ है। देश के महापुरुषों एवम् नेताओं का गुणगान भी देशभक्ति का एक अंग स्वीकारा जा सकता है। ऐसे अनेक हिन्दी चलचित्र गीत है। जिनमें महापुरुषों एवम् नेताओं को उनकी देश सेवा राष्ट्रीय भावना, के लिए स्मरण किया गया है। यथा---

१- सुन ले बापू ये पैगाम, मेरी चिट्ठी तेरे नाम
चिट्ठीमें सबसे पहले लिखता, तुझको राम-राम
सत्य-अहिन्सा करे पुकार टूट गया चरखे का तार
काला धन काला व्यापार रिश्वत का काला बाजार
साबरमती सिसकती तेरी तड़प रहा है सेवा-ग्राम
राम राज्य की तेरी कल्पना उड़ी हवा में बन काफूर
बच्चों ने पढना लिखना छोडा तोड़ फोड़ में है मगरुर।[१]

२- देदी हमें आजादी बिना खड्ग बिना ढाल
साबरमती के सन्त तूने कर दिया कमाल
आंधी मे भी जलती रही गांधी तेरी मशाल।

जब जब तेरा बिगुल बजा जवान चल पड़े
हिन्दु और मुसलमान सिख पठान चल पडे
कदमों पे तेरे कोटि कोटि प्राण चल पडे
फूलों की सेज छोड के दौडे जवाहर लाल।

---- --- ---

जिस दिन तेरी चिता जली थी रोया था महाकाल।[२]

१- फिल्म - बालक - गीतकार - पं० भरतव्यास
२- फिल्म - जागृति - ,, - पं० प्रदीप

२- चमका बन कर तारा, प्रेम को धरता देश हमारा
जय जय हिन्दुस्तान, जय जय हिन्दुस्तान
अमन के दुश्मन जंग के बेटे भूल गये हर चाल
ऐटम बम से जा टकराया वीर जवाहरलाल ।[१]

४- राज दुलारे !
भारत माँ के राजदुलारे ।
हटे जवाहर लाल हमारे ।[२]

५- ये बाग है गौतम नानक का
खिलते हैं चमन के फूल यहाँ
गांधी, सुभाष, टैगोर तिलक
ऐसे हैं अमन के फूल यहाँ
रंग हरा हरी सिंह नलवे से
रंग लाल है लाल बहादुर से
रंग बना बसन्ती भगत सिंह
रंग अमन का वीर जवाहर से ।[३]

६- माता है कस्तूरवा जैसी बाबुल गांधी जैसे
चाचा जिसके नेहरु शास्त्री डरे ना दुश्मन कैसे
वीर शिवाजी जैसे वीर ना लक्ष्मीबाई बहिना
लक्षमण जिसके वीर भगत सिंह उसका फिर क्या कहना
जिसके लिए जवान बहा सकते हैं खून की गंगा

१- फिल्म - ~~ककककि~~ एक ही रास्ता - गीतकार - ~~पं० प्रदीप~~ साहिर
२- फिल्म - बराण्डी की बोतल - ,, - दीनानाथ मधोक
३- फिल्म - उपकार - ,, - गुलशनबावरा

आगे पीछे तीनों सेना लेकर चले तिरंगा ।[१]

७- बच्चो तुम तकदीर हो कल के हिन्दुस्तान की
बापू के वरदान की नेहरु के अरमान की ।[२]

८- नौजवानो भारत की तकदीर बना दो
फूलों के हम गुलशन से कष्टों को हटा दो

------ ---- ----

अपने साथ है कैसे कैसे बलवानो की शक्ति
श्री जवाहर लाल की हिम्मत बापू की भक्ति ।[३]

९- राम कृष्ण की पावन धरती पर पापी ने पांव पसारा है
बढ़ो जवानो आज विदेशी ने हमें ललकारा है ।[४]

१०- सुनो सुनो ये दुनिया वालो बापू की अमर कहानी
बापू तो इतना पूज्य है जितना गंगा मां का पानी
आजादी का वीर सिपाही कभी ना हिम्मत हारा
फिर पूर्ण स्वराज्य का नारा जा लाहौर पुकारा
भारतवासी जपते थे फिर गांधी नाम की माला
चालीस करोड़ दिलों पर छाया एक लंगोटीवाला ।[५]

१- फिल्म - पूरब पश्चिम गीतकार आनन्दबक्शी
२- फिल्म - जागृति ,, पं० प्रदीप
३- फिल्म - कुन्दन ,, कैफी आजमी
४- फिल्म - अमर शहीद ,, अर्जुन
५- फिल्म - बापू की अमर कहानी ,, राजेन्द्रकृष्ण

प्रत्येक देश के राष्ट्रीय कवियों ने, देश भक्तों ने अपना देश प्रेम, जन्मभूमि की वन्दना और उसके गौरव कीगान के माध्यम से अभिव्यक्त किया है । मातृभूमि देशभक्त का सर्वस्व होता है। वह हर तरह से उसपर तैयार रहता है । जन्मभूमि उसका मान और उसका प्राण होता है। जन्मभूमि से बिछड जाने पर देशभक्ति की अन्तिम अभिलाषा यही रहती है कि उसके प्राण देश की मिट्टी में निकले । भारत के अंतिम मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर को अन्तिम समय में यही दुख रहा कि वह भारत भूमि में न मरकर रंगून में मर रहा है --

कितना बद नसीब है जफर - दो गज जमीं भी न मिली कूए यार में।।

हिन्दी फिल्मी गीतों मे मातृभूमि की वन्दना एवम् स्वदेश महिमा का चित्रण देखने को मिलता है एक देश भक्त की अपने मातृभूमि के प्रति अनन्य प्रेम भावना और कामना का एक मार्मिक चित्र देखें --

रे मेरे प्यारे वतन ! रे मेरे बिछुडे चमन ,
तुझ पे दिल कुर्बान ।
तू ही मेरी आरजू, तू ही मेरी आबरु, तू ही मेरी जान
------ ------ -----
फिर भी यही तमन्ना तेरे जर्रों की कसम
हम जहां पैदा हुरे है उस जगह ही निकले दम ।[१]

१६४७ ई० में हमारा देश स्वतंत्र हुआ । नेताओं की अनवरत साधना सफल हुयी सबने एक स्वर में स्वाधीनता का स्वागत किया। इस अवसर पर हिन्दी फिल्मों में भी स्वतन्त्रता की वन्दना और स्वागत के सुन्दर गीत गाये ।---

---

१- फिल्म - काबुली वाला - गीतकार - प्रेम धवन

१- जय जय स्वागत स्वतन्त्रते,
जन मन गण मृदु मोद तरंगिणि
रिपु वारिणि: तारिणि , रंग रंगिणी,
जय जय भारत भूमि वन्दते , ।[१]

२- फिर कोई जय चन्द्र न उभरे
फिर कोई जाफर न उठे
गैरों का दिल खुश करने को
अपनों पर खन्जर ना उठे
अब वतन आजाद है ।[२]

हिन्दी चलचित्र में राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति के अवसर पर भारत माता की वन्दना और उनकी महिमा का उच्च स्वर से गान अनेक गीतों में हुआ । इस सन्दर्भ में कुछ उदाहरण अवलोकनीय है ---

१- जननी जन्मभूमि स्वर्ग से महान है
इसके वास्ते ये तन है, मन है और प्राण है
इसकी गोद में हजारों गंगा जमुना थी
इसके पर्वतों की चोटियां गगन को चूमती ।[३]

२- जय भारती ! वन्दे भारती
हाथों में वेद का मंत्र है ,देश नहीं ऐसा अन्यत्र है
सत्य मेव जयते जिसका मंत्र है, रक्षक अहिंसा का शस्त्र है
शासन जहाँ का जनतन्त्र है,युग - युग भूमि स्वतंत्र रहे
जय भारती ! वन्दे भारती ।[४]

१- फिल्म - आंसू गीतकार - रामचन्द्र
२- फिल्म - मेरे गीत है काम ,, - शकील
३- फिल्म - पृथ्वीराज चौहान ,, - पं० भरतव्यास
४- फिल्म - जगत गुरुशंकराचार्य ,, - पं० भरतव्यास

३- आओ बच्चों तुम्हें दिखायें झाँकी हिन्दुस्तान की

---- ---- -----

उत्तर में रखवाली करता पर्वत राज विराट है

दक्षिण में चरणों को धोता सागर का सम्राट है । [१]

भारतीयों के नस-नसमें वीरता कूट-कूट कर भरी हुई है, वे दुश्मन के लिए तलवार की धार के समान तीखे, हँसते हँसते कुर्बानी करने वाले, अलबेले, मस्ताने, चौड़ी छाती वाले, नौजवान है तो दूसरी ओर वे पेड़ों पर फूलों की बहारों का आनन्द लेते है धूम मचाने वाले, ताशे और ढोलों पर नित नये दंगल और मेलो की गाती लहराती, भारत भूमि पर नाचते गाते और मस्त रहते है --

४- यह देश है वीर जवानों का, अलबेलों का मस्तानों का,

इस देश का यारों क्या कहना, यह देश है दुनियाँ का गहना

यहाँ चौड़ी छाती वीरों की, यहाँ भोली शक्लें हीरों की

यहाँ गाते है रांझे मस्ती मे, मचती है धूमे बस्ती में

पेड़ो पर बहारें झूलों की राहों में कतारें फूलों की

दिलबर के लिए दिल दार है हम दुश्मन के लिए तलवार हैं हम । [२]

भारत भूमि की धरती पावन है यह धरती वीर प्रसू तो है ही साथ ही में सोना चाँदी उगलने वाली भी है ऐसी पावन धरती पर किसे नाज नहीं होगा ! ---

मेरे देश की धरती --

सोना उगले उगले हीरे मोती

बैलों के गले में जब घुंघरु

जीवन का राग सुनाते है

--- --- ----

१- फिल्म - जागृति गीतकार - पं० प्रदीप

२- ,, नया दौर ,, साहिर

क्यों ना पूजे इस धरती को
जो जीवन का सुख देती है ।[1]

भारत भूमि की वन्दना बंकिम चन्द्र ने बड़े सुन्दर ढंग से निम्न पंक्तियों में की है --

वन्दे मातरम् वन्दे मातरम्
सुजलाम सुफलाम् मलयज शीतलाम्
शस्य श्यामलाम् मातरम् ! वन्दे मातरम् ।[2]

हमारे देश के गौरव का एक और स्त्रोत है वह है उसकी अनुपम संस्कृति। इस सांस्कृतिक संपत्ति के कारण ही प्राचीन काल मे विश्व का गुरु बना , आज भी यह परिस्थितियाँ सामने आती जा रही है ,जब अशान्त संसार को वह अपने सुयोग्य नेतृत्व के द्वारा पथ प्रदर्शन करेगा। भारत देश की पुनीत संस्कृति की तस्वीर हमारे फिल्मी गीतकारों ने गीतों के माध्यम से प्रस्तुत की है/भारत महान् है यहाँ पर अतिथि को देवता समझा जाता है और वह प्राणों से प्यारा होता है/हमारा दृष्टिकोण उदार है , हमने दुश्मनों को भी गले लगाया है,हमने जहां से जो मिला सीखा है--

होठों पर सच्चाई रहती है, जहां दिल में सफाई रहती है ,
हम उस देश के वासी है, जिस देश में गंगा बहती है,
मेहमां जो हमारा होता है, वह जान से प्यारा होता है,
ज्यादा की हमे लालच नहीं थोड़े में गुजारा होता है,
मिलजुल के रहो और प्यार करो एक चीज नहीं जो रहती है ,
हम उस देश के वासी है जिस देश में गंगा बहती है ।[3]

१- फिल्म- उपकार गीतकार गुलशन बावरा
२- ,, आनन्दमठ ,, बंकिम चन्द्र
३- ,, जिस देश में गंगा बहती है ,, शैलेन्द्र

८- राष्ट्रीय एकता के गीत:-

कोई भी देश भक्त अपनी जन्मभूमि का ना अपमान देख सकता है और ना उसको छिन्न-भिन्न होता हुआ, यदि कोई उसपर आक्रमण करता है तो उसकी आंखे आग बरसाने लगती है । कश्मीर बंटवारा, चीन आक्रमण , पर गीतकार विक्षुब्ध हो उठा -- जन-मानस में कुछ कर गुजरने की अदम्य लालसा उत्पन्न हो गयी । हिन्दी फिल्मों पर भी इसका प्रभाव पडा । फिल्मी गीतकारों की मुट्ठियां क्रोध से भंचगई और भुजाये उठ गई, तथा दुश्मनों को ललकारा । यथा--

१- आज हिमालय की चोटी से हमने ललकारा है
दूर हटो ये दुनिया वालों ! हिन्दुस्तान हमारा है ।[१]

२- कश्मीर हमारा है, आज जुबां पर बच्चे के ये नारा है
ये कौमी नारा है, कश्मीर हमारा है ।[२]

३- हिमालय की बुलंदी से सुनो आवाज है आई
कहो मांओं से दें बेटे कहो बहिनों से दें भाई
वतन पर जो फिदा होगा अमर वो नौजवां होगा ।[३]

४- हम एक है , हम एक है
मजहब जुदा जुदा , सही वतन तो एक है ।[४]

हिन्दू मुसलिम एकता के समय समय पर गीत हिन्दी फिल्मी गीतकारों ने लिखे और उन्हें देश के कोने कोने तक पहुँचाये --

---

१- फिल्म - किस्मत गीतकार - पं० प्रदीप
२- ,, कश्मीर हमारा है ,, - रामचन्द्र
३- ,, फूल बने अंगारे ,, - आनन्दबक्शी
४- ,, हम एक है ,, - इन्दीवर

बांटे न बटेगा किसी के देश हमारा
ये हिन्दू- मुसलमान का एक ही घरबार
यहाँ एक ही संसार

छाया मे हिमालय की आवाज हिन्दुस्तान
है जिसकी प्यारी आंखे दो, हिन्दु मुसलमान
है इनका एक ही राष्ट्र एक ही जवान ।[१]

हिन्दू और मुसलमान नाम है दोष पूर्ण है ,जो राष्ट्र की एकता को छिन्न भिन्न करने में सहायक होते है । अत: हिन्दी फिल्मी गीतकारों ने संकीर्ण और विष भरे विशेषणों का परित्याग कर एक नया नाम मानव जाति को दिया --

तू हिन्दू बनेगा ना मुसलमान बनेगा
इन्सान की औलाद है इन्सान बनेगा
नफरत जो सिखाये वह धरम तेरा नहीं है ,
इन्सान को जो रौंदे वह कदम तेरा नहीं है।[२]

हिन्दी चित्रपट के गीतों के उक्त विवेचन से स्पष्ट होजाता है कि उनमें राष्ट्रीयता का स्वर प्रमुख है, जो अनेक रूपों में मुखरित हुआ है । ये गीत भले ही भाषा की दृष्टि से अव्यवस्थित लगे पर भावना की दृष्टि से महत्व कम नहीं रखते ।

सामाजिक गीत:-

समाज का स्पष्ट चित्र एवम् उसकी विविध समस्याओं की झाँकी हमें हिन्दी चलचित्र गीतों में देखने को मिलती है ।

१- फिल्म - बच्चो का खेल गीतकार - पं० प्रदीप
२- फिल्म - धूल का फूल गीतकार - साहिर

समाज दो वर्गों में विभक्त है - अमीर एवम् गरीब । अमीर वे हैं , जो मिलों के मालिक हैं , महलों में रहते हैं, लक्ष्मी जिनकी दासी है , रात- दिन वे ऐश्वर्य एवम् भोग विलास का जीवन व्यतीत करते हैं । गरीब वे हैं जो रात - दिन परिश्रम करके भी भूखे रहते हैं , जिनके पास न रहने को मकान है और न खाने को अन्न । इन्हीं गरीबों के परिश्रम से अमीर और अमीर हो जाते हैं तथा गरीब और भी गरीब । समाज की इस व्यवस्था की मुख्य विशेषता यह है कि अमीर गरीब को दबाता है, उसका खून चूसता है , निर्धन धरती में मिलता जाता है और अमीर आसमान में उठता जाता है । एक तरफ रुपया , इन्सान, भगवान और ईमान- अरमान चाहे जिसको बेचे एवम् खरीद सकता है --

' चाँदी के चन्द टुकड़ों के लिए ईमान को बेचा जाता है ,
मस्जिद में खुदा और मन्दिर मे भगवान को बेचा जाता है ।

---- ---- ----

हर चीज का सौदा होता है, हर चीज यहाँ बिकती है
धन वालों के आगे निर्धन क्या अब सारी खुदाई झुकती है। [१]

यह पूँजीवादी व्यवस्था कुछ ऐसी ही है कि जिसमें श्रम कोई करता है और उसका उपभोग करता है कोई दूसरा --

मेहनत करे किसान महान् बनते हैं धनवान
ये कैसी गड़बड़ है भगवान्
इक दाने के बदले तुम देते हो लाखों दाने
इस पर भी इन्सान को क्यों इंसान लगे है खाने ।

१- फिल्म - सट्टा बाजार गीतकार-इन्दीवर

धरती यहाँ किसानों की है मजदूरों का पैसा
जिनका बहे पसीना उन पर जुल्म हुआ है कैसा ।[१]

समाज की विषमता का एक चित्र देखिये -- वे गरीब, जो अमीरों के ऊँचे- उजले महलों के नीचे गन्दी गलियों में पले हैं, जिनका मन चिन्ताओं और तन मैला- माटी से भारी है, जो तूफान में दीपक बनकर जलते हैं, दुनियां के ठुकराये हुए हैं, सड़क जिनका घरबार और मां - बाप है - वे आवारा कहे जाते हैं --

इन उजले महलों के तले
हम गन्दी गलियों में पले ।
सौ - सौ बोझ मन पै लिए
मैले और माटी तन पै लिए ।
दुख सहित और गम खाते रहे
फिर भी हंसते गाते रहे
हम दीपक तूफां में जले
.... गन्दी गलियों में पले ।
सड़के माँ, सड़के ही पिता
सड़के घर, सड़के ही चिता
-- -- --
चाहो तो नाकारा कहो
चाहो तो आवारा कहो
हम ही बुरे तुम सब हो भले
गन्दी गलियों........[२]

१- फिल्म - ललकार - आनन्द बक्शी
२- फिल्म - दीदी - साहिर

निर्धनता समाज को विकास की ओर जाने से रोकती है, समाज को विकलांग बनाती है। असंख्य भूखों मरते दीन-हीन भिखारी तथा दर-दर भटकने वाले अनाथ मूक बालक इसके साक्षी हैं। फिल्मी गीतकारों ने इन गरीबों की भावना का कारुणिक चित्र खींचा है, जो अत्यन्त मार्मिक एवम् हृदय स्पर्शी है। इस सन्दर्भ में कुछ गीतों की बानगी प्रस्तुत है ---

१- कोई जहाँ में हमारी तरह गरीब न हो
गरीब हो भी तो हम जैसा बदनसीब न हो
एक पैसा दे दे, एक पैसा दे दे ओ बाबू
ओ जाने वाले बाबू......
पेट की खातिर बने भिखारी फिरते दर-दर मारे
आँख का अन्धा बाप मेरा पग- पग ठोकर खाए
- ओ बाबू.....।[१]

२- गरीबों की सुनो, हमारी भी सुनो
तुम एक पैसा दोगे, वह दस लाख देगा...।[२]

३- दुखियों पर कुछ रहम करो माँ बाप हमारे
भूले हो जिन्हें हम वही बच्चे हैं तुम्हारे।
रो रहे हैं हंसने का अधिकार हमें दो
आंगन मे तुम्हारे हैं खड़े हाथ पसारे।[३]

यही निर्धनता कुंठित एवम् निराश व्यक्तियों को आवारा बना देती है ---

---

१- फिल्म - बचन, गीतकार - रवि
२- फिल्म - दस लाख, ,, रवि
३- फिल्म - ताडाक ,, प्रदीप

आवारा हूँ, आवारा हूँ,
या गर्दिश में हूँ, आसमान का तारा हूँ.... ।[१]

निर्धनता एवम् बेकारी एक ऐसे समाज को जन्म देता है, जो दिन में राम - रहीम की माला जपकर पेट भरता है तथा रात में चोरी और व्यभिचार करता है । ऐसा समाज धर्म को कलंकित करता है । निकम्मे, पाखण्डी तथा कथित साधुओं की बिरादरी गांजा- चरस पी-पीकर तथा राम नाम की ओट में ठगी करते हैं --

छुरी बगल में मुँह में राम! जटा बढ़ा के अलख जगा के
माला फिराते आठों याम
भोर भये गंगा तट जावें, कपड़ा रंग के रंग जमावें

--- --- ---

एक हाथ बीड़ी का बण्डल, दूजे हाथ में लोहे कमण्डल
लम्बे - चौड़े और मुस्टंडल, साथ चेलों का मंडल
आडम्बर- पाखंड - छल - कपट ये बगुला भक्तों के काम।[२]

हमारे समाज का यह निर्धनता जन्य विकृत रूप है, जिसका बड़ा ही यथार्थ एवम् व्यंग्यपूर्ण चित्रण हिन्दी फिल्मों के गीतों में हुआ है जिनमे `सन्यासी`, `कर्म` आदि फिल्में विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं ।

गरीबी में पला एवम् उसके दोषों से भरा समाज और कहां धन- कुबेरों की दिन- रात की विलासमयी रंगीन और मद भरी जिंदगी? समाज में यह विषमता कांटे की तरह व्यक्ति को कसकती है ऐसे समाज का चित्रण गीतकार साहिर ने एक गीत में किया है, जिसमें वह ऐसे समाज की दुनियाँ को जला देना चाहता है --

---

१- फिल्म - आवारा - गीतकार - शैलेन्द्र
२- फिल्म - पिया मिलन की आस ,,- पं० भरत व्यास

१- यह महलों, यह तख्तों, यह ताजों की दुनियाँ
यह इन्सां के दुश्मन समाजों की दुनियाँ,
यह दौलत के भूखे रिवाजों की दुनियाँ
यह दुनियाँ अगर मिल भी जाए तो क्या है।
यह दुनियाँ जहाँ आदमी कुछ भी नहीं है
वफा कुछ नहीं, दोस्ती कुछ नहीं है
जहाँ प्यार की कद्र कुछ नहीं है
--- --- ---
जलादो इसे, फूंक डालो यह दुनियाँ
मेरे सामने से हटा लो यह दुनियाँ।[१]

पंचवर्षीय योजनाओं के सहारे राष्ट्रीय सरकार ने गरीबी को समूल नाश करने का बीडा उठाया। नेताओं ने चिल्लाना शुरु कर दिया कि गरीबी मिट रही है, देश समृद्ध हो रहा है, अब वह दिन निकट आने वाला है जब इस देश में कोई भी व्यक्ति गरीब न होगा और न दुःखी।

नेताओं के कोरे आश्वासनों तथा आदर्शवादी व्याख्यानों से आहत निराश फिल्मी गीतकारों ने भारत की यथार्थ तस्वीर जनता के सामने प्रस्तुत की ---

ये कूंचे ये नीलाम घर दिलकशी के
ये लुटते हुए कारवाँ जिन्दगी के, कहाँ है, कहाँ है, मुहाफिज खुदा के।
जिन्हें नाज़ है हिन्द पर कहाँ है, कहाँ हैं, कहाँ है?
---- ---- ----- -----
यह मचली हुई अधखिली जर्द कलियाँ,
यह बिकती हुई खोखली रंगरलियाँ।

१- फिल्म - प्यासा - गीतकार - साहिर

-+++-　　-+++-　　-+++-

यह फूलों के गजरे , यह पीकों के छींटे

-----　　----　　-----

जरा मुल्क के रहबरों को बुला ओ ,
यह कूचे यह गलियां, यह मंजर दिखाओ ,
जिन्हें नाज है हिन्द पर उनको लाओ ।[१]

ऐसी दुनियाँ से व्यक्ति एवम् समाज को निराशा है, पर कवि के हृदय में आशा की किरण फूट रही है कि प्रजातंत्र और समाजवाद के इस युग में उनके देश में वे परिस्थितियाँ इतनी शीघ्रता से बन रही है कि जिनके पीछे स्वर्णिम विहान आने वाला है --

रात भर का मेहमां अंधेरा
किसके रोके रुका है सवेरा ।

---　　----　　----

अब उखड़ने को है गम का डेरा ,
किसके रोके है रुका है सवेरा ।[२]

आने वाली नई सुबह के स्वरूप का चित्रण फिल्मी गीतकार `साहिर` ने निम्न शब्दों में किया है , इस नई सुबह में दुख के बादल नहीं होंगे , सुख का सागर छलकेगा, धरती गा उठेगी, और आकाश झूमेगा । ना कोई अमीर और न ही गरीब, और ना ही अत्याचार का बोलबाला होगा। ना कोई भूखा और ना नंगा। इस प्रकार यह नई सुबह दुनियाँ में स्वर्ग बनायेगी --

---

१- फिल्म - प्यासा　　गीतकार - साहिर
२- फिल्म- सोने की चिड़िया　　,, - साहिर

वह सुबह कभी तो आयेगी
इन काली सदियों के सर पर जब रात का आंचल ढलकेगा
जब दुख के बादल पिघलेंगे, जब सुख का सागर छलकेगा
जब अम्बर झूम के नाचेगा, जब धरती नग्में गायेगी
-- -- -- -- --
जब धरती करवट बदलेगी, जब कैद से कैदी छूटेंगे
---- ---- ----
वह सुबह को हम ही लायेंगे, वह सुबह हमी से आयेगी
जेलों के बिना जब दुनिया की सरकारें चलायेंगी
वह सुबह तो आयेगी ।[१]

इसी प्रकार के भाव फिल्म 'राजा और रंक', 'राम और श्याम', 'अब दिल्ली दूर नहीं', 'बूट पालिश' आदि फिल्मों में मिलते हैं ।

हिन्दी फिल्मी गीतों में विषमता और निर्धनता के अतिरिक्त व्यक्तिगत ऊंच-नीच और छुआ - छूत की भावना का चित्रण भी मिलता है ---

१- राम के मन्दिर में जा सकता चूहा बिल्ली कौवा
पर सीढी भी ना छू सकता ये इन्सान का छौवा
---- ---- ----
हम भी तो इन्सान वंश की सन्तान
फिर हम से रखते छुआछूत क्यों
तुम पवित्र हम अछूत क्यों ।[२]

१- फिल्म - फिर सुबह होगी गीतकार- साहिर
२- फिल्म - फैसनेबिल वाइफ ,, - पं० भरतव्यास

२- बच्चे कुछ इन्सान ब्राह्मण क्यों है ?
कुछ इन्सान हरिजन क्यों हैं ?
एक की इतनी इज्जत क्यों है ?
एक की इतनी जिल्लत क्यों है ?

अध्यापक:

इन्सानों का यह बंटवारा जहालत है
जो नफरत की शिक्षा दें,
वह धर्म नहीं लानत है
जन्म से कोई नीच नहीं है
जन्म से कोई महान् नहीं
कर्म से बढकर कोई नहीं मनुष्य को,यह पहचान नहीं ।[१]

३- कौन बडा है कौन है छोटा ऊंचा कौन और नीचा कौन
प्रेम के जल से सबको सींचा
यह है प्रभु का बगीचा.....
बडे प्यार से मिलना सबसे दुनिया में इन्सान रे ।[२]

नारी की दुर्दशा का चित्रण भी हिन्दी फिल्मी गीतों में हुआ है । नर और नारी समाज के दो अंग है, दोनों के सहयोग से समाज, देश को सुख समृद्धि तथा उन्नति के शिखर पर पहुँचने में देर नहीं लगती। भारतीय समाज में नारी का ना तो स्वस्थ स्वरूप सामने आ सका और ना अधिक गौरवान्वित पद प्राप्त हो सका। कहने का तात्पर्य नारी युगों से उपेक्षित रही है।वह पुरुष के हाथों की कठपुतली रही है। जिसनेजब जी चाहा मसला,कुचला और जब जी चाहा दुत्कारा,कोठों पर नचवाया। फिल्मी गीतों में भारतीय नारी की इस स्थिति का बडा ही यथार्थ और मार्मिक वर्णन हुआ है --

---

१- फिल्म - दीदी गीतकार - साहिर
२- फिल्म - सती अनसुया गीतकार- पं०भरतव्यास

औरत ने जनम दिया मर्दों को, मर्दों ने उसे बाजार दिया
जब जी चाहा मसला,कुचला, जब जी चाहा दुलार किया

--- ---- ---- ---

नंगी नचवाई जाती है, अय्याशों के दरबारों में

--- --- ---- ----

औरत संसार की किस्मत है, फिर भी तकदीर की हेटी,

---- --- --- ---

यह वह बदकिस्मत मां है जो बेटों की सेज पर लेटी है ।[१]

नारी सुभाव से कोमल है, दया और क्षमा की मूर्ति है, स्नेह का सागर है, गंगा सी निर्मल और पवित्र है । दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि वह देवी है । पं० भरत व्यास ने नारी के इसी रूप का चित्रण फिल्म -`सहारा` में किया है --

हर दुखड़ा सहने वाली, मुँह से न कुछ कहने वाली
त्याग और सेवा में जो दुनियां से न्यारी है
धरती सी धीरज वाली ,ये भारत की नारी है ।[२]

भारतीय नारी जीवन का दूसरा करुण चित्र है उसका वैधव्य जीवन और उसका अनमेल विवाह। इस पर भी हिन्दी फिल्मी गीतकारों ने अपनी कलम चलाई है ---

भारत की विधवा दुखियारी ।
सासु, देवर, जेठ ,धिक्कारे
हर एक काली डायन पुकारे
माता पिता भी ठोकर मारें
विपत्ति पड़ी दुखियां पर भारी
भारत की विधवा दुखियारी ।[३]

१- फिल्म - साधना गीतकार- साहिर
२- फिल्म - सहारा गीतकार - पं० भरतव्यास
३- फिल्म - अबला गीतकार- राजेन्द्र कृष्ण

अनमेल विवाह का एक कारुणिक एवम् दयनीय चित्र निम्न पंक्तियों में प्रस्तुत है --

साठ का दूल्हा देखो जी साठ का दूल्हा
सोलह की दुल्हनियाँ हो, बारह की दुल्हनियाँ
हो चौदह की दुल्हनियाँ
कैसी दिवानी ये दुनियाँ ये दुनियाँ ।[१]

भारतीय नारी का जीवन त्याग की कहानी है। उसका सबसे बड़ा बलिदान यह है कि वह अपना घरबार छोड़कर और मां-बाप से बिछुड़कर अपरिचित व्यक्ति के हाथों अपनी जीवन नौका सौंप देती है । हमारे समाज में धन लोलुपों की कमी नहीं है । सौदाबाजी होती है । इस दहेज प्रथा के दोष किससे छुपे हैं। ससुराल में जाकर लड़की को ताने सुनना पड़ते है । लड़की का जीवन दूभर हो जाता है । हिन्दी फिल्म निर्माताओं एवम् गीतकारों ने नारी जीवन के इन करुण और मर्मस्पर्शी चित्रों को अंकित करके हमारे पलकों को नम करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है -- उदाहरण के लिए निम्न पंक्तिया प्रस्तुत है :-

धन से बांधे प्रीति का बन्धन यह काहे की प्रीत ।
रूप न देखे दौलत देखे यही जगत की रीति ।।
सजी सजाई दुलहन रह गयी बाबुल नीर बहाये ,
ओ दुनियां! बोलो कैसा दूलहा रे ।[१]

जो स्थिति नारी की कल थी वह आज नहीं है । नये युग के साथ नारी की परिस्थितियां भी बदली। अंग्रेजी शिक्षा दीक्षा के वातावरण मे पले आज के नव-युवकों को पढी लिखी लडकिया चाहिये । बी०ए० और एम०ए० की डिग्रियां प्राप्त लडकियों को बहू के रुप में पाकर उनके बूढ़े सास-ससुर `मेमसाहब` कहकर अपनी खीझ व्यक्त करते है। दूसरे ओर अशिक्षित और अनपढ लडकियों को पाकर हमारे नवयुवक उन्हें `इल्ट्रेड` और `स्टूपिड` कहकर अपने सुनहरे अरमानों पर तुषारापात करते है--

---

१- फिल्म - जिन्दगी के मेले गीतकार- पं० भरतव्यास

अजी हम भारत की नारी हैं सबसे न्यारी
जायें किस्मत पे बलिहारी.... अजी हम

--- --- ---

यह पढ़ी लिखी तितलिया क्या कभी करेंगी चक्की चूल्हा

---- ---- ----

अनपढ़ पत्नी को देख करते ऐसा स्वागत पति देव
ओ यूं फूल , स्टू पिड, इडीयट , इ लर्टेड ।[१]

परन्तु आज की परिस्थितियों को देखते हुए इस छन्द के उस पार खडी भारतीय नारी की जो भविष्य की तस्वीर हमे दीख रही है , उसमें वह पश्चिमी ढंग की शिक्षा ले रही है, योग्यता में पुरुष की बराबरी कर रही है , और उसके सदियों के शासन को उतारकर फेंकती हुई अपने समान अधिकारों की उसमें मांग कररही है । --

ऐ जी ! अकड़ो ना हमसे पिया हमने भी बी०ए०पास किया
जंपिंग, फैसिंग, सिंगिंग, रैक्टिंग, पेन्टिंग ,राइडिंग,स्इमिंग,
हर खेल में नाम पाती रही, कालिज की शोहरत बढ़ाती रही।[२]

नारी घूंघट के बन्धन को तोड़कर और घर की चहारदीवारी से बाहर निकल कर डाक्टर, बन रही है ,सेना में भर्ती हो रही है,वकालत कर रही है,न्यायधीश बनकर न्याय दे रही है ,इन्जीनियर बन रही है तथा राजनीति मे भाग लेते हुए मुख्य मंत्री,प्रधानमन्त्री और गवंनर के रूप में कार्य कर रही है । उसके सामने पुरुष पानी भरता नजर आ रहा है, पुरुष नारी की इच्छा का गुलाम बन रहा है --

नारी का होगा राज आज से पुरुष भरेगा पानी
बदल जायेगी दुनिया सारी होगी नई कहानी
मुख से घूंघट पट हट जाये,पनघट की खट पट न सुहाए
नारी अब न रहेगी दासी, होगी जग की रानी।[३]

१- फिल्म-मि०सम्पत गीतकार- पं० राजेन्द्रकृष्ण
२- फिल्म-अभिमान ,, - मजरुह सुल्तानपुरी
३- फिल्म -मि०सम्पत ,, - राजेन्द्र कृष्ण

अंग्रेज भारत से चले गये परन्तु अंग्रेजी फैशन छोड़ गये और इस फैशन से नारी अधिक प्रभावित हुई। ऊँची एडी, बिखरे बाल, लचकी चाल, बैल-बाटम, आँखों पर काला चश्मा, मुँह पर सिगरेट ओठों पर लाली, बालों में जाली, डान्स और रोमान्स। यह है आज की फैशनेबिल लेडी का स्वरूप जिसके पीछे दौड़ रहा है आज के नवयुवकों का ग्रुप। आज हमारी बालिकाओं को नये जमाने की अल्ट्रा माडर्न तस्वीर नहीं बनना है उनपर बड़ी जिम्मेदारियां हैं।

नई उमर की कलियाँ, तुमको देख रही दुनिया सारी
तुम पे बड़ी जिम्मेदारी।
घर-घर को तुम स्वर्ग बनाना, हर आंगन को फुलवारी -
तुम उस देश में जनमी हो, जिस देश में
जनमी थी सीता
तुम उस देश की कन्या हो जिस देश मे गूँज रही गीता
कभी भूलकर भी न लगाना जीवन में तुम चिनगारी
तुम पे बड़ी जिम्मेदारी।

--- --- ---

देखो कहीं भटक मत जाना झूठे हास विलासों में
सावधान रहना बहिनों, आ रही तुम्हारी ही बारी।[१]

नारी के आन्तरिक गुण एवम् उसमें छिपी शक्ति सामर्थ्य को हमारी संस्कृति ने पहले से पहचाना है इसलिए हमारे यहाँ प्राचीनकाल में समाज में नारियों का बड़ा सम्माननीय स्थान रहा है।

'यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमते तत्र देवता,'

मनु की यह घोषणा किसने नहीं सुनी? हमारे कवियों ने नारी के बाह्य सौन्दर्य का चित्रण तो किया ही है पर उनकी दृष्टि उसके आन्तरिक गुणों पर भी गयी है और उनपर वे सौ-सौ तरह से मुग्ध

१- फिल्म - तलाक - गीतकार - पं० प्रदीप

हुए है। फिल्मी गीतों में भी भारतीय नारी के इन गुणों और शक्ति-सामर्थ्य का अनेक स्थलों पर वर्णन हुआ है। --

'ओ नारी अपनी शक्ति को पहचान
चीख पुकार रही है, धरती, गरज रहा आसमान
--- --- ---
सतवन्ती सीता, गायत्री गीता, सावित्री की सन्तान।
लक्ष्मी का रुप पालन करे, तू बनके सरस्वती ज्ञान दे
दुर्गा के रुप में रक्षा करे, तू शक्ति भरा वरदान दे
पत्नी के रुप में सेवा करे, तू पी के चरण पर शीश दे
मां बनकर जग का सर्जन करे, तू बनके बहन आशीषा दे
लाखों स्वरूप, हजारों ये रुप कोटि गुणों की तू खान
ओ नारी अपनी शक्ति को पहचान।[१]

हिन्दी चलचित्र गीतों में हिन्दु मुसलमानों के साम्प्रदायिक दंगों तथा उनके कारण देश और उसने जन-धन की हुई अपार क्षति का बड़ा करुण और मार्मिक वर्णन मिलता है। सम्प्रदायिक दंगों में भाई-भाई को लड़ते झगड़ते और खून बहाते देखकर कवि प्रदीप का हृदय द्रवीभूत हो उठता है :---

आज के इन्सान को यह क्या हो गया
इसका पुराना प्यार कहां पर खो गया।
---- ---- ----
आज दुखी है जनता सारी रोते है लाखों नर-नारी
रोते है आंगन गलियारे रोते है आज मुहल्ले सारे
रोती सलमा, रोती सीता रोते है कुरान और गीता
आज हिमालय चिल्लाता कहां पुराना वह नाता है
डस लिया देश को इन जहरीले नागों ने
घर को लगा दी आग घर के चिरागों ने।[२]

१- फिल्म- पतिता — गीतकार- प० भरतव्यास
२- फिल्म - अमर रहे ये प्यार — गीतकार - प० प्रदीप

संसार में मानवता और भाई चारे के गीत गाये जाते है। हिन्दू मुसलमान के आपसी झगडों में इंसान की दुर्दशा है । स्वार्थ के कारण मनुष्य आज कितना बदल गया है, आपसी मेल प्यार को वह भूल गया है ---

देख तेरे संसार की हालत क्या हो गयी भगवान
कितना बदल गया इन्सान
आया समय बडा बेढंगा आज आदमी बना लफंगा
कहीं पर झगडा कहीं पर दंगा नाच रहा नर होकर नंगा
छल और कपट के हाथों बेच रहा ईमान ।[१]

हिन्दी चलचित्र गीतों में हिन्दु मुसलमानों के इन सम्प्रदायिक दंगों और तद्जन्य सामाजिक दुर्दशा के अतिरिक्त दोनों जातियों की एकता भाई चारे तथा मेल जोल की प्रेरणा देने वाले गीत भी पुरानी फिल्मों में लिखे गये । इस सन्दर्भ में कुछ उदाहरण प्रस्तुत है ---

१- हिन्दू मुसलिम सिक्ख ईसाई आपस में है भाई-भाई
भारत मां की गोद में पले आजादी के सब शैदाई ।[२]

२- भारत मां के लाडलों में होवे ना कोई लडाई
इस राम भरत के देश में झगडे ना भाई- भाई ।[३]

इसी प्रकार के गीत शान्ताराम की 'पड़ोसी', बी०आर० चोपडा की 'धरम पुत्र', 'धूल का फूल', आदि फिल्मों में मिलते है जिनमें एकता का स्वर गूंजता हुआ दिखलाई पडता है ।

१- फिल्म - नास्तिक गीतकार- पं० प्रदीप
२- फिल्म - भाई गीतकार गुलाम हैदर
३- फिल्म - तीन भाई गीतकार पं० भरतव्यास

हिन्दी फिल्मी गीतों में विलासता की सामग्री मात्र नहीं है बल्कि उसमें हमें बीसवीं सदी अपने यथार्थ रूप में खड़ी सी दिखलाई पड़ती है। जहाँ एक ओर मजदूर क्रान्ति ,बड़ी बड़ी मशीनें, और मिलें, शिक्षा का अधिकाधिक प्रसार और धर्म तथा जातियों की एकता का स्वर दिया है तो दूसरी ओर कुछ ऐसी समस्यायें लाकर खड़ी की है -- कि उनसे हर आदमी परेशान है। जैसे - चीजों पर कन्ट्रोल, दूध में पानी की मिलावट , महंगाई, रहने के लिए मकान, स्कूल - कालेज और हास्पिटल में एडमीशन, बढ़ती हुई आवादी, नसबन्दी और बेकारी वर्तमान प्रमुख समस्यायें है, जिन्होंने फिल्मी गीतों के क्षेत्र को भी अछूता नहीं छोड़ा। इस सन्दर्भ में कतिपय फिल्मी गीतों की पंक्तियां अवलोकनीय है जिनमें इन समस्याओं का वर्णन हिन्दी फिल्मी गीतकारों ने सफलता पूर्वक किया है ---

१- दिन कन्ट्रोल के आए, कैसे घर को चलायें ।

--- --- ---

तीन आने में मिल जाती थी तीन सेर तरकारी,
अब तो तीन रुपये में भी रहती डलिया खाली ।[१]

२- महगाई मार गई
गरीब को तो बच्चे की पढ़ाई मार गयी
बेटी की शादी और सगाई मार गई
किसी को तो रोटी की कमाई मार गई
कपड़े की किसी को सिलाई मार गई ।[२]

३- हाउस फुल , जगह नहीं
ट्राम बस और ट्रेन में कन्डक्टर कहता जगह नहीं

---- ---- ----

हम तो नरक चले जाये पर ईश्वर कहता जगह नहीं ।

१- फिल्म मि० सम्पत गीतकार- राजेन्द्रकृष्ण
२- फिल्म- रोटी कपड़ा और मकान ,,- इन्दीवर
३- फिल्म- मि० सम्पत ,,- राजेन्द्रकृष्ण

४- अब एक जनम की चक्की रे संसार चलाने वाले ।
अकाल पडा है रोटी का और दुनियां बढती जाये ।[१]

५- कुछ लोग भी ऐसे होते है जो अपनी गलती पर रोते है
अपना तो पेट नहीं भरता पर दस-दस बच्चे होते है
हर साल कलेन्डर छाप दिया परिवार नियोजन साफ किया ।[२]

बीसवीं शदी के जीवन का सर्वाधिक यथार्थ एवम् व्यंग पूर्ण चित्रण `मि० सम्पत` के इस गीत में देखिये, जिसमें तत्कालीन समाज पर एक प्रहार है --

ये है स्वदेशी- भक्त इनकी शान देखिये ,
खद्दर के नीचे रेशमी बनियान देखिये ।
ओ सेठ जी, क्या होगया , कैसे उदास हैं
दिवालिये है आप , पर पैसे तो पास है।
यह वैध जी सब रोग एक पुडिया से भगाते ,
बढती हुई आवादी को दुनिया से उठाते ।
तावीज दे के सबको बनाते हो तुम अमीर
ए भाई ! क्यो तुम बनाते नहीं अपनी तकदीर।
परवाह नहीं, यह क्लास में नापास हो गये ,
सिगरेट पीने में तो ये उस्ताद हो गये ।
किसने कहा "प्रोहिबिशन" नाकामयाब है,
कुप्पी है गंगा जल की, पर अन्दर शराब है ।[३]

१- फिल्म - मदर इण्डिया गीतकार - शकील
२- फिल्म - यादगार गीतकार - वर्मा मालिक
३- फिल्म - मि०सम्पत गीतकार - राजेन्द्रकृष्ण

बढते हुए फैशन पर एक करारा व्यंग्य गीतकार शैलेन्द्र ने निम्न पंक्तियों में अत्यन्त सुन्दर ढंग से किया है --

ए फैशन का साल
फैशन बढेंगे , कपडे घटेंगे ,
मालिक ही जाने कितने रहेंगे
--- -----
जुल्फें बढाओ, नाखुन बढाओ
चेहरे पर नकली चेहरा चढाओ
दुनियां साबुन तेल
नाइन्टीन- फिफ्टीनाइन ।[१]

'सोशलिस्टिक पैटर्न आफ सोसाइटी' लाने का हमारी सरकार का निरन्तर प्रयास रहा है ।-- समाज में छोटे बडे का भेदभाव, अमीरी गरिबी का भेदभाव न रहकर सबको जीने का समान अधिकार हो, तथा सबमें भाई चारे की भावना हो। जब यह भेद भाव समाप्त हो जायेगा तो देश का समाजवादी ढांचा भी सुधर जायेगा । देश में समाजवाद की स्थापना का यह सुखद स्वप्न है, - जो हिन्दी चित्रपट के अनेक गीतों मे चित्रित किया गया है --

१- इन्सान का इन्सान से हो भाई चारा, यही पैगाम हमारा ।
संसार भर में गूंजे प्यार का इकतारा, यही पैगाम हमारा
नये जगत में हुआ पुराना ऊंच - नीच का किस्सा
सबको मिले मेहनत के मुताबिक अपना अपना हिस्सा
सबके लिए सुख का बराबर हो बटवारा यही पैगाम
हर एक महल से कहो कि झोपडियों में दिये जलाये ।[२]

१- फिल्म - अनाडी गीतकार- शैलेन्द्र
२- फिल्म - पैगाम गीतकार- राजेन्द्र कृष्ण

२- आई है बहारें, मिटे जुल्म- सितम प्यार का जमाना आया
दूर हुए गम , -- -- --
अब न कोई भूखा होगा और न कोई प्यासा
अब न कोई नौकर होगा और न कोई चाकर ।[१]

हिन्दी चलचित्र गीतों में देश के नव निर्माण के लिए जनता को कर्मठ स्वम् स्वालम्बी बनने का सन्देश भी मिलता है ---

१- आराम है हराम
भारत के नौजवानों, आजादी के दीवानो
तुम देश के कोने कोने में पहुँचा दो यह पैगाम
आराम है हराम।[२]

२- ये हाथ अपनी दौलत है ये हाथ अपनी ताकत है
कुछ और तो पूंजी पास नहीं ये हाथ ही अपनी किस्मत है ।
हम मेहनत करते आये है, हम मेहनत करते जायेंगे
जब तक ये हाथ सलामत है क्यों दान के टुकडे खायेंगे ।[३]

इस प्रकार देखते है कि सामाजिक गीतो के माध्यम से हिन्दी फिल्म कारों ने देश की विभिन्न समस्याओं का चित्रण करके जन-मानस के हृदय में कर्मठता का सन्देश दिया है ।

अन्य विषयों से सम्बन्धित गीत:-

हिन्दी चित्रपट के गीत संख्या में असंख्य है वैसे ही उनके विषय भी अनन्त है उनमें प्रेम धर्म,भक्ति,राष्ट्रीयता,समाज आदि विषयों का चित्रण

१- फिल्म- राम और श्याम गीतकार - शकील
२- फिल्म- आराम है हराम गीतकार - प्रेम धवन
३- फिल्म- अपना घर गीतकार - प्रेमधवन

हुआ है इनके अतिरिक्त कुछ अन्य विषयों से सम्बन्धित गीत मिलते हैं जो उल्लेखनीय हैं --- लोरी, प्रभाती, कजरी, बन्ना- बन्नी, उत्सव और पर्व से सम्बन्धित लोक गीत इनमें प्रमुख हैं ---

क- लोरीगीत:-

ये गीत बच्चों को सुलाते समय गाये जाते है इन गीतों में कहीं-कहीं छोटी छोटी कहानियाँ भी होती है जो लोक कथाओं पर आधृत होती है। लोरीगीतों के कुछ उदाहरण प्रस्तुत है जो हिन्दी फिल्मों में मिलते हैं --

१- मै गाऊँ तू सो जा ।[१]

२- मैं गाऊँ तू सो जा
सुख सपनों में खो जा । [२]

३-अ- आज कल में ढल गया दिन हुआ तमाम
तू भी सो जा मै भी सो जाऊँ है रंग भरीशाम ।[३]

आ- सो जा, सो जा, सोजा, राज कुमारी
सो जा मै बलिहारी सो जा, मीठे सपने आये ।[३]

ख- प्रभाती:-

ये गीत सुबह के समय गाये जाते है इस प्रकार के गीत हिन्दी फिल्मों में भी मिलते हैं --

जागो ! जागो ! मोहन प्यारे ।[४]

१- फिल्म- दो आँखें बारह हाथ गीतकार- पं०भरतव्यास
२- फिल्म - ब्रह्मचारी ,, शैलेन्द्र
३-अ,फिल्म - ~~फिल्मफ~~ बेटी बेटे ,, शैलेन्द्र
आ,फिल्म - जिन्दगी ,, शैलेन्द्र
४- फिल्म - जागते रहो ,, ,,

ग- कजरी:-

सावन के महीने में गाये जाने वाले लोक धुन पर आधारित गीत कजरी कहलाते है । फिल्म- 'प्यार की प्यास', जुनून ,गोदान, आदि फिल्मों में कजरी गीत के उदाहरण देखे जा सकते है --

१- सावन के झूले पडे सइंया जी हमें क्यों भूले पडे।[१]

२- सावन की आई बहार रे ।[२]

३- पियरा के पतवा सरीखे डोले मनवा
कि हियरा में उठत हिलोर
बरे पुरवा के ताकवां मे लाओ रे सन्देशवा
--- ---- ---
उमड- घुमड जब गरजे बदरिया रे
ठुमक ठुमक नाचे रे मोर पुरवा के झोकवा मे ।[३]

घ- बन्ना-बन्नी:-

विवाह के अवसर पर वर पक्ष वाले अपने वर की प्रसंसा तथा कन्या पक्ष वाले अपनी कन्या की प्रशंसा बन्ना-बन्नी के रुप में गाकर करते है । हिन्दी फिल्मी गीतों में ये बन्ना- बन्नी के गीत मिलते है । कुछ उदाहरण प्रस्तुत है --

१- मेरे बन्ने की बात ना पूछो मेरे बन्ना हरयाला है ।[४]

२- मेरे भइया है मक्खन भाभी है मलाई ।[५]

१- फिल्म- प्यार की प्यार गीतकार- पं० भरतव्यास
२- फिल्म- जुनून गीतकार- योगेश
३- फिल्म- गोदान गीतकार- अन्जान
४- फिल्म- घराना गीतकार- शकील
५- फिल्म -तपस्या गीतकार- आनन्दबक्शी

उत्सव एवम् पर्व से सम्बन्धित गीत:-

हिन्दी फिल्मी गीतों में उत्सव एवम् पर्व से सम्बन्धित गीतों की भरमार है जिनमें होली, रक्षाबन्धन करवा चौथ, भइया दूज से सम्बन्धित गीत उल्लेखनीय है।

इन गीतों के अतिरिक्त कुछ ऐसे स्वतन्त्र और सामान्य से सामान्य लोक-जीवन से गृहीत विषयों पर भी फिल्मी गाने रचे गये है, जिनके पीछे केवल मनोरन्जन का भाव है। फिल्म दृश्य-श्रव्यकला है, अत: उसमें न तो ऐसे गानों के अभाव की ही आशा हमें करनी चाहिये और न मनोरन्जन से अधिक उनकी कुछ उपयोगिता ही समझनी चाहिये। इस प्रकार के गानों में लखनऊ की रेवडी, बम्बई की चौपाटी की चाट, तेल मालिश और बूट पालिस से लेकर बादलों से खेलती पतंग, हसीनों की ब्यूटी बढाने वाला मंजन, चेहरे को चमकाने वाले नाई, अलबेले तांगे वाले, और रिक्शे वाले तक का वर्णन हुआ है।

हिन्दी फिल्मों में कव्वाली, गजल, मुजरे आदि का भी प्रयोग हुआ है। हिन्दी फिल्मों में प्रयुक्त कव्वालियों में 'धर्म', 'पुतली-बाई', 'साधना' 'बरसात की रात' 'चौदहवीं का चाँद', 'जंजीर' 'निकाह', 'जीनत', 'मुगले आजम' 'नूर महल', 'काला समुन्दर', आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

मुजरा का भी प्रयोग फिल्मी गीतकारों ने फिल्म के दृश्य के अनुसार प्रयोग किया है। मुजरा गीतों के सन्दर्भ में 'शराफत', प्रभात, साधना, रेशमकी डोरी, कच्चे धागे, दस नम्बरी, आदि - फिल्में विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

इस प्रकार देखते हैं कि हिन्दी चलचित्र गीत विधायों की विविधता की दृष्टि से भी सुन्दर बन पड़े हैं। इन गीतों में जहां एक ओर मनोरन्जन की प्रवृति देखने को मिलती है तो दूसरी ओर जनमानस को कुछ शिक्षा देने की भी राष्ट्रीय गीत इस सन्दर्भ में विशेष रूप से उल्लेखनीय

कहे जा सकते हैं ।

ख- गायन की दृष्टि से फिल्मी गीतों का वर्गीकरण :-

गायन की दृष्टि से हिन्दी फिल्मी गीतों का विभाजन निम्न रूपों में किया जा सकता है --

१- एक पात्र द्वारा गाये गये गीत
२- दो पात्रों द्वारा मिलकर गाये गये गीत
३- समूह गान के रूप में गाये गये गीत ।

पहले प्रकार के गीतों का हिन्दी फिल्मों में सर्वाधिक प्रयोग हुआ है । ये एकल गीत महिला या पुरुष द्वारा हिन्दी चलचित्र गीतों में गाये गये हैं । जैसे --

१- क) भूली हुई यादों मुझे इतना न सताओ
अब चैन से रहने दो मेरे पास न आओ ।[1]

२- सौ बार जनम लेंगे सौ बार फना होंगे
ऐ जाने वफा फिर भी हम तुम न जुदा होंगे ।[2]

१-ख) आज है प्यार का फैसला ऐ सनम
आज मेरा मुकद्दर बदल जायेगा ।[1]

२- संसार से भागे फिरते हो भगवान को तुम क्या पाओगे। इस लोक को भी अपना न सके उस लोक को तुम क्या पाओगे ।[2]

३- रात और दिन दिया जले,मेरे मन में फिर भी अंधियारा है
जाने कहाँ है वो साथी तु जो मिले जीवन उजियारा है ।[3]

१- क)।-फिल्म - सन्जोग गीतकार - राजेन्द्र कृष्ण,गायक-मुकेश
।।-फिल्म - उस्तादों के उस्ताद- गीत० असद भोपाली, गायक-मुहम्मद रफी
२-ख)।-फिल्म - सन आफ इण्डिया- गीत० शकील,गायिका-लता
।।- फिल्म - चित्रलेखा - गीतकार - साहिर- गायिका लता
।।।- फिल्म - मिसइण्डिया -गीतकार- शैलेन्द्र-गायिका- लता

दूसरे प्रकार के गीतों में दो स्वर (महिला एवं पुरुष) होते हैं। दो स्वरों में गाये गये गीत हिन्दी फिल्मों में बहुत मिलते हैं। इन गीतों को द्वय गीत कहते हैं। यथा-

१- किशोर - जिसे यार का सच्चा प्यार मिले
उसे सारे जहाँ की दौलत क्या
सुलक्षणा- तेरी आंखों में चमके प्यार अगर
औरों की मुफको जरूरत क्या ।[१]

२- महेन्द्र- अरे जाना है तो जाओ
जाओ मनायेंगे नहीं
नखरे किसी के उठायेंगे नहीं
लता :- आना हो तो आओ बुलायेंगे नहीं
कदमों को सर पर फुकायेंगे नहीं।[२]

कभी कभी द्वय गीत दो पुरुष स्वर अथवा दो महिला स्वर में भी गाये जाते है। यथा-

१- ना मै धन चाहूँ ना रतन चाहूँ
तेरे चरणों की धूल मिल जाये
तो मैं तर जाऊँ, श्यामतर जाऊँ, राम तर जाऊँ ।[३]

२- ये दो दीवाने दिल के, चले है दूलहा बन के, चले है चले है ससुराल ।[४]

तीसरे प्रकार के वे गीत है जिन्हें कई स्वर में मिलकर गाया जाता है, ऐसे गीतों को कोरस अथवा, समूह गान कहते है इस प्रकार के गीत भी हिन्दी फिल्मों में मिलते हैं। ऐसे गीतों का प्रयोग होली, कव्वाली, गाये जाते समय किया जाता है। यथा--

---

१- फिल्म - बन्दी गीतकार इन्दीवर - गायक- किशोर और सुलक्षणापंडित
२- फिल्म- बन्धन - गीतकार- इन्दीवर, गायक- महेन्द्र कपूर -लता
३- फिल्म- कालाबाजार, ,,- शैलेन्द्र - गायक-सुधा मल्होत्रा-गीतादत्त
४- फिल्म- गोवा गीतकार- इन्दीवर- गायक- रफी- मन्नाडे

१- होली आई रे कन्हाई,रंग भरदे सुना दे मोहिं बांसुरी ।[१]

२- तेरी महफिल में किस्मत अजमाकर हम भी देखेंगे ।[२]

३- अल्ला बचायें, इन नौ जवानों से ।[३]

४- सारे जहां से अच्छा ये हिन्दुस्तान हमारा ।[४]

५- ऐ मालिक तेरे बन्दे हम ।[५]

६- देवा ओ देवा गणपति देवा ।[६]

७- ओ मैं तो आरती उतारु रे ।[७]

८- मेरे देश की धरती सोना उगले उगले हीरामोती ।[८]

९- देश का प्यारा सबका सहारा कौन बनेगा हम दीदी ।[९]

१०- हम मतवाले पालिस वाले कब से बैठे आस लगाये ।[१०]

हिन्दी फिल्मों में तीन प्रकार के गायन होली के अतिरिक्त कुछ ऐसे गीतों का भी उपयोग हुआ है जिनमें सम्वादों का पुट है । ऐसे सम्वादात्मक पुट वाले गीतों को सम्वाद गीत नाम से अभिहित किया जा सकता है । इस सन्दर्भ में कतिपय सम्वाद गीतों के उदाहरण ,द्रष्टव्य हैं--

---

१- फिल्म - मदरइण्डिया - गीतकार- शकील,गायिका-शमशादबेगम,साथी
२- फिल्म - मुगले आजम ,, ,, ,, लता और साथी
३- फिल्म - मेरे महबूब ,, साहिर ,, लता और साथी
४- फिल्म- अपना घर ,, डा०इकबाल,, आशा और साथी
५- फिल्म -दोआंखे और बारहहाथ,,पं०भरतव्यास,, मन्नाडे और साथी
६- फिल्म -तुमसे बढ़कर कौन गीतकार- अन्जान ,, मु०अजीज और साथी
७- फिल्म - सन्तोषी मां ,, प्रदीप ,, लता- और साथी
८- फिल्म - उपकार ,, गुलशन बावरा,, महेन्द्रकपूर और साथी
९- फिल्म - मासूम ,, शैलेन्द्र ,, आशा और साथी
१०-फिल्म - बूट पालिस ,, शैलेन्द्र ,, सामूह गान ।

१- पुरुष- बोल गोरी बोल तेरा कौन पिया

स्त्री- तू ना जाने उसका नाम, हर सुबह हर शाम
दुनियाँ ने उसी का नाम लिया
बोल तू ही बोल मेरा कौन पिया ।[१]

२- पुरुष- नन्हें - मुन्नें बच्चे तेरी मुट्ठी में क्या है ?

बालस्वर - मुट्ठी में है तकदीर हमारी हमने उसको वश में किया है।[२]

३-महिला- प्यारे बच्चे कौन हो तुम ?

बालस्वर- हम भारत की सन्तान
भारत माता के चरणों में रखदे दिल और जान ।[३]

इन गीतों के अतिरिक्त शीर्षांक गीत भी हिन्दी फिल्मों में देखने को मिलते है --

१- निर्बल से लड़ाई बलवान की
ये कहानी है 'दिया और तूफान' की ।[४]

२- 'गंगा तेरा पानी अमृत' झर-झर नीर बहाये ।[५]

३- हम उस देश के वासी है 'जिस देश में गंगा बहती है'।[६]

१- फिल्म - मिलन गीतकार - आनन्दबक्शी
२- फिल्म - बूट पालिश ,, शैलेन्द्र
३- फिल्म - मासूम ,, ,,
४- फिल्म - तूफान और दिया ,, पं० भरतव्यास
५- फिल्म - गंगा तेरा पानी अमृत,, आनन्द बक्शी
६- फिल्म - जिस देश में गंगा बहती है,, शैलेन्द्र

निष्कर्ष :- रूप में कहा जा सकता है कि हिन्दी चलचित्र गीत जैसे संख्या में असंख्य हैं वैसे ही उनका विषय क्षेत्र भी असीमित है। उनमें जीवन के न जाने कितने पहलुओं का चित्रण हुआ है और हृदय की न जाने कितनी मूक भावनाओं को वाणी से साकार किया गया है। कभी मचलते यौवन के उन्मद प्रेम से वे लिखे गये हैं तो कभी उनमें विरह के शोले भड़के हैं। कभी माँ की ममता से उन्हें सजल बनाया है तो कभी उनमें भिखारिन की करुणा फूट पड़ा है। कभी वे आर्त की विकल पुकार और ईश्वर की तन्मय प्रार्थना बने हैं तो कभी विषमता से पीड़ित समाज का चित्र उन्होंने खींचा है। कभी उन्होंने भोले बालकों को मीठी नींद की दुनियाँ में सैर कराई है तो कभी देश-भक्ति एवं राष्ट्र- जागरण ने उनके एक- एक शब्द को ओज एवम् उत्साह से भर दिया है। ये गीत, काव्य एवम् कला की दृष्टि से उत्कृष्ट बन पड़े हैं, भावपूर्ण एवम् रसात्मक होने के कारण इन्हें साहित्य की मूल्यवान निधि कहा जा सकता है।

:-:-:-:-:-:

अध्याय - ४

रस एवम् हिन्दी चलचित्र गीत

अध्याय - ४

रस एवम् हिन्दी चलचित्र गीत

मानव- जीवन का अन्तिम लक्ष्य है -`आनन्द`। मनुष्य के विभिन्न क्रिया- कलाप आनन्द प्राप्ति के लिए ही संयोजित होते हैं। व्यावहारिक रूप से यह आनन्द ही रस है। वाणी के माध्यम से अभि-व्यक्त भाव- सौन्दर्य का आस्वादन ही रस है। रस की महिमा व्यापक है। अखिल विश्व में रस ही एक मात्र साध्य है। तैत्तिरीय उपनिषद में ईश्वर के रसमय स्वरूप का उल्लेख किया गया है। अनादिकाल से जन्म-मृत्यु रूपी दु:ख से सन्तृप्त जीवात्मा उस रस-मय ब्रह्म को पाकर ही आनन्द मग्न होती है।[१] काव्य में भी रस का महत्व ब्रह्मानुभूति के समकक्ष कहा गया है।

प्राचीन भारतीय आचार्यों के अनुसार रस ही काव्य की आत्मा है। रस- सिद्धान्त के प्रथम आचार्य भरत मुनि ने अपने नाट्य-शास्त्र में विभाव, अनुभाव और व्यभिचार, भावों के संयोग से रस की उत्पत्ति का उल्लेख किया है।[२] भरतमुनि के रस सूत्र के आधार पर ही परवर्ती आचार्यों ने विभिन्न रस- सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है। काव्य प्रकाशकार आचार्य मम्मट ने भी विभाव, अनुभाव और व्यभिचारि द्वारा अभिव्यक्त स्थायी भावों को रस माना है।[३] अभिनवगुप्ताचार्य ने रत्यादि स्थाई भाव की रस-रूप में अभिव्यक्ति की है।[४] उन्होंने नाट्य

१- रसो वैस: - तैत्तिरीयोपनिषद् - ७ अनुवाक

२- विभावानुभाव व्याभिचारि संयोगाद्र सनिष्पत्ति: ।-भरतमुनि, नाट्याशास्त्र, ६-३३

३- विभावानुभावास्तत् कथ्यन्ते व्यभिचारिण:
व्यक्तरस तै विभावास्थायी भावो रस: स्मृत:।।-मम्मट,काव्यप्रकाश४-२७-२८

४- तेन प्रतीतिस्तावद्रसस्य सिद्धा या च रसनारुपा प्रतीति रुत्पसते।
वाच्य वाचक योस्तत्राभिधादि विविक्तेत व्यंजनात्मा ध्वनन व्यापारस्वं ।।
अभिनवगुप्त ,धन्यालोक लोचन,पृ० १८६

अथवा काव्य को रस की प्रतीति निर्विवाद रूप से माना है । नाट्य अथवा काव्य में रस भावना को एक मात्र साध्य है और उसमें सन्निहित अभिव्यंजना-व्यापार इस रस-भावना का साधन है । रस को भोग अथवा रसास्वाद इस अलौकिक अभिव्यंजना-व्यापार से ही सम्भव है । साहित्य-दर्पण-कार ने रस के स्वरूप का विश्लेषण करते हुये उसे अखण्ड,स्व-प्रकाश्य, चिन्मय वेदान्तर, स्पर्श शून्य और ब्रह्मानन्द सहोदर कहा है ।[१] ब्रह्मानुभूति में निर्वितर्क समाधि और निर्विकल्प अनुभूति होती है तथा चेतना का अभाव रहता है । वह तुरीयावस्था है जहां ब्रह्मानुभूति भी चेतन नहीं होती पर रसानुभूति इससे भिन्न सविकल्प, सवितर्क एवम् सचेतन होती है जहाँ साधक का मानस सम्पूर्ण रस-निमग्नता से अवगत रहता है । विलक्षण रसानुभूति की क्षमता सबमें नहीं होती । विशिष्ट व्यक्ति ही रसास्वादन में सफल हो पाते हैं। इन विशिष्ट प्रमाताओं द्वारा प्राणियों में लोकोत्तर चमत्कार तथा स्वकारवत् अभिन्नत्व - भाव से रस का आस्वादन माना गया है ।[२]सत्व मन की वह स्थिति- विशेष है - जो दुख एवम् ग्लानि से रहित लोकोत्तर आनन्द से परिपूर्ण होती है ।

दशरूपककार ने भी इस सन्दर्भ में कहा है कि काव्य-नाट्य का आस्वाद वस्तुत: आत्मानन्द का ही विलास है । यह आस्वाद तभी सम्भव है, जबकि काव्य-नाट्य के सामाजिक के हृदय में विभावादि संचरित इत्यादि रूप काव्यार्थ की महिमा से सहृदयता का स्रोत उमड पडे और स्वगत- परगत का भेद-भाव मिट जाये ।[३] काव्य में नौ स्थाईभावों के

१- सत्वोद्रेकाद खण्डस्व प्रकाशानन्द चिन्मय:
   वेद्यान्तर स्पर्शशून्यो ब्रह्मास्वाद सहोदर: ।-विश्वनाथ,साहित्यदर्पण-३-१

२- लोकोत्तर चमत्कार प्राण: कैश्चित् प्रमातृभि: ।
   स्वाकारवदभिन्न त्वेनाय मा स्व धते रस:।। वही वही - ३-३

३- स्वाद: काव्यार्थ संभेदादात्मानन्द समुद्भव: ।
   विकास विस्तर क्षोभ विक्षेपै: स चतुर्विध: ।। दशरुपक -४-४३

आधार पर नौ रसों का निर्धारण हुआ है , आचार्य भरतमुनि ने नाटकों में आठ रसों को ही स्वीकार किया है ।[१] किन्तु काव्य में उन्होंने नौ रसों का समावेश माना है । आगे चलकर समस्त आचार्यों ने श्रृंगार,हास्य , करुण, रौद्र,वीर, भयानक, वीभत्स, अद्भुत और शान्त रस- नौ रसों का महत्व स्वीकार किया है -- जिस शान्त रस को आचार्य भरतमुनि ने नाटक - रस में ग्रहण नहीं किया था, वह विश्वनाथ कविराज स्वम् पंडित राज जगन्नाथ के द्वारा नाट्य- रस के रूप में स्वीकार कर लिया गया।[२] कुछ आचार्यों ने वात्सल्य को दसवां और भक्ति को ग्यारहवाँ रस माना है। जीवन की जटिलताओं के साथ साथ मन: स्थितियों स्वम् मनोभावों का क्षेत्र भी विस्तृत होता जाता है । फलस्वरूप रसों की संख्या में भी वृद्धि होने लगी है ।

हिन्दी चलचित्र गीतों का अध्ययन करने से पता चलता है कि उनमें उपर्युक्त नौ रसों में से अनेक रसों की सफल अभिव्यक्ति हुई है परन्तु प्रधानत: उनमें श्रृंगार रस की ही है। हृदय की कोमल और मधुरतम अनुभूतियों को अभिव्यक्त करने वाले गीति काव्य के लिए सर्वाधिक उपयुक्त रस श्रृंगार ही है । प्राचीन आचार्य भोज ने तो श्रृंगार को ही एक मात्र रस माना है ।

१- नाट्यशास्त्र - भरतमुनि - ६-१०-१६

२- श्रृंगार हास्य करुण रौद्रवीर भयानक: ।
वीभत्साऽदभुत इत्यष्ठौ रस: शान्तस्तथ्य मत: ।। साहित्य दर्पण३-१८२

३- वयं तु श्रृंगारमेव रसनाद् रसमाम नाम: । राजा रुय्यक ने श्रृंगार रस की श्रेष्ठता इन शब्दों में व्यक्त की -"राजा तु श्रृंगारमेवैकं रसमाह"
"रस रत्नाकर"- पं० हरिशंकर शर्मा, प्रथम संस्करण,पृ०७३से उद्धृत ।

'रति' स्थायी भाव से अभिव्यंजित होने वाला रस श्रृंगार-रस है। अग्नि पुराण में अन्य सभी रसों का श्रृंगार से ही प्रादुर्भाव माना गया है।[१] ध्वनिकार ने भी श्रृंगार की महत्ता स्वीकार की है।[२] साहित्य दर्पणकार श्रृंगार शब्द की व्युत्पत्ति श्रृंग से ही मानता है।[३] जिसका अभिप्राय है कामाविर्भाव और उसी कामोद्भव से सम्भूतरस श्रृंगार है। उत्तम प्रकृति के प्रेमी जन इसके आलम्बन हुआ करते हैं।[४]

१- व्याभिचार्यादि सामान्याच्छृगार इति गीयते ।
तद्भेदा काममितरे हास्याद्या अन्यनेकश: ।।
- अग्निपुराण - ३४६-४-५

२- श्रृंगार वीर करुणाद्भुतरौद्र हास्य वीभत्स वत्सल भयानक शान्तनाम्ना:।
आम्नासिपुर्दशासान्सुधियो वयं तु श्रृंगार मेव रसकाद् रसनामनाम:
श्रृंगार प्रकाश - ६।७

३- श्रृंगार रसोहि संसारिणा नियमेनानुभव विषयत्वात्सर्वरसेभ्य ।
कमनीयतया प्रधानभुत ।। - ध्वन्यालोकवृति ३।२६

४- श्रृंग हि मन्मथोद्भेदस्तदागमन हेतुक: ।
उत्तम प्रकृति प्रायो रस: श्रृंगार इयते ।।
साहित्यदर्पण ,३-१८३

१- शृंगार रस और हिन्दी चलचित्र गीत:-

यौवन में कामदेव का अंकुरण होता है। इस अंकुरित होने को शृंग कहते हैं। अत:, उसके आगमन का हेतु रूप रस- 'शृंगार' कहलाता है। इसका स्थायी भाव 'रति' है। यों तो 'रति' के कई प्रकार होते हैं।[१] श्रोता के मन में सबसे अधिक और शीघ्र संचरित होने के कारण आचार्यों ने दाम्पत्य- रति को ही रस दशा तक पहुँचने वाला माना है। अन्य प्रकार के प्रेम या रति को भाव दशा तक ही रखा है, परन्तु कुछ आचार्य भगवत्प्रेम एवम् वात्सल्य प्रेम को भी रसदशा तक पहुँचाने वाला मानते हैं।[२]

शृंगार-रस के आलम्बन विभाव मद-भरे यौवन और प्रेम से हिल्लोलित हृदय नायक- नायिका होते हैं। उनकी वेश-भूषा तथा विविध चेष्टाएं आलम्बनगत उद्दीपन एवम् वन, उपवन, चन्द्र, चाँदनी, कोकिल की कूक, पपीहे की पुकार, वसन्त- वर्षा आदि ऋतुयें प्रकृतिगत उद्दीपन विभाव हैं। भ्रू - भ्रंग, मृदु-मुस्कान, अश्रुपात, चुम्बन, आलिंगन आदि अनुभाव तथा उग्रता, मरण, आलस्य एवम् जुगुप्सा को छोड़कर शेष सभी संचारी भाव हैं।

जब रति भाव इन विभाव, अनुभाव और संचारीभावों से पुष्ट एवम् परिपक्व होता है, तब वह रस कहलाता है।

१- सानुराग सौहार्द्र अरु भक्ति, और वात्सल्य
प्रेम पांच विधि कहत हैं, अरु कार्पण्य कैवल्य-प्रेम-चद्रिका-देव

२- साहित्यदर्पणकार आचार्य विश्वनाथ ने वात्सल्य रस को दसवां रस माना है --

वत्सलश्च रस इति तेतुस दशमो मत:।
स्फुटचमत्कारतया वत्सलच रसंविदु: ।। - ३।२४५।७

श्रृंगार रस के दो पक्ष हैं --

१- संयोग (संभोग) और २- वियोग (विप्रलंभ) ।

संयोग श्रृंगार में नायक एवम् नायिका के प्रेमपूर्ण विविध व्यापारों, मिलन, वार्तालाप, दर्शन, स्पर्श आदि का वर्णन होता है तथा वियोग में प्रेमी-प्रेमिका के परस्पर विछोह से उत्पन्न उनकी विभिन्न दशाओं का मार्मिक चित्रण होता है ।

हिन्दी चलचित्र गीतों में श्रृंगार रस के दोनों पक्षों से संबंधित सामग्री उपलब्ध होती है ।

क- संयोग श्रृंगार:-

श्रृंगार रस का संयोग पक्ष प्रेमी-प्रेमिका या नायक- नायिका का मिलन काल है । इसमें दो अनजान और यौवन से उन्मत्त हृदय बेसुधी में परस्पर टकरा जाते हैं और उसी समय हृदय में वह मधुर-भाव जन्म लेता है, जिसे प्रेम कहते हैं ।

आचार्यों ने प्रेम की उत्पत्ति में दो वस्तुओं का योग माना है - (क) रूप लिप्सा और (ख) साहचर्य ।[१] सौन्दर्य की परिभाषा करते हुए कवियों ने कहा है कि जिसमें नित नवीनता हो और जिसे देखकर मन कभी न तृप्त हो ।[२] फिल्मी गीतों में नायक-नायिका के हृदय में प्रेमोत्पत्ति के लिए ऐसे रूप-वर्णन अधिकता से मिलते हैं, पर इस सौन्दर्य - वर्णन में नायकों द्वारा नायिकाओं का रूप-वर्णन ही प्रधान रूप से किया गया है --

---

१- प्रेम की उत्पत्ति में, रूपलिप्सा और साहचर्य दोनों का योग होता है।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल(भ्रमरगीत सार भूमिका)

२- जनम अवधि हम रूप निहारल नयन न तिरपति भेल - विद्यापति

श्यामवर्ण की षोडसी युवती को नायक देखता है, उसके रूप पर विमुग्ध हो उठता है , अपलक निहारता रहता है ।नायिका के चन्दा जैसे मुख, कोमल महावरी तलुवे, गालों पै छिटकी हुई लट, तीखे-तीखे नयन, मीठे वचन , बलखाती हुई कमर पर वह दीवाना है । नायिका के सौन्दर्य दर्शन से उसके हृदय में प्रेम का अंकुर फूटपड़ता है --

श्यामल श्यामल बरन , कोमल कोमल चरन ,
तेरे मुखड़े पर चन्द गगन का जड़ा ।
तेरे गालों पै छिटकी पूनम की छटा ,
बड़े मन से विधाता ने तुझको गढ़ा ।
तेरे बालों में सिमटी सावन की घटा ,
तीखे- तीखे नयन, मीठे- मीठे वयन ।
तेरे अंगों पै चम्पा का रंग चढ़ा ,
बढ़े मन से विधाता ने तुझको गढ़ा.... ।[१]

शास्त्रीय दृष्टि से विचार करने पर इस गीत में नायक आश्रय है नायिका आलम्बन । नायिका के मादक सौन्दर्य को देखकर नायक के हृदय मे सुप्त रतिभाव जागृत हो उठता है । पूनम की छटा ,सावन की घटा मीठी वाणी आदि उद्दीपन भाव हैं ।

फिल्म 'बरसात की रात' का यह गीत संयोग श्रृंगार की दृष्टि से अत्यन्त सुन्दर स्वम् मन-भावन बन पड़ा है जिसमें बरसात की एक रात में भीगी हुई सुन्दरी को देख कर नायक ठगा सा रह जाता है ।नायिका जो भीगी हुई है - उसका सौन्दर्य स्वम् मनोहारी चेष्टाएँ सदा के लिए नायक के मन में बस कर रह जाती है । भीगे-चिपके वस्त्रों से उभरते वे मनोहारी अंग और रेशमी बालों से उसके गोरे गालों पर फिसलती हुई बूंदें । पागल बना देने वाले इस सौन्दर्य को नायक इन शब्दों में व्यक्त करता है --

---

१- फिल्म - नवरंग , गीतकार - पं० भरतव्यास

जिन्दगी भर नहीं भूलेगी वह बरसात की रात

एक अनजान हसीना से मुलाकात की रात। जिंदगी....

हाय । वह रेशमी जुल्फों से बरसता पानी

फूल से गालों पर रुकने को तरसता पानी

दिल में तूफान उठाए हुए जजबात की रात । जिंदगी....

---- ---- ----- -----

आसमानों से उतर आई थी जो रात की रात । [१]

नायकों द्वारा नायिकाओं के सौन्दर्य- वर्णन के अनेक गीत हिन्दी फिल्मों में लिखे गए हैं । इनमें से कुछ फिल्मों जैसे घराना,[२] स्त्री,[३] आरती,[४] ससुराल [५],धर्मपुत्र, [६], घराना,[७] भाभी की चूड़ियाँ ,[८] चौदहवी का चाँद [९], आदि के गीत विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं ।--

---

१- बरसात की रात- -साहिर लुधियानवी

२- हुस्न वाले तेरा जबाव नहीं कोई तुझसा नहीं हजारों में
तू है ऐसी कली, जो गुलशन में साथ अपने बहार लाई हो
तू है ऐसी किरन, जो रात ढले चाँदनी में नहा के आई हो
ये तेरा नूर ये तेरे जलवे जिस तरह चाँद हो सितारों में ।
तेरी जुल्फों में ऐसी रंगत है जैसे काली घटा बहारों में ।
---- घराना- शकील

३- कौन हो तुम ? कौन हो ?
तुम अषाढ़ की प्रथम घटा हो,
या पहली बिजली के बान ।
या रिमझिम पहली फुहार की,
-++- -++- --++-
घन- घूंघट में इन्दु समान ।
मूक हृदय की छिपी हूकहो ,
दुखी जगत के कम्पित प्रान।
कौन हो तुम......
फिल्म- स्त्री - गीतकार -पं० भरतव्यास

देखें-
पृ० १६६ की शेष पादटिप्पण :-

४- अब क्या मिसाल दूँ मैं तुम्हारे शबाब की
इंसान बन गई है किरन आफताब की
चेहरे में घुल गया है हँसी चाँदनी का नूर
आंखों में है चमन की जवां रात का सरूर
गर्दन है झुकी हुई डाली गुलाब की

- आरती, मजरूह

५- तेरी प्यारी प्यारी सूरत को किसी की नजर न लगे
चश्मे बद्दूर ,
फूल से ज्यादा नाजुक हो तुम चाल संभल कर चला करो
जुल्फों को गिरा लो गालों पर, मौसम की नजर न लगे
--- ससुराल- हसरत

६- भूल सकता है भला कौन ये प्यारी आंखे
रंग मे डूबी हुई नींद से भारी आंखे ।
--- धर्मपुत्र - साहिर

७- हृदय की हुई हृदय से सगाई
चले आ रहे हैं मेहमान मेरे ।
कहां उड चले हैं मन प्राण मेरे..... ।
--- भाभी की चूडिया-पं० नरेन्द्र शर्मा

------ शेष अगले पृष्ठ पर

देखें-

पिछले पृष्ठ का शेष -पादृटिप्पणी:-

८- चौदहवीं का चाँद हो या आफताब हो
तुम जो भी हो खुदा की कसम ला जवाब हो
--- चौदहवीं का....

जुल्फें हैं जैसे कांधे पे, बादल झुके हुए
आंखे है जैसे मय के प्याले भरे हुए
मस्ती है जिसमें प्यार की तुम वो शराब हो
चेहरा है जैसे झील पर हंसता हुआ कमल
या जिन्दगी के साज पे, छेड़ी हुई गजल, ,
- चौदहवीं..... ।
- चौदहवीं का चाँद -साहिर

९- जमाने भर की मस्ती को , निगाहों में समेटा है
किसी ने जिस्म को कितनी बहारों में लपेटा है
हुआ तुम सा कोई पहले न कोई दूसरा होगा....
मेरे महबूब को किसने बनाया.......
---- भरती - हसरत

हिन्दी साहित्य के श्रृंगारी कवियों के समान हिन्दी फिल्मीगीत -कारों ने सद्यः स्नाता नायिका का भी सौन्दर्य से युक्त चित्र खींचा है। फिल्म `रामी धोबिन` में स्नान करती हुई राधा का यह अलौकिक सौन्दर्य कवि निम्न शब्दों में प्रस्तुत कर रहा है --

कौन अलबेली अकेली जमुना नहायरे
मद भरी मतवारी प्रेम लहरिया लिपट- लिपट अंग जाय रे
श्याम रंग पानी अंग चूमे बार- बार रे
भंवरा जैसे आ के चूमें कली का श्रृंगार रे
काजल की काली डोर चूमे नयनन की कोर
लाज भरी फुकि फुकि जाय रे।[1]

कुछ हिन्दी - फिल्मी गीत ऐसे भी है जिनमें नायिका द्वारा नायक के रूप का वर्णन स्वम् तद्जन्य आसक्ति की व्यंजना भी हुई है। इस सन्दर्भ में विशेष रूप से `मेरे महबूब` फिल्म उल्लेखनीय है -

मेरे महबूब में क्या नहीं क्या नहीं
वो तो लाखों में एक हसीन
भोली सूरत अदा नाजनीं, मेरा महबूब क्या चाँद है।[2]

नायक और नायिका एक दूसरे पर आकर्षित होते हैं। चुपके- चुपके मुलाकाते होने लगती है और प्रेम धीरे- धीरे परिपक्वता की ओर अग्रसर होने लगता है --
वो पास रहें या दूर रहें, नजरों में समाये रहते हैं
इतना तो बता दे कोई हमें क्या प्यार इसी को कहते हैं।[3]

१- फिल्म- रामी धोबिन, गीतकार - गुलाम हैदर
२- फिल्म -मेरे महबूब, गीतकार - शकील
३- फिल्म- बड़ी बहन गीतकार - राजेन्द्रकृष्ण

हिन्दी फिल्मी गीतों में यौवन के मादक चित्र भी श्रृंगार- रस के अन्तर्गत युगल गीतों के रूप में मिलते हैं । प्रेमोत्पत्ति के समय नायक-नायिकाओं के हृदय में जो एक उल्लास और नई उमंग दिखाई देती है, उसका एक चित्र देखिये --

जब से तुम्हें देखा है आंखों में तुम ही तुम हो
हम भी यही कहते हैं सांसों में तुम ही तुम हो

---- ---- ---- ----

जब से चाहा है तुम्हें हर नजारा है जवां
दिल में तुम्ही रहते हो, यादों में तुम्ही तुम हो ।[१]

आपस में जब प्रेमी और प्रेमिकाओं के दिल मिल जाते हैं तो मन- प्राण उनका पुलकित हो उठता है । उन्हें एक नया संसार मिल जाता है । उन्हें खिलती कलियों में दिल की ष तमन्नाएँ दिखने लगती हैं --

कहां उड़ चले मन प्राण मेरे
किसे खोजते हैं मधुर गान मेरे
बहारें निछावर हुई फूल बनकर
तमन्ना की कलियां खिली फूल बन कर
खिले फूल पांखों में अरमान मेरे ।[२]

इस प्रेमोत्पत्ति के उपरान्त संयोगावस्था में प्रेम नित्य प्रति बढने लगता है । ऐसी दशा में नायक तथा नायिका की स्थिति `एक प्राण दुई गात` वाली हो जाती है --

क- तुम मीत मेरे तुम प्राण मेरे तुम युग-युग के वरदान मेरे ।
तुम खिले कमल मेरे मन में तुम हार-श्रृंगार मेरे तन के ।[३]

१- फिल्म- घराना - गीतकार - शकील
२- फिल्म- भाभी की चूड़ियां- गीतकार- पं०० नरेन्द्र शर्मा
३- फिल्म - जीत, गीतकार - राजेन्द्र कृष्ण

ख- तू मेरे लिए मैं तेरे लिए इक दूजे में खो जायें ।[1]

ग- तू मेरा राग मैं तेरी रागिनी ।[2]

घ- तुम्हीं मेरे मन्दिर तुम्हीं मेरी पूजा तुम्हीं- मेरे देवता हो।[3]

संयोग श्रृंगार रस के गीतों में हिन्दी फिल्मगीतकारों ने साहित्यिक कवियों की भाँति नायक-नायिका के सौन्दर्य चित्रण एवम् परस्पर प्रेमोल्लास वर्णन के अतिरिक्त रतिक्रीड़ा, अभिसार और झूलना का वर्णन भी किया है, पर संयमित एवम् सांकेतिक वर्णनों द्वारा रति-क्रीड़ा की व्यंजना की है जिससे मर्यादा बनी रहे । यथा

मोरे अंगना में आए आली, मैं चाल चलूं मतवाली ।

---- ---- ---- ----

मेरी ओर बढ़े पैयां पड़े, कहे मानो बात हमारी
मैं आह भरूं मुख फेर कहूं नहीं मानू बात तुम्हारी ।[4]

हिन्दी चलचित्रगीतों में 'सुरतांत' के चित्रण में तो और भी बाधायें है । अत: इन गीतों में उसके केवल 'प्रभाव' तथा वातावरण का ही चित्रण मिलता है । इस सन्दर्भ में फिल्म 'मास्टर जी', 'पवित्र पापी' 'पिया मिलन का आस', 'कालिदास' आदि फिल्मों के गीत विशेषरूप से उल्लेखनीय हैं ।

प्रेम के संयोग काल में श्रृंगारी कवि झूलने का वर्णन भी करते आये हैं । प्रेमिका झूले पर बैठी हो और प्रेमी उसे झुलाये ।प्रेमियों के लिए यह स्थिति बड़ी सुखदायक अवस्था है । सावन का महीना,मस्त पवन,

---

१- फिल्म - शोला और शबनम - गीतकार- राजेन्द्र
२- फिल्म - दिल्लगी ,, आनन्दबक्शी
३- फिल्म - खानदान ,, राजेन्द्र कृष्ण
४- फिल्म - विद्यापति

चारों ओर हरियाली, कोयल की कूक और मयूर का नर्त्तन -ऐसे स्वाभाविक और मदभरे वातावरण में रतिभाव का उमड़ना अवश्यम्भावी है। उदाहरण देखें --

क- झूले में पवन के आई बहार

नयनों में नया रंग लाई बहार... प्यार छलके

--- ---- ----

बादल झूमते आये , गागर प्यार की की लाये

कोयल कूकती जाये, बन में मोर भी गाये

छेड़ें हम तुम मल्हार...... प्यार छलके ।[१]

इसके अतिरिक्त 'झूलना' का उदाहरण फिल्म 'जुनून' में भी मिलता है ।

इस प्रकार देखते हैं कि हिन्दी चलचित्र गीतों में विवाह से पूर्व और पश्चात दोनों अवस्थाओं के संयोग श्रृंगार का वर्णन मिलता है ।

ख- <u>वियोग श्रृंगार (विप्रलंभ श्रृंगार) :-</u>

आचार्य विश्वनाथ 'साहित्य- दर्पण' में विप्रलंभ को स्पष्ट करते हुये कहते हैं - 'जब रति का भाव प्रकृष्ट रूप से हो और नायक-नायिका न मिल सकें, तब उसे 'विप्रलंभ' कहते हैं ।[२] विप्रलंभ श्रृंगार में नायक-नायिका के परस्पर वियोग का चित्रण होता है ।

वियोग- श्रृंगार के चार भेद होते हैं--

१- पूर्वराग, २- मान, ३- प्रवास और ४- करुणा ।

१- फिल्म- बैजू बावरा - गीतकार- शकील बदायूंनी

२- यत्र तु रतिः प्रकृष्टा नाभीष्टमुपैति विप्रलम्भोऽसौ ।
स च पूर्वराग मान प्रवास करुणात्मकश्चतुर्धा स्यात ।।
- साहित्य दर्पण, ३।२१६-२१७

१- श्रवण या दर्शन द्वारा नायक-नायिका के परस्पर अनुरक्त होने पर भी मिलन न होने की स्थिति में उनके हृदय में प्रेम पूर्ण अधीरता उत्पन्न होती है , उसे `पूर्वानुराग` कहते हैं ।[१]

२- (प्रिय अपराध जनित प्रेमयुक्त क्षणिक कोप को `मान` कहते हैं ।) ये दो प्रकार का होता है --

क- प्रणयमान और ख- ईर्ष्यामान ।

क- नायक नायिका में प्रेम एवम् प्रणय भंग होने के कारण कोप की स्थिति प्रणयमान कहलाती है ।

ख- नायक को पर - स्त्री पर प्रेम करते देख,सुन अथवा अनुमान होने पर जो कोप होता है, उसे `ईर्ष्यामान` कहते हैं ।

३- किसी कारण वश नायक का परदेशगमन- `प्रवास` कहलाता है ।

४- करुण वियोग की अंतिम अवस्था है । जहाँ पर दम्पति के परस्पर मिलन की आशा नहीं रहती, वहाँ वह विरह करुण में परिणत हो जाता है । जहाँ पर करुण के साथ मिलन की असम्भव आशा रहते हुए भी रति का भाव वर्तमान रहता है, वहाँ पर `करुणात्मक` वियोग श्रृंगार और शुद्ध करुण में भेद उत्पन्न करता है ।[२]

१- श्रवणाद्दर्शना द्वापि मिथ : संरुढ़रागयो : ।
दशा विशेषो यो प्राप्तौ पूर्वराग : स उच्यते ।।
--- साहित्य दर्पण- ३।१८८

२- करुणात्मक श्रृंगार जहं रति अरु शोक निदान ।
केवल शोक जहां तहां, भिन्न करुण रस जान ।।
नवरस - बाबू गुलाबराय,पृ०- १६१

भारतीय काव्य शास्त्रियों ने वियोग काल में वियोगिनी को जो विभिन्न दशाएँ होती हैं, उन पर विचार करते हुए उनको- दस दशाओं का उल्लेख किया है --

१- अभिलाषा, २- चिन्ता, ३- स्मरण, ४- गुणगान, ५- उद्वेग, ६- प्रलाप, ७- उन्माद , ८- व्याधि, ६- जड़ता और १०- स्मरण।

हिन्दी चलचित्र गीतों में श्रृंगार रस से सम्बन्धित गीत अधिक देखने को मिलते हैं । इन श्रृंगारीगीतों में विप्रलंभ श्रृंगार के गीत भी बहुतायत मेंउपलब्ध होते हैं ।आचार्योंद्वारा निर्धारित वियोग श्रृंगार के ४ भेदों तथा दसों दशाओं का वर्णन फिल्मी गीतों मेंप्राप्त होता है । वियोग के ४ भेदों एवम् दस दशाओं के सन्दर्भ में हिन्दी चलचित्र गीतों का विवेचन प्रस्तुत है ---

फिल्मी गीतों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि उनमें वियोग की पूर्वानुराग अवस्था की भावनाओं की सर्वाधिक अभिव्यक्ति हुई है । इस अवस्था में श्रवण या दर्शन द्वारा नायक- नायिका के परस्पर अनुरक्त होने पर जब किसी कारण वश मिलन नहीं हो पाता ।-

नायक- नायिका के दर्शन के तीन प्रकार बतलाये गये हैं--

१- प्रत्यक्ष दर्शन:-

क- नैन का चैन चुराकर ले गई कर गई नींद हराम ।
चन्द्रमा सा मुख था उसका,चन्द्रमुखी था नाम।[१]

ख- नैन मिले चैन कहां दिल है वहीं तू है जहां
ये क्या किया सैंया सांवरे ।[२]

२- चित्र-दर्शन:-

क- तेरी तस्वीर मिल गई, मिल गई मिल गई
मेरी तकदीर खुल गई........ ।[३]

१- फिल्म - चन्द्रमुखी गीतकार - पं० भरतव्यास
२- फिल्म - बसंत बहार ,, - शैलेन्द्र
३- फिल्म - बेताब ,, - आनन्दबख्शी

ख- ये आंख कैसी है, ये जुल्फ कैसी है
वो कैसा होगा जिसकी तस्वीर ऐसी है ।[१]

३- स्वप्न-दर्शन:-

क- सपनेमें सजन से दो बातें
इक याद रही इक भूल गए.....।[२]

ख- मेरे सपनों की रानी कब आयेगी तू ।[३]

ग- कंकडिया मार के जगाया कल रात तू मेरे सपने में आया
बलमा तू बडा वो है, जालमा तू बडा वो है ।[४]

प्रत्येक हिन्दी फिल्मों मे पूर्वानुराग से सम्बन्धित कुछ न कुछ गीत मिलजाते है । हिन्दी- फिल्मों में विप्रलंभ श्रृंगार की पूर्वानुराग- अवस्था के कुछ युगल गीत भी देखने योग्य है । ऐसे गीत वियुक्त प्रेमी-प्रेमिका द्वारा एक ही समय में गाए जाते है । गीत की एक या कुछ पंक्तियाँ पहले प्रेमी गाता है और उसके पश्चात् उसी गीत की अगली पंक्तियाँ प्रेमिका गाती है । दोनों विरह में अलग- अलग तडपते हुए दिखाये जाते है । ऐसे गीतों में कहीं- कहीं सरल भाषा में प्रेम की पीडाओर टूटे दिल की निराशा की व्यंजना अत्यन्त मार्मिक ढंग से मिलती है । इस सन्दर्भ में कुछ उदाहरण अवलोकनीय हैं ---

लता:- चाहे पास हो चाहे दूर हो
मेरे सपनों की तुम तस्वीर हो

रफी- हो चाहे पास हो चाहे दूर हो
मेरे जीवन की तुम तकदीर हो ।

१- फिल्म - पिया का घर आनन्दबख्शी-(गीतकार)
२- फिल्म - गेट वे आफ इण्डिया- गीत- राजेन्द्रकृष्ण
३- फिल्म - आराधना गीतकार - शैलेन्द्र
४- फिल्म - हिमालय की गोद में ,, - आनन्दबख्शी

लता :- ओ परदेसी   भूल न जाना
हमने किया तुझे दिल नजराना ।[१]

ख- हेमन्त- तुम्हें याद होगा, कभी हम मिले थे
मुहब्बत की राहों में, मिलके चले थे
लता :- भुला दो मुहब्बत में, हम तुम मिले थे
सपना ही समझो कि मिलके चले थे ।[२]

ग- रफी- तेरी दुनियां से दूर, चले होके मजबूर हमें याद रखना ।
लता- जाओ कहीं भी सनम
तुम्हें इतनी कसम हमें याद रखना ।[३]

घ- मुकेश- छोड़ गए बालम मुझे हाय अकेला छोड़ गए
तोड़ गये बालम मेरा प्यार भरा दिल तोड़ गए ।
लता- टूट गया बालम मेरा प्यार भरा दिल टूट गया
टूट गया बालम मेरा प्यार भरा दिल टूट गया ।[४]

पूर्वानुराग के अतिरिक्त हिन्दी चलचित्र गीतों मे वियोग श्रृंगार के अन्य तीनों भेदों भेद-अर्थात् मान, प्रवास और करुण का रूप भी उपलब्ध होता है - विवेचन प्रस्तुत है --

हिन्दी चलचित्र गीतों में मान- अवस्था के गीतों का प्राय: अभाव है । एकाध गीत `ईर्ष्यामान` के उदाहरण के रूप में देखे जा सकते हैं । इसके अन्तर्गत नायिका नायक को पर स्त्री रत जानकर ईर्ष्यावश जो कोप करती है, उसे `ईर्ष्यामान` कहते हैं । `ईर्ष्यामान` के सन्दर्भ में कुछ उदाहरण अवलोकनीय हैं---

---

१- फिल्म - सम्राट चन्द्र गुप्त   गीतकार - भरतव्यास
२- फिल्म - सट्टा बाजार   गीतकार - गुलशन बावरा
३- फिल्म - जनक   गीतकार - भरत व्यास
४- फिल्म - बरसात   गीतकार - शैलेन्द्र

१- एक वेबफा से प्यार किया, उससे नजर को चार किया
हाय रे हमने यह क्या किया, हाय क्या किया ।[1]

२- रसिक बलमा काहे तूने प्रीत लगाई ।
वैरिन संग प्रति लगाये मोसे कहे तेरे विन नींद न आये ।[2]

३- देखो माने ना रुठी हसीना जाने क्या बात है ?
आए साजन के मुख मे पसीना ना जाने क्या बात है
बूझो किस कारण हुई ये लडाई
इसका बालम होगा हरजाई ।[3]

प्रवास अवस्था के अनेक गीत हिन्दी फिल्मोमेदेखने को मिलते है । इस अवस्था के अन्तर्गत प्रेमी प्रेमिका से बिछुडकर दूर परदेश में रहता है इस काल मे जहाँ एक ओर बीते दिनो की स्मृतियाँ हृदय को झकझोरती है वही दूसरी ओर प्रकृति के दृश्य काटने को दौडते है फिल्मी गीतकारो ने भी प्रवास अवस्था का अत्यन्त मार्मिक एवम् सजीव चित्रण किया है --

१- रुलाकर चल दिये एक दिन, हंसी बनकर जो आये थे
चमन रो रो के कहता है, कभी गुल मुस्कुराये थे ।[4]

२- आ जा रे परदेशी, मै तो कब से खडी इसपार ये अखियां थक गई पन्थ निहार ।[5]

३- इक परदेशी मेरा दिल ले गया
जाते जाते मीठा मीठा गम दे गया ।[6]

प्रिय के विदेश जाने पर प्रेमिका प्रेमी की याद मे दुखी है उसके आने की प्रतीक्षा कर रही है --

---

१- फिल्म - आवारा - गीतकार - हसरत
२- फिल्म - चोरी चोरी ,, हसरत जयपुरी
३- फिल्म - टैक्सी ड्राइवर ,, साहिर
४- फिल्म - बादशाह ,, शैलेन्द्र
५- फिल्म - मधुमती ,, शैलेन्द्र
६- ,, - फागुन ,, कमल जलालाबादी

१- बैठे है राह गुजर पर दिल का दिया जलाये ;
शायद वे लौट आयें ।[1]

एक ओर प्रियतमा प्रियतम के आगमन की बाट जोह रही है तो दूसरी ओर कोयल की कुहुक पपीहा की पिऊ-पिऊ उसके प्राण खीचे ले रहे है ।

पीऊ पीऊ पपीहे ना बोल
पांव पडू मै पापी तेरे, भेदना मेरे बोल ।[2]

`विदेसिया` फिल्म के एक गीत मे प्रवास अवस्था का एक चित्र देखिये - जो अत्यन्त मार्मिक एवम् संजीव बन पडा है --

१- दिनवा गिनत मोरी घिसली अंगुरिया ,
कि रहिला तकत नैना ढूंढे रे बिदेसिया ।
कुहुके लागी कोइली, पिहिके पपिहरा ,
बउर जामैं अमवा, बाउर भइले जियरा ।
उमंग आस अंसुवा में, चुरे रे विदेसिया ,
करेजवा करके विरह- विस बनवा
मउत के नजर मोहे , घूरे रे विदेसिया ।[3]

प्रेमी प्रेमिका जब दूर जा पडते है तो उनके हृदय का प्यार भरा सन्देश एक दूसरे तक कैसे पहुँचे ?- इसके लिए कविगण विरह वर्णन के अन्तर्गत चन्द्रमा,पवन,मेघ आदि को दूत बनाकर सन्देश वाहक के रूप में भेजने की बडी पुरानी परम्परा है। फिल्मी गीतो मे भी इसके कुछ नमूने देखिये --

---

१- फिल्म - चालीस दिन - गीतकार - कमल जलालाबादी
२- फिल्म - होली हे इन बॉम्बे -,, - पं० भरतव्यास
३- फिल्म - विदेसिया - ,, - पं० राममूर्ति चतुर्वेदी

१- सावन के बादलो, उनसे ये जा कहो
तकदीर में यही था, साजन मेरे न रो ।[१]

२- बहो तुम धीरे वहां मेरे आते होंगे चितचोर ।[२]

३- चन्दा रे चन्दा, देश सजन के जइयो
चुप की भाषा में, साजन को हाल मेरा बतलइयो ।[३]

पवन को दूत बनाकर पं० भरत व्यास ने 'सम्पूर्ण रामायण' फिल्म में वियुक्त सीता के मुख से यह मार्मिक सन्देश राम को भेजा है--

सन् सनन् सनन् जा रे ओ पवन ,
दूर देश ले जा सन्देश, जहाँ मेरे सजन,
छू छू के चरन , कहना पवन ,
विरहा अगन, हो ना सहन ।
तन यहाँ और प्राण वहाँ,
मेरी पूजा यहां, भगवान वहाँ,
यह दूरी सहे कैसे मन की मयूरी
बरसते हैं नयनों के घन जा रे ओ...ननन..।[४]

पपीहे के द्वारा भी एक विरहिणी अपने प्रियतम को सन्देश भेजती है - जिसमें उसकी गहरी विवशता झलक रही है--

पपीहा रे । मेरे प्रिया से कहियो जाय
सावरियां तेरी राधा रोये रोये उमर गमाय
मैं हूं कितने पास पिया के, फिर भी कितनी दूर
एक नदी के दो किनारे ,मिलने से मजबूर।[५]

१- फिल्म - रतन गीतकार - दीनानाथ मधोप
२- फिल्म - कंगन गीतकार - पं० प्रदीप
३- फिल्म - सोनाचाँदी गीतकार - दीनानाथ मधोप
४- फिल्म - सम्पूर्णरामायण गीतकार - पं० भरतव्यास
५- फिल्म - किस्मत गीतकार - पं० प्रदीप

आचार्यों ने प्रवास के तीन कारण माने हैं:---

१- कार्य प्रवास, २- शापवश प्रवास , ३- भयवश प्रवास ।

कार्यवश प्रवास के भूत,भविष्य और वर्तमान तीन भेद किये गये हैं हिन्दी चलचित्र गीतों में कार्यवश प्रवास का एक उदाहरण देखिये--

सावन का महीना है,बादल रिमझिम बरस रहे हैं,प्रियतम परदेश बसे हैं। प्रोषित -पतिका के विरह की इस वर्तमान अवस्था का चित्रण निम्न गीत मे हुआ है --

ओ मेरे राजा आजा, पिया घर आजा ।
मुझ विरहिन के हाल पै बादल रोते है ,रोते है
बालम हमरे आंख मूंदकर सोते है सोते है ,
हमको नींद न आए रे, याद सताए तोरी,
मुख दिखला जा आजा, पिया घर आजा ।[१]

भविष्य-प्रवास :-

जिस प्रवास का सम्बन्ध भविष्य काल से हो, उसे भविष्य प्रवास कहते हैं । प्रिय परदेश जा रहे हैं । भविष्य के विरह की कल्पना प्रियतमा करती हुई कह रही है कि जब तुमही हृदय को ठेस लगाकर चले जाओगे तो फिर हमारा कौन होगा । --

जब तुम ही चले परदेस , लगाकर ठेस ,
ओ प्रीतम प्यारा: दुनिया में कौन हमारा ?[२]

आइये, अब कुछ करुण विप्रलंभ फिल्मी गीतों पर दृष्टिपात करते चले । इसके अन्तर्गत नायक नायिका को मिलने की आशा नहीं रहती इस अवस्था मे निराशा, करुणा,और आंसू भरी भावना व्यक्त रहती है करुण विप्रलंभ से सम्बन्धित कुछ गीत प्रस्तुत है --

---

१- फिल्म - रतन गीतकार - दीनानाथ मधोक
२- फिल्म - रतन ,, वही

१- दिल जलता है तो जलने दें।
आंसू न वहा फरियाद न कर। दिल,.....
तू परदा-नशीं का आशिक है
यूं नामेवफा वरवाद न कर दिल। [१]

२- क्या मिल गया भगवान तुम्हे दिल को दुखा के
अरमान की नगरी में मेरी आग लगा के। [२]

३- जव दिल ही टूट गया ------ जब दिल ही टूट गया
हम जी के क्या करेंगे -------। [३]

४- याद करोगे। याद करोगे
इक दिन हमको याद करोगे
तडपोगे फरियाद करोगें।
एकदिन हमको याद करोगे। [४]

५- जिन्दा हूँ इस तरह कि, गमे जिन्दगी नहीं
जलता हुआ दिया हूँ, मगर रोशनी नहीं। [५]

६- मैं जिन्दगी में हर दम रोता ही रहा
रोता ही रहा हूँ, तडपता ही रहा हूँ। [६]

७- ऐ दिल मुझे ऐसी जगह ले चल जहाँ कोई न हो
अपना पराया मेहरबा कोई ना हो।

१- फिल्म- पहलीनजर गीतकार - आह सीतापुरी
२- फिल्म -अनमोलघडी ,, तनवीर नकवी
३- फिल्म - शाहजहां ,, मजरूह
४- फिल्म - दो भाई ,, राजामेंहदी अली खां
५- फिल्म - आग ,, बेहजात लखनवी
६- फिल्म - बरसात ,, हसरत जयपुरी

जाकर कहीं खो जाऊ मैं दुनियाँ मुझे ढूंढे मगर ,
मेरा निशा कोई ना हो ।[१]

८- तेरी दुनियाँ में दिल लगता नहीं, वापस बुला ले ।[२]

६- मेरी याद में तुम न आंसू बहाना
न जी को जलाना ,मुझे भूल जाना ।[३]

१०- ओ दुनिया के रखवाले सुन दर्द भरे मेरे नाले ।[४]

११- तेरी दुनिया मे जीने से तो बेहतर है कि मर जायें
वही आंसू वही यादें वही गम है किधर जाये ।[५]

१२- ओ दूर के मुसाफिर हमको भी साथ ले जा
हम रह गये अकेले हम रह गये अकेले
तूने जो दे दिया गम बरबाद हो गये हम
दिल उठ गया जहां से ले चल हमें यहां से ।[६]

इस प्रकार देखते हैं कि हिन्दी चलचित्र गीतों में करुण विप्रलंभ श्रृंगार के अनेक गीत मिलते है जिनमें करुणा का भाव हृदय की टीस के साथ प्रकट हुआ है। इन गीतों के अतिरिक्त कुछ और फिल्में हैं जिनके गीत भी करुण विप्रलंभ के कारण मार्मिक स्वम् हृदय स्पर्शी बन पड़े है जिनमें फागुन, सवेरा, फूल और पत्थर, काजल, देवदास , मधुमती ,मेरी सूरत तेरी आंखे, बम्बई का बाबू, आन,चन्द्रकान्ता,प्यासा, मेला , तीसरी कसम ,परवरिश, पोस्टबॉक्स ६६६, साधना, गूंज उठी शहनाई, सट्टा बाजार, उपकार, पूरब पश्चिम, सफर, गुमराह, चंद्रमुखी, अजी बस शुक्रिया, आदि फिल्में उल्लेखनीय है ।

१-	फिल्म-	आरजू	गीतकार - शकील
२-	,,	बावरे नयन	,, पं० केदार शर्मा
३-	,,	मदहोश	,, राजा मेंहदी अली खां
४-	,,	बैजूबावरा	,, शकील
५-	,,	मकान नं० ४४	,, साहिर
६-	,,	उड़नखटोला	,, शकील

विप्रलम्भ श्रृंगार की सामग्री का विवेचन करते समय काव्य शास्त्रियों ने वियोगिनियों की दस विरह दशाओं का निर्देश भी किया है हिन्दी फिल्मी गीतों में विरह की दस दशाओं का चित्रण मिलता है--

१- अभिलाषा:-

वियोगावस्था मे नायक -नायिका के परस्पर मिलने की उत्कट इच्छा को अभिलाषा कहते हैं। हिन्दी फिल्मी गीतों में इस स्थिति का सुन्दर वर्णन मिलता है --

क- आज फिर जीने की तमन्ना है
आज फिर मरने का इरादा है ।[१]

ख- तमन्ना थी कम से कम कोई फूल बनके हम
तेरी जुल्फ चूमते........ ।[२]

ग- ओ बेदर्दी, आ मिल जल्दी, मिलने के दिन आए।[३]

घ- मेरे पास आओ, नजर तो मिलाओ,
इन आंखों में तुमको जवानी मिलेगी।[४]

२- चिन्ता:-

प्रिय मिलन की लालसा तथा वियोग जनित दुख: दोनों की मात्रा अभिलाषा के अतिरिक्त अधिक होती है । इस सन्दर्भ मे फिल्म `परदेशी` का गीत अवलोकनीय है --

सजन सकारे जायगें, नैन मरेंगे रोय,
विधना ऐसी रैन कर कि भोर कबहुं ना होय ।

१- फिल्म - गाइड गीतकार शैलेन्द्र
२- ,, तुम सा नहीं देखा ,, मजरूह
३- ,, हीरा मोती ,, प्रेमधवन
४- ,, संघर्ष ,, शकील

तेरी आग लगाली मैने मनमें पिया, तेरी सेज
सजाली तन में पिया....
तेरे नैन बसे नैनन मे पिया, कहीं तू ही मो से
नैन फेरे ना। न जा.....
तीखी कजरे की धार पिया तेरे लिए मेरे सोलह
सिंगार पिया तेरे लिए, बाजे मन का सितार
पिया तेरे लिए, हुए फिर भी तो वलम हम तेरे ना।
न जा ----।[१]

३- स्मृति:-

वियोग अवस्था में प्रिय की पिछली बातों, चेष्टाओं और उनके समागम -सुखों को याद करने का नाम स्मृति है --

क- याद आया है मुझे फिर गुजरा जमाना बचपन का।[२]
ख- लो आ गई उनकी याद, वो नहीं आए।[३]
ग- फिर तुम्हारी याद आई, ऐ सनम।[४]
घ- तेरी याद मे जल कर देख लिया, अब आग में
जल कर देखेंगे।[५]

मैं जबभी अकेली होती हूं तुम चुपके से आ जाते हो और झाँक के मेरी आखों में बीते दिन याद दिलाते हो।[६]

१- फिल्म - परदेशी	गीतकार	साहिर
२- फिल्म - देवर	,,	आनन्दबक्शी
३- फिल्म - दो बदन	,,	शकील
४- फिल्म - रुस्तम सोहराब	,,	आनन्दबक्शी
५- फिल्म - नागिन	,,	राजेन्द्र कृष्ण
६- फिल्म - धर्मपुत्र	,,	साहिर

उद्वेग:-

वियोग की इस दशा में वियोगिनी को सुखदायक वस्तुएँ भी दुख दायक लगने लगती है । मन की गति तीव्र हो जाती है और विरह-जनित पीडा और व्याकुलता के कारण कोई बात नहीं सुहाती। वियोगिनी की इसी अवस्था का नाम उद्वेग है ।

क- जिन्हें हम भूलना चाहे,
वो अक्सर याद आते हैं
बुरा हो इस मुहब्बत का
वे क्यों कर याद आते हैं ।[1]

ख- जब से चले गये हैं वो, जिन्दगी जिन्दगी नहीं,
साज है औ शैदा नहीं, शमां है, रोशनी नहीं ।
छोड के मुझको चल दिये, यह भी नहीं किया ख्याल,
उनके सिवा जहान में, और मेरा कुछ नहीं। [2]

ग- भूल ना जाना, ऋतु है सुहानी,
ये दिन और ये रात ।
जब तक चमके चाँद सितारे,
छूटे न तेरा साथ ।[3]

४- प्रलाप:-

वियोग अवस्था में प्रियतम का ध्यान और उसकी याद में रोना प्रलाप कहलाता हैं ।

१- फिल्म- आवरू गीतकार - जी०एल० रावल
२- फिल्म- नाटक ,, गुलाम हैदर
३- फिल्म- दिल्लगी ,, शकील

क- मैं जिन्दगी में हरदम रोता ही रहा हूँ
रोता ही रहा हूं, तड़पता ही रहा हूँ,
मै जिन्दगी में --------।[1]

ख- रो रो के कहता है ये टूटा हुआ दिल ।[2]
हम तुम से जुदा होके मर जायेगें रो रो के ।[3]

इस प्रकार देखते है कि हिन्दी फिल्मी गीतों में विरह के इन भावों के अतिरिक्त उन्माद, व्याधि, जड़ता, और मरण, के भी चित्रण हुए है । उन्माद का एक नमूना प्रस्तुत है --

प्यार की आग मे तन वदन जल गया
दुनिया वाले ना जाने क्यों सताते मुझे
उठ रहा उठ रहा, मेरे दिल से धुंआ ।[4]

हिन्दी चलचित्र गीतों में नायिका- भेद :-

काव्य एवम् नाट्य मे प्रधान पुरुष पात्र को नायक और प्रधान स्त्री पात्र को नायिका कहते हैं । संस्कृत साहित्य में नायिका के स्वरुप एवम् प्रकारों का विस्तृत विवेचन प्राप्त होता है । आचार्य भरत मुनि ने नाट्यशास्त्र में नायिका की विशेषताओं का उल्लेख करते हुये रुप, गुणशील, यौवन, माधुर्य, शक्ति, स्नेह प्रसन्नता आदि अनेक तत्वों का निर्देश किया है ।[5]

१- फिल्म- बरसात गीतकार हसरतजयपुरी
२- फिल्म- बदहोश ,, राजामेंहदी अली खां
३- फिल्म -एक सपेरा एक लुटेरा ,, असद भोपाली
४- फिल्म- जिद्दी ,, हसरत
५- रुप गुण शील यौवन माधुर्य शक्ति संपन्ना ।
विशदा स्निग्धा मधुरा पेशल वचनाभिरक्त कंठी च ।।
योग्यायाम क्षमिता लयज्याज्ञा रसैस्तु संयुक्ता
एवं विधगुणैर्युक्ता कर्तव्या नायिका तज्ज्ञै : ।
नाट्य शास्त्र-३५।६२-६३

प्रमुख रूप से नायिका के तीन भेद है- (१) स्वीया या स्वकीया (२) अन्या या परकीया ,(३) सामान्या ।[१]

स्वकीया नायिका वह है जो नम्रता और सरलता आदि गुणों से युक्त गृह-कर्मों में तत्पर और पतिव्रता हुआ करती है ।वय-क्रमानुसार स्वकीया नायिका के तीन प्रकारों का उल्लेख किया गया है क- मुग्धा , ख-मध्या ,ग- प्रगल्भा ।

मुग्धा नायिका वह है जो बाल्यावस्था से यौवनावस्था में प्रथम पदार्पण कर रही हो । मुग्धा के भी दो भेद माने गये है -- अज्ञात यौवना स्वम् ज्ञात यौवना। जो मुग्धा अपने यौवन के आगमन को लक्षित नहीं कर पाती वह अज्ञात यौवना और जो लक्षित कर लेती है, वह ज्ञात यौवना कहलाती है । ज्ञात यौवना के भी दो भेद निर्धारित किये गये है-- नवोढा और विश्रब्ध । जिस नव विवाहिता में लज्जा और भय अधिक होता है,वह नवोढा कहलाती है। और जिसमें लज्जा व भय की न्यूनता के साथ विश्वास का आरम्भ हो जाता है वह विश्रब्ध नवोढा कहलाती है । मध्या नायिका यौवनावस्था में नि:संकोच और न्यून लज्जा सम्पन्न होती है । मध्यानायिका के धीरा,धीरा-धीरा और अधीरा- यह तीन भेद होते है। मान के समय मध्या धीरा साहस वक्रोक्ति से, धीरा-धीरा आंसुओं सहित वक्रोक्ति से और मध्यमा धीरा क्रोध-पूर्ण कटूक्तियों से अपराधी पति मे दुख: उत्पन्न करती है । प्रगल्भा नायिका में यौवन का सम्पूर्ण उभार,रति कौशल का पूर्ण समावेश,हावो-भावो का पूर्ण विकास और लज्जा की अत्यधिक न्यूनता पायी जाती है । प्रगल्भा में भी धीरा,धीरा धीरा और अधीरा तीन भेद होते हैं। प्रगल्भा धीरा अपने क्रोध को छिपाकर वाह्य रूप से वाणी द्वारा आदर सत्कार प्रदर्शित करती है। पर रति क्रीडा में

१- नायिका त्रिभेदा स्वान्या साधारणा स्त्रीति ।
साहित्य दर्पण- ३।५६

उदासीन रहती है। प्रगल्भा धीरा धीरा कटु वचनों एवम् व्यंगों से नायक को विदग्ध करती है। प्रगल्भा अधीरा क्रोधावेश में नायक को तर्जना एवम् ताडना देने के अतिरिक्त दण्ड भी देती है।

पति-प्रेम के न्यूनाधिक्त के विचार से स्वकीया के दो अन्य भेद होते है- जेष्ठा व कनिष्ठा।

साहित्य दर्पणकार नें स्वकीया नायिका के १३ भेदों को ~~स्वकीयक~~ स्वीकार किया है। जिनमें मुग्धा, मध्या, प्रगल्भा, मध्या प्रगल्भा के ज्येष्ठा और कनिष्ठा के अनुसार दो भेद तथा धीरा, धीरा-धीरा और अधीरा के अनुसार तीन-तीन भेद सम्मिलित हैं।[१]

रसार्णव सुधाकर मे भी १३ भेदों का वर्णन प्राप्त होता है।[२] परकीया नायिका वह होती है जो अन्य पुरुषों से सम्बन्ध रखती है। परकीया के दो भेद होते है- १- ऊढा, २- अनूढा।

ऊढा-नायिका विवाहित होती है और पर पुरुषों से नि:संकोच प्रेम-प्रसंग स्थापित करती है। अनूढा नायिका अविवाहिता होती है।

सामान्य-नायिका वह होती है जिसपर समस्त व्यक्तियों का समान अधिकार हो। इसे गणिका या वेश्या भी कहते है।

उपर्युक्त नायिका भेदों के अतिरिक्त व्यवहार एवम् दशा भेद के अनुसार नायिका के आठ भेद होते है--

---

१- मध्या प्रगल्भयो भेदास्तस्माद द्वादश: कीर्तिता:
मुग्धा त्वेकैव तेन स्यु: स्वीयाभेदास्त्रयोदश: ।।
-साहित्य दर्पण ३।६५

२- धीराधीरा दिभेदेन मध्या प्रौढ त्रिधा त्रिधा।
ज्येष्ठा कनिष्ठा भेदेन ता: प्रत्येकं द्विधा द्विधा
मुग्धा त्वे विधा चैवं मा त्रयोदश घोदिता।
श्री शिंग भूपाल, रसार्णव सुधाकर- विलास, १०५

१- स्वाधीन पतिका , २- वासक-सज्जा , ३- विरहोत्कंठिता
४- खण्डिता ,५- कलहान्तरिता ,६-विप्रलब्धा , ७- प्रोषित-पतिका
८- अभिसारिका ।

१- स्वाधीन-पतिका-

वह नायिका जिसका पति उसके वश में होता है और उसे छोड़कर अन्यत्र कहीं नहीं जाता तथा पत्नी के श्रृंगार आदि विलास-कार्यों में रत रहता है ।

२- वासक-सज्जा-

वह नायिका है जो वस्त्राभूषण, श्रृंगार आदि से सज्जित होकर प्रसन्नता-पूर्वक पति आगमन की प्रतीक्षा करती है ।

३- विरहोत्कंठिता -

वह नायिका होती है जिसका पति निश्चित समय के भीतर विना अपराध के न आ सके और जिसके कारण वह दु:खी हो ।

४- खण्डिता नायिका-

वह नायिका है जो पति शरीर पर अन्य स्त्री द्वारा अंकित सम्भोग-चिन्हों को देखकर ईर्ष्यालु हो उठती है ।

५- कलहान्तरिता-

उस नायिका को कहते हैं जो प्रणय-प्रार्थना में रत पति को रोष पूर्वक निरादृत करती है और अन्त में पश्चाताप करती है ।

६- विप्रलब्धा-

उस नायिका को कहते हैं जिसका प्रीतम संकेत स्थान नियत करके भी उससे मिलने नहीं आता और जो इस प्रकार अपना अपमान समझती है ।

७-प्रोषित पतिका-

वह नायिका होती है जो कार्यवश प्रीतम के परदेश चले जाने के कारण वेदना से पीडित रहती है । काल क्रमानुसार यह नायिका तीन प्रकार की होती है --

क- प्रोषित पतिका- जिसका पति परदेश चला गया हो ।

ख- प्रवत्स्यपतिका- जिसका पति परदेश जाने वाला हो ।

ग- प्रवसत्पतिका - जिसका पति अभी परदेश जा रहा हो ।

८- अभिसारिका-

वह नायिका है जो कामार्थ स्वयं संकेत स्थान पर प्रीतम से मिलने के लिये जाती है । - समय भेद के अनुसार दो प्रकार की अभिसारिकायें होती है --

क- कृष्णाभिसारिका- जो कृष्ण पक्ष की अन्धकार पूर्ण रात मे काले भूषाणावस्त्रों से सज्जित होकर अभिसार करती है ।

ख- शुक्लाभिसारिका- जो शुक्लपक्ष की ज्योत्सनामयी रात्रि में उज्जवल वस्त्र आभूषाणों को पहन कर अभिसार करती है ।

हिन्दी फिल्मी गीतों में वर्णित नायिकाओं के कुछ प्रमुख प्रकार प्रस्तुत है -

१- स्वकीया :-

तुम्ही मेरे मन्दिर ,तुम्ही मेरी पूजा,तुम्ही देवता हो ।[१]

२- मुग्धा :-

जाने क्या तूने कही,
जाने क्या मैंने सुनी,

१- फिल्म - खानदान गीतकार - राजेन्द्र कृष्ण

बात कुछ बन ही गयी ।
सनसनाहट सी हुई ,
घबराहट सी हुई ,
नैन झुक झुक के उठे ।[१]

३- <u>नवोढा</u>-

क- सैंया ने उंगली मरोडी रे, राम कसम शरमा गई मैं ।
मांका बुलावें जोरा-जोरी रे, राम कसम शरमा गई मैं ।[२]

ख- अब आई कैसी उमरिया, लहराये चुनरिया ,
झुकी झुकी जाये रे नजरिया ।
इत उत जाये मेरे माथे की बिंदिया ,
रात रात भर मोहे आये ना निंदिया।[३]

४- <u>वासकसज्जा</u>-

पिया ऐसा जिया में समाय गयो रे,
मैं तो तन-मन की सुध-बुध गंवा बैठी ।
हर आहट पर समझी वो आय गयो रे ,
झट घूंघट में मुखडा छिपा बैठी ।[४]

५- <u>परकीया</u>-

एक दो तीन, आजा मौसम है रंगीन ।
रात के छिप छिप के मिलना दुनिया समझे
ये मदमाती बनी है, तेरे लिये दीवानी ।[५]

१- फिल्म -प्यासा गीतकार- साहिर
२- फिल्म - परवाना ,, राजामेंहदी अली खां
३- फिल्म - महासती अनुसुय्या ,, पं० भरतव्यास
४- फिल्म - साहब बीवी और गुलाम-गीत०- शकील
५- फिल्म - आवारा गीतकार- हसरत

६- ललिता:-

जादूगर सैंया छोड मोरी बहियां,
हो गयी आधी रात, अब घर जाने दो
फीका-फीका कजरा, टूटा हुआ गजरा
कह देगा सारी बात ।[१]

७- अभिसारिका-

चली गोरी पिय से मिलन को चली,
नैना बावरिया,मन में सांवरियाँ ,
चली गोरी --------
डार के गजरा लट बिखरा के ,
ढलते दिन को रात बता के ।
कंगना खनकाती, बिंदिया चमकाती,
छम छम डोले, सजन की गली ।[२]

८- प्रोषितपतिका-

छुप गया कोई रे ,दूर से पुकार के ,
दर्द अनोखा हाय, दे गया प्यार से ।
आज है सूनी- सूनी, दिल की ये गलियाँ
बन गई कांटे, मेरी प्यार की कलियां ,
प्यार भी खोया मैंने, सब कुछ हार के
दर्द अनोखा हाय। दे गया प्यार से ।[३]

१- फिल्म - नागिन गीतकार राजेन्द्रकृष्ण
२- फिल्म - एक ही रास्ता गीतकार मजरुह
३- फिल्म - चम्पाकली गीतकार राजेन्द्रकृष्ण

६- आगमिष्यत्पतिका:-

मोरी अटरिया पे कागा बोले ,
मोरा जियरा डोले, कोई आ रहा है ।

--- --- ---

आज बगिया में आई बहार रे ।
मोरे जीवन में सोलह श्रृंगार रे ।
ठंडी- ठंडी हवाओं के झोंके घूंघट पट खोले
जिया लहरा रहा है ।[१]

हिन्दी फिल्मी गीतों में नायिका भेद के कुछ उदाहरणों के आधार पर कहा जा सकता है कि हिन्दी चित्रपट के विशाल गीत साहित्य में अधिकांश नायिकाओं के सुन्दर चित्र अंकित किये गये है। यदि गीतों का विश्लेषण नायिका भेद के सन्दर्भ में किया जाये तो नई नायिकाओं के कुछ भेद और मिल सकते है ।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि हिन्दी फिल्मी गीतों का मुख्य रस श्रृंगार है जिसमे वियोग श्रृंगार की प्रधानता है तथा संयोग श्रृंगार के अन्तर्गत नायिकाओं के सौन्दर्य चित्रण तथा प्रेमियों के प्रेम उल्लास का, विप्रलम्भ श्रृंगार में वियोगिनी के हृदय की पीड़ा,टीस की व्यन्जना बड़ी मर्म-स्पर्शी हुई है ।

२- वीररस और हिन्दी चलचित्र गीत:-

हिन्दी चलचित्र गीतों में श्रृंगार रस के अतिरिक्त जिन रसों की प्रमुख अभिव्यक्ति दिखलाई देती है जिनमे वीर,शान्त, हास्य और वात्सल्य रसों के नाम लिये जा सकते है ।

१- फिल्म- आंखे गीतकार राजा मेंहदी अली खां

काव्य शास्त्रियों ने वीर-रस का विवेचन करते हुये लिखा है कि शत्रु का उत्कर्ष, उसकी ललकार, दीनों की दशा, धर्म की दुर्दशा, आदि से किसी पात्र के हृदय में उनको मिटाने के लिए जो कार्य करने अथवा पुरुषार्थ दिखाने का उत्साह उत्पन्न होता है, वही क्रियाशील होकर पाठक स्वम् श्रोता के हृदय में वीर-रस के रूप में उमड पडता है ।[१] आचार्य विश्वनाथ ने साहित्य- दर्पण में वीर-रस के स्थायी भाव 'उत्साह' के सन्दर्भ में इस प्रकार विवेचना की है :--

१- स्थायी भाव -	उत्साह
२- आलम्बन विभाव-	विजेतव्य
३- उद्दीपन-	विजेतव्य की चेष्टायें
४- अनुभाव -	सहायक की खोज आदि
५- संचारीभाव-	धृति, मति, गर्व, स्मृति, तर्क और रोमांच
६- भेद-	दानवीर, धर्मवीर, युद्धवीर, दयावीर
७- देवता -	महेन्द्र
८- वर्ण -	हेम

पं० रामदहिन मिश्र के शब्दों में :-

" मनुष्य के धृति, क्षमा, यम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय निग्रह, बुद्धि विद्या, सत्य अक्रोध आदि जितने गुण हैं, मनुष्य के जितने परोपकार दान दया, धर्म, आदि सुकर्म हैं और ऐसे ही जितने अन्यान्य विषय हैं-- सभी मे वीरता दिखाई जा सकती है ।--[२]

अत: मनुष्य में निहित शुभ गुण और शुभ प्रवृत्तियाँ उत्साह के अन्तर्गत हैं अत: उत्साह ही मनुष्यता का प्राण है ।[३]

१- काव्य प्रदीप- लेखक- पं० रामबहोरी शुक्ल पृ० ८०
२- वीर-रस की रचनाओं की आवश्यकता- साहित्य सन्देश-पं०पद्मसिंह शर्मा जनवरी-फरवरी-१९६४,पृ० ३३१
३- काव्य दर्पण लेखक- पं० रामदहिन मिश्र - पृ० २४५

कतिपय आचार्यों ने वीर रस के तीन प्रकारों का उल्लेख किया है दश रूपक कार ने दया, युद्ध एवम् दान के सम्बन्ध में तीन प्रकार का वीर-रस माना है ।[१]

काव्यानुशासन कार ने धर्मवीर, दान वीर, युद्धवीर को ही वीर रस के भेद क्रम के रूप में माना है ।[२] उत्साह की व्यापकता के कारण ही वीररस के कई भेद किये गये है, जिनमें युद्धवीर की महत्ता सर्वोपरि मानी गयी है , क्योंकि उसमें मनुष्य की शारीरिक, मानसिक, और आध्यात्मिक सभी प्रकार की शक्तियों का प्रदर्शन स्वत: हो जाता है ।

हिन्दी फिल्मी गीतों में जो वीर-रसात्मक रचनाये हमें उपलब्ध होती है, उनमें युद्धवीरता का ही चित्रण विशेष मिलता है ।

हिन्दी फिल्मी गीतो ने जहाँ देश प्रेम और राष्ट्र प्रेम का स्वर गूँजता हुआ दिखलाई पडता है, वहाँ वीररस की सफल अभिव्यक्ति हुई है । वीर रसात्मक- रचनाओंमें निम्नलिखित बातें उल्लेखनीय है --
१- सेना से सम्बन्धित गीत ,२- देश को पराधीनता से मुक्त करने के ओज भरे गीत ,३- भावुक और देश भक्तों द्वारा प्रस्तुत स्वतंत्र ,ओजस्वी-गीत।

भारतदेश वीरों का है । भारत भूमि 'वीर भोग्या वसुन्धरा' है । इस भूमि पर राणाप्रताप, शिवाजी ,सुभाष,भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, लक्ष्मीबाई जैसी त्याग और वीरता की मूर्तियां अवतरित हुई , जिन्होंने देश को गौरवान्वित किया । इन्हीं को आधार बनाकर कई फिल्मे बनी जैसे- वीर दुर्गादास, छत्रपति शिवाजी, महारानी झांसी, जय चितौड, पृथ्वीराज चौहान, शहीद, अमरसिंह राठौर आदि । इन

१-उत्साध्मू: स च दयारण दान योगात् त्रेधा किलाम मति गर्व घृति प्रहर्षा:
घनंजय-, हिन्दी साहित्य दर्पण-व्याख्याकार-डा०सत्यव्रत सिंह
पृ०- २५६

२- नयादि विभाव: स्थैर्याधिनुभावो घृत्यादि व्यभिचारुतासो धर्म-दान युद्ध-भेदन वीर: - हेमचन्द्र - वही

फिल्मों में प्रसंग वश देशके अनेक सुन्दर और प्रवाह पूर्ण गीत रखेगये जो देश के लिए बलिदान करने के लिए प्रेरणा देते है। 'वीर'-दुर्गादास' के एक गीत का उदाहरण इस सन्दर्भ में देखें --

बढे चलो !
सिंह से दहाड के, जुल्म के पहाड पर
बढे चलो, बहादुरो बढे चलो।[१]

इस गीत में उत्साह की अभिव्यक्ति अत्यन्त सुन्दर ढंग से हुई है। गीत का एक-एक शब्द वीर रस का संचार करने मे समर्थ है।सैधान्तिक दृष्टि से इस गीत में वीर-रस की सारी सामग्री प्रस्तुत है -- सैनिक- आश्रय, शत्रु- आलम्बन, जुल्म- उद्दीपन, सैनिकों का सिंह के समान दहाडना,आंखो से क्रोधाग्नि निकलना- अनुभाव हैं। पूर्वजों को बलिदान का स्मरण, शत्रु के अत्याचार जन्य उनकी उग्रता- धृति, स्मृति आदि संचारी भाव है।

भारतदेश सदियों से पराधीन रहा। देश को इस पराधीनता से मुक्त कराने के लिये ओज भरा सन्देश अनेक फिल्मी गीतों में मिलता है।जैसे--

१- आज हिमालय की चोटी से,फिरहमने फिर ललकारा है
दूर हटो ऐ दुनिया वालों ! हिन्दुस्तान हमारा है।[२]

२- नौजवानो ! भारत की तकदीर बनादो,
फूलो के गुलशन से कांटों को हटा दो।[३]

भावुक और देश-भक्तिपूर्ण ओजस्वी गीत अनेक फिल्मों में मिलते है जैसे --

---

१- फिल्म - वीर दुर्गादास गीतकार- पं० भरतव्यास
२- ,, किस्मत ,, पं० प्रदीप
३- ,, कुन्दन ,, राजेन्द्रकृष्ण

१- हम अपनी आजादी को, हरगिज मिटा सकते नहीं ,
सर कटा सकते हैं लेकिन, सर झुका सकते नहीं ।[१]

२- दुनिया की ताकतों से करने मुकाबला ,
आज एशिया के लोगों का काफिला चला

--- --- ----

परदेसियो भागो यहां से अब न करो देर ,
जागा है इन्कलाब से पूरब का बबर सेर ।[२]

३- बिगुल बज रहा आजादी का, गगन गूंजता नारों से ,
मिला रही है आज हिन्द की, मिट्टी नजर सितारों से
एक बात कहनी है, लेकिन आज देश के प्यारों से
जनता से, नेताओं से, फौजों की खडी कतारों से
संभल के रहना अपने घर में, छिपे हुए गद्दारों से ।[३]

४- वतन पर जो फिदा होगा, अमर वो नौजवां होगा ।[४]

इस प्रकार देखते है कि अनेक हिन्दी फिल्में -जैसे -- हिन्दुस्तान की कसम, धर्मपुत्र, उपकार, पूरब पश्चिम, शहीद ,क्रान्ति, सुभाष चन्द्र बोस, हम एक है, काबुली खान, तलाक, नयादौर, गंगाजमुना आनन्दमठ, हकीकत, कीमत, मुझे जीने दो, अपना घर,आदि में वीर-रस से सम्बन्धित गीतो का सुन्दर प्रयोग मिलता हैं।

हास्यरस और हिन्दी फिल्मीगीत :-

जीवन में हास्य का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है।हास्य से हमें अपूर्व आनन्द प्राप्त होता है, हृदय को एक अनोखी तृप्ति मिलती है। किसी काम से हम जब बेहद थक जाते है तो उस थकान का परिहार हास्य की छींटोंसे होता है और हम तरो-ताजा हो जाते है ।

१- फिल्म -लीडर- गी०- शकील , २-फिल्म-काफिला गी०आनंदबक्शी
३- फिल्म -तलाक ,, -पं०प्रदीप, ४- ,, -फूलबने अंगारे- ,,

डा० हरि शंकर शर्मा के शब्दों में --

` हास्य वह मिश्री है जो उपदेश की कड़ुवी कुनैन को भी मीठा बना देता है कि छोटे छोटे बच्चे से लेकर बड़े-बूढ़े तक उसे बड़ी रुचि से चाट जाते है ।[1]

बाबू गुलाबराय ने जीवन में हास्य की उपादेयता पर प्रकाश डालते हुये अपने विचार कुछ इस प्रकार व्यक्त किये है --

` हास्य से भौतिक और मनोवैज्ञानिक लाभ भी है। हंसने से हमारे फेफड़ों का व्यायाम हो जाता है । उच्छ्वास के बढ़ने से रुधिर संचार तेज हो जाता है। सबसे बड़ा मनोवैज्ञानिक लाभ यह है कि हास्य मानसिक तनाव को दूर कर देता है और चिन्ता को दूर कर मन को हलका कर देता है । [2]

विभिन्न वेशभूषा, वाणी, और चेष्टाओं से `हास` नामक स्थायी- भाव पुष्ट होकर हास्य-रस बन जाता है । कहने का तात्पर्य यह है कि किसी व्यक्ति और वस्तु की साधारण के स्थान पर अनोखी अथवा किसी की विचित्र ढंग की वेशभूषा, वार्तालाप और अनोखी चेष्टाओं एवम् क्रिया को देखकर हृदय में हास्य रस का प्रादुर्भाव होता है ।---

विकृताकार वाग्वेषा चेष्टादे: कुहुका दूभवेत ।
हास्यो हासस्थायिभाव ------- ।[3]

हास्य रस का स्थायी भाव `हास` है। विकृत आकृति वाला व्यक्ति या पदार्थ इस भाव का आलम्बन है। आलम्बन की अनोखी बातें , चेष्टाएँ आदि उद्दीपन है। आश्रय की मुसुकराहट, हँसी ताली, हँसते हँसते आंसू आ जाना अनुभाव है तथा हर्ष, चपलता, उत्सुकता आदि इसके संचारी भाव है ।

१- रस रत्नाकर- हरिशंकर शर्मा - पृ० २१५
२- नवरस - बाबूगुलाबराय - पृ० १०४
३- साहित्य दर्पण- विश्वनाथ - पृ० ३।२१४

काव्य शास्त्रियों ने हास्य के छः भेद बतलाये है --

स्मिति, हँसति , विहँसति , अवहँसति , अपहँसति, अतिहँसति, हास्य के दो अन्य भेद भी माने गये हैं --

आत्मस्थ और परस्थ, आत्मस्थ हास्य वह है जिससे किसी विकृति वस्तु को देखकर आनन्द हो और परस्थ हास्य वह है जो दूसरे व्यक्ति को हँसते हुए देखकर उत्पन्न होता है --

हिन्दी फिल्मों में भी अनेक हास्य गीत मिलते है जिनमें हास्य का भाव निहित रहता है, पर वह उच्चकोटि का नहीं कहा जा सकता है। हिन्दी फिल्मों में उपलब्ध हास्य गीतों के कुछ उदाहरण प्रस्तुत है --

१- तेरे पूजन को भगवान
बनाऊं बैंक में आलीशान ।। [१]

२- ये स्वदेश भक्त इनकी शान देखिये
खद्दर के नीचे रेशमी बनियान देखिये ।[२]

३- एक पाट से चले ना चक्की,
एक हाथ से बजे ना ताली,
घर की रौनक है घरवाली।[३]

४- मेरा नाम है,कैलेन्डर मैं तो चला किचिन के अन्दर।[४]

१- फिल्म-	शादी	गीतकार	राजेन्द्र कृष्ण
२- ,,	मि०सम्पत	,,	राजेन्द्रकृष्ण
३- ,,	बन्दी	,,	राजेन्द्रकृष्ण
४- ,,	मि० इण्डिया	,,	अन्जान

एकफूल दो माली, रातों की रानी चोरों का राजा, रातों का राजा , घराना, आदि फिल्मों में पैरोडी गीत भी हास्य प्रस्तुत करने में सफल है कभी-कभी ऊटपटांग शब्दावली भी हास्य योजना में सफल होती है। जैसे --

हम तुम से मुहब्बत करेगा, दुनिया से नहीं डरेगा ।[१]

इस प्रकार कहा जा सकता है कि हिन्दी फिल्मों में अभिनय द्वारा जो हास्य की अभिव्यन्जना होती है वह दर्शकों पर अपना प्रभाव अधिकदेर तक छोडती है जबकि गीतों की हास्य योजना उतनी नहीं ।

शान्तरस और हिन्दी फिल्मी गीत:-

श्रृंगार रस के उपरान्त हिन्दी चलचित्र गीतों में शान्तरस की अभिव्यक्ति अधिक दिखलाई पडती है ।संसार की असारता, वस्तुओं की नश्वरता, परमात्मा की सत्ता, एवम् भक्ति के वर्णन में शान्तरस का प्रादुर्भाव होता है । हिन्दी फिल्मों में इस प्रकार के शान्त-रस-परक अनेक रचनायें मिलती हैं ।

भारतवर्ष धर्म परायण देश है।यहाँ परमात्मा की सत्ता में विश्वास रखते हुये भक्तिभावना को उच्चस्थान दियागया है ।

शम स्थाईभाव का आस्वादन शान्तरस है इस रस का उद्रेग उत्तम प्रकृति के व्यक्तियों में होता है ।[२] कतिपय आचार्यों ने शान्तरस का स्थाई भाव निर्वेद माना है। आचार्य मम्मट के अनुसार भी निर्वेदशान्तरस का स्थाई भाव है ।[३]

१- फिल्म - दिल्ली का ठग- गीतकार- राजेन्द्र कृष्ण

२- शान्त: शमस्थायिभाव उत्तम प्रकृतिंगत: । ३-२४५ साहित्य दर्पण

३- निर्वेद: स्थायिभावोऽस्ति शान्तो पिऽनवमो रस: ।
काव्य प्रकाश, चतुर्थ -उल्लास ।

आचार्य अभिनवगुप्त ने भी निर्वेद स्थाई भाव को स्वीकार किया है।[1]- इसमें सन्देह नहीं कि आचार्य अभिनव गुप्त की धारणा पर ही आचार्य मम्मट की धारणा आधारित है। इसके विपरीत विश्वनाथ कविराज ने शम की महत्ता निर्धारित की है। दशरूपक कार का भी यही मत है जिसमें शाँति के स्थाईभाव के रूप में शम का निरूपण किया गया है।[2] आचार्य आनन्द वर्धन ने शांत के स्थाईभाव के रूप में तृष्णाक्षय सुख का उल्लेख किया है।[3] जो निर्वेद तृष्णा क्षयसुख व शम का समीकरण स्थापित करते हुये सिद्ध किया है कि इनमें मूल भूत कोई तात्विक भेद नहीं है केवल शब्द भेद है। शम और निर्वेद दोनों आत्म स्वभाव रूप है।[4]

श्री विष्णु धर्मोत्तर ग्रन्थ में शान्तरस की व्याख्या करते हुये लिखा गया है कि जहाँ न सुख है न दुख: है, न द्वेष है न मालिन्य और जहाँ पर सब भूतों में समानभाव रहता है - वह शांत-रस कहा जाता है।[5]

१- तत्व ज्ञानजो निर्वेदोऽस्य स्थायी: - अभिनव भारतीय, पृ०२६६-६०

२- शम प्रकर्षोऽनिर्वाच्यो मुदिता देस्तदात्मता - दशरूपक, पृ० ४-४५

३- शान्तश्च तृष्णाक्षय सुखस्य य: परिपोषस्त लक्षणो
रस प्रतीयत एव।
- ध्वन्यालोक, उद्योत -३

४- हिन्दी साहित्य दर्पण - व्याख्याकार सत्यव्रत सिंह -
पृष्ठ- ३२

५- नास्ति यत्र सुखंऽख: न द्वेषो न च मत्सर: सम: सर्वेषु भूतेषु स-
शान्त: प्रथितो रस: ।।
नवरस- बाबूगुलाबराय - पृ० ५१६

इसमें उद्वेग और क्षोभ न होने के कारण इस रस को भरतादि नाट्याचार्यों ने रसोंमें स्थान नहीं दिया है, इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि शान्तरस में यद्यपि उद्वेग नहीं है, सुख (विषय-सुख) नहीं है। परन्तु उसमें अलौकिक सुख रहता है जो सुखों में सर्वोपरि है।[1] यह अलौकिक सुख ही रहा है। इस रस को वैष्णव रसों में प्रथम स्थान दिया गया है। भरतमुनि ने जो शान्त को स्वतन्त्र स्थान नहीं दिया, इसका कारण यह है कि शान्त का स्थायी भाव निर्वेद संचारी भावों में आ जाता है, फिर उसके दुहराने की उन्होंने कोई आवश्यकता नहीं समझी।[1]

'भक्ति-रसामृत-सिन्धु' में कहागया है कि निर्वेद का जब तत्व-ज्ञान से उदय होता है, तब उसविषय में स्थायी भाव माना जाता है और जब निर्वेद इष्ट वियोग तथा अनिष्ट प्राप्ति से होता है, तब उसे व्यभिचारी कहा जाता है।[2]

इस रस के देवता विष्णु हैं। संसार की असारता और अनित्यता का ज्ञान अथवा परमात्मा का स्वरूप बोध इसके आलम्बन हैं, सद्गुरु प्राप्ति, सत्संग, पवित्र आश्रम, पावन तीर्थ, रमणीय एकान्त वन, मृतक, श्मशान आदि उसके उद्दीपन हैं। रोमांच, आनन्दाश्रु, गद्गद् कण्ठ आदि इसके अनुभाव हैं, धृति, मति, हर्ष, स्मरण, प्राणियों पर दया आदि इसके संचारी भाव हैं।

१- यच्च काम सुखे लोके यच्च दिव्यं महत्सुखम्।
तृष्णा क्षय सुखस्येते नार्हतः षोडशी कलाम्।
-नवरस - बाबूगुलाबराय, - द्वितीय संस्करण, पृ०५१७

२- निर्वेदो विषये स्थायी तत्वज्ञानोद्भवः सचेत्, इष्टानिष्ट
वियोगाप्तिकृतस्तौ व्यभिचार्यसौ
-४- रत्नाकर- डॉ० हरिशंकर शर्मा पृ०४६८

हिन्दी चलचित्र गीतों में शान्त रस का परिपाक प्रार्थना एवम् आत्मनिवेदन, उपदेशात्मकता, जीव जगत एवम् माया के स्वरूप के निरूपण में हुआ है। ये गीत भाव एवम् भाषा की दृष्टि से उत्तम बन पड़े हैं।

हिन्दी फिल्मों में प्रयुक्त प्रार्थना-परक गीतों के कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं जिनमें शान्त-रस का सुन्दर निदर्शन हुआ है --

१- सुन लो पुकार, आज आई तेरे द्वार
लेके आंसुओं की धार,
विनती करुं मैं तोसे जग के खिवैय्या
डूब न जाये मेरी आशा की नय्या।[१]

२- ओ दुनिया के रखवाले, सुन दर्द मेरे नाले।[२]

३- मन तरपत हरिदर्शन को आज।[३]

४- वैष्णव जन तो तेने रे कहिए, जे पीर पराई जाने रे।

उपदेश- परक गीतों में जीव को संदेश दिया गया है कि उसे सांसारिक - आकर्षणों में नहीं उलझना चाहिये क्योंकि जीवन थोड़ा है। अत: इस थोड़े समय में उसे भगवान का भजन कर अपने जीवन को सफल बना लेना चाहिये। संसार की सभी बातें, , रिश्ते आदि झूठे हैं। अत: जीवन को सांसारिक रिश्तों की परवाह न करके बस केवल ईश्वर का भजन करना चाहिये। इस प्रकार का संदेश हमें हिन्दी-फिल्मी गीतों के माध्यम से मिलता है जो पूर्णरूप से शान्त-रस में पगा हुआ है। इस सन्दर्भ में कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं --

---

१- फिल्म- फूलऔरपत्थर गीतकार - शकील
२- ,, बैजू बावरा ,, शकील बदायूंनी
३- ,, बैजू बावरा ,, ,,
४- फिल्म नरसी भगत ,, नरसी मेहता

१- सजन रे झूठ मत बोलो, खुदा के पास जाना है ।
न हाथी है, न घोडा है, वहाँ पैदल ही जाना है।
तुम्हारे ये महल औ चौबारे, यहाँ रह जायेंगे सारे ,
अकड किस बात की प्यारे, ये सर फिर भी झुकाना है।[१]

२- तोरा मन दर्पण कहलाये ।
भले बुरे सारे कर्मों को देखे और दिखाए ।[२]

३- नेकी तेरे साथ चलेगी बाबा, साथ यही एक बात चलेगी बाबा ।
संग न देंगें बन्धु बराती, संग न देंगे जीवन साथी
जिनके लिये तूने महल बनाये वो न तुझे ठहरायेंगें
कैसा बाबुल, कैसी माता, मतलब का है हर एक नाता ।[३]

४- माटी के पुतले, मत कर तू अभिमान, पल भर का तू महमान।[४]

५- तू राम भजन कर प्राणी, तेरी दो दिन की जिन्दगानी
काया माया बादल छाया, मूरख मन काहे भरमाया ।[५]

६- सुन सुन रे जरा इंसान
किस पर करता है तू अभिमान, एक दिन आयेगा वो तूफान
कि मिल जायेगी जब माटी में, तेरी शान ।[६]

१- फिल्म- तीसरी कसम गीतकार- शैलेन्द्र
२- फिल्म- काजल ,, साहिर
३- फिल्म आंसू और मुस्कान,, राजेन्द्र कृष्ण
४- फिल्म ऊंची हवेली ,, भरतव्यास
५- फिल्म संत तुलसी दास ,, नैपाली
६- फिल्म महासती अनुसुय्या,, पं०भरतव्यास

७- काल का पहिया घूमे भय्या ,
लाख तरह इंसान चले ।
लेके चले बारात कभी तो ,
कभी बिना सामान चले ।[१]

८- पगले तेरी अजब कहानी अगिनी, रेत,हवा और पानी
जीवन तेरा एक खिलौना, सोचे क्या नादान ।[२]

शान्त रस-परक रचनाओं में जैसे एक ओर संसार की असारता, मानव- जीवन की क्षणभंगुरता का वर्णन किया गया है वहां दूसरी ओर भक्त उनमें परमात्मा के गुणों का गान करता हुआ अपनी भक्ति-भावना की पुष्प- भेंट चढाता हुआ अनुपम तृप्ति और शान्ति का अनुभव करता है । इस प्रकार के भाव हिन्दी चलचित्र गीतों में बहुत मिलते हैं --

१- न मैं धन चाहूँ न रत्न चाहूँ ,
तेरे चरणों की धूल मिल जाय श्याम मैं तर जाऊँ ।[३]

२- तोरा मनवा क्यूं घबराये रे ,लाख दीन दुखियारे प्राणी जग
में मुक्ती पाये रे ।[४]

३- मुझमें राम तुझमें राम सबमें राम समाया
सबसे करले प्यार जगत में, कोई नहीं है पराया रे ।[५]

१-	फिल्म-	चन्दा बिजली	गीतकार	भरतव्यास
२-	,,	अन्न दाता	,,	आनन्द बख्शी
३-	,,	कालाबाजार	,,	शैलेन्द्र
४-	,,	साधना	,,	साहिर
५-	,,	परदेशी	,,	प्रेम धवन

शान्त-रस की मन्दाकिनी में प्रेम-सलिल प्रवाहित होता है उसमें अवगाहन करने पर जीव प्रेम में आकण्ठ निमग्न हो जाता है । वह वैर-भाव को भूल कर राग-द्वेष से मुक्त होता हुआ सबमें भगवान के दर्शन करता है तथा सबको प्रेम का संदेश देता है ।--

१- बड़े प्यार से मिलना सबसे, दुनिया में इन्सान रे
न जाने किस वेष में बाबा, मिल जायें भगवान रे ।[१]

२- ज्योति से ज्योति जगाते चलो, प्रेम की गंगा बहाते चलो ।[२]

ईश्वर बड़े दयालु हैं । अपनी गलती को जब मानव हृदय से स्वीकार कर लेता है और पूर्णरूप से जब वह अपने को ईश्वर में समर्पित कर देता है तो करुणा-सागर प्रभु उसे अपनी शरण में ले लेते हैं । इस सन्दर्भ में हरिश्चन्द्र-तारा मती फिल्म में भगवान के सम्मुख भक्त का,संसार के जीव का निवेदन देखने योग्य है --

मैं एक नन्हा सा, छोटा सा बच्चा हूं
तुम हो बड़े बलवान, प्रभु जी मेरी लाज रखो ।

--- --- ---

मैं आया हूं आज तुम्हारे द्वार पे आस लगाये
ऐसा कोई जतन करो प्रभु सांच को आंच न आये
मैं एक नन्हा सा------------------- ।[३]

इस प्रकार देखते हैं कि इन फिल्मी गीतों में जीव और जगत की नश्वरता एवम् असारता के एक नहीं अनेक चित्र मिलते हैं । जिनके श्रवण- मात्र से वैराग्य एवम् निर्वेद जन्य शान्त-रस से सम्बन्धित हिन्दी चलचित्र-गीतों में निहित भाव मध्यकालीन संत-

---

१- फिल्म सती अनुसूया गीतकार भरतव्यास
२- ,, सन्त ज्ञानेश्वर ,, भरत व्यास
३- ,, हरिश्चन्द्र तारामती ,, प्रदीप

साहित्य से अधिक प्रभावित दीख पड़ते हैं। कबीर आदि सन्तों की अनेक पंक्तियों को इनमें तोड़ मरोड़ कर अपना लिया गया है। मीरा के हृदय में कृष्ण के वियोग से उत्पन्न उठने वाली टीस की करुण पुकार सुनाई पड़ती है। अतः कहा जा सकता है कि हिन्दी-चलचित्र गीत जहां मनोरंजन प्रदान करते हैं, वहाँ जन मानस में व्याप्त निराशा कुण्ठा एवम् विषाद को दूर कर जीव के हृदय में आशा की किरण का संचार करते हुये उन्हें ईश्वर- भक्ति की ओर उन्मुख करते हैं।

हिन्दी फिल्मी गीत और वात्सल्य रस:-

वात्सल्य रस को पहले संतान-विषयक रति से उत्पन्न एक भाव- मात्र माना जाता था। अधिकतर आचार्यों ने काव्य में नौ रसों को स्थान दिया था। और वात्सल्य रस को स्वतंत्र रस का स्थान न देकर उसे श्रृंगार के ही अन्तर्गत माना था।

आचार्य सोमेश्वरने स्नेह, भक्ति और वात्सल्य तीनों को रति का ही भेद माना था। उनके अनुसार बराबर के व्यक्तियों की रति `स्नेह` कहलाती हैं। उत्तम में अनुत्तम अर्थात पिता में पुत्र या गुरु में शिष्य की रति `भक्ति` कहलाती है और अनुत्तम में उत्तम अर्थात् पुत्र में पिता या शिष्य में गुरु की रति वात्सल्य कहलाती है।[१]

१- स्नेहो भक्तिर्वात्स्ल्यमिति रतेरेव विशेषाः
तेन तुल्ययोरन्योन्यं रति स्नेह अनुत्तमस्योत्तमे,
रतिभक्ति उत्तस्यानुत्मेरतिर्वात्स्त्रल्यम्।

-"नव रस", डॉ० बाबूगुलाबराय, द्वितीय संस्करण - पृष्ठ- ५४० से उद्धृत।

वात्सल्य को दसवाँ रस मानने वालों में प्रमुख आचार्य है- विश्वनाथ ।[१] हिन्दी में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और 'हरिऔध' भी इस मत के समर्थक हैं ।[२]

बालकों की सुन्दर स्वम् मनोहारी लीला को देखकर माता-पिता का हृदय प्रफुल्लित हो उठता है । और ऐसी स्थिति में उनके हृदय में आनन्द की लहरे उठने लगती हैं , उनके हृदय में असीम स्नेह का भाव जाग्रत हो उठता है । इस भाव को रस-दशा तक पहुँचाने में जिन विभाव, अनुभाव और संचारी भावों की आवश्यकता होती है -- वे सब वात्सल्य में भी विद्यमान हैं । वात्सल्य-रस का स्थायी भाव वत्सलता रूपी स्नेह, पुत्रादि आलम्बन और बालक की चेष्टाएँ ,व्यापार आदि उद्दीपन है । - आलिंगन, सिर चुम्बन, आनन्दाश्रु आदि इसके अनुभाव और अनिष्ट, आशंका , हर्ष, गर्व आदि संचारी भाव हैं ।

शृंगार के समान वात्सल्य रस के भी दो भेद है--

१- संयोग वात्सल्य और २- वियोग वात्सल्य ।

संयोग वात्सल्य में माता-पिता के उस स्नेह का चित्रण किया जाता है जब बालक उनकी आंखों के सामने होता है। दूसरे में सन्तान के बिछुड जाने पर जो स्नेह- सागर उमडता है तथा हृदय की जो दशा होती है , उसे वियोग वात्सल्य कहते हैं ।

१- वात्सलश्च रस इति तेन स दशमो मत: ।
स्फुटंचमत्कारतया वत्सलंच रसंविदु: ।।(साहित्यदर्पण-३।२४५)

२- 'रस रत्नाकर' - पं० हरिशंकर शर्मा, प्रथम संस्करण -पृ०६०७

हिन्दी चित्रपट गीतों में वात्सल्य- रस के कुछ सुन्दर उदाहरण मिलते हैं जिनमें दोनों पक्षों का मार्मिक चित्रण हुआ है । संयोग-वात्सल्य के कतिपय उदाहरण प्रस्तुत हैं --

१- मेरा नन्हा कन्हैया घर आया रे ,
मेरा जिया सहज हरसाया रे ,
आज गगन में चन्दा देखा आज फूल ने हसना सीखा

--- --- ---

घुटनों के बल चले छबीला, आंचल पकड़े करमा हठीला
लाल लाडले ! तुझको पाकर मैंने सब कुछ पाया रे ।[१]

इस गीत में नन्हा कन्हैया आलम्बन, नन्हें कन्हैया का हँसना, मुसकाना, घुटनों के बल चलना, आंचल पकड़ कर हठ करना आदि उद्दीपन । माता का पुलकित होना अनुभाव माना जायेगा तथा हर्ष आदि संचारी भाव ।

२- मुस्करा लाडले मुस्करा ,
कोई फूल इतना नहीं खूबसूरत
है जितना ये मुखड़ा तेरा

-- -- --

तुझको देखा जो वो दिन याद आने लगे ,
आंखों के बुझते दिये झिलमिलाने लगे ।
मैं तेरे जैसा ही था वैसा ही था ।[२]

इस गीत में पिता का सन्तान के प्रति स्नेह दर्शाया गया है । ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार सूर ने नन्द-बाबा के वात्सल्य भरे हृदय की झाँकी सूर सागर में प्रस्तुत की है ।

१- फिल्म - भाभी की चूड़ियां- गीतकार पं० नरेन्द्र शर्मा

२- फिल्म- जिन्दगी ,, शैलेन्द्र

३- अम्मी का दुलारा मुन्ना बड़ा प्यारा
कोई कहे चाँद, कोई कहे तारा ।[१]

४- मेरी गोदी में गोपाला, मन में मगन हो अंखियां मीचूं
दूध की धार से बिरवा में सींचूं
नैनों की ज्योति ममता का मोती, अंगना का उजियाला,
-- -- -- --

गोदी मे मेरे त्रिलोक समाया,
रूप ठगे ना, नजर लगे ना, टीका लगाऊं एक काला ।[२]
--- --- --- ---

५- मैया मेरी ! मैं नहिं माखन खायो ।[३]

६- ठुमुक चलत रामचन्द्र, बाजत पैजनियां ।[४]

इस प्रकार देखते हैं कि वियोग वात्सल्य की अपेक्षा हिन्दी फिल्मी गीतकारों ने संयोग वात्सल्य के चित्र गीतों के माध्यम से मनोहारी एवम् सजीव खीचे हैं । संयोग वात्सल्य के सम्बन्ध में - मैं चुप रहूंगी, तेरे मेरे सपने , अमर प्रेम, कृष्ण गोपाल, कृष्णा-कृष्णा, पनघट , भक्त कवि सूरदास, चिन्तामणि ,हम हिन्दुस्तानी, आदि फिल्में भी उल्लेखनीय है । --

वियोग वात्सल्य के वर्णन भी हिन्दी फिल्मी गीतों में मिलते हैं, पर ये बहुत थोडे हैं इस सन्दर्भ में कुछ उदाहरण अवलोकनीय है--

---

१- फिल्म - मुसाफिर गीतकार- शैलेन्द्र
२- फिल्म - बाबा बालकनाथ ,, पं०भरतव्यास
३- ,, चरनदास ,, सूरदास
४- ,, तुलसीदास ,, तुलसीदास

१- कन्हैया । तू किसको कहेगा अपनी मैया ।[१]

२- आ मेरे लाल आजा तुझको गले लगा लूँ
दिल में तुझे छिपा लूं ।

---- ---- ----

तेरे लिए हुई पागल , आखिर को माँ हूँ।तेरी जग मे रहे तू जिन्दा , उजडे ना गोद मेरी।एक बार अपने हाथों, दूल्हा तुझे बना लूँ ।[२]

इस गीत में माँ का प्राण प्यारा और नयनो का तारा बेटा उससे विमुक्त हो गया है -- रुठ कर चला गया है । माँ की ममता उसके लिए बेचैन है । उसकी आंखे उसे ढूढ रही हैं , हाथ उसे छूना चाहते हैं और हृदय उसे गोद में भर लेना चाहते है । बेटे से बिछुडी माँ के हृदय की इस ममता और व्याकुलता का जो चित्र उपर्युक्त फिल्मी गीत में अंकित किया गया है वह अत्यन्त सजीव है।पुत्र वियोग में बिलखती माँ का जैसे चित्र सामने आता है।" एक बार अपने हाथों से दूल्हा तुझे बना लूँ।" इस अन्तिम पंक्ति में माँ के हृदय की लालसा भी दर्शनीय है - कितनी सच्ची, कितनी स्वाभाविक ।

इसी प्रकार के भाव फिल्म " धूल का फूल " में भी मिलते हैं --

तू मेरे प्यार का फूल है कि मेरी भूल है ,
कुछ कह नहीं सकती । पर किसी का किया तू भरे
यह सह नहीं सकती ।
सुन सुन ताने मेरी कोख जलेगी ।
मेरी बदनामी तेरे साथ पलेगी ।।[३]

१- फिल्म मालिक गीतकार आनन्दबक्शी
२- ,, मदर इण्डिया ,, शकील

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि वात्सल्य-वर्णन में हिन्दी-फिल्मी -गीतकारों का अप्रतिम योगदान है ।

करुण रस और हिन्दी फिल्मी गीत:-

'शोक' स्थायी भाव से अभिव्यंजित होने वाला रस 'करुण' संज्ञा से अभिहित किया गया है । इष्ट नाश एवम् अनिष्ठ प्राप्ति से इसका आविर्भाव सम्भव है ।[1] महाकवि भवभूति के 'एकोरस: करुण एव' के अनुसार समस्त रसों का मूल करुण-रस है ।[2] करुण रस का स्वरूप निर्मल नवनीत सा स्निग्ध , सुष्ठु सरस, एवं दिव्य माना गया है । इसके द्वारा मानव- हृदय से उत्तमोत्तम सुकोमल भावों का उदय होता है । इसमें निहित शुद्धता, सहृदयता और सहानुभूति के तत्व मानव हृदय में अमल अलौकिकता का संचार करते हैं ।

सारांश रूप में कहा जा सकता है कि जिस काव्य को पढ़कर या श्रवण कर आंसू भर आवे तथा करुणा का भाव हृदय में उत्पन्न हो जाये उसमें करुण- रस होता है । हिन्दी चलचित्रों में भी करुण- रस से पुष्ट अनेक गीत मिलते हैं जो अत्यन्त मार्मिक एवम् हृदय स्पर्शी बन पड़े हैं। कतिपय उदाहरण इस सन्दर्भ में अवलोकनीय है -

१- गम दिये मुस्तकिल, कितना नाजुक है दिल
ये ना जाना, हाय-हाय ये जालिम जमाना ।[3]

१- इष्ट नाशादनिष्टाप्तै करुणाख्यो रसो भवेत् - साहित्यदर्पण,पृ०३।२२२

२- एको रस: करुण एव निमित्तभेदाद
भिन्न: पृथक पृथगिवाश्रयते विवर्तान् । भवभूति- उ०रा०-३।४७

३- फिल्म - शाहजहां गीतकार मजरूह

२- मेरा सुन्दर सपना बीत गया
मैं प्रेम में सब कुछ हार गई
बेदर्द जमाना ए जीत गया ।[१]

३- छोड बाबुल का घर, मोहिं पिय के नगर
आज जाना पडा ।[२]

४- मेरी कहानी भूलने वाले, तेरा जहां आबाद रहे ।[३]

५- मरना तेरी गली मे जीना तेरी गली में
मिट जायेगी हमारी दुनिया तेरी गली में
तुझको खबर न होगी, मरने के बाद होगी
चर्चा तेरी गली में, जीना तेरी गली में
मरना तेरी गली मे ।[४]

६- किस्मत फूटी दुनिया रुठी, छूटे सभी सहारे ।
पेट की खातिर बने भिखारी फिरते दर-दर मारे ।
आँखें से अन्धा बाबू मेरा पग पग ठोकर खाये ।
एक पैसा दे दे । ओ बाबू ।[५]

७- सुर ना सजे , क्या गाऊँ मैं
सुर के बिना जीवन सूना, दोनों जहाँ मुझसे रुठे
तेरे बिना ये गीत भी झूठे ।[६]

१-	फिल्म-	दो भाई	गीतकार	राजामेंहदी अली खां
२-	,,	बाबुल	,,	शकील
३-	,,	दीदार	,,	,,
४-	,,	शबाब	,,	,,
५-	,,	वचन	,,	रवि
६-	,,	बसन्त बहार	,,	शैलेन्द्र

८- दुनिया में हम आए हैं, तो जीना ही पडेगा
जीवन है अगर जहर ,तो पीना ही पडेगा ।[१]

९- पिय के घर आज प्यारी दुलहनियाँ चली,
रोयें माता-पिता उनकी दुनियां चली ।
भइया बहिना के दिल को लगी ठेस ।[२]

१०- आँसू भरी हैं ये जीवन की राहें,
कोई उनसे कहदे, हमें भूल जायें ।
---- ---- -----
बरबादियों की अजब दास्तां हूं
शबनम भी रोये मैं अजब दास्ताहूं ।[३]

११- बाबुल की दुआएँ लेती जा
जा तुझको सुखी संसार मिले ।[४]

राखी गीतों, बाबुल गीतों कजरी गीतों आदि में भी करुणा का स्वर मुखरित होता हुआ दिखलाई पडता है ।जैसे --

१- बहिन बसी हो देश पराये,
तुम तक अगर वह पहुंच न पाए ,
तो याद का दीपक जलाना ।[५]

२- खुशी खुशी कर दो विदा ,
रानी बेटी राज करेगी ।[६]

१- फिल्म- मदर इण्डिया गीतकार- शकील
२- ,, बाबुल ,, शकील
३- ,, परवरिश ,, हसरत जयपुरी
४- ,, नीलकमल ,, साहिर लुधियानवी
५- ,, छोटी बहिन ,, शैलेन्द्र
६- ,, आखीरात ,, कैफी आजमी

३- सजनवा बैरी हो गये हमार ,
चिठिया हो तो हर कोई बांचे ,
भाग्य ना बांचे कोय ।
बलमवा बैरी हो गये हमार ।
--- --- ---

छटपट तड़पे ,मीत बेचारी
ममता आंसू रोय ,
न कोई इस, पार हमारा
न कोई उस पार ।
सजनवा बैरी हो गये हमार ।[१]

४- अब के बरस भेजे भइया को बाबुल ,
सावन में लीजो बुलाय रे ।
लौटेंगी जब मेरी बचपन की सखियां
दीजो संदेसा भिजवाय रे
महुआ तले फिर से झूले पड़ेंगे
रिमझिम पड़ेंगी फुहारें
लौटेंगी फिर तेरे आंगन में,
सावन की ठंडी बहारें ।[२]

इन गीतों के अतिरिक्त करुण-रस से युक्त अनेक गीत हैं जो निम्नलिखित हिन्दी-फिल्मों में उपलब्ध होते हैं --
उपकार, पूर्व पश्चिम, धरती कहे पुकार के, मिलन, सुहाग, भरोसा, काली टोपी लाल रुमाल, रेशमी रुमाल, फागुन, मजदूर, मासूम, दस लाख, जोशीला, सुजाता, भाभी, भाभी की चूड़ियां, हरे कांच की चूड़ियां।, माई फ्रेंड ,गर्लफ्रेंड ,गीत गाया पत्थरों ने, उजाला,आवारा,

---

१- फिल्म - तीसरी कसम गीतकार शैलेन्द्र
२- फिल्म - बन्दनी ,, ,,

आह, आग, हम दोनों, दो बदन, दिल ने फिर याद किया, पालकी, ममता, देवर, दिल दिया दर्द लिया, अफसाना, दर्द, नागमन्दिर , मेरा साया, राज, लाल किला, नौनिहाल, राजा और रंक, खिलौना, खामोशी, दोस्ती ,कटी पतंग ,सफर ,आनन्द, नमक हराम, प्यासा , यहूदी, घर का सुख, एक फूल दो माली, ताकत, कर्मा ,डोली आदि ।

हिन्दी फिल्मी गीतों में श्रृंगार, करुण ,वीर, वात्सल्य, हास्य आदि रसों का सुन्दर चित्रण हुआ है । इन रसों के अतिरिक्त जैसे वीभत्स, भयानक, रौद्र रसों का चित्रण न के बराबर है । एकाध गीतों में कहीं-कहीं अद्भुत- रस की छटा देखने को मिल जाती है, जैसे -- `बूंद जो बन गयी मोती ``तूफान और दिया` आदि फिल्मों में ।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि रस-परिपाक की दृष्टि से ये हिन्दी फिल्मी गीत उत्कृष्ट हैं तथा रसों केप्रयोग से ये गीत हृदय- स्पर्शी एवम् मनोहारी बन पड़े हैं । रसों के प्रयोग से इन गीतों के काव्य सौन्दर्य में भी अभिवृद्धि हुई है ।

अध्याय - ५

अलंकार और हिन्दी चलचित्र- गीत

अध्याय - ५

अलंकार और हिन्दी चलचित्र- गीत

मानव एक सौन्दर्यप्रिय प्राणी है । वह अपने प्रत्येक कार्य को अलंकृत रूप में करना चाहता है । इसी सहज वृत्ति के आधार पर सृष्टि का भावुक प्राणी कवि अपने काव्य में एक ओर सुन्दर भावों का संयोजन करता है , वहाँ दूसरी ओर उसमें सौन्दर्य वृद्धि के लिए प्रयत्नशील रहता है । काव्य में इनमे से प्रथम को भाव पक्ष एवम् दूसरे को कला-पक्ष कहते हैं । एक श्रेष्ठ काव्य में दोनों हीकासम्यक् निर्वाह अपेक्षित है ।भाव-पक्ष के अन्तर्गत रस, तथा अन्यान्य भावादि आते हैं तथा कला-पक्ष के अन्तर्गत अलंकार, भाषा तथा छन्द पर विचार किया जाताहै ।

भारतीय साहित्य-शास्त्र में अलंकार अपना विशिष्ट स्थानऔर महत्व रखते हैं । साहित्य को सुसज्जित करने वाले उपादान के रूप में तो अलंकारों का विवेचन अति प्राचीन काल से होता आ रहा है । कुछ आचार्यों ने इन्हें ~~क्~~ काव्य के प्राण-भूत तत्व के रूप में प्रतिष्ठित करके अलंकार-सम्प्रदाय की स्थापना की ।

अलंकार- सम्प्रदाय के प्रधान प्रवंतक वामन ने `काव्यं ग्राह्नमलंकारात् सौन्दर्यमलंकार :' कह कर अलंकार को सौन्दर्यवाची माना है । भामह से पूर्व अलंकार शब्द काव्य के वाह्य एवम् आन्तरिक दोनों रूपों को अलंकृत करने वाले सभीउपादानों के लिए प्रयुक्त होता था । अत: साहित्यशास्त्र के स्थान पर भी अलंकारशास्त्र शब्द प्रचलित था ।

अलंकार शब्द का अर्थ है, - आभूषण । जैसे आभूषण ` शरीर की शोभा बढाते है, उसी प्रकार अलंकार काव्य की।वस्तुत: काव्य कीशोभा बढाना ही अलंकारों की उपयोगिता है । अलंकार जैसे - उसीप्रकार उसके उत्कर्ष के काव्योत्कर्ष के लिए प्रयुक्त किये जाते है । बिना शब्द और अर्थ को ध्यान में रखते लिए भी उनकाप्रयोग हो सकता है ।

हुए जब किसी रचना में अलंकारों का जमघट लगा दिया जाता है तो उसमें वह रचनासरस न होकर नीरस तथा बोझिल हो जाती है ।

अलंकार वादी आचार्य केशव के साथ भी कुछ ऐसी ही स्थिति रही है । अलंकारों की भरमार के कारण उनकी रामचंद्रिका, अलंकारों का अजायबघर बन कर रह गई है । अतः काव्य में अलंकारों का सम्यक प्रयोग ही उसके सौन्दर्य में अभिवृद्धि का कारण बनता है ।

प्रमुख काव्याचार्यों ने अलंकार को निम्नवत् परिभाषित किया है :--

१- शब्द और अर्थ का वैचित्र्य ही अलंकार है ।[१]

२- अलंकार काव्य को सौन्दर्य प्रदान करने वाले धर्म है ।[२]

३- अभिधान के एक प्रकार- विशेष को अलंकार कहते हैं ।[३]

भामह, दण्डी ,वामन, और रुद्रट - ये सभी आचार्य अलंकार वादी थे और अलंकार से इनका तात्पर्य काव्य के वाह्य रूप को अलंकृत करने वाले तत्व से ही नहीं है वल्कि रस गुण आदि काव्य की अन्तरात्मा को पुष्ट करने वाले सभी तत्वों का विकास इन्होंने अलंकारों के द्वारा ही मानकर काव्य से अलंकार का सम्वाह सम्बन्ध स्थिर किया है इसे वे काव्य का स्थिर धर्म मानते हैं ।[४]

१- वक्रोभिधेय शब्दोक्तिरिष्टा वाचामलं कृति : ।

२- काव्यशोभाकरान् धर्मानलंकारान् प्रचक्षते ।

३- अभिधान प्रकारविशेषा एव चालंकारा: ।

४- शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त -- डा० गोविन्द त्रिगुणायत, पृ० -२८३

ध्वनिवादी आचार्यों ने अलंकार को रस, भाव आदि के सहायक उपादान के रूप में काव्य का अस्थिर धर्म माना है। वे अलंकार का कार्य काव्य को सुसज्जित करना मात्र मानते हैं ।-- विश्वनाथ की परिभाषा इस सन्दर्भ में अवलोकनीय है --

'शब्दार्थयोरस्थिरा ये धर्माः शोभातिशायिनः ।
रसादीनुपकुर्वन्तोऽलंकारास्ते ऽङ्गदादिवत् ' ।[1]

- साहित्य दर्पण

अलंकार वादियों के दो वर्ग है -- पहले वर्ग में वे अलंकार शास्त्री आते है जो अलंकार को ही काव्य का सर्वस्व मानते है, तथा रस और ध्वनि को अलंकार के अन्तर्गत मानते है । दूसरे वर्ग में वे अलंकार शास्त्री आते हैं जो अलंकारों की पृथक सत्ता मानते है और रस-ध्वनि आदि की स्वतंत्र सत्ता स्वीकार करते है । अलंकार वादी आचार्य जहाँ काव्य की शोभा का मूलकारक अलंकार को ही मानते हैं और उससे हीन काव्य की कल्पना भी नहीं कर सकते , वहाँ रस-वादी अथवा ध्वनि-वादी आचार्य अलंकार को रस, भाव तथा विषय वस्तु के उत्कर्षों में सहायक तत्व मानते हैं। मम्मट का कहना है -- अलंकार के विना भी कविता उत्कृष्ट कोटि की हो सकती है । वे तो मात्र रसादि के तत्व है ठीक वैसे ही जैसे हार आदि शरीर की शोभा को बढाने वाले होते है ।[2]

१- 'अलंकार काव्य की शोभा बढाने वाले,रस भाव आदि के उत्कर्षों में सहायक शब्द और अर्थ के अस्थिर धर्म है, अंगद आदि आभूषणों के समान ही वे अस्थिर धर्म भी काव्य कहलाते है ।-
शास्त्रीयसमीक्षा के सिद्धान्त,गोविन्द त्रिगुणायत, पृ० २८४

२- उपकुर्वन्ति तं सन्तं येऽङ्गद्वारेण जातुचित् ।
हारादिवदलंकारास्तेऽनुप्रासोपमादयः ।।

- मम्मट - काव्य प्रकाश ।

जय देव आदि अलंकार वादियों ने मम्मट का खण्डन किया है और यहाँ तक लिख दिया है - 'यदि कोई विद्वान काव्य को अलंकार हीन स्वीकार करने में नहीं हिचकता तो वह अग्नि को भी शीतल स्वीकार नहीं करता ?'[१]

जयदेव के मत को काटते हुये आचार्य विश्वनाथ कहते हैं-- 'काव्य की शोभा बढ़ाने वाले जो शब्दार्थ अस्थिर धर्म अलंकार होते हैं- वे रसादि के उसी प्रकार उपकारक होते हैं जैसे आभूषण शरीर के ।'[२]

हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अलंकार की परिभाषा इस प्रकार दी है -' भावों का उत्कर्ष दिखाने और वस्तुओं के रूप, गुण और क्रिया का अधिक तीव्र अनुभव कराने में कभी कभी सहायक होने वाली युक्ति अलंकार है ।[३]

शुक्ल जी की इस परिभाषा से स्पष्ट है कि ध्वनि वादी और रस-वादी आचार्यों के समान शुक्ल जी भी अलंकारों को काव्य के अस्थिर धर्म मानते हैं क्योंकि परिभाषा में कभी कभी शब्द का प्रयोग इसी ओर संकेत कर रहा है ।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर स्पष्ट है कि उक्ति वैचित्र्य या उक्ति-चमत्कार अलंकार है पर रस-वादी आचार्य इसे नहीं मानते । वैसे

१- अंगीकरोति यः काव्यं शब्दार्थावनलंकृती ।
असौ न मन्यते कस्मादनुष्णमनलं कृती ।।
जयदेव ।

२- शब्दार्थयोरस्थिरा ये धर्माः शोभातिशायिनः ।
रसादीनुपकुर्वन्तोऽलङ्कारास्तेऽङ्गदादिवत् ।। — विश्वनाथ

३- शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त- पृ० २८४- डा० गोविन्द त्रिगुणायत।

अलंकारों का कार्य काव्य की शोभा को बढ़ाना है। और उसके सौन्दर्य में अभिवृद्धि करना है अत: अलंकारों का भाव में महत्वपूर्ण स्थान है। अलंकार काव्य की आत्मा- रस के सहायक है, और अभिव्यक्ति पक्ष का तत्व होने के कारण अलंकारों का काव्य में महत्वपूर्ण स्थान है।

हिन्दी चलचित्र गीतों में भी गीतकारों ने अलंकारों का प्रयोग किया है जिससे गीतों में सौन्दर्य की अभिवृद्धि हो सके , और उन्हें इस कार्य में सफलता भी मिली। परन्तु फिल्मी गीत जनता के गीत होने के कारण उनमें गीतकारों ने अलंकारों का प्रचुर प्रयोग नहीं किया है और न फिल्मी गीतकारों का अलंकारों के प्रति विशेष आग्रह ही रहा हैं। फिल्मी गीतकारों ने चमत्कार प्रदर्शन के लिए रीति-कालीन आचार्य कवियों की भाँति अलंकारों का प्रयोग नहीं किया , वे अनायास ही आ गये हैं।

अलंकार दो प्रकार के माने गये हैं --

१- शब्दालंकार

२- अर्थालंकार

१- शब्दालंकार :-

जहाँ काव्य में शाब्दिक चमत्कार होता है वहाँ शब्दालंकार होता है।

२- अर्थालंकार :-

जहाँ काव्य में अर्थगत चमत्कार का प्राधान्य होता है वहाँ अर्थालंकार होता है। --

फिल्मी गीतों में शब्दालंकारों में अनुप्रास को छोड़कर श्लेष, यमक, और वक्रोक्ति अलंकारों का प्रयोग न के बराबर हुआ है।

फिल्मी गीतकारों ने अर्थालंकारों का प्रयोग प्रर्याप्त मात्रा में किया है। इन गीतकारों के प्रिय अलंकार उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, सन्देह, प्रताप, रूपकातिशयोक्ति, विरोधाभास आदि रहे हैं।

हिन्दी फिल्मी गीतों के सन्दर्भ में इन अलंकारों के कतिपय नमूने प्रस्तुत है :-

१- अनुप्रास :-

१- ढूढो ढूढो रे साजना, मेरे कान का बाला।[१]

२- धीरे धीरे मचल रे दिल बेकरार, कोई आता है।[२]

३- चन्दन सा बदन चंचल चितवन ---- ।[३]

४- नगरी नगरी द्वारे द्वारे ढूढू रे सांवरिया।[४]

५- और हम झुके झुके, मोड़ पर रुके रुके उम्र के चढाव का उतार देखते रहे।[५]

६- चली राधे रानी अखियों में पानी।[६]

७- मेरे मन में बसे नन्द लाला।
सुन्दर सरस स्वस्थ सलोना सांवरा रूप निराला।[७]

८- बदले बदले मेरे सरकार नजर आते है।[८]

१- फिल्म- गंगा जमुना गीतकार शकील
२- फिल्म- अनुपमा ,, कैफी आजमी
३- ,, सरस्वतीचन्द्र ,, इन्दीवर
४- ,, मदरइण्डिया ,, शकील
५- ,, नई उमर की नई फसल ,, नीरज
६- ,, परिणीता गीतकार डी०एन०मघोप
७- ,, साक्षी गोपाल ,, भरतव्यास
८- ,, मजबूर ,, आनन्दबक्शी

२- रूपक:-

१- डूबा जब दिल की नैया सामने थे किनारे ।[१]

२- करती ज्योति अमृत से सिंचन, मंगल घर घर के
ज्योति- यसोदा, धरती- गैया , नील गगन गोपाल
कन्हैया , स्यामल छवि छलके ।[२]

३- मेरे प्राणों का हो गुंजन तुम मन-मयूर हो मेरे ।[३]

४- प्रीति- दुल्हन सजी है मन में , शहनाई बजी है ।[४]

५- दुख की नदिया जीवन नैया, आशा के पतवार लग ।[५]

६- काहे छलके नैनों की गगरी काहे बरसे जल ।[६]

७- `छोड गये जीवन- धन, प्राणों को फिर बांध विरह के बन्धन मे
मन भावन ।[७]

८- जीवन- नदिया बहती जाये शाम सवेरे दोपहरी ।[८]

९- छोड जगत को जोगी बनजा ओढ़ के प्रीति-दुशाला ।[९]

१०- हाय ! तोरी - नजर का दीवाना निशाना हूँ मैं ।[१०]

१- फिल्म - सफर गीतकार - इन्दीवर
२- ,, भाभी की चूडियां ,, नरेन्द्र शर्मा
३- ,, सती सावित्री ,, पं० भरतव्यास
४- ,, अंगुलिमाल ,, ,,
५- ,, धरती माता ,, पं० सुदर्शन
६- ,, मेला ,, शकील
७- ,, नलदमयन्ती ,, पं० भरतव्यास
८- ,,, रामूदादा ,, मजरूह सुल्तानपुरी
९- ,, शारदा ,, राजेन्द्र कृष्ण
१०- ,, सारंगा ,, भरतव्यास

११- जीवन- पथ के हम हैं मोती, मिले तो बने माला ।[१]

२- उपमा :-

१- चाँद सी महबूबा हो मेरी, कब मैंने ऐसा सोचा था ।[२]
२- बन ठन के मैं ऐसे निकली, जैसे सावन में चमके बिजली ।[३]
३- कारो रैना के माथे पै चमके चांद सी बिंदिया ।[४]

४- तपस्वियों सी हैं अटल ये पर्वतों की चोटियाँ ।[५]

५- खिले फूलसी तेरी जवानी, कोई बताये कहां कसर है ।[६]

६- नैनों मे अमृत के प्याले, तन नीलगगन सा निर्मल है ।[७]

७- चन्द्रमा सामुख था उसका, चन्द्रमुखी था नाम।[८]

८- मोती जैसा रंग, अंग में रस का सागर लहराये ।[९]
९- गोरे गोरे चाँद से मुखपर काली काली आंखे ।[१०]
१०- लचके मोरी सुतली सी कमरिया ।[११]

११- हाय ये कमिल सा जैसा चहरा, ये घनेरी जुल्फें ।[१२]

१- फिल्म - गीतकार-

२- ,,	नादान	,,	हसरत जयपुरी
३- ,,	हिमालय की गोद में	,,	आनन्दबक्शी
४- ,,	मुक्ती	,,	आनंदबक्शी
५- ,,	बूंद जो बनगई मोती	,,	पं०भरतव्यास
६- ,,	पुजारिन	,,	मदन
७- ,,	नीला आसमान	,,	साहिर
८- ,,	चन्द्रमुखी	,,	भरतव्यास
९- ,,	आंसू और मुसकान	,,	इन्दीवर
१०- ,,	अनीता	,,	राजामेंहदीअली
११- ,,	मौसम	,,	साहिर

१- हाय वह रेशमी जुल्फों पे बरसना पानी,
फूल से गालों पे रुकने को तरसता पानी ।[१]

२- मधुवन की सुगन्ध है सांसों में, बांहों में कमल सी कोमलता
किरणों का ताज है चेहरे पर हिरनी सी तुझमे चंचलता।[२]

३- मुख चमके ज्यों हिमालय की चोटी।[३]

४- ये शरबती आंखे इन्हें देख कर जी रहे हैं सभी ।[४]

५- फूल सी खिलके, पास आ दिल के ।[५]

६- चन्दन सा बदन चंचल चितवन ।[६]
धीरे धीरे यह तेरा मुसकाना ।

७- पिपरा के पतवा सरीखे डोले मनवां
कि हियरा में उठत हिलोर ।[७]

८- चेहरा है जैसे झील में, हंसता हुआ कमल
जुल्फें हैं जैसे कांधे पे ,बादल झुके हुए ।[८]

१- फिल्म-	बरसात की रात	गीतकार-	साहिर
२- ,,	गीतफार	,,	इन्दीवर
३- ,,	पूरब पश्चिम	,,	इन्दीवर
४- ,,	दो रास्ते	,,	आनन्दबक्शी
५- ,,	आराधना	,,	आनन्दबक्शी
६- ,,	सरस्वतीचन्द्र	,,	इन्दीवर
७- ,,	गोदान	,,	अनजान
८- ,,	चौदहवीं का चांद	,,	साहिर

१- ऐ चाँद सा रोशन चेहरा, जुल्फों का रंग सुनहरा ।
ऐ झील सी नीली आँखें कोई राज है गहरा ।[१]

२- तुम गगन के चन्द्रमा हो, मैं धरा की धूल हूँ ।[२]

३- तेरी बात में गीतों का सरगम , तेरी चाल में पायल की छमछम।[३]

४- हँसता हुआ नूरानी चेहरा, काली जुल्फें, रंग सुनहरा ।[४]

५- चाँद से मुख पर घूंघट डाले खेल रही तू खेल ।[५]

उत्प्रेक्षा:-

१- गर्दन है मानों झुकी हुई डाली गुलाबकी ।[६]

२- माथे पर बिंदिया देखकर ,
मानों चन्दा उतरा धरती पर ।
केशों पर गुंथा जूड़ा देखकर
लगा, खिला हो जीवन- उपवन ।[७]

१- फिल्म- काश्मीर की कली -गीतकार- एस० एस० बिहारी
२- ,, सती सावित्री ,, पं० भरतव्यास
३- ,, लीडर ,, शकील
४- ,, पारस मणि ,, इन्दीवर
५- ,, आग ,, दीपक
६- ,, आरती ,, मजरूह
७- ,, गांव की गोरी ,, वीरेन्द्र मिश्र

३- देखो तो सूरज की किरनें आ रही झूमतीं,
गगन से चलने वाली ठंडी- ठंडी हवाएँ मानो तुम्हारा मुख चूमती है।[१]

४- लहरों के होठों पर धीमा-धीमा राग है,
मानो भीगी हवाओं में ठंडी-ठंडी आग है।[२]

५- तूने रच दिया पवन झरोखा
ये पानी और ये शोला
मानो हो बादलों का उडनखटोला
जिसे देख मन मेरा डोला ।[३]

सन्देह:-

क- सितम ये अदाओं की रानाइयाँ हैं
कयामत है या तेरा अंगडाइयाँ हैं ।[४]

ख- तुम्हें जो भी देख लेगा, किसी का न हो सकेगा,
परी हो या हो हूर - खुदा की कसम ।[५]

ग- ऋतु बसन्त की प्रथम कली हो,
सावन की पहली बरसात ।
या चिर- विरही के हृदयों की,
मधुर मिलन की पहली रात
कौन हो तुम, कौन हो ? ।[६]

१- फिल्म-रानी रूपमती	गीतकार-	भरतव्यास
२- फिल्म-जाल	,,	साहिर
३- फिल्म-मशाल	,,	प्रदीप
४- फिल्म-पत्थर के सनम	,,	मजरुह
५- फिल्म-मजबूर	,,	आनंदबक्शी
६- फिल्म-स्त्री	गीत०	पं०भरतव्यास

घ- चौदहवीं का चाँद हो या कि आफताब हो,
जो भी हो तुम खुदा की कसम,लाजबाब हो ।[१]

ङ- चेहरे में घुल गया है हंसी चाँदनी कानूर
या आंखों में है चमन की जवाँ रात का सुरूर ।[२]

च- तू मेरे प्यार का फूल है कि मेरी भूल है ,
कुछ नहीं कह सकती -------------।[३]

छ- देखी जमाने की यारी,
बिछडे सभी बारी-बारी ।
क्या लेके मिलें इस दुनिया से ,
आँसू के सिवा कुछ पास नहीं ।
या फूल ही फूल थे दामन में
या काटों की भी आस नहीं ।[४]

ज- तुम ऊषा की लालिमा हो,
या भोर का सिंदूर हो ।
मेरे प्राणों का हो गुंजन,
या मेरे मन का मयूर हो । [५]

झ- ख्वाब हो तुम या कोई हकीकत,
कौन हो तुम बतलाओ ?[६]

ढ- कोई तुझे नमकीन कहे या कोई कहे मिसरी कीडली।[७]

१-फिल्म- चौदहवीं का चाँद गीतकार- साहिर
२- ,, आरती ,, मजरुह
३- ,, कागज के फूल ,, कैफीआजीम
४- ,, धूल का फूल ,, साहिर
५- ,, सावित्री ,, - पं०भरतव्यास
६- ,, तीनदेवियां ,, मजरुह
७- ,, हवालात - ,, गुलशनबावरा

विरोधाभास:-

१- आग पानी में लगाते हुये, हालात की रात
जिन्दगी भर नहीं भूलेगी, वो बरसात की रात ।[१]

२- पानी में जले मेरा गोरा बदन ।[२अ]

३- भीगा-भीगा बदन, भड़काये अगन ।[२आ]

मानवीकरण:-

१- ली प्यार ने अंगड़ाई, दीवाना हुआ बादल।[३]

२- मीठी-मीठी मस्त पवन की सनन् सनन बांसुरी बजाती आई
हरी-हरी चुनरी साजे, कलियों का कंगना बाजे ,
देख के अपनी बरखा रानी की मीठी मुस्कान
सावन के दूल्हे की, चमक उठी है शान रे ।[४]

३- ऊषा ने आंचल फैलाया
फैली सुख की शीतल छाया ।[५]

४- तेरा रूप जो देखा- झूम-झूम
ली बिजली ने अंगड़ाई ।[६]

५- चाँद- रोया साथ मेरे, रात रोई बारबार ।[७]

१- फिल्म- बरसात की रात गीतकार- साहिर
२-अ- ,, परदे के पीछे ,, आनन्दबक्शी
आ- ,, सबक ,, सावनकुमार
३- ,, दिल अपना प्रीतपराई ,, शैलेन्द्र
४- ,, दो आंखे बारह हाथ ,, पं० भरतव्यास
५- ,, फिल्म -भाभीकी चूड़िया ,,पं०नरेन्द्र शर्मा
६- ,, गोवा गीतकार- इन्दीवर
७- ,, एकरात ,, अनजान

६- लहरों के होठों पर धीमा धीमा राग है ।[१]

७- अरमाँ के बहे आँसू - हसरत ने भरी आहें ।[२]

प्रताप:-

तुम्हारी जुल्फों से खुशबू की भीख लेने को ,
झुकी- झुकी सी घटायें बुला रही हैं तुम्हें ।
हसीन चम्पई पैरों को जब से देखा है ,
नदी की मस्त अदायें बुला रही हैं तुम्हें ।[३]

रूपकातिशयोक्ति:-

क- आंधियां वो चली आशियां लुट गया,
मेरे प्यार का मुस्कराता जहां लुट गया ।
इक छोटी सी झलक मेरे मिटने तलक
ओ चाँद मेरे दिखला जा ।[४]

ख- जमाने भर की मस्ती को ,
निगाहों में समेटा है ।
कली से जिस्म को कितनी बहारों ,
में लपेटा है ।
हुआ तुम सा कोई पहले
न कोई दूसरा होगा ।[५]

१- फिल्म - जाल गीतकार साहिर
२- फिल्म - शाहजहां गीतकार मजरूह
३- फिल्म - आज और कल गीतकार साहिर
४- फिल्म - नागिन गीतकार राजेन्द्रकृष्ण
५- फिल्म- धरती गीतकार हसरत

ग- जो बात तुझ में है, तेरी तस्वीर में नहीं ,
- तस्वीर में नहीं ।

रंगों में तेरा अक्स ढला , तू न ढल सकी ,
सांसों की आंच जिस्म की खुश्बू न बन सकी ।
तुझ में जो लोच है, तेरी तहरीर में नहीं ,
दुनिया में ऐसी कोई चीज़ नहीं है, तेरी तरह ,
फिर एक बार सामने, आजा किसी तरह ।[१]

उपर्युक्त हिन्दी फिल्मी गीतों के विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि गीतकारों ने उपमा अलंकार का प्रयोग सर्वाधिक किया है क्यों अधिकांश फिल्मी- गीत श्रृंगार- परक हैं । उपमा के अतिरिक्त अन्य अलंकार भी मिलते हैं , पर वे परिस्थिति वश गीतों में प्रयुक्त हो गए हैं । इन गीतकारों ने अलंकारों द्वारा अपने गीतों को चमत्कृत करने का उद्देश्य नहीं बनाया, वरन् सीधी-सादी एवम् सरल जनभाषा में अलंकारों के माध्यम से श्रोताओं का मनोरंजन किया है और ऐसा करने से गीतों में सौन्दर्य की अभिवृद्धि भी हुई है । अत: यह निसन्देह रूप से कहा जा सकता है कि ये चलचित्र-गीत अलंकारों के प्रयोग से सरस एवम् चित्ताकर्षक बन गए हैं ।

:-:-:-:-:-:-:

अध्याय - ६

हिन्दी चलचित्र गीतों में भाषा का स्वरूप एवम् गीत-रचना प्रक्रिया

अध्याय - ६

हिन्दी चलचित्र गीतों में भाषा का स्वरूप एवम् गीत-रचना प्रक्रिया

क- भाषा का स्वरूप:-

`भाषा` शब्द संस्कृत की ‌[भाष्] धातु से निष्पन्न है, जिसका अर्थ `बोलना` है। बोलने का व्यापक अर्थ व्यक्त कर देने से है। इस रूप में निर्जीव पदार्थ भी भाषा प्रयोग के आलम्बन बन जाते हैं।[१]

१- `एक तारा टूट कर क्या कह गया ?`

एक तारा टूट कर कवि से संसार की नश्वरता की बात कह जाता है: आकाश की दैदीप्यमान दीपकों से शोभा युक्त रात्रि में कौन कब काल का ग्रास बन जाए, इसे नहीं कहा जा सकता है। संसार की इस अनित्यता से जीव को शिक्षा लेना चाहिए।यह सत्य और तारे का टूटना दो पृथक् क्रियाएं नहीं है। उसका गिरना या टूटना ही यह सब बोलो का भाषा है।

`कनक धतूरे से कहि, सोनो गढो न जाय।`

कनक या स्वर्ण धतूरे को उसके तुच्छ अस्तित्व का बोध करा रहा है।

भाषा के इन काल्पनिक या आलंकारिक प्रयोगों से हमारा पुराना परिचय है, इसलिये `भाषा` के इस व्यापक अर्थ में भी हमें कुछ अजनवीपन दिखलाई नहीं पडता है

अनुच्चरित भाषा प्रयोग निर्जीव पदार्थों में ही नहीं, जीवित प्राणियों में भी मिलते हैं। श्रम से स्वेद गिराते एवं हाफते हुए वत्स को जब गाय चाटने लगती है, तब दोनों के अभिप्राय व्यक्त हो जाते हैं। इस प्रकार के उदाहरण मनुष्यों में भी मिलते हैं। बिहारी के नायक-नायिका- भरे भौंन मे करत हैं, नैनन ही सों बात रत्नाकर के कृष्ण वाणी से कम, नेत्रों से अधिक और हिचकियों से सब कुछ कह देतें हैं। हम सिर हिलाकर स्वीकृति एवम् अस्वीकृति के भाव व्यक्त कर लेते हैं। हाथ के इंगित से दर्शक हमारी इच्छा या भावना को समझ लेता है। गार्ड का हरी-लाल भण्डी द्वारा या सीटी से रेल का ड्राइवर उसके निर्देश को समझ लेता है।

वाणी के अतिरिक्त वे समस्त साधन स्वम् संकेत भाषा की परिधि में आ जाते हैं, जिनका उपयोग किसी अभिप्राय, विचार या मानव की अभिव्यक्ति के लिए किया जाता है। `भाषा` का यह व्यापक अर्थ है। भाषा के लिए अनुच्चरित रूप अध्ययन भाषा शास्त्र का विषय नहीं समझा जाता।

भाषा शास्त्र में भाषा से तात्पर्य मनुष्य द्वारा उच्चरित ऐसे ध्वनि समूह से है, जिसका पदार्थ के साथ स्थिर संबंध स्थापित हो चुका हो। पदार्थ स्वम् ध्वनि- संकेत के सम्बन्ध को नित्य नहीं समझा जा सकता।

इसका अर्थ यह है कि पशु-पक्षियों की बोली भी भाषा की परिधि से बाहर है, यद्यपि ध्वनि-संकेतों के प्रयोग के धरातल पर पशु स्वम् व मनुष्य में भेद नहीं दिखाई देता।[१]

१- आहार की प्राप्ति के लिए, आत्म रक्षा के लिए, मैथुन -कामना की संतुष्टि के लिए विशिष्ट ध्वनियों के प्रयोग जैसे मनुष्यों में दिखाई देते हैं। वैसे पशुओं में भी। `आहार, निद्रा, भय, मैथुनं च सामान्यमेतत्ति पशुभि: नराणाम्`। की भाँति दोनों में ध्वनि प्रयोगों की भी समानता मिलती है, ध्वनि-संकेत दोनों के भले ही भिन्न हों।

पशु- पक्षियों की ध्वनियों में भी परिस्थिति के अनुसार परिवर्तन घटित होते रहते हैं। चिड़ियों का प्रात: कालीन आनन्द से चहचहाना और बिल्ली को देख कर चहचहाना एक सा नहीं है। वे स्वर-विकार से हर्ष स्वं भय को व्यक्त करने में समर्थ हैं। उनकी बोली- से उनके साथी उनके भाव को समझ लेते हैं।

मानव- समाज की तरह पशुओं स्वम् पक्षियों के भी झुंड या यूथ होते हैं। एक यूथ के ध्वनि-संकेत दूसरे के झुण्ड के ध्वनि संकेतों से भिन्न होते हैं। प्रसिद्ध शिकारी जिम कार्बेट ने तो पशुओं के ध्वनि संकेतों को भाषा का नाम दिया है। उनके अनुसार प्रत्येक जाति के पशुओं की अपनी भाषा होती है, इस भाषा को अन्य जातियों के पशु भी समझ लेते हैं और जंगल में रहकर मनुष्य भी पशुओं की ध्वनि के सहारे उनकी गतिविधि का पता लगा लेता है। एक स्थान में रहने वाले पशु-पक्षी जब रात्रि में एक-दूसरे को देख नहीं पाते, तब भी ध्वनि संकेतों के माध्यम से युग-सम्पर्क बनाये रखते हैं।

यह समझना निराधार है कि पशु ध्वनि तो करते हैं,लेकिन ध्वनि संकेतों से काम नहीं लेते। डा० राम विलास शर्मा ने लिखा है -- " पशुओं की काम चेतना ध्वनि संकेतों से काम लेने के लिए विवश करती है। सहयोगी प्राप्त होने पर उसे अपने साथ रखने, प्रतिद्वन्द्वी को ललकारने स्वम् भगाने, सन्तान को आहार तक ले जाने , संतान द्वारा आहार मांगने के लिए ध्वनि-संकेतों का प्रयोग है।[1]

मनुष्य कृत भाषा में पशु- पक्षियों की बोलियों के आधार पर निर्मित अनुकरणात्मक शब्द भी मिलते हैं।

इन समानताओं के होते हुये भी पशु-पक्षियों की बोली को 'भाषा' नहीं कहा जाता और न उसका भाषाशास्त्र में अध्ययन किया जाता है।

मनुष्य के पास बौद्धिक चेतना का जो स्तर है, वह पशु-पक्षियों को प्राप्त नहीं हुआ। भाषा- निर्माण बौद्धिक विकास के अभाव में सम्भव नहीं। भाषा उन सर्वोत्कृष्ट अपूर्व सृष्टियों में से एक है जिसकी सत्ता मानवता के विकास से संलग्न है। भाषा जीवन का स्वाभाविक परिणाम है और सृष्टि के पश्चात् जीवन से ही उसका परिपोषण होता है।

भाषा अपने आदिम रूप में मनोभावाभिव्यन्जक ही होती है, जैसा कि पशुओं और शिशुओं की बोलियों में दिखाई देता है। भाषा का विकास व्यवहारिक उत्कृष्टता के कारण होता है, जिस प्रकार बाह्य वाणी का परिणाम संकल्प , श्रद्धा व इच्छा होते हैं और वाणी उत्तरोत्तर समग्र मानव- व्यापारों में व्याप्त हो जाती है। मानव भाषा की चरमावस्था वह है जब कि ध्वनि का संकेत रूप में आभास हो और संकेत का

१- भाषा और समाज: डा० रामविलास शर्मा, पृ० ३

उपयोग करने वाला संकल्प व्यावहारिक संकेत को जन्म देने वाली अन्त: प्रवृत्ति की पूर्ति करे। बुद्धि भाषा को विचार का ऐसा साधन बना लेती है, जिसका वास्तविक स्थिति में प्रत्यक्ष सम्बन्ध न रहने पर भी विचार का कार्य चल सके।

भाषा की उत्पत्ति के पीछे न तो किसी दैवी शक्ति का हाथ है और न यह मानव- समुदाय में सचेत समझौते का परिणाम है। ऐसी अवस्था की कल्पना असम्भव है जब मनुष्यों ने एक स्थान पर बैठकर वस्तुओं के अभिधान प्रदान किये हों। जो० ब्रांद्रियेज ने लिखा है -- "महत्वपूर्ण बात यह नहीं कि वस्तुओं के अभिधान रखे गए, अपितु बोलने वालों ने एक प्रकार के मौन समझौते से उन शब्दों के लिए निश्चित अर्थ को अपनाया जिससे वे सम्भाषण का एक ऐसा साधन बन सके जैसा कि वस्तु खरीदने के लिए नकद रूपया या नोट।[१]

भाषा का स्रोत जीवन, आवश्यकता व इच्छा से उत्पन्न होता है। भाषा का प्रवाह जीवन की सरिता के साथ चलता है। सजीव विचार - प्रवाह भाषा द्वारा ही सम्पन्न होता है। भाषा का असीम विकास जीवन के अधीन है। लौकिक जीवन के सम्बन्धों को बताने वाली शब्दावली नितान्त अस्थिर है, भाषा निरन्तर विकास शील है। अपने ही जीवन की वैयक्तिक पक्ष की अभिव्यक्ति के लिए मनुष्यों द्वारा भाषा का अधिका अधिक प्रयोग होता है। यह कल्पना मिथ्या नहीं कि विश्व में जितने व्यक्ति हैं उतनी ही भाषाएँ भी हैं। भेदीकरण की प्रवृत्ति के साथ एकीकरण की प्रवृत्ति भी सक्रिय रहती है। व्यक्ति भाषा अन्यापेक्षी होती है। व्यक्ति-भाषाएँ सामान्य भाषा, विभाषा या राष्ट्रभाषा के विकास का सोपान बनती हैं।

१- भाषा इतिहास की भाषावैज्ञानिक भूमिका,- पृ० १८

समाज के रूप में समाज का अपना जीवन है, जो व्यक्तियों के जीवन से बना है । एक समूह का, एक राष्ट्र का अपना विशिष्ट लक्षण होता है, जिससे व्यक्तियों की आंशिक समानता का भी बोध होता है। एक राष्ट्र की विशिष्टता और उसके गौण समूहों में से किसी एक की विशेषता सामान्य भाषा, विभाषा या विशेष भाषा में प्रतिबिंबित होती हुयी उसमें ऐसा व्यावहारिक-वैविध्य ला देती है ,जिसका सामाजिक शरीर से कोई सम्बन्ध नहीं होता । भाषा बुद्धि की पितृभूमि है ,पर पितृभूमि समाज से सर्वथा भिन्न है ।

भाषा का मूल वैयक्तिक चेतना की गहराइयों में निहित है । भाषा समाज के क्रोड़ में बनी है , पर उसे पूर्णत: सामाजिक कहना उचित नहीं । उसे सामाजिक तभी कह सकते हैं , जब वह पूर्णत: सामाजिक कृति हो या समाज की अभिन्न अथवा प्रकृतिगत संस्था हो । वान्द्रियेज ने लिखा है - ' सामाजिक तथ्य के रूप में भाषा की उत्पत्ति तभी हो सकी जबकि मानव- मस्तिष्क उसको प्रयुक्त करने के लिए पर्याप्त भाषा में विकसित हो गया । दो प्राणी, भाषा की सृष्टि इसलिए ही कर सके कि वे पहले से सन्नद्ध थे ।[१] भाषा सामाजिक सम्पर्क का फल और उसकी प्रगति सामाजिक समुदाय के अस्तित्व पर निर्भर है । भाषा-विकास-मानव मस्तिष्क के प्राकृतिकविकास के कारण हुआ । पशु-भाषा और मानव-भाषा का अन्तर इसी विकास से रेखांकित है ।

पशुओं की भाषा न तो विकारशील है और न विकासशील। ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता किप्राचीन समय में पशुओं की बोली आज कल की बोली से भिन्न थी। पशुओं की बोलियों के तत्वों में वैसा परिवर्तन नहीं किया जा सकता, जैसा हम अपने शब्दों में कर लेते हैं । मानव-भाषा के वाक्य के शब्दों का स्थानान्तरण किया जा सकता है । पशुओं के लिए

१- भाषा इतिहास को भाषा वैज्ञानिक भूमिका - पृ० १३

वाक्य और पद में कोई अन्तर नहीं । पशु-भाषा में चिन्ह व तत्सम्बन्धी पदार्थ का स्वतंत्र बोधक बनाने के लिए मनोवैज्ञानिक व्यापार की आवश्यकता होती है । इस व्यापार से मनुष्य सम्पन्न एवम् पशु विपन्न है । इसीलिए पशु की बोली `भाषा` का गौरव प्राप्त न कर सकी ।

भाषा का संकुचित अर्थ मनुष्य की बोली या भाषा से है । भाषा का रूप लिखित हो या उच्चरित, उसमें मानव की सार्थक ध्वनियों का ही समाहार है । मनुष्य की भाषा व्यक्ति के स्तर से उठकर बोली या उपभाषा, विभाषा या प्रान्तीय भाषा, राष्ट्रभाषा, अन्तर्राष्ट्रीय भाषा आदि अनेक रूपधारण करती रहती है । बोली- कभी भाषा बन जाती है, तो कभी भाषा से बोली। एक ही बीज बहुधा हो जाता है । एक ही वाणी या भाषा विविध रूपों में व्यक्त होती है ।

इस प्रकार `भाषा` में उन्ही ध्वनियों को गृहीत किया जाता है, जिनसे शब्द बनते हैं और जिसका प्रयोग वाक्यों में होता है । भाषा-शास्त्र का सम्बन्ध उन्हीं ध्वनियों से होता है , जो भाषा के क्षेत्र में क्रियाहीन है तथा जिन्हें पास-पास रखकर शब्द बनाये जाते हों । जिसे हम लिखते या पढते हैं , वह भी हमारी उच्चरित भाषा का प्रतिरूप है। भाषा हम लिखी हुई पुस्तकों से सीखते नहीं हैं , सीखी हुई भाषाओं को हम पुस्तकों में लिख देते हैं ।

अतः भाषा भावों की अभिव्यक्ति और विचार विनिमय का साधन है । सामान्य रूप से भाषा का प्रयोग मनुष्य की अभिव्यक्ति के साधन के लिए होता है । भावों का प्रकाशन मनुष्य की नैसर्गिक मनोवृत्ति है, अपने हृदय के भावों, अनुभवों और विचारों को वह दूसरों तक पहुँचा देना चाहता है। आदिम मनुष्य के पास जब व्यक्त ध्वनियों की सम्पत्ति न थी तो वह हाथ,पांव ,आंख, आदि के संकेतों से अपने भावों का स्पष्टीकरण करता था। आज भी अनेक पिछड़ी जातियों में इंगित

भाषा मिलती है । इंगित-भाषा- संस्कार रूप में मानव को प्राप्त है और बोली के साथ ही पूरक रूप में वह इसका प्रयोग करता है ।

भाषा की परिभाषाएं:-

भाषा का लक्षण भारतीय एवम् पाश्चात्य विद्वानों ने विविध प्रकार से प्रस्तुत किया है । भारतीय एवम् पाश्चात्य विद्वानों के विचार भाषा के सन्दर्भ में क्या है ? एक विहंगम दृष्टि डालते चलें ---

क- भारती विद्वान --

१- पातंजलि:-

" जो वाणी वर्णों में व्यक्त होती है, उसे भाषा कहते हैं। "[1]

२- कामताप्रसाद गुरु :-

" भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों पर भली- भाँति प्रकट कर सकता है और दूसरों के विचार आप स्पष्टतया समझ सकता है । "[2]

३- बाबू श्याम सुन्दर दास :-

" मनुष्य और मनुष्य के बीच वस्तुओं के विषय में अपनी इच्छा और मति का आदान-प्रदान करने के लिए व्यक्त ध्वनि संकेतों का जो व्यवहार होता है,उसे भाषा कहते हैं। "[3]

१- व्यक्ता वाचि वर्णा येषां त इमे व्यक्तवाच: - पातंजलिमहाभाष्य- १।३।४८

२- हिन्दी व्याकरण-कामताप्रसाद गुप्त,प्रस्तावना- पृ०१

३- भाषाविज्ञान- श्यामसुन्दर दास, पृ०-२०

४- नलिनी मोहन सान्याल:-

" अपने स्वर को विविध प्रकार से संयुक्त तथा विन्यस्त करने से उसके जो जो आकार होते हैं उनका संकेतों के सदृश व्यवहार कर अपनी चिन्ताओं को तथा मनोभावों को जिस साधन से हम प्रकाशित करते हैं, उस साधन को भाषा कहते हैं।"[१]

५- डा० मंगल देव शास्त्री:-

" भाषा मनुष्यों की उस चेष्टा या व्यापार को कहते हैं जिससे मनुष्य अपने उच्चारणोपयोगी शरीरावयवों से उच्चारण किए गए वर्णात्मक या व्यक्त शब्दों द्वारा अपने विचारों को प्रकट करते हैं।"[२]

६- दुनी चंद :-

" अपने मन के भाव प्रकट करने के लिए जिन सांकेतिक ध्वनियों का उच्चारण करते हैं, उन्हें भाषा कहते हैं।"[३]

७- डा० बाबूराम सक्सेना:-

" जिन ध्वनि चिन्हों द्वारा मनुष्य परस्पर विचार-विनिमय करता है, उनको समष्टि रूप में भाषा कहते हैं।"[४]

८- प्रो० पी०डी०गुणे:-

" भाषा हमारे विचारों एवम् मनोभावों के उन चिन्हों का पूर्ण योग है, जिनके द्वारा हम अपने बाह्य विचार प्रकट किया करते हैं और इच्छानुसार विचारों एवम् भावों को एक बार प्रकट करके उनकी पुनरावृत्ति कर सकते हैं।"[५]

१- भाषा तत्व- रत्न- न०मो० सान्याल, पृ० १४
२- भाषा विज्ञान- डा० मंगलदेव शर्मा, दूसरा परिच्छेद, पृ० २१
३- हिन्दी व्याकरण - दुनीचन्द , पृ० १
४- सामान्य भाषा विज्ञान - डा० बाबूराम सक्सेना, पृ० ६।

९- डा० भोलानाथ तिवारी:-

'भाषा निश्चित प्रयत्न के फलस्वरूप मनुष्य के मुख से नि:सृत वह सार्थक ध्वनि समष्टि है, जिसका विश्लेषण और अध्ययन हो सके।'[1]

१०- डा० देवेन्द्रनाथ शर्मा:-

'उच्चरित ध्वनि- संकेतों की सहायता से भाव या विचार की पूर्ण अभिव्यक्ति भाषा है अथवा जिसकी सहायता से मनुष्य की पूर्ण अभिव्यक्ति भाषा है अथवा जिसकी सहायता से मनुष्य परस्पर विचार-विनिमय या सहयोग करते है, उस यादृच्छिक, रुढ़ ध्वनि- संकेत की प्रणाली को भाषा कहते हैं।[2]

ख- पाश्चात्य विद्वान:-

१- मैक्समूलर:-

'भाषा और कुछ नहीं है, केवल मानव की चतुरबुद्धि द्वारा आविष्कृत एक ऐसा उपाय है जिसकी मदद से हम अपने विचार सरलता और तत्परता से दूसरों से प्रकट कर सकते हैं और जो चाहते हैं कि इसकी व्याख्या प्रकृति के उपज के रूप में नहीं, बल्कि मनुष्य कृत पदार्थ के रूप में करना उचित है।'[3]

१- भाषाविज्ञान- डा० भोलानाथ तिवारी, पृ० २१

२- भाषा विज्ञान की भूमिका - डा० देवेन्द्रनाथ शर्मा, पृ० १९-२० ।

३- भाषा विज्ञान पर भाषण (अनुवादक डा० हेमचन्द्र जोशी)
- मैक्समूलर, पृ० [illegible]

२- क्रोचे:-

'भाषा उस स्पष्ट, सीमित तथा सुसंगठित ध्वनि को कहते हैं, जो अभिव्यन्जना के लिए नियुक्त की जाती है।'[१]

३- ब्लाक तथा ट्रेजर:-

'भाषा उस व्यक्त ध्वनि- चिन्हों की पद्धति को कहते हैं, जिसके माध्यम से समाज- समूह परस्पर व्यवहार करते हैं।'[२]

४- जेस्पर्सन:-

'भाषा का सार है मानवीय कार्यों के समझने में सहायता देना अर्थात् भाषा के माध्यम से एक व्यक्ति दूसरे को समझने का कार्य करता है।'[३]

५- वान्द्रियेज:-

'भाषा की सबसे साधारण परिभाषा यह हो सकती है कि वह चिन्हों का एक वृत्ति चक्र है। - चिन्ह से यहाँ पर अभिप्राय उन सब प्रकारों से है जो मनुष्यों में सम्भाषण को सम्भव बना सकें।'[४]

१- Theory Of Aesthetic — Croce, Page-23

२- Outline Of Linguistic Analysis — Bloch & Trager, P. 1

३- Philosophy Of Grammar — Jesperson, Page-72

४- भाषा- इतिहास की भाषा वैज्ञानिक भूमिका (अनु०जगदीश किशोर) - वान्द्रियेज, पृ०- ८

६- हेनरी स्वीट:-

' जिन व्यक्त ध्वनियों द्वारा विचारों की अभिव्यक्ति होती है, उन्हें भाषा कहते हैं।'[१]

७- ए०एच०गार्डिनर:-

' विचारों की अभिव्यक्ति के लिए जिन व्यक्त एवम् स्पष्ट ध्वनि-संकेतों का व्यवहार किया जाता है, उन्हें भाषा कहते हैं।'[२]

८- डिक्शनरी आफ लिंग्विस्टिक:-

' मानवों के वर्ग विशेष में पारस्परिक व्यवहार के लिए प्रयुक्त उन व्यक्त ध्वनि संकेतों को भाषा कहते हैं, जिनका अर्थ पूर्व-निर्धारित एवम् परम्परागत होता है तथा जिनका आदान-प्रदान जिह्वा और कान के माध्यम से होता है।[३]

९- इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका:-

' भाषा व्यक्त ध्वनि चिन्हों की उस पद्धति को कहते हैं जिसके माध्यम से प्रत्येक समाज के दल व संस्कृति के मानने वाले सदस्य पारस्परिक विचार विनमय किया करते हैं।'[४]

भारतीय एवम् पाश्चात्य विद्वानों द्वारा दी गयी भाषा की परिभाषाओं से निम्न निष्कर्षों पर पहुँचते हैं ----

---

१- The History Of Language —Henery Sweet
२- Speech Of Language — A.H. Gardiner, P.2
३- Dictionary Of Linguistic — Mario Pei & Frank Gaynor, P. 36
४- Encyclopaedia Of Britannica., P. 46

अ- भाषा में ध्वनि संकेतों का प्रयोग होता है ।

ब- वे ध्वनि संकेत परम्परागत होते हैं, किन्तु आवश्यकतानुसार नये भी निर्मित होते रहते हैं ।

स- ध्वनि संकेतों से भावों एवम् विचारों की अभिव्यक्ति होती है ।

द- ये ध्वनि- संकेत किसी समाज-विशेष या वर्ग विशेष के आन्तरिक एवम् बाह्य कार्यों के संचालन एवम् विचार विनिमय में सहायक होते हैं ।

य- इन ध्वनि संकेतों के रूढ़िगत अर्थ होते हैं ।

र- प्रत्येक वर्ग एवं समाज के ध्वनिसंकेत स्वनिर्मित होने के कारण दूसरे वर्ग या समाज के ध्वनि-संकेतों से पृथक् होते हैं ।

ल- ध्वनि- संकेतों के माध्यम से ही एक व्यक्ति दूसरे के हृदयस्थ भावों एवम् विचारों को समझता हुआ तथा दूसरा पहले के विचारों एवम् भावों से परिचित होता है ।

व ध्वनि संकेतों से केवल भाव एवम् विचार एकबार प्रकट ही नहीं होते, उनकी पुनरावृत्ति भी की जा सकती है ।

स- ये ध्वनि- संकेत उच्चारणोपयोगी अवयवों से वर्णों या शब्दों से व्यक्त होते हैं ।

ह- ये ध्वनि-संकेत सार्थक होते हैं, जिनका वर्गीकरण विश्लेषण एवम् अध्ययन किया जा सकता है ।

अत: भाषा की सर्वमान्य परिभाषा अग्रांकित रूप में इस प्रकार कर सकते हैं --

क्ष- भाषा, मुख से उच्चरित उस परम्परागत, सार्थक स्वम् व्यक्त ध्वनि संकेतों की समष्टि को कहते हैं, जिसकी सहायता से मानव आपस में विचार स्वम् भावों का आदान-प्रदान करते हैं तथा जिसको वे स्वेच्छानुसार अपने दैनिक जीवन में प्रयोग करते हैं।'[१]

हिन्दी का विकास और चलचित्रों में उसका योगदान :-

व्यवहार और शास्त्र में भाषा के अनेक रूप मिलते हैं। यथा-- व्यक्ति बोली, स्थानीय बोली ,विभाषा, प्रान्तीय भाषा, भाषा (परिनिष्ठित), राष्ट्रभाषा, राज्यभाषा, अपभाषा, विशिष्टभाषा, कृत्रिम भाषा, संपर्क भाषा आदि।

इन भाषाओं में समृद्ध भाषा राष्ट्रभाषा हिन्दी है। सर्वग्राह्यता स्वम् अनुकूलता के कारण सम्पूर्ण राष्ट्र की भाषा हिन्दी ही है। हिन्दी स्वतन्त्रता से पूर्व ही भारत की राष्ट्र भाषा बन चुकी थी।

अत: सम्प्रति हिन्दी का ही प्रचलन अधिक है। साधारणत: `हिन्दी' शब्द का शब्दार्थ की दृष्टि से प्रयोग हिन्दी अथवा भारत में बोली जाने वाली सभी भाषाओं से होता है। यह अर्थ अत्यन्त व्यापक है, जो हिन्दी भाषा के स्वरूप की गरिमा को प्रकट करता है, किन्तु व्यवहार में हिन्दी भाषा उस विशाल भू-भाग की भाषा स्वीकार की जाती है, जिसकी सीमायें-- पश्चिम में जैसलमेर, उत्तर पश्चिम में अम्बाला, उत्तर में शिमला से लेकर नेपाल की पूर्वी सीमा तक पर्वतीय प्रदेश का

१- भाषा विज्ञान के सिद्धान्त और हिन्दी भाषा: डा० द्वारिकाप्रसाद-सक्सेना, पृ०- ६६

दक्षिणीभाग, पूर्व में भागलपुर, दक्षिण पूर्व में रायपुर तथा दक्षिण-पश्चिम में खंडवा तक पहुँचती है। इस विशाल भूमिखण्ड में जितनी भी अन्य उपभाषाएँ तथा बोलियाँ आदि आती हैं, वे सभी हिन्दी का ही स्वरूप हैं। राजस्थानी, बिहारी, पहाड़ी भाषाएं तथा अवध और छत्तीस गढ़ी की पूर्वी हिन्दी सभी इसके अन्तर्गत आती है, लेकिन भाषा विज्ञान के सूक्ष्म भेदों के आधार पर हिन्दी को केवल उस प्रदेश की भाषा कहा गया है, जिसका उत्तरी छोर हिमालय की तराई तक, पश्चिमी छोर दिल्ली से आगे हरियाणा प्रदेश तक, दक्षिणी छोर नर्मदा घाटी तक तथा पूर्वी छोर कानपुर, इलाहाबाद और वाराणसी के पश्चिमी क्षेत्रों तक स्वीकार किया गया है।

इस भूमि- खण्ड में हिन्दी को दो रूपों में विभाजित किया गया है -- पश्चिमी हिन्दी और पूर्वी हिन्दी। इनमें से पश्चिमी हिन्दी को ही वास्तव में हिन्दी की संज्ञा दी गयी है, जिसे साहित्यिक हिन्दी के नाम से अभिहित किया जाता है। इस साहित्यिक हिन्दी का मूलाधार दिल्ली- मेरठ प्रदेश में बोली जाने वाली खड़ी बोली है।

भारत में, यवनों के आने के उपरान्त, उनका मुख्य केन्द्र दिल्ली ही रहा था। ये यवन फारसी, तुर्की और अरबी भाषा-भाषी थे, लेकिन भारत में स्थापित हो जाने के कारण विचार-विनिमय के लिए इन्होंने दिल्ली तथा उसके आस-पास केप्रदेश की भाषा खड़ी बोली को सीखा और जब उसका प्रयोग किया तब शनै: शनै: स्वत: ही उसमें अरबी- फारसी के शब्द प्रचुरता से मिल गए और तब उनकी भाषा का उदय हुआ, वह उर्दू कहलायी।

यवनों के उपरान्त भारत में अंग्रेजों का आगमन हुआ और लगभग दो शताब्दियों तक उनके यहाँ जम जाने से अंग्रेजी शब्दों का प्रचलन तीव्रगति से हुआ और तब सामान्य व्यवहार की भाषा के रूप में

पुरानी हिन्दी- उर्दू और अंग्रेजी के मिश्रण से जो एक नई बोली उत्पन्न हुई, उसे अंग्रेजों ने 'हिन्दुस्तानी' भाषा का नाम दिया ।

इस प्रकार देखा जाये, तो हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी साहित्यिक हिन्दी, 'खड़ी बोली' स्वरूप के ही तीन विभिन्न रूप हैं । व्याकरण की दृष्टि से हिन्दी और उर्दू भाषाओं में कोई विशेष अन्तर नहीं है । दोनों भाषाओं का मूलाधार खड़ी बोली ही है और हिन्दुस्तानी इन दोनों के मिश्रितस्वरूप और इसमें अंग्रेजी शब्दों के मिश्रण ही निर्मित हुई है । शिष्ट लोगों की बोल-चाल की परिमार्जित खड़ी बोली अथवा आज के युग में हिन्दुस्तानी को हिन्दी कहा जा सकता है ।

हिन्दी चित्रपट के चलचित्रों में इसी हिन्दुस्तानी भाषा का प्रयोग प्राय: किया जाता है। हिन्दी चित्रपट के चलचित्रों ने हिन्दी को जहाँ सम्पूर्ण देश की भाषा को बनाने के लिए निरन्तर अपना योगदान दिया है, वहाँ सम्पूर्ण राष्ट्र और उसकी विभिन्न संस्कृतियों में एकत्व की गरिमा भी उत्पन्न की है । साथ ही एक महत्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि हिन्दी चलचित्र उद्योग ही एक ऐसा उद्योग है, जहाँ विभिन्न संप्रदायों के विभिन्न भाषा-भाषी लोग पारस्परिक हितों का ध्यान रखते हुए बिना किसी भेदभाव के कार्य करते हैं । सांप्रदायिक वैमनस्य की विषाम ज्वालाएँ कम से कम इस उद्योग में प्रत्यक्ष रूप से नहीं दिखलाई पड़ती हैं और यह तथ्य अपने में महत्वपूर्ण उपलब्धि है, जिसका श्रेय हिन्दी चित्रपट को दिया जा सकता है ।

डा० कैलाशचन्द्र भाटिया ने हिन्दी चलचित्रों की भाषा के विषय में कहा है -- " इन फिल्मों की भाषा जनता की भाषा है. . . .सम्पूर्ण भारत में हिन्दी के प्रचार तथा प्रसार करने का श्रेय किसी भी हिन्दी प्रचारिणी संस्था के समान ही इन फिल्मों को दिया जा सकता है ।...... किसी भाषा का प्रसार पुस्तकों से अधिक उसके बोल-- चाल के रूप में होता है और इस दृष्टिकोण से इन फिल्मों की

देन निर्विवाद है ।[१] वास्तव में, जिन भारतीय चलचित्रों में भारतीय संस्कृति के दर्शन हों, उनकी भाषा को हिन्दी ही कहा जा सकता है। हिन्दी के स्वरूप का प्राय: जो विकृत रूप हमें यदा-कदा चलचित्रों में सुनाई पड़जाता है, उसके लिए शब्द उच्चारण को दोष दिया जाना चाहिए, न कि भाषा को। युग के अनुकूल भारत की सर्वमान्य यह हिन्दुस्तानी भाषा ही आम साहित्यिक हिन्दी है जिसका एक रूप इन हिन्दी चलचित्रों में दिखायी पड़ता है ।

हिन्दी सम्पूर्ण सिन्धु देश अर्थात् हिन्दुस्तान की भाषा है । उसपर किसी एक प्रदेश अथवा जाति का अधिकार नहीं है । अत: प्राय: ये हिन्दी चलचित्र सम्पूर्ण देश को दृष्टिपथ में रखकर निर्मित किए जाते हैं और बंगाल, मद्रास, असम, केरल, मैसूर, महाराष्ट्र तथा गुजरात आदि अहिन्दी प्रदेशों में अत्यधिक लोक प्रियता अर्जित करने में सफल होते हैं ।

इसप्रकार देखते हैं फिल्म जनता से सम्पर्क स्थापित करने का सर्वोपरि माध्यम है, इसका उस जनता से, जो दूर से दूर के कोने में रहती है और अधिकांश में ना समझ और अनपढ़ से अनपढ़ है । अत: गीतकार का नैतिक कर्त्तव्य हो जाता है कि अपनी बात को वह सीधी-सरल भाषा में कहे और उसी के भाषा में कहे । हिन्दी फिल्मी गीतों में भाषा की अत्यन्त सरलता, कोमलता और लचीलापन तो देखने को मिलता ही है और साथ ही साथ प्रादेशिक भाषा की शब्दावली भी।

सम्प्रति हिन्दी फिल्में देश एवम् विदेश में लोकप्रिय हैं । हिन्दी भाषी तथा विदेशी इन फिल्मों में प्रयुक्त गीतों की सरल शब्दावली से प्रभावित होते हैं और उन्हें गुनगुनाते हैं । ⟶

१- पृथ्वी राज कपूर -अभिनन्दन ग्रन्थ (उदरायण) पृ० ७-१३

राजकपूर, सुनीलदत्त, नरगिस आदि की फिल्में विदेशी बड़ी प्रसन्नता के साथ देखते हैं तथा उनकी फिल्मों के गीत गुनगुनाते हैं। हिन्दी की लोकप्रियता का अन्दाज रूस समारोह जो कानपुर में हुआ था, उससे लगाया जा सकता है जिसका आरम्भ राजकपूर की फिल्म आवारा के गीत- `आवारा हूँ - आवारा हूँ ` से हुआ था।

समग्ररूप से उक्त तथ्यों पर विचार करते हुये कहा जासकता है कि हिन्दी फिल्मीगीतों ने हिन्दी के प्रचार एवम् प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान किया और निरन्तर दे रहे हैं। मद्रास में निर्मित फिल्में हिन्दी गीतों के कारण ही उत्तम एवम् श्रेष्ठ हैं।

ख- <u>हिन्दी चलचित्र-गीतों में प्रयुक्त भाषा का स्वरूप :-</u>

जन-जीवन में फिल्मों का महत्वपूर्ण स्थान है। मनोरन्जन एवम् शिक्षा-क्षेत्र में तो फिल्मों की देन है ही, पर सम्पूर्ण भारत को हिन्दी के प्रचार और प्रसार में उसका इतना योगदान है जितना कि अन्य हिन्दी प्रचारिणी संस्थाओं का।

आज `साहित्य` के अन्तर्गत फिल्मों की कहानियां सम्वादों एवम् गीतों को शामिल नहीं किया जाता है, पर वह दिन दूर नहीं जब सिने- साहित्य साहित्य की सीमा को स्पर्श किये बिना न रह सकेगा।

(1)- <u>सरल एवम् प्रवाह पूर्ण:-</u>

डा० ओ०प्र० माहेश्वरी के शब्दों में- हिन्दी फिल्मों के गीत हमारे सामने नित्य-प्रति आते हैं, उनमें भाषा की सरलता, कोमलता एवम् रसीलापन दिखलाई देता है, जिसके कारण वे लोकगीतों के साहित्य के अत्यन्त निकट दिखलाई पड़ते हैं क्योंकि लोक-गीत जनता का साहित्य है। सच तो यह है कि लोकगीत ही जनता की भाषा है, जिसमें चिर-परिचित शब्द, चिरपरिचित बातें और चिरपरिचित स्वर ही तो विद्यमान रहता है। अत: फिल्मीगीत जनता के गीत हैं जो जनभाषा

में गुथे हुए हैं, उनमें सरलता एवम् सादगी का होना आवश्यक है । [१]

डा० कैलाश चन्द्र भाटिया फिल्मी गीतों की भाषा के विषय में अपने विचार प्रकट करते हुए कहते हैं -- ` जिस प्रकार लोकगीतों के माध्यम से हिन्दुस्तान का धड़कता हुआ दिल हमारे सामने आ जाता है और हम इस माध्यम से बड़ी सरलता से जनतामें रम सकते हैं, उसी प्रकार फिल्मी गीत भी नवयुवक समाज को विशेष प्रभावित करता है। जब साहित्य की श्रेष्ठ कृतियों के आधार पर फिल्मों का निर्माण किया जाने लगा है, हिन्दी के माने हुए कवि, जैसे प्रदीप, नीरज,वीरेन्द्र मिश्र , रामावतार चेतन आदि तथा उर्दू के उत्कृष्ट शायर शकील, मजरुह, साहिर, आदि फिल्मों में बड़ी सफलता से गीत लिख रहे हैं तो फिर इन फिल्मी गीतों को साहित्य की परिधि में क्यों न सम्मिलित किया जाये ।' [२]

वास्तव में फिल्मी गीतकारों ने अच्छे गीत अच्छी भाषा में लिखे जो क्लिष्टता से मीलों दूर हैं और जनमानस को अपनी ओर आकर्षित करते हैं, यही कारण है कि आज बच्चों से लेकर बूढ़ों की जुबान पर अपना अधिकार जमाये बैठे हैं ।

गीतकार गोपाल सिंह `नेपाली` फिल्मी गीतों को जनता का साहित्य बतलाते हुए कहते हैं -- `हर फिल्मी गीत जनता के लिए लिखा जाता है और इन गीतों की तकदीर का फैसला भी जनता ही किया करती है, इसलिए फिल्मी गीत लिखते समय हर गीतकार एक तरह जनता के सामने रहता है और जनता उसके सामने रहती है । गीतकार और जनता दोनों के सम्बन्ध की कड़ी ये गीत ही हुआ करते हैं। अत: गीत रचना करते समय एक साथ कई बातें ध्यान में रखना पड़ती है और उस समय जाग्रत जनता की हलचलों को यथाशक्ति गीतों में प्रतिबिंबित करना पड़ता है। यह चीज काफी चिन्तनसाध्य है। इसके बाद सिचुयेशन

१- हिन्दी चित्रपट का गीति साहित्य- आ०प्र०मा०,पृष्ठ- २००

२- पृथ्वीराज अभिनन्दन ग्रन्थ,डा०कैलाश चन्द्र भाटिया- -फिल्मी गीतों की भाषा- पृ०- ८

भाषा, मीटर, तर्ज और गीत के सम्पूर्ण कलेवर पर विचार करना पड़ता है। फिर आता है महत्व मूड का क्योंकि जितना अच्छा मूड रहेगा उतनी ही अच्छी पालिश होगी। इसलिए अच्छे गीतों को एक नई चिन्गारी की तरह उड़ - उड़ कर लाखों हृदयों तक मीठी जलन पहुँचाते भी देखा है और अधकचरे गीतों की अकाल मृत्यु होते भी देखा है।[1]

इस प्रकार कहा जा सकता है कि जनता के इस साहित्य में जनता की ही भाषा प्रयुक्त होती है। पं० भरत व्यास फिल्मी गीतों में प्रयुक्त भाषा की सरलता पर अपने विचार निम्नरूप में प्रकट करते हुए कहते हैं -- ' फिल्मी गीत कविता का वह अंग है, जिसमें सम्पूर्ण गेय तत्व हो तथा भाषा उसकी अत्यन्त सरल हो जो ग्राम्य गीतों के शास्त्र पर आधारित हो, जिसकी प्रथम पंक्ति अथवा मुखड़ा इतना मौलिक एवम् आकर्षकहो कि बार-बार दुहराया जा सके और जो कोटि-कोटि कण्ठों का प्रिय बन सके।[2]

ग्राम्य गीतों के शास्त्र से तात्पर्य पं०भरत व्यास का लोक-गीतात्मक धुनों से है। हिन्दी फिल्मी गीतों की भाषा पर लोकधुनों का प्रभाव अधिकहै तभी वे वैसे ही रसीली, वैसे ही प्रवाह पूर्ण हैं। फिल्मी गीतकार अपने गीतों को जन-मन में बसा देना चाहता है और इस प्रकार वह उनके अन्तर्मन को स्पर्श कर लेना चाहता है।डा०ओ० प्र० माहेश्वरी के शब्दों में -- ' फिल्मी गीतकार ने अपनी भाषा को अत्यंत कोमल बनाया है जैसे कली की पाँखुरी, वैसे ही दूसरी ओर उसे क्लिष्टता से मुक्त कर अत्यन्त सरल भी रखा है। इसलिए वह तत्सम शब्दों को छोड़कर तद्भव शब्दों को पकड़ता है जो उच्चारण में कठोर एवम् समझने में जटिल हैं।[3]

१- फिल्मी गीतों की भाषा कैसी हो ?साप्ताहिक हिन्दुस्तान, नवम्बर -५५, गो०सिंह नेपाली- पृ० ३७-३८
२- फिल्म संगीत (मासिक) अगस्त सन् १९६०,पृ० १०
३- हिन्दी चित्रपट का गीतिसाहित्य, डा०ओ०प्र०माहेश्वरी,पृ०२८०

इस दृष्टि से हिन्दी फिल्मों के गीतों की भाषा लोकगीतों की भाषा के अत्यन्त निकट है। यथा-- बदरिया, नगरिया, सजनवा, बलमवा, पायलिया, दुलहनिया, अंखिया, सिंगार , धरम, करम, भरम, रुत , सितारे आदि ।

इन लोकगीतात्मक शब्दावली के अतिरिक्त हिन्दी फिल्मी गीतों में हिन्दी भाषा के कई शैली रूप हैं जिनका प्रयोग देखने को मिलता है ।

कामता प्रसाद गुरु ने इस भाषा के तीन रूपों की चर्चा की है जो इस प्रकार हैं:[१]---

१-	ठेठ हिन्दी -	तद्भव शब्दों का बाहुल्य
२-	शुद्ध हिन्दी -	तत्सम शब्दों की बहुलता
३-	उच्च हिन्दी-	प्रांतिक भाषाओं से हिन्दी का भेद दिखलाने के लिए शुद्ध हिन्दी का प्रयोग।कभी-कभी शुद्ध पर्याय शब्दों का प्रयोग ।

भाषा का रूप केवल शब्दावली ही निश्चित नहीं करती वरन् उसमें कारकीय परसर्ग, सर्वनाम, अव्यय, क्रिया आदि का भी महत्व होता है । इस दृष्टि से अरबी- फारसी के सहस्त्रों शब्दों के होते हुए भी भाषा हिन्दी न होकर फिल्मी गीतों की भाषा `हिन्दुस्तानी` बनी रहती है ।

१- श्री कामता प्रसाद गुरु - हिन्दी - व्याकरण ,
- पृष्ठ- २२-२३

इस प्रकार हिन्दी ,विशुद्ध हिन्दी, संस्कृत बहुल हिन्दी चलती हुई साधारण हिन्दी, ठेठ हिन्दी, उर्दू मिश्रित हिन्दी आदि अनेक रूपों में से फिल्मों की भाषा को चलती हुई साधारण हिन्दी भाषा कहा जा सकता है, जिसमें पर्याप्त रूप से अरबी- फारसी शब्दावली मिली हुई है। शैली की दृष्टि से इसको मध्यम शैली कहा जा सकता है, जिसमें संस्कृत के चलते हुए शब्द ही प्रयुक्त हुए हैं, तद्भव शब्दों का प्रयोग हुआ है, सामान्यत: शब्दावली की दृष्टि से अरबी एवम् फारसी की ओर झुकाव अधिक है।

लोक-मानस से सम्बद्ध होने के कारण 'दीपक' हिन्दी फिल्मी गीतों में प्रयुक्त भाषा के स्वरूप के विषय में कहते हैं-- 'गीत उस मस्ती में डूब कर लिखे जाते हैं, जिसे जन-मन- रंजनकारिणी धारा अपनी कल- कल करती हुई लहरों से सुनाती है। गुफाओं में बैठकर, लोकरंजन की रागिनी नहीं लिखी जा सकती।समाज की सांसों में जाने पर ही समाज के विकास की धुन जागती है। मदिरा के मद में चूर गीतकार बहक- बहक कर कुछ बक जरूर सकताहै, लोक -सत्य की संज्ञा नहीं दे सकता।[१]

अत: हिन्दी फिल्मी गीतों की भाषा में लोक सत्य की व्यन्जना होती है , इसलिए उन गीतों में मिली जुली भाषा का आदर्श रहता है , जिसमें उर्दू की शब्दावली का आधिक्य तो है, पर वह दूसरी ओर उच्च उर्दू तथा ठेठ उर्दू से भी उतनी ही दूर है। कहा जा सकता है कि हिन्दी फिल्मी गीतों की भाषा लोक सत्य से अनुप्राणित रहने के कारण सरल एवम् सुगम होती है।

१- गीतकार सरस्वती कुमार दीपक : महेन्द्र कुमार अम्बष्ट ,
पृष्ठ- संख्या : ४७-४८

हिन्दी फिल्मी गीतों में प्रयुक्त भाषा का विवेचन निम्न रूप में प्रस्तुत है ---

१- लोकगीतात्मक शब्दावली का प्रयोग ।

२- संयुक्ताक्षरों में लचीलापन ।

३- अनर्गल शब्दों का प्रयोग।

४- अरबी फारसी शब्दावली का प्रयोग ।

५- अंग्रेजी शब्दावली का प्रयोग ।

६- तत्सम शब्दावली का प्रयोग ।

७- प्रादेशिक भाषाओं की शब्दावली का प्रयोग ।

क- पंजाबी , ख- बंगाली , ग- तमिल , घ- सिन्धी , ङ- मराठी , च- गुजराती ,छ- हिन्दी, अंग्रेजी, अवधी, ब्रज , राजस्थानी, भोजपुरी आदि ।

१- <u>लोकगीतात्मक शब्दावली</u>:-

हिन्दी फिल्मी गीतकारों ने अपने गीतों की भाषा को सरल एवम् सुगम बनाने के लिए साधारण जनभाषा के शब्दों काप्रयोग किया है । ऐसा करने से भाषा में लचीलापन आ गया और ऐसे गीतों को जन-मानस ने आत्मस्थ किया । लोक गीतात्मक शब्दाली से संबंधित हिन्दी फिल्मी गीतों के कतिपय उदाहरण द्रष्टव्य हैं --

क- <u>सजनवा</u> वैरी हो गए हमार ।[१]

ख- आया आया <u>अटरिया</u> पे चोर ।[२]

१- फिल्म- तीसरी कसम गीतकार- शैलेन्द्र

२- फिल्म- मेरा गांव मेरा देश ,, आनन्दबक्शी

ग- सावन का महीना, पवन करे सोर
जियरा रे ऐसे झूमे जैसे मन मे नाचे मोर ।[१]

घ- फूलगेंदवा ना मारो लगत करेजवा में चोट
दूंगी दुहाई मैं काहे चतुर बनत, ठिठोरी करत हरजाई[२]

ङ- नगरी - नगरी द्वारे- द्वारे ढूढ़ू रे सांवरिया
पीया- पीया रटते - रटते मैं तो हो गई रे बावरिया।[३]

च- दिल की बतियां तू ही समझ ले मैं कैसे समझाऊँ
जियरा मोरा लरजे बदन मोरा कांपे -----।[४]

छ- मोहे भूल गए सांवरिया ,आवन कह गए अजहू न आवे
लीनी न मोरी खबरिया ।[५]

ज- जिया बेकरार है छाई बहारे आजा मेरे बालमा
तेरा इन्तजार है ।[६]

झ- मत जइयो नकिरिया छोड के
तोरे पइया परू बलमा, मैं विनती करूँ ।[७]

१- फिल्म-मिलन गीतकार-आनन्द बख्शी
२- फिल्म-दूज का चाँद गीतकार-साहिर
३- फिल्म-मदर इण्डिया गीतकार-शकील
४- फिल्म-मदर इण्डिया, ,, - ,,
५- फिल्म- बैजूबावरा, ,, - ,,
६- फिल्म- बरसात ,, -हसरत
७- फिल्म- दो बदन ,, -शकील

ड- पिपरा के पतवा सरीखे डोले मनवा

कि हियरा में उठत हिलोर

अरे पुरवा के तरवा में लाबो रे संदेशवा ।[१]

त- मोरे अंगना में जब पुरवैया चली

मोरे द्वारे की खुल गई किवरिया

मैंने जाना कि आइ गये संवरिया ।[२]

थ- जो पंख होते तो उड़ आती रे, रसिया ओ जालिमा ।[३]

द- नजर लागी राजा तोरे बंगले पर

जो मैं होती राजा बेला चमेलिया लिपट रहती तोरे अंगना मे।[४]

ध- नदी नारे न जाओ श्याम पइयां परु ।[५]

न- बादल देख के भर आईं अंखियाँ, छम-छम नीर बहाऊँ।[६]

ण- अंगना तो पर्वत भयो और भयो विदेस ।[७]

प- करमन की बगिया पर बैठा, उलटी बास लगाए ।[८]

फ- मैंने रंगली आज चुनरिया पिया तोरे रंग में ।[९]

ब- मोरे करेजवा में पीर हाय राम कासे कहूं ।[१०]

१- फिल्म- गोदान . गीतकार- अन्जान
२- फिल्म- साहिब बीबी और गुलाम -गी०- शकील
३- फिल्म- सेहरा गीतकार- हसरत जयपुरी
४- फिल्म- काला पानी, ,, मजरुह
५- फिल्म- मुझे जीने दो, ,, साहिर
६- फिल्म -स्ट्रीट सिंगर ,,
७- फिल्म -तुलसीदास ,, मधोक
८- फिल्म -दुल्हन एक रात की,, राजामेंहदी अली खाँ
९- फिल्म -गंगामइया तोहे पियरी चढ़इबो -गीत० - शैलेन्द्र
१०-फिल्म - बरसात गीतकार- हसरत जयपुरी

उपरिलिखित प्रस्तुत गीतों के उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि फिल्मी गीतकारों ने गीतों को सरस, सरल एवम् सहज बनाने के लिए लोकगीतात्मक शब्दावली का प्रयोग किया है। इसी सरलता, सहजता एवम् सहजता के कारण आज फिल्मी गीत बच्चों से लेकर बूढ़ों तक की जुबान पर स्थित है।

२- संयुक्ताक्षरों का प्रयोग :-

हिन्दी फिल्मी गीतों की भाषा में संयुक्ताक्षरों का प्रयोग बहुत कम हुआ है, यदि हुआ भी है तो बहुत लचीलेपन के साथ- जैसे --

१- अजब है दास्तां तेरी जिन्दगी कभी रुला दिया हंसा
-दिया कभी।[१]

२- तेरी जुल्फों से कैद मांगी थी रिहाई तो नहीं मांगी।[२]

३- मैं जिन्दगी का साथ निभाता चलागया
हर फिक्र को धुयें में उठाता चला गया।[३]

४- मेरी प्यारी बहनियां बनेगी दुल्हनिया, भैया राजा बजायेगा
- बाजा।[४]

५- बड़ी मस्तानी है मेरी महबूबा।[५]

१- फिल्म - शरारत गीतकार - राजेन्द्र कृष्ण
२- फिल्म -
३- फिल्म -हमदोनों गीतकार - साहिर
४- फिल्म -सच्चा झूठा गीतकार - इन्दीवर
५- फिल्म -जीने की राह गीतकार - आनन्दबख्शी

'ण' के स्थान 'न' के प्रयोग से भाषा में सुकुमारता एवम् लचीलापन आ गया है। जैसे --

१- तोरे कारन घर से आई हूँ निकलके, सुना दे जरा बांसुरी।[१]

२- मुझे अपनी सरन में ले लो राम।[२]

३- गंगा जिसके चरन पखारे।[३]

४- भला करेंगे राम तेरे पूरन होंगे सब काम।[४]

इसी प्रकार फिल्मी गीतकारों ने 'तुम्हारे' के स्थान पर 'तुमरे', 'वह' के स्थान पर 'वो' आदि शब्दों का प्रयोग करके भाषा में लोच पैदा करने का पूरा- पूरा प्रयास किया है।--

३- अनर्गल शब्दों का प्रयोग:-

कहीं - कहीं तो संगीत की प्राण प्रतिष्ठा के लिए हिन्दी फिल्मी गीतकारों ने अनर्गल। अटपटे शब्दों का प्रयोग किया है लेकिन इन गीतों में माधुर्य विद्यमान है। अटपटे शब्द संगीतात्मकता को बनाये रखते हैं।--

५- लालाला गुल गुल गुला, गुल गुला लो बुल बुला।[५]

६- अंटम फंटम छोड दे बाबू, हो गई तेरी हार।[६]

१- फिल्म- मदर इण्डिया- गीतकार- शकील

२- फिल्म- तुलसीदास गीतकार- राजेन्द्र कृष्ण

३- फिल्म- गंगातेरा पानी अमृत गी०- आनन्दबख्शी

४- फिल्म-नाग कन्या गीतकार- प्रदीप

५- फिल्म- दो मस्ताने गीतकार-राजेन्द्र कृष्ण

६- फिल्म- हम सब चोर हैं गीतकार- मजरुह

३- गुम्मा गुम्मा गुम्मा रेलो रेलो ।[१]

४- मेरा नाम चिन चिन चू बाबा चिन चिन चू
रात चाँदनी मैं और तूं ।[२]

५- गापुची गापुची गम गम ।[३]

६- टना टन टन टना टन टन बज गई मेरी घंटी ।[४]

७- अपलम चपलम चपलाई रे ।[५]

८- मीनी मीनी चीची मीनी मीनी चीची।[६]

९- ईना मीना डीका डाय नम डीका डीका डीका
कि अम पम पू कि अम पम पू ।[७]

१०- मैं हूं झुम - झुम - झुम - झुम झुमरु
कि प्यार के गीत सुनाता चला ।[८]

११- सच हुये सपने मेरे झूम लिया मन मेरे
चा छिक छिक चा छेईं छा ।[९]

१- फिल्म- लाइट हाउस गीतकार- साहिर

२- फिल्म- हावडा ब्रिज गीतकार- कमर जलालावादी

३- फिल्म- कभी- कभी गीतकार- साहिर

४- फिल्म- वतन के रखवाले गीतकार- आनजान

५- फिल्म- आजाद गीतकार- राजेन्द्र कृष्ण

६- फिल्म- कठपुतली गीतकार- शैलेन्द्र

७- फिल्म- आशा गीतकार- राजेन्द्र कृष्ण

८- फिल्म- झुमरु गीतकार- मजरुह

९- फिल्म- काला बाजार गीतकार- शैलेन्द्र

४- अरबी-फारसी शब्दावली का प्रयोग:-

हिन्दी एक प्रदेश की नहीं समूचे राष्ट्र की भाषा है, जो अब अन्तर्राष्ट्रीयता के क्षितिजों को स्पर्श कर रही है। हिन्दी में सब की भावनाओं को व्यक्त करने की सामर्थ्य होनी चाहिए तथा उसका विकास होना चाहिए। सब की भावनाओं को व्यक्त करने के लिए उसमें अन्य भाषाओं के भी शब्द समाहित हो गए हैं। हिन्दी के आज के रूप में अरबी, फारसी और अंग्रेजी इन तीनों भाषाओं का संगम हुआ है, इस संगम से हिन्दी भाषा को समृद्धि मिली है और लोकप्रियता भी। यदि हम नित्यप्रति के व्यवहार की हिन्दी देखें तो उसमें अरबी - फारसी शब्दों की बहुत बड़ी संख्या शब्दों की मिलेगी। ऐसे शब्द सहज रूप में हमारी वाणी से नि:सृत होते हैं। हिन्दी फिल्मी गीतकारों ने भी अपने गीतों में इन शब्दों का प्रयोग अत्यन्त सुन्दर ढंग से किया है, ऐसा करने से गीतों में कहीं भी कुरूपता नहीं दिखलाई पड़ती है।

ऐसे गीतों के उदाहरण प्रस्तुत हैं, जिनमें अरबी-फारसी शब्दावली हिन्दी के साथ - घुल मिल गई है --

१- स्कूल में जाकर क्या पढ़ोगे अरे दिल की किताब पढ़ लो।[१]

२- नफरत करने वालों के दिल में आज प्यार भर दूँ।[२]

३- मेरी आवाज सुनो दिल का राज सुनो।[३]

४- ये रात ये फिजाएं फिर आयें या न आएं
आओ शमा बुझाके आज हम दिल जलाएं।[४]

१- फिल्म- दिलदार गीतकार- इन्दीवर

२- फिल्म- नौनिहाल गीतकार- कैफी आजमी

३- फिल्म- वही गीतकार- वही

४- फिल्म- बटवारा -गी०- राजेन्द्रकृष्ण

५- बहुत शुक्रिया बडी मेहरबानी

कदम चूम लूँ या आंखें बिछ्दूँ ।[१]

६- इन्तिदाए इश्क में हम सारी रात जागे

अल्ला जाने क्या होगा आगे

मौला जाने क्या होगा आगे ।[२]

७- अब आज छेड़ो मुहब्बत की शहनाइयाँ

दिल के टुकड़े हुए और जिगर लुट गया ।[३]

८- आप आए तो ख्याले दिल नाशाद आया

कितने भूले हुए जख्मों का पता याद आया ।[४]

९- हँसता हुआ नूरानी चेहरा

काली जुल्फें रंग सुनहरा ।[५]

१०- ऐ हुस्न जरा जाग तुझे इश्क जगाए

बदले मेरी तकदीर जो तू होश में आए।[६]

११- खुदा भी जब जमीं पर आसमां से देखता होगा

मेरे महबूब को किसने बनाया सोचता होगा।[७]

१- फिल्म- एक मुसाफिर एक हसीना - गीत०- एस० एच० बिहारी

२- फिल्म- हरियाली और रास्ता - गीत०- हसरतजयपुरी

३- फिल्म- सन आफ इण्डिया -गीत ०- शकील

४- फिल्म- गुमराह - गीत०- साहिर

५- फिल्म- पारसमणि - गीत०- इन्दीवर

६- फिल्म- मेरे महबूब - गीत०- शकील

७- फिल्म- धरती - गीत०- राजेन्द्रकृष्ण

प्राय: हिन्दी फिल्मीगीतों में उर्दू (अरबी-फारसी) की शब्दावली किसी न किसी रूप में प्रयुक्त होती दिखलाई पड़ती है जिनमें कुछ उल्लेखनीय शब्द- तौबा[1], निगाहों[2], तकदीर,[3] जिस्म[4], फरिश्ते[5], शीशए-दिल,[6] शामें-गम[7], जुदाई,[8] इलाही,[9] माजरा[10], जुबां,[11] बेवफाई[12] इल्जाम[13], परवरदिगारे आल[14], आरजू[15], जुस्तजू[16], मुलाकात[17], नाज[18], हद[19] रिवाजों[20], रूह[21], दुआएं[22] आदि -आदि हैं।

१- फिल्म- आरती गीतकार- मजरूह
२- फिल्म- आदमी गीतकार- शकील
३- फिल्म- जहाँ आरा गीतकार- राजामेंहदी अली खां
४- फिल्म- धरती गीतकार- हसरत
५- फिल्म-इन इविनिंग इन पैरिस ,, - शैलेन्द्र
६- फिल्म-दिल अपना प्रीतपरायी ,, - हसरत
७- फिल्म-जहां आरा ,, - कैफीआजमी
८- फिल्म- जुदाई ,, - इन्दीवर
९- फिल्म- मिर्जागालिब ,, --छोटेनवाब
१०-फिल्म- माजरा ,, - शैलेन्द्र
११-फिल्म- ट्रैक्सी ड्राइवर ,, - साहिर
१२-फिल्म- लैला मजनू ,, - साहिर
१३-फिल्म- अमर ,, - शकील
१४-फिल्म- हातिमताई ,, -
१५- निकाह ,, - सहनजमाल
१६- फिल्म-दिले नादा ,, - निदाफाजली
१७-फिल्म- छोटी सी मुलाकात ,, - शैलेन्द्र
१८-फिल्म- प्यासा ,, - साहिर
१९-फिल्म- कल्पना ,, - जाननिसार अख्तर
२०-फिल्म- प्यासा ,, - साहिर
२१-फिल्म- खामोशी ,, - कैफीआजमी
२२-फिल्म- माँ-बाप ,, - राजेन्द्र कृष्ण

५- अंग्रेजी शब्दावली का प्रयोग:-

अरबी- फारसी के अतिरिक्त दूसरी जिस विदेशी भाषा के शब्दों का हिन्दी फिल्मी गीतों में प्रयोग हुआ है, वह है अंग्रेजी शब्दावली। अंग्रेजी भाषा के शब्दों का फिल्मों के सम्भाषणों में भी खूब प्रयोग दिखलाई पड़ता है फिर गीतों की बात ही अलग है। उदाहरण स्वरूप हिन्दी फिल्मी गीतों की कुछ पंक्तियां देखें, जिनमें अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग हुआ है --

१- मेरे पिया गए रंगून, वहाँ से किया है टेलीफोन।[१]
२- हलो मिस्टर हाउ डूयू डू।[२]
३- आंटी हो या अंकल मैं, गरदन मरोड़ दूँ।[३]
४- अंग्रेजी में कहते हैं कि आई लव यू।[४]
५- जेंटिल मैन, जेंटिल मैन, जेंटिल मैन।[५]
६- आई डोन्ट नो व्हाट यू से।[६]
७- हम डांस करना मांगता, ओ मैडम दिलविलान।[७]
८- टाई लगा के माना बन गए जनाब हीरो
रहे पढ़ाई या लिखाई में तो जीरो जीरो।[८]
९- दारु बड़ी खतरनाक नो टाक नो टाक।[९]

१-फिल्म- पतंगा गीतकार- राजेन्द्रकृष्ण
२- फिल्म-हावड़ा ब्रिज ,, कमर जलालाबादी
३-फिल्म- बालक ,, पं० भरतव्यास
४-फिल्म- खुद्दार ,, आनन्दबख्शी
५-फिल्म- गोपी ,, ,,
६-फिल्म- एक दूजे के लिए ,, ,,
७-फिल्म- पो०बॉ०नं० ९९९ ,, कमरजलालाबादी
८-फिल्म- भाभी ,, राजेन्द्रकृष्ण
९-फिल्म- मरते दम तक ,, रवीन्द्रजैन

१०- राजी का फादर बोला तुझे घर जवाई रखलेंगे ।[1]

११- करता अगर तू बेईमानी तो ऽऽ ऐसा करन्ट लगाती ।[2]

१२- मिलन बेबी मिलन, लेट्स कम, क्लोजिर, क्लोजिर ।[3]

१३- डैडी को मम्मी से मम्मी को डैडी से प्यार है ।[4]

१४- मेरा नाम है कैलेन्डर में तो चला किचन के अन्दर ।[5]

१५- कागज के ही नोट हैं, इनके कागज के ही बोट।[6]

१६- जुलाई अगस्त में सावन ऐसेरिमझिम रिमझिम बरसे ।[7]

१७- आई एम ए डिस्को डांसर ।[8]

१८- गुप चुप हैं मम्मी गुमसुम है डैडी ये कामेडी है या ट्रेजिडी ।[9]

१९- ये भी कन्डम वो भी कन्डम सारे कन्डम रे नार ।[10]

२०- लो आगया हीरो जी भर के देखिये ।[11]

२१- जीसस की खाके कसम बोलता है
लव हम तुमको सारा लाइफ करेगा ।[12]

१-फिल्म- जीते हैं शान से गीतकार- इन्दीवर

२-फिल्म- मर्द की जबान गीतकार- फारूखकैसर

३-फिल्म- अभिमन्यु गीतकार- इन्दीवर

४-फिल्म- अन्दाज गीतकार- आनन्दबक्शी

५-फिल्म- मिस्टर इंडिया गीतकार- जावेदअख्तर

६-फिल्म- प्रतिघात गीतकार-रविन्द्रजैन

७-फिल्म- पुकार गीतकार- गुलशनबावरा

८-फिल्म- डिस्को डांसर गीतकार- अन्जान

९-फिल्म- बाजी गीतकार-आनन्दबक्शी

१०-फिल्म- अभिमन्यु फारुख कैसर

११-फिल्म- मर्दकी जबान गीत० -इन्दीवर

१२-फिल्म- जीते हैं शान से गीत० - शैलेन्द्र

२२- पूरी - पूरी मस्ती देती फाकिट के दाम नहीं लेती ।[१]

२३- मुझसे जो प्यार है तो देन प्लीज टेल
बाजेगी किस दिन वेडिंग बेल, टेल मी शीला ।[२]

२४- हाय रब्बा रब्बा ऐक्सीडेन्ट होगया ।[३]

२५- देवर करे अपील और भाभी बने वकील --।[४]

२६- ये दो नम्बर के अमीर है ----
पहले करोडो कमाते है
फिर पब्लिक ट्रस्ट बनाते है
ट्रस्टी इनके रिश्तेदार । [५]

२७- ड्रीम गर्ल ड्रीम गर्ल किसी शायर की गजल ।[६]

२८- तेरे पूजन को भगवान बनाऊ बैंक मे आलीशान ।[७]

इन गीतों की शब्दावली देखने से स्पष्ट हो जाता है कि फिल्मी गीतकारों ने अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग भी खूब किया है। ये प्रयोग कहीं तो हास्य की उद्भावना करते हैं तो कहीं गीतकार और श्रोताओं की अभिरूचि व्यक्त करते है। अंग्रेजी शब्दावली का प्रयोग गीतों के सौन्दर्य में बाधक नहीं होता पर तुकबन्दी के लिए अच्छा सिद्ध होता है ।

१- फिल्म- मरते दम तक गीतकार- रविन्द्र जैन
२- फिल्म- बाप-बेटे गीतकार- राजेन्द्रकृष्ण
३- फिल्म- कुली गीतकार- आनन्दबक्शी
४- फिल्म- घरसंसार गीतकार- राजेन्द्रकृष्ण
५- फिल्म- दो नम्बर के अमीर-गीतकार- राजेन्द्रकृष्ण
६- फिल्म- ड्रीम गर्ल गीतकार - आनन्दबक्शी
७-फिल्म - शादी गीतकार- राजेन्द्रकृष्ण

६- तत्सम शब्दावली से युक्त हिन्दी फिल्मी गीत:-

हिन्दी फिल्मी गीतों में तत्सम शब्दों का प्रयोग भी देखने को मिलता है। इस प्रकार के फिल्मी गीत कभी- कभी साहित्यिक गीतों जैसा आनन्द प्रदान करते हैं। ऐसे गीतों ने हिन्दी को समृद्धता प्रदान की है। तत्सम शब्दों से युक्त हिन्दी फिल्मी गीतों के कुछ उदाहरण अवलोकनीय हैं --

१- प्रेम ही धर्म है प्रेम ही कर्म है, प्रेम ही सत्य विचार
प्रेम नगर में बनाऊँगी घर ------- ।[१]

२- विश्वकर्मा के द्वारा अति सुन्दर प्यारा- प्यारा ।[२]

३- ऊपर गगन विशाल
नीचे गहन पाताल
बीच में धरित्री --- वाह मेरे स्वामी ।[३]

४- तुम ऊषा की लालिमा हो
भोर का सिन्दूर हो
मेरे प्राणों का हो गुंजन
मेरे मन- मयूर हो
तुम गगन के चन्द्रमा हो
मैं धरा की धूल हूँ। [४]

५- प्रांत - प्रांत से टकराता है, भाषा पर भाषा की लात ।[५]

१- फिल्म- चंडीदास गीतकार- आगाहश्रकश्मीरी

२- फिल्म- बडी बहन गीतकार- आरजू लखनवी

३- फिल्म- मशाल गीतकार- प्रदीप

४- फिल्म- सती सावित्री गीतकार- पं० भरतव्यास

५- फिल्म- बालक गीतकार- पं० भरतव्यास

६- हरी - हरी वसुन्धरा पे - नीला-नीला ये गगन
कि जिसपे बादलों की पालकी, उड़ा रहा पवन ।
ये किस कवि की कल्पना का चमत्कार है ।
ये कौन चित्रकार है ये कौन --- -।[१]

७- सरिता को सागर की प्यास
क्या धरित्री और क्या आकाश
सागर में लहरों का त्रास
प्यार की प्यास, प्यार की प्यास ।[२]

८- हे प्राण प्रिये प्राणेश्वरी यदि आप हमे आदेश करें
तो हम प्रेम का श्री गणेश करें ।[३]

९- भक्ति शक्ति, कर्म धर्म है, ज्ञान मुक्ति का पथ है
आत्मा की अनन्त यात्रा में यह तन तो वह रथ है
पथ अनेक है रथ अनेक है, एक ही लक्ष्य जगाते चलो
ज्योति से ज्योति जलाते चलो, प्रेम की गंगा बहाते चलो।[४]

१०- मधुवन की सुगंध है सांसों में बाहों में कमल
सी कोमलता ।[५]

१- फिल्म- बूंद जो बनगई मोती- गीतकार- पं०भरतव्यास
२- फिल्म- प्यार की प्यास गीतकार- पं० भरतव्यास
३- फिल्म- हम तुम और वह गीतकार- आनन्दबख्शी
४- फिल्म-सन्त ज्ञानेश्वर गीतकार- पं०भरतव्यास
५- फिल्म- सफर गीतकार- इन्दीवर

११- कोई जब तुम्हारा हृदय तोड़ दे
तड़पता हुआ , जब कोई छोड़ दे
तबतुम मेरेपास आना प्रिये ।[१]

१२- गूंज रही है तेरे तट पर
नवजीवन की सरगम
तू नदियों का संगम करती
हम दोनों का संगम
गंगा तेरा पानी अमृत -----।
झर - झर नीर बहाए ।[२]

१३- कहां उड़ चले हैं मन-प्राण मेरे
किसे खोजते हैं मधुर गान मेरे
-- -- -- --
मधुर गंध किसका संदेशा है लाई
हृदय की हुई है हृदय से सगाई ।[३]

१४- मेरे जीवन की पर्ण- कुटी में
मेरे प्राणों की पंच वटी में
मेरे स्वासों की कोयल क्या बोले ?
--- --- ---
मेरे मानस का मधुकर क्या बोले ।[४]

१- फिल्म- पूरब और पश्चिम गीतकार-इन्दीवर
२- फिल्म- गंगा तेरा पानी अमृत ,, - साहिर
३- फिल्म- भाभी की चूड़ियां ,, - पं० नरेन्द्र शर्मा
४- फिल्म- सम्पूर्ण रामायण ,, - पं० भरतव्यास

१५- घर आँगन वन वन उपवन उपवन

करती ज्योति अमृत से सिंचन

मंगल घट ढलके । ज्योति कलश छलके

अम्बर कुमकुम कण बरसाये

फूल- पंखुरियों पर मुस्काये

बिन्दु तुहिन जल के ----ज्योति कलश -----।[१]

१६- नव यौवन की प्रथम दृष्टि हो

नयनों की पहली पहचान

कौन हो तुम, तुम कौन हो ?

--- --- ---

विरह नयन के अश्रु समान

विकल सिंधु में करुण बिन्दु हो

घन- घूंघट में , इन्दु समान ।[२]

१७- टूट जायेगा ध्वज धर्म का , जो तुम न आये स्वयम्

सत्यम् शिवम् सुन्दरम् ।[३]

१८- तन भी सुन्दर, मन भी सुन्दर

तू सुन्दरता की मूरत है ।[४]

१९- स्वप्न झरे फूल से

मीत चुभे शूल से

लुट गए सिंगार सभी

बाग के बबूल से

१- फिल्म- भाभी की चूड़ियाँ गीतकार- नरेन्द्रशर्मा
२- फिल्म- स्त्री गीतकार- पं०भरतव्यास
३- फिल्म- भरत मिलाप गीतकार- पं० भरतव्यास
४- फिल्म- सरस्वतीचन्द्र गीतकार- इन्दीवर

और हम खडे - खडे
बहार देखते रहे । [1]

२०- हाव भाव अनुभाव से सेवा करें भगवान तेरी
नव कल्पना --------
चन्द्रमा सा मुख सलौना श्याम वर्णा केश हैं
नयन से मृग नैन हैं वाणी मधुर उच्चारती
नित्य गान ध्यान पूजा इनका ------ । [2]

२१- जननी जन्मभूमि स्वर्ग से महान् है । [3]

२२- यदा यदा हि धर्मस्य, ग्लानिर्भवति भारत
अभ्युत्थानमधर्मस्य, यदात्मानं सृजाम्यम्
हर नई किरण के साथ मंगल संदेश लाया
है सत्य वह धरा कि जहां
स्वर्ग ज्ञान आया, जहां ज्ञान जगमगाया
जागा रे प्रभात जागा । [4]

७- प्रादेशिक भाषाओं की शब्दावली से युक्त हिन्दी फिल्मीगीत:-

हिन्दी फिल्मी गीतों में प्रादेशिक भाषाओं की शब्दावली का भी यत्र-तत्र उपयोग हुआ है। ऐसी प्रादेशिक भाषाओं में पंजाबी, गुजराती, बंगाली, तामिल, सिन्धी, मराठी आदि का नाम लिया जा सकता है, साथ ही साथ हिन्दी की स्थानीय भाषाएँ जैसे- राजस्थानी, भोजपुरी, मैथिली आदि शब्दों से सम्बन्धित गीत भी देखने को मिलते हैं --

---

१-फिल्म- नई उमर की नई फसल- गीतकार- नीरज
२-फिल्म- मृगतृष्णा गीतकार- योगेश
३-फिल्म- पृथ्वीराज चौहान गीतकार- पं०भरतव्यास
४-फिल्म- सन्त ज्ञानेश्वर गीतकार- पं०भरतव्यास

आइये, प्रादेशिक भाषा की शब्दावली से युक्त हिन्दी फिल्मी गीतों का अवलोकन करें--

पंजाबी:-

१- लिखने वाले ने लिख डाले मिलन के साथ विछोड़े
असा हुण दूर जाना ये, दिन रह गए थोड़े ।[१]

२- मैं तेरे प्यार दी प्यासी वे चन्ना मेरा इंसाफ कर ।[२]

३- जिन्निया तेनू मेरी लगिया तेनू इक लगे तू जाणें ।
गुलाम फरिदा दिल ओत्थे दइये जित्थे अगला कदर भी जाणें।[३]

४- गल सुण सजना चुक मेरे बलमा दुनिया से दूर चलते हैं ।[४]

५- सजणा वे सजणा, वे सजणा वे सजणा
देख मजाक न कर तू ऐसा मैं नहीं तेरे सजणा जैसा ।[५]

६- मैं काईं झूठ बोल्या कोईंणा कोईंणा
मैं काईं जहर घोल्या कोईंणा कोईंणा ।[६]

७- मैं छम - छम नच दी फिरा ।[७]

८- सोणियाँ जीओ- जीओ उठकर पीओ- पीओ ।[८]

१- फिल्म- अर्पण गीतकार- आनंदबख्शी
२-फिल्म- संसार ,, ,,
३-फिल्म- नाम ,, ,,
४-फिल्म- कभी दिन कभी रात,, नक्शलायलपुरी
५-फिल्म- कर्मा ,, आनंदबख्शी
६-फिल्म- जागते रहो ,, शैलेन्द्र
७-फिल्म- लोफर ,, आनन्दबख्शी
८-फिल्म- लोहा ,, फारुक कैसर

९- तेरी जवानी का भी चर्चा करती है कुड़ियां गली-गली।[1]

१०- गाडी चली रे छलांगा मार दे ।[2]
मैन्यू याद आई मेरे यार की ।

११- रब्बा रब्बा मेरी आंख जो लडी है
आंख जो लडी है मेरे सामने खडी है
- फंस गई कुडी ।[3]

१२- दस मैनू दारु दी बोतले कमी नीए
मैं तेनू पीना के तू मैनू पी नीए ।[4]

१३- दिल करता ओ यारा दिल दारा मेरा दिल करता ।[5]

१४- माही ,रुसवा ए तां रुस जाए
---- ---- ----
गड्डी, टुटदी ए तां टुट जाए
विंदिया चमकेगी ------ ।[6]

इस प्रकार देखते हैं कि हिन्दी फिल्मी गीतों में पंजाबी शब्दों के प्रयोग से उसके गेयत्व में लोच आ जाती है तथा आंचलिकता का समावेश भी हो जाता है।

१- फिल्म-हवालात गीतकार- गुलशनबावरा
२-फिल्म- दादा गीतकार- अनवर जावेद
३-फिल्म- कहानी किस्मत की गीतकार- आनन्दबख्शी
४-फिल्म- मरते दम तक गीतकार- रविन्द्र जैन
५-फिल्म- आदमी और इंसान गीतकार- साहिर
६-फिल्म- दो रास्ते गीतकार- आनन्दबख्शी

कुछ हिन्दी फिल्में ऐसी भी हैं जिनमें लम्बे- लम्बे गीतों को योजना की गई है, जिनमें विभिन्नप्रदेशों के पात्र अपनी प्रादेशिक भाषा में, एक के पश्चात् एक भावाभिव्यक्ति करते हैं। इस दृष्टि से पुरानी फिल्मों में तीन बत्ती चार रास्ता एवम् 'देश प्रेमी' तथा प्यार की प्यास उल्लेखनीय हैं।

उदाहरण के लिए 'प्यार की प्यास' का यह गीत प्रस्तुत है जिसमें बंगाली, तामिल, सिन्धी, मराठी, गुजराती, पंजाबी, हिन्दी शब्दावली का सुन्दर प्रयोग हुआ है। ऐसे गीतों का उद्देश्य देश की एकता के सूत्र में पिरोए रखने का भाव होता है --

बंगाली:-

ओरे ओऽ पोरान बोन्धु रे -
आगे जान ले तोरे प्रेम के फान्दे पोर तामना।

तमिल:-

अल्लि कुडतल्गे ओदिपोडे दिनिले
अनवर वर बुक्के तिर पार्तुमिक कातिन्दने।

सिन्धी:-

सिकमें ओरि सिकमें
सिकमें ओ सिकमें सिकिआ से किन।

मराठी:-

तुलस पुजिते रेशिम ने सुन कांहो छेडिता उगाच हांसून,
फुले वाहुं की पदर साबरु, फुटते हांसू किती बावरु।

गुजराती:-

छानुरे छपनुं छाने रे छपनुरे
छानुरे छपनु कई थाय नहीं थाय नहीं ।

हिन्दी:-

ये सास ससुर का घरवा, बहुरिया सास ससुर का घरवा,
यहां चलि है न तेरा नखरवा , बहुरिया चलि है न तोरा नखरवा ।[१]

इस गीत के अतिरिक्त कई हिन्दी फिल्मी गीत ऐसे हैं जिनमें बीच-बीच में प्रादेशिक भाषा की शब्दावली प्रयुक्त हुई है जिससे गीत में रोचकता का समावेश एवम् हिन्दी की शक्ति ज्ञात होती है कि उसमें इतनी उदारता है कि वह अपने में सब भाषाओं के शब्दों को पचालेती है।

इस सम्बन्ध में निम्न फिल्में उल्लेखनीय हैं जिनमें विभिन्न भाषाओं के शब्द प्रयुक्त हुए हैं --- खुद्दार, कल्पना, मेंहदी रंग लाग्यो देशप्रेमी, एक ही रास्ता, हवालात, आदि आदि--

हिन्दी के फिल्मी गीतों पर प्रादेशिक भाषाओं में पन्जाबी तथा अंग्रेजी का प्रभाव अधिक दिखलाई पड़ता है । कई फिल्मी गीतों में उसकी शब्दावली और शैली को प्रचुरता से ग्रहण किया गया है । हिन्दी फिल्मी संगीत पर पंजाबी संगीत धुनों का विशेष प्रभाव है, वैसे ही भाँगड़ा-नृत्य और तदनुरुप भाषा शैली के गीत भी हिन्दी फिल्मों में रचेगए हैं --

---

१-फिल्म- प्यार की प्यास- गीतकार- भरत व्यास

१- सर पे टोपी लाल हाथ में रेशम का रुमाल
  ओ तेरा क्या कहना ।[१]

२- रेशमा जवान हो गई, कुडी जवान हो गई ।[२]

३- होंठ गुलाबी गाल कटोरे नैना सुरमें दा
  हाय मैं सदके जावां ।[३]

४- तेरी रब ने बना दी जोडी -
  जोडी तेरी रबने । [४]

५- ये देश है वीरों का अलबेलों का मस्तानों का
  इस देश का यारों क्या कहना ।[५]

६- मैन्यू यार बनाना नी चाहे लोग
  बोलिया बोलें ।[६]

७- चल- चल रे नी मुंड़िया वैसाखी वाले मेले में
  मेले का तो बहाना है तू मुझे छेडेगा अकेले मे ।[७]

८- मैं तो खेलूंगी, मैं तो खेलूंगी
  यारी, टूटती ए तो टूट जाए ।[८]

१-फिल्म- कालीटोपी लाल रुमाल-गीतकार- मजरुह सुल्तानपुरी
२-फिल्म- मन की गुडिया गीतकार- आनन्दबख्शी
३-फिल्म- घर संसार गीतकार- राजेन्द्रकृष्ण
४-फिल्म- सुहाग गीतकार- आनन्दबख्शी
५-फिल्म- नयादौर गीतकार- साहिर
६-फिल्म- दाग गीतकार-आनन्दबख्शी
७-फिल्म- हिमालय की गोद में गीत०-आनन्दबख्शी
८-फिल्म- दो रास्ते गीतकार-आनन्दबख्शी

९- मेरा घघरीनुआँ मेरी घघरीनु घुंघरूलवा दे
ता फिर मेरी चाल देख ले माही वे माही वे
मैं बुलबुल पंजाब से आई
बिना घुंघरू वही चाल शरावी के दिल वाले दिलभूल गये ।[१]

१०- बारी बरसी खटन गया बेखटके ले आया खाटी
सजन मेरी प्रीत खरी पर तेरी नीयत खोटी
बारी बरसी खटन गया ते खटके ले आया बेदाना
तुझे मैं समझ गई पर तूने न मुझे पहचाना ।[२]

अंग्रेजी:-

इसी प्रकार अंग्रेजी शब्दों के मेल जोल से निर्मित फिल्मी संगीत धुन का रूप देखिये जिसमें हिन्दी और अंग्रेजी की अच्छी खासी खिचडी पकाई गयी है --

१- मेरे पिया गये रंगून किया है वहाँ से टेलीफोन
तुम्हारी याद सताती है जिया में आग लगाती है ।[३]

२- हम डान्स करना मांगता, ओ मैडम खिलखिलाना
पापा खान पापा खान मिस्टर जान डान्स करना मांगता
-------- ---- आल राइट आल राइट ।[४]

३- टिंगू पतंग को कहता है काइट
बोलो मिस्टर राँग है या राइट ।[५]

१-फिल्म- सावन गीतकार- प्रेमधवन
२-फिल्म- नई दिल्ली गीतकार- शैलेन्द्र
३-फिल्म- पतंगा गीतकार- राजेन्द्रकृष्ण
४-फिल्म- पोस्टबाक्स ९९९ गीतकार- कमरजलालाबादी
५-फिल्म- जमीन के तारे गीतकार- नेपाली

१- माई हार्ट इज सिंगिंग --------।[१]

२- दुनिया की सैर कर लो, दुनिया की सैर करलो
ऐ राउन्ड द वर्ल्ड इन एट डालर्स ।[२]

३- जीसस की खाके कसम बोलता है
लव तुमको हम सारा लाइफ करेगा ।[३]

४- विल्यू मैरी मी, नो नो सॉरी जी।[४]

५- भूल गया सब कुछ याद नहीं अब कुछ
बस यही बात न भूली जूली आइ लव यू ।[५]

६- बी० ए० डी० बैड, बैड माने बुरा
बी० यू० टी० बट, बट माने लेकिन
बरे दिल है तेरे पंजे में तो क्या हुआ
सी०ए०टी० कैट ----------- ।[६]

फिल्मी गीत अधिकांश खड़ी बोली में लिखे गये हैं। इस खड़ी बोली में विभिन्न प्रादेशिक भाषाओं का सम्मिश्रण है । प्रादेशिक भाषाओं के शब्दों के अतिरिक्तहिन्दी की अवधी,राजस्थानी, ब्रजभाषा, भोजपुरी आदि भाषा के शब्दों को ज्यों का त्यों प्रयोग कर दिया गया है उसमें कहीं पर भी तोड़ मरोड़ नहीं की गयी हैक्योंकि

१- फिल्म-जूली गीतकार- हरेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय
२-फिल्म- एराउन्ड दि वर्ल्ड गीतकार- हसरत जैपुरी
३-फिल्म- जीते हैं शान से गीतकार- रवीन्द्र जैन
४-फिल्म- मर्द गीतकार- फारूख कैसर
५-फिल्म- जूली गीतकार- आनन्द बख्शी
६-फिल्म- दिल्ली का ठग गीतकार- राजेन्द्रकृष्ण

इन भाषाओं के शब्दों में लचीला पन है, उनका अपना अलग एक माधुर्य है और हृदय की सहज अनुभूति भी। आइए, इस सन्दर्भ में हिन्दी फिल्मी गीतों के कुछ उदाहरण विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं, जो निम्न हैं ---

अवधी:-

क- बड़े प्यार से उसने हमका दिया गुलाबी फूल
हम का- ई का देत हो हमका फूल ?
हाथ जोड़कर फिर वो बोली
हो गई हमसे भूल- भूल- भूल। हमका ऐसा वैसा [1]----

ख- नैन लड़ जइयें तो मनवा मा खटक होइवे करी-
प्रेम का छुटिहैं पटाका तो धमक हुइवेकरी।[2]

ग- राम करे बबुआ हमार फुलवा को हमरी उमर लगजायें।[3]

घ- जोगी जी धीरे- धीरे नदी के तीरे-तीरे
जोगी जी प्रेम का रोग लगा हमको कोई इसकी दवा -
यदि हो तो कहो --
जोगी जी नींद न आवे, सजन की याद सतावे।[4]

ङ- जियरा रे झूमे रे ऐसे जैसे वनमा नाचे मोर
सावन का महीना पवन करे शोर ---।[5]

१-फिल्म- अदालत गीतकार- गुलशन बावरा
२-फिल्म- गंगाजमुना गीतकार- शकील
३-फिल्म- अनुराग गीतकार- आनन्दबख्शी
४-फिल्म- नदिया के पार गीतकार- रवीन्द्र जैन
५-फिल्म- मिलन गीतकार- आनन्दबख्शी

च- मत जइयो नौकरिया छोड़के
तोरे पइयाँ पडूं बलमा ।[1]

छ- पड़े बरखा फुहार, करे जियरा पुकार
दु:ख जाने न हमार
बैरन ऋतु बरसात की ।[2]

ज- अपने संयूया से नैना लड़इवे हमार कोई का करिहैं ।[3]

झ- जे हम तुम चोरी से बंधे एक डोरी से
जइयो कहाँ ए हुजूर
अरे ई बन्धन है प्यार के- जे हम तुम --[4]

ब्रजभाषा :-

क- यशोमती मइया से पूंछे नन्द लाला
राधा क्यूं गोरी मैं क्यूं काला ।

ख- बोली मुसुक्याती मइया सुन मेरे प्यारे
गोरी,गोरी राधिका के नैन कजरारे ।[5]

ख- मोहे पनघट पे नन्द लाल छेड़ि गयोरे
मोरी नाजुक कलैया मरोरि गयो रे
कंकरी मोहे मारी, गगरिया फोरि डारी
मोरी सारी अनारी भिगोइ गयो रे ।[6]

१- फिल्म- दीवदन गीतकार- शकील
२-फिल्म- दूज का चांद गीतकार- साहिर
३-फिल्म- अर्धांगिनी गीतकार- मजरुह
४-फिल्म- धरती कहे पुकार के गीतकार- मजरुह
५-फिल्म- सत्यम् शिवम् सुन्दरम्-गीत० - पं०नरेन्द्र शर्मा
६-फिल्म- मुगल-ए आजम गीतकार- शकील

ग- रच के मेंहदी में सोलह सिंगार करुँ
और सिंदूर से अपनी मांग भ
टीका माथे पे मोहि सुहावत है ।[1]

घ- मछुया मोरी में नहि मालन आया ।[2]

ड- सैंया छोड दे बइया मेरी पतली कलइयां मुड जायेंगी।[3]

च- दो नैंना मतवारे तुम्हारे, हम पर जुलुम करें ।[4]

छ- मोहे भूल गये सांवरिया, आवन कह गये अजहुं न आये
लीन्हीं न मोरी खबरिया ।[5]

राजस्थानी:-

क- थाने काजलियो बणालूं म्हारे नैणा में रमाल्यूं
राज पलकां में बंद कर राखुं ली
गोरी पलकां में नींद कयां आवेली, आवेली
गोरी पलकां में नींद कया आवेली ?
म्हारी पलकां वालणिये झुलावेली
झुलावेली पलकां पालणि ये झुलावेली

--- --- ---

थाने काजलियो बणल्यूं तुम्हारे नैणा में रमाल्यूं
राज पलकां में बंद कर राखुंली ।[6]

१-फिल्म- सुबह का तारा गीतकार- भरतव्यास
२-फिल्म- चरनदास गीतकार- सुरधार
३-फिल्म- राखी गीतकार- मजरुह
४-फिल्म- मेरी बहन गीतकार- प्रदीप
५-फिल्म- बैजू बावरा गीतकार- शकील
६-फिल्म- वीरदुर्गादास गीतकार- पं०भरतव्यास

ख- आओ म्हारा नटवर नागरिया, पधारो म्हारा नटवर नागरिया
भातां रे क्यूं नहिं आया रे
कबीर कांई थारो काको लागै
कुब्जा कांई जारी कासीरे
करमा को तू खायो खो चढी
सखू की पीसी चाकी रे
मीरा कांई थारी मासी लागै विष अमरत कर पायो रे
आओ म्हारा नटवर नागरिया ।[1]

ग- ऐरी मैं तो प्रेम दीवाणी म्हारो दरद न जाणे कोय ।[2]

घ- चाकर राखो राम म्हां जी ।[3]

भोजपुरी:-

१- नीक सैयां बिन मनवा नहीं लागे सखिया
रिमझिम बरसैला सावनवा, बैरी बस में नाही मनवा
फूली नहीं समाय धरती पहिन हरियारी सारी रे
बालम वाली होइ के मैं फिर भी रहूं कुंवारी रे
मन में जरे विरह की आगी, छूटे नहीं छुटाये लागी।[4]

दिनकर राजस्थानी

१- फिल्म- नानी बाई को मायरो -गीतकार-
२- फिल्म- बहार गीतकार- मीरा
३- फिल्म- मीरा गीतकार- मीरा
४- फिल्म- बिदेसिया गीतकार- राममूर्ति त्रिपाठी

२- मोरे करेजवा में पीर हाय राम कइसे महल
लागल नयनवा के तीर हाय राम कइसे महल
जब से सुनवले पिया मीठी मुरलिया
रहे लागल जिया अधीर, हाय राम -----।[१]

३- चँदा मामा आरे आव पारे आव
नदिया किनारे आव
सोने के कटोरवा में दूध- भात ले ले आव
बबुआ के मुँह में गट मामा ।[२]

भोजपुरी फिल्में विशेष रूप से भौजी, बिदेसिया, हमार संसार, गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इबो, दंगल, अलबेलीनार, लोहा सिंह, रखिया, पान खाये सँइया हमार, हमार भौजी आदि उल्लेखनीय हैं जिनमें एक से एक सुन्दर, रसीले तथा मनभावन गीत हैं जो भाव एवम् भाषा की दृष्टि से उत्कृष्ट बन पड़े हैं ।

ग- हिन्दी चलचित्र गीत: शब्द भण्डार:-

शब्द भण्डार भाषा का मेरुदंड है । साहित्य में शब्द एवम् अर्थ की विशेषायुक्ति का निबंधन किया जाता है । यह निर्णय कवि प्रतिभा का परिणाम होता है। कवि को अर्थ एवम् शब्द का ही बल प्राप्त होता है --

`कविहि `अरथ आखर बलु साँचा` इसी के माध्यम से वह अपनी अनुभूति को संप्रेष्य बनाता है। वस्तुत:(काव्य शब्द का ही प्रपंच है ।)

१- फिल्म-गंगामइया तोहे पियरी चढ़इबो - गीतकार- मजरूह सुल्तानपुरी
२- फिल्म- भौजी -गीतकार - शैलेन्द्र

'शब्द वाक् है और मन है। शब्द और अर्थ के बीच जब प्राण का मेरुदण्ड जुड़ता है, तभी जीवन में कर्म के द्वारा अर्थ की तहें खुलने लगती हैं। शब्द के अध्ययन का फल अर्थ का ज्ञान है। अध्ययन का व्रत लेकर भी जिसने अर्थ को नहीं जाना या जानने की सचाई का कभी प्रयत्न नहीं किया या प्रयत्न करता हुआ भी जो अपने संकल्प को विजयी नहीं बना सका, उस अधीती के लिए शोक का विषय है। अर्थ का साक्षात्कार ज्ञान का सार और साहित्य का अन्तिम फल है। हे मनीषियों ! मन से अर्थ को पूछो और रस के दिव्य स्वाद को प्राप्त करो।'[1]

ऋग्वेद में शब्द को 'वृषभ' बतलाया गया है --

'चत्वारि ----- श्रृंगा त्रयो अस्यपादा द्वे शीर्षे सप्त हस्ता सो अस्य त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति, महादेवो मर्त्या या विवेश।'[2]

शब्द का प्रतीक 'वृषभ' इसलिए माना गया है कि वह अर्थ की वर्षा करता है। यह अर्थ वर्षा ही तो शब्द साधक को सच्चा आनन्द प्राप्त कराता है। शब्द भण्डार से कवि की अभिव्यक्ति क्षमता ही नहीं, अपितु उसके भाव जगत के रहस्य का भी उद्घाटन होता है। शब्द भण्डार से कवि की प्रवृत्तियाँ, सांस्कृतिक परिवेश एवम् भाषा विकास का भी पता चलता है। भाषा के निरूपण में शब्द भण्डार का अपना विशिष्ट महत्व है।

१- विचारों का मधुमय उत्स - शब्द और अर्थ (विश्व भारतीपत्रिका) - डा० वासुदेव शरण अग्रवाल।

२- ऋग्वेद - ४।५८।३

शब्द भण्डार व्यक्ति की वैचारिक स्थिति की अपनी विशिष्ट उपलब्धि होती है। वह उनमें लीन और रमा हुआ उनके अन्तस को खोलता और परिचय प्राप्त करता रहता है। प्रयोग की स्थिति अभिव्यक्ति की वह विकलता है जिसके अन्तर्गत व्यक्ति का शब्द भण्डार प्रकट होने के लिये आतुर दिखाई पड़ता है। यह स्थिति उसके आत्मतोष का कारण तो होती ही है साथ ही जिस अभिनव अर्थ के साथ शब्द की अभिव्यक्ति होती है, वह शब्द क्रम के नये स्वरूप को भी प्रस्तुत करती है। इस प्रकार देखते हैं कि हिन्दी कवियों की तप: पूत शब्द साधना जिस अभिनव अर्थ के साथ जनमानस में प्रगट होती है, वह नित नये अर्थों की परिकल्पना को जन्म देती रहती है। और ऐसा प्रतीत होता है कि उस अर्थ की विशेष सत्ता विद्यमान है और अध्येता के लिए एक चुनौती है।

जिस भाषा का शब्द भण्डार जितना व्यापक होगा, उसके शब्दों का वर्गीकरण उतना ही कठिन होगा। व्यापक शब्द भण्डार भाषा के सौन्दर्य की अभिवृद्धि करता है। अभिवृद्धि के साथ साथ पाठकों एवम् श्रोताओं को चमत्कृत भी करता है।

विश्व में जितने भी कवि हुए हैं उनकी ख्याति उनके काव्य मे उपलब्ध व्यापक शब्द प्रयोग से ही मिली है। भक्ति कालीन कवियों में तुलसीदास सर्वोपरि हैं। उनकी भाषा में प्रयुक्त शब्दों की संख्या लगभग १६००० है। इसके उपरान्त मिल्टन ने ८००० शब्द, होमर ने ६०००शब्द तथा शेक्सपियर ने अपने ग्रन्थों में १५००० शब्दों का प्रयोग किया है। इन आंकड़ों से सिद्ध होता है कि हिन्दी भाषा का शब्द भण्डार व्यापक है। आधुनिक कवियों में पन्त और अज्ञेय शब्द प्रयोग के सन्दर्भ में इन कवियों से पीछे नहीं है।

सम्प्रति प्राचीन कवि और आधुनिक कवि अपने काव्य में व्यापक शब्द प्रयोग के कारण हिन्दी साहित्य में अपना स्थान बनाये हुये हैं। इन कवियों ने अपने काव्य में तत्सम शब्द, तद्भव शब्द, देशज, विदेशज शब्दों का प्रयोग करके अपनी कारयित्री प्रतिभा का प्रदर्शन किया है तथा ~~काव्य~~ काव्य में भावों के अनुरूप शब्द चयन भी किया है। जिसके कारण उनके काव्य में भावों की अभिव्यक्ति पूर्ण सरलता एवम् प्रांजलता के साथ हुई है।

हिन्दी चलचित्र गीतकारों ने अपने गीतों को सुन्दर, सजीव, सरस एवम् मनोहारी बनाने के लिये हिन्दी कवियों की भाँति प्राय: सभी प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया है। इस कारण इनके गीत कहीं कहीं साहित्य गीतों से भी सुन्दर बन पड़े हैं तथा शब्द प्रयोगके सन्दर्भ में इन गीतकारों ने कहीं भी कन्जूसी नहीं बरती है, बल्कि खुले दिल से जो शब्द जहाँ से मिले उन्हें उन्होंने प्रयुक्त किये। आइये- हिन्दी चलचित्र गीतों में प्रयुक्त विभिन्न शब्दों के प्रयोग के सम्बन्धमें दृष्टि पात करते चलें। --

१- <u>तत्सम शब्द:-</u>

किसी भाषा के मूल शब्द को तत्सम कहते हैं। तत्सम का अर्थ है -- उसके समान या ज्यों का त्यों। अत: तत्सम शब्द से तात्पर्य है संस्कृत भाषा के शब्द।

हिन्दी चलचित्र गीतकारों ने तत्सम शब्दों का प्रयोग डटकर किया है। इस संदर्भ में कुछ उदाहरण अवलोकनीय हैं ---

धर्म[१], सत्य[२], जीवन[३], गगन[४], अनूप[५], मनोहर[६], सम्पत्ति[७],

---

१-फिल्म- चन्डीदास　　२-फिल्म- चन्डीदास
३-फिल्म- स्ट्रीट सिंगर　　४-फिल्म- बड़ी बहन
५-फिल्म- धरती माता　　६-फिल्म- धरती माता
७-फिल्म- हम दोनों।

निर्बल[१], मनभावन[२], मधुमास[३], नयन[४], हृदय[५], पथ[६], प्राण[७], पग-पग[८], सुधा[९], मयूर[१०], आदेश[११], वसुन्धरा[१२], चित्कार[१३], पर्वत[१४], विराट[१५], सत्यं शिवं सुन्दरम्[१६], ज्ञान[१७], मुक्ति[१८], पथ[१९], नित्य[२०], सृष्टि[२१], ज्योति -- कलश[२२], अमृत[२३], घट[२४], ऊषा[२५], आंचल[२६], अम्बर[२७], सरिता[२८], सन्तान[२९],

---

१- फिल्म- तूफान और दिया

२- फिल्म- शारदा

३- फिल्म- स्त्री

४- फिल्म- कोहरा

५- फिल्म- पूरब-पश्चिम

६- फिल्म- अजनबी

७- फिल्म- हम तुम और वो

८- फिल्म- दोस्ती

९- फिल्म- प्यासा

१०- फिल्म- कठपुतली

११- फिल्म- हम तुम और वो

१२- फिल्म- बूंद जो बन गई मोती

१३- फिल्म- बूंद जो बन गई मोती

१४- फिल्म- वासना

१५- फिल्म- बूंद जो बन गई मोती

१६- फिल्म- सत्यं शिवं सुन्दरम्

१७- फिल्म- सन्त ज्ञानेश्वर

१८- फिल्म- साधना

१९- फिल्म- दोस्ती

२०- फिल्म- सन्त ज्ञानेश्वर

२१- फिल्म- स्त्री

२२- फिल्म- भाभी की चूडियां

२३- फिल्म- कवी कालीदास

२४- फिल्म- सन्तान

२५- फिल्म- भाभी की चूडियां

२६- फिल्म- पेइंग गेस्ट

२७- फिल्म- स्त्री

२८- फिल्म- तलाक

२९- फिल्म- सन्तान

घर[१], बीन[२], सिंगार[३], नगारा[४], लाख[५], हाथ[६], सुर[७], पिया[८], रात[९], धरती[१०], पी[११], प्रीतम[१२], नित[१३], सपन[१४], आँसू[१५], निरास[१६], होंठ[१७], आँख[१८], जोति[१९], चर्चा[२०], लगन[२१], पदमिनियां[२२], गुन गान[२३], मन्तर[२४], दिसा[२५],

---

१- फिल्म- चन्डीदास
२- फिल्म- स्ट्रीट सिंगर
३- फिल्म- नाग पंचमी
४- फिल्म- स्ट्रीट सिंगर
५- फिल्म- धूप छांव
६- फिल्म अपना हाथ जगन्नाथ
७- फिल्म भरती माता
८- फिल्म- झूला
९- फिल्म- मिस मेरी
१०- फिल्म- मशाल
११- फिल्म- बाबुल
१२- फिल्म- हर हर महादेव
१३- फिल्म- बड़ी बहू
१४- फिल्म- मदहोश
१५- फिल्म- पहली नजर
१६- फिल्म- बैजू बावरा
१७- फिल्म- जाल
१८- फिल्म- दिले नादान
१९- फिल्म- सुबह का तारा
२०- फिल्म- शबाब
२१- फिल्म- जागृति
२२- फिल्म- जागृति
२३- फिल्म- सिराज बहू
२४- फिल्म- बूट पालिश
२५- फिल्म- सीमा

दृष्टि[१], प्रार्थना[२], दीपक[३], प्रीत[४], जगत[५], दाता[६], पालक[७], ध्वजा[८], अमर[९], आत्मा[१०], आदि- आदि। --

२- तद्भव :-

ऐसे शब्द जो संस्कृत और प्राकृत से विकृत होकर हिन्दी में आगे है , वे तद्भव कहलाते हैं। हिन्दी चलचित्र गीतों में प्रयुक्त तद्भव शब्दों के कुछ उदाहरण प्रस्तुत है --

---

१- फिल्म- स्त्री

२- फिल्म- प्रार्थना

३- फिल्म- मेरा गांव मेरा देश

४- फिल्म- निराला

५- फिल्म- प्रभु की महिमा

६- फिल्म- एक फूल दो माली

७- फिल्म- गृह लक्ष्मी

८- फिल्म- सन्त ज्ञानेश्वर

९- फिल्म- सन्त ज्ञानेश्वर

१०- फिल्म- सन्त ज्ञानेश्वर

परवत[१], इक[२], नैन[३], सिख[४], सूरज[५], मोर[६], सपनों का[७], धरम[८], जनम - जनम के फेरे[९], किरन[१०], बरन[११], बयन[१२], माटी[१३], निरमोही[१४], दरस[१५], काजल[१६], गांव[१७], कजरा[१८], वीना[१९], दरशन[२०], हिरनी[२१], नारि[२२], ग्यानी[२३], आदि- आदि ।

१- फिल्म- रेलवे प्लेट फार्म
२- फिल्म- फंटूश
३- फिल्म- झनक-झनक पायल बाजे
४- फिल्म- छलिया
५- फिल्म- नया आदमी
६- फिल्म- अब दिल्ली दूर नहीं
७- फिल्म- देख कबीरा रोया
८- फिल्म- मदर इण्डिया
९- फिल्म- जनम जनम के फेरे
१०- फिल्म- अनाड़ी
११- फिल्म- नवरंग
१२- फिल्म- नवरंग
१३- फिल्म- नवरंग
१४- फिल्म- स्त्री
१५- फिल्म- नागिन
१६- फिल्म- एक ही रास्ता
१७- फिल्म- सी०आई०डी०
१८- फिल्म- दो रास्ते
१९- फिल्म- एक फूल चार काटे
२०- फिल्म-
२१- फिल्म-
२२- फिल्म-
२३- फिल्म-

देशज:-

वे शब्द है, जिसको व्युत्पत्ति का पता नहीं चलता । इन शब्दों का निर्माण बोल चाल की भाषा से होता है । नाट्यशास्त्र में संस्कृत के तत्सम तथा तद्भव रूपों से भिन्न शब्दों को 'देशी' कहा गया है । हेमचन्द्र ने उन शब्दों को देशी कहा है जिनकी व्युत्पत्ति किसी संस्कृत धातु या व्याकरण के नियमानुसार न हो। लोक भाषा में ऐसे शब्दों की अधिकता है ।

हिन्दी चलचित्र गीतों में देशज शब्दों का प्रयोग भी मिलता है । हिन्दी चलचित्र गीतों में प्रयुक्त देशज शब्दों के कुछ उदाहरण देखिये -- सजन[1], अंगना[2], गठरी[3], जंगला[4], बगिया[5], रस्ता[6], पीहू - पीहू[7], छतिया[8], हलकान[9], पहियाँ[10], लल्ला-लल्ला[11], लारा लप्पा[12], लड्डू[13], फुलझडिया[14],

---

१- फिल्म- स्ट्रीट सिंगर
२- फिल्म- वही
३- फिल्म- धूप-छांव
४- फिल्म- प्रेसीडेन्ट
५- फिल्म- धरती माता
६- फिल्म- डाक्टर
७- फिल्म- झूला
८- फिल्म- रतन
९- फिल्म- अनमोल घडी
१०- फिल्म- ,,
११- फिल्म- मुक्ति
१२- फिल्म- एक थी लडकी
१३- फिल्म- आर-पार
१४- फिल्म- ,,

कौआ[१], डीका, माका, नाका, चीका, पीका[२], चूं चूं का मुरब्बा[३], रोटी[४], कांजे[५], कोयलिया[६], बदरिया[७], हौडा[८], डिब्बा[९], वाकड बम बम[१०], वह वह वह[११], फन-फन[१२], ठन-ठन[१३], खिचडी[१४], हलवा[१५], भाडू[१६], फर-फर[१७], दाल[१८], ठुंसना[१९], नाक[२०], फटम-फटम[२१], नथनिया[२२], सायवा[२३](राम तेरी गंगा मैली), पतियाँ[२४](संसार) कव्वा[२५](संसार)।

१-	फिल्म-	अब दिल्ली दूर नहीं	२३-फिल्म-जोहरमहमूद इन हांग-कांग
२-	फिल्म-	आशा	
३-	फिल्म-	बंदी	
४-	फिल्म-	मुसाफिर	२४-
५-	फिल्म-	फिर सुबह होगी	२५-
६-	फिल्म-	काला-पानी	
७-	फिल्म-	काला-पानी	
८-	फिल्म-	हावडा ब्रिज	
९-	फिल्म-	,,	
१०-	फिल्म-	कठपुतली	
११-	फिल्म-	यहूदी	
१२-	फिल्म-	रानी रूपमती	
१३-	फिल्म-	,,	
१४-	फिल्म-	पैगाम	
१५-	फिल्म-	,,	
१६-	फिल्म-	,,	
१७-	फिल्म-	,,	
१८-	फिल्म-	बरसात	
१९-	फिल्म-	चौदहवीं का चांद	
२०-	फिल्म-	,,	
२१	फिल्म-	,,हम-सब चोर हैं	
२२-	फिल्म-		

छिया[१], तमाखु[२], चिरैया[३], बिटिया[४], उई[५], ततइया[६], घाघरा[७], गाअँ[८], रतिया[९], मा[१०], रखिया[११], दाना-दुनका[१२], जियरवा[१३], कटोरा[१४], पिपरा[१५], पतवा[१६], देसवा[१७], फोंकवा[१८], आला रे[१९], थम-थम[२०], हल्ला-गुल्ला[२१], ... व्ट्ट्[२२], ट्ट्ट्[२३], ढेचूं-ढेचू[२४], डगरिया[२५], नगरिया[२६], आदि - आदि ।

१-	फिल्म-	मुकद्दर का फैसला
२-	फिल्म-	,,
३-	फिल्म-	बाबुल
४-	फिल्म-	,,
५-	फिल्म-	बाबू
६-	फिल्म-	,,
७-	फिल्म-	बाबर
८-	फिल्म-	खुद्दार
९-	फिल्म-	मिलन
१०-	फिल्म-	,,
११-	फिल्म-	सच्चा-झूठा
१२-	फिल्म-	गोपी
१३-	फिल्म-	,,
१४-	फिल्म-	मुक्ति
१५-	फिल्म-	गोदान
१६-	फिल्म- ,,	,,
१७-	फिल्म-	,,
१८-	फिल्म-	,,
१९-	फिल्म-	बलफ मास्टर
२०-	फिल्म-	बिन बादल बरसात
२१-	फिल्म-	दूर की आवाज
२२-	फिल्म-	दूर की आवाज
२३-	फिल्म-	दूर की आवाज
२४-	फिल्म-	दूर की आवाज
२५-	फिल्म-	मदर इण्डिया
२६-	फिल्म-	मदर इण्डिया

विदेशज शब्द :-

विदेशी भाषाओं से हिन्दी भाषा में आने वाले शब्दों को विदेशज शब्द कहते हैं। इनमें अरबी, फारसी, अंग्रेजी, बंगला, मराठी, पुर्तगाली भाषाये प्रमुख हैं।

क- अरबी-फारसी के शब्दों का हिन्दी चल चित्र गीतों में प्रयोग:-

मुहब्बत[१], वफा[२], खाक[३], अरमां[४], कश्ती[५], अफसाना[६], नाकाम[७], मौजे-दरिया[८], जलवा[९], उल्फत[१०], परवाने[११], हुस्न[१२], आशियां[१३],

---

१- फिल्म- अनमोल घडी
२- फिल्म- मुगले आजम
३- फिल्म- अनमोल घडी
४- फिल्म- शाहजहाँ
५- फिल्म- जुगनू
६- फिल्म- दर्द
७- फिल्म- अनोखी अदा
८- फिल्म- मेला
९- फिल्म- बाजार
१०- फिल्म- दिल्लगी
११- फिल्म- महल
१२- फिल्म- लीडर
१३- फिल्म- बावरे नैन

तसव्वर[१], जुवां,[२] ख्वाब[३], बालम,[४] हमसफर,[५] गुजर[६], हसरत,[७] दीनारों में,[८] महफिल,[९] आसरा,[१०] औलाद[११], कदम[१२], इन्तजार,[१३] बेशुमार[१४], उल्फत,[१५] नजर,[१६] मजहब[१७], गुलिस्ता[१८], चार दिल चार राहें सलाम[१९], जुर्रत,[२०] गम[२१], संगदिल[२२], मैखाना,[२३] इब्तिदाए-इश्क[२४], जल्वा,[२५]

१- फिल्म- ठोकर
२- फिल्म- बादशाह
३- फिल्म- एक गाँव की कहानी
४- फिल्म- मदर इण्डिया
५- फिल्म- आखरीदावं
६- फिल्म- देवर भाभी
७- फिल्म- नौशेर वाने आदिल
८- फिल्म- साधना
९- फिल्म- दिल्ली का ठग
१०- फिल्म- धूल का फूल
११- फिल्म- ,,
१२- फिल्म- ब्लैक कैट
१३- फिल्म- ताज महल
१४- फिल्म- गूंज उठी शहनाई
१५- फिल्म- ,,
१६- फिल्म- छोटी बहन
१७- फिल्म- दीदी
१८- फिल्म- ,,
१९- फिल्म- बाबर
२०- फिल्म- ,,
२१- फिल्म- रमा
२२- फिल्म- छोटी बहन
२३- फिल्म- नजराना
२४- फिल्म- हरियाली और रास्ता
२५- फिल्म- चौदहवीं का चांद

दुहाई,[१] गुलशन,[२] जाम[३], मेहरबां,[४] तमन्ना[५], सनम[६], जुल्फे[७], रोशन[८], कयामत,[९] जालिम,[१०] दास्तां,[११] जन्नत,[१२] महबूब[१३], नगमा[१४], कफन[१५], जुदा[१६], हकीकत[१७], दामन[१८], नसीब[१९], गरदिश[२०],

---

१- फिल्म- चौदहवीं का चाँद

२- फिल्म- मुझे जीने दो

३- फिल्म- बिनबादल बरसात

४- फिल्म- संगम

५- फिल्म- लीडर

६- फिल्म- जहांआरा

७- फिल्म- सुहागन

८- फिल्म- कश्मीर की कली

९- फिल्म- ,,

१०- फिल्म- ,,

११- फिल्म- वह कौन थी

१२- फिल्म- शबनम

१३- फिल्म- मास्टर एण्ड इन्स श

१४- फिल्म- ,,

१५- फिल्म- नई उमर की नई फसल

१६- फिल्म- एक सपेरा एक लुटेरा

१७- फिल्म- तीन देवियां

१८- फिल्म- रुस्तम और सोहराब

१९- फिल्म- दो बदन

२०- फिल्म- रेशमी रुमाल

बदनसीबी[१], हमदर्दी[२], सबा[३], दरिया[४], जलवों[५], आरजू[६], बं अन्दाज[७], दीदार[८], नूर[९], शिकायत[१०], बेजा तकल्लुफ[११], वफा[१२], तमन्ना[१३], खुदकशी[१४], बन्दगी[१५], तराना[१६], कुरबान[१७], रिश्ता[१८],

---

१- फिल्म- दो बदन

२- फिल्म- ममता

३- फिल्म- ,,

४- फिल्म- हिफाजत

५- फिल्म- लव इन टोकियो

६- फिल्म- ,,

७- फिल्म- बदतमीज

८- फिल्म- जीते हैं शान से

९- फिल्म- ,,

१०- फिल्म- हमराज

११- फिल्म- वही

१२- फिल्म- मि०इण्डिया

१३- फिल्म- फर्ज

१४- फिल्म- अनोखीरात

१५- फिल्म- ,,

१६- फिल्म- संघर्ष

१७- फिल्म- राम तेरी गंगा मैली

१८- फिल्म- आशीर्वाद

इन्तकाम[१], इत्तफाक[२], मुल्क[३], खुशबू[४], शरबती[५], खिजां[६], मुकद्दर[७], जिगर[८], फरमाइये[९], चाक-जिगर[१०], मुसव्वर (धरती)[११], परीशां (धरती)[१२], जिस्म (धरती)। आदि- आदि -

---

१- फिल्म- हुकूमत

२- फिल्म- आदमी और इंसान

३- फिल्म- आंखें

४- फिल्म- आंखें

५- फिल्म- दो रास्ते

६- फिल्म- दो रास्ते

७- फिल्म- विश्वास

८- फिल्म- एक श्रीमान एक श्रीमती

९- फिल्म- मेरे सनम

१०- फिल्म- सफर

११- फिल्म-

१२- फिल्म-

ख- अंग्रेजी शब्द और हिन्दी चल चित्र गीत:-

पाकेट[१], सेम्पुल[२], ड्रीम गर्ल[३], नो टाक[४], पब्लिक[५], थैंक यू[६], फादर[७], राइस प्लेट[८], वाइफ[९], करेन्ट[१०], ड्रामा[११], किचन[१२], जाब[१३], सनडे[१४], टाप[१५], वोट[१६], नोट[१७], हीरो[१८], मिस्टर[१९], डैडी[२०]

१-	फिल्म-	शहंशाह
२-	फिल्म-	,,
३-	फिल्म-	ड्रीम गर्ल
४-	फिल्म-	मरते दम तक
५-	फिल्म-	रोटी
६-	फिल्म-	जीते है शान से
७-	फिल्म-	,,
८-	फिल्म-	,,
९-	फिल्म-	,,
१०-	फिल्म-	मर्द की जबान
११-	फिल्म-	मि० इण्डिया
१२-	फिल्म-	,,
१३-	फिल्म-	,,
१४-	फिल्म-	कर्मा
१५-	फिल्म-	प्रतिघात
१६-	फिल्म-	,,
१७-	फिल्म-	,,
१८-	फिल्म-	हीरो
१९-	फिल्म-	बूट पालिश
२०-	फिल्म-	काश

इंजन[1], स्टम बम्ब[2], बैंड[3], ब्राउन[4], पालिश[5], डेमफूल[6], बूट[7],
इंगलिश[8], पाकिट बुक[9], आटोमेटिक टेलीफून[10], जीरो[11], कैट,
रैट, मेड, बाय, गोट, नोज, बेड, बट[12], डिस्को डांसर[13],
सिंगर, आइटम, आरकेस्ट्रा[14], सांग[15], कामेडी[16], नाइलान, परेड,

---

१-	फिल्म-	हिफाजत
२-	फिल्म-	जागृति
३-	फिल्म-	हवालात
४-	फिल्म-	बूट पालिश
५-	फिल्म-	,,
६-	फिल्म-	मकान नं०-४४
७-	फिल्म-	,,
८-	फिल्म-	नया दौर
९-	फिल्म-	चंदन
१०-	फिल्म-	,,
११-	फिल्म-	भाभी
१२-	फिल्म-	दिल्ली का ठग
१३-	फिल्म-	डिस्को डांसर
१४-	फिल्म-	,,
१५-	फिल्म-	हीरो
१६-	फिल्म-	बाजी

स्टम , राकेट ,[१] मशीन[२] विस्कुट[३], मम्मी-डैडी,[४] हैप्पी,[५] आदि आदि।

ग- हिन्दी के अतिरिक्त हिन्दी चलचित्र गीतों में भारतीय भाषाओं के शब्दों का भी प्रयोग मिलता है । यथा ---

१- बंगाली- बोन्धु रे , आमी, छडी लाम, मोशाय, रोस गुल्ला आदि।[६]

२- तमिल- कुडतरुगे , दिनिले, एन्ने, माकतुडी, अल्लि कुड, अय्य-अय्ययो।[७] (ध्यान किये जा)

३- सिन्धी- मुंह अजो , कहा चली नी, मलारा सिकमें आदि।[८]

४- मराठी- सावरु , पासुन, उगाच , पुजिते , तुमचा, काय आदि।[९]

५- गुजराती- राख्युं, कहेवाय , छानु रे, हुप्या ।[१०]

६- पंजाबी- सोनिया, चन्न , रब , तैन्यु ,सजणा, ओत्थे, जित्थे जाणे ।[११]

१- फिल्म- फैशनेबिल वाइफ

२- फिल्म- सन आफ इण्डिया

३- फिल्म- दूर की आवाज

४- फिल्म- ,,

५- फिल्म- ,,

६- फिल्म- प्यार की प्यास

७- फिल्म- खुद्दार,

८- फिल्म- कल्पना

९- फिल्म- नाम

१०- फिल्म- मर्दानाशी बाते

११- फिल्म-

घ- हिन्दी बोलियों के शब्द और हिन्दी चल चित्रगीत :-

१- अवधी:-

`मनवा मा[१], छूटि है[२], हमका[३], हमरी[४], सतावे[५], मन मा[६], करिहै[७], लडइबौ[८] आदि।

२- ब्रजभाषा:-

मइया[९], ललन[१०], फोरि[११], मोहे[१२], अनारी[१३], बइया[१४], आदि -

३- बुन्देली भाषा:- गुइयां।[१५]

१- फिल्म- गंगा जमुना
२- फिल्म- ,,
३- फिल्म- अदालत
४- फिल्म- पाकीजा
५- फिल्म- नदिया के पार
६- फिल्म- साधना
७- फिल्म- अर्द्धांगिनी
८- फिल्म- अर्द्धांगिनी
९- फिल्म- सत्यम् शिवम् सुन्दरम्
१०- फिल्म- ,,
११- फिल्म- मुगले आजम
१२- फिल्म- ,,
१३- फिल्म- बैजूबावरा
१४- फिल्म- बैजूबावरा
१५- फिल्म- झनक-झनक पायल बाजे

४- **राजस्थानी:-**

आवेली,[१] म्हारा[२], खीचडी[३], दीवाणी,[४] म्होजी[५]।

५- **भोजपुरी:-**

गइल,[६] आइल[७], चढइबो[८], पियरी[९], बलुनी[१०], कटोरवा[११],आदि-

६- **बम्बइया:-**

अपुन[१२], टकला, बाटली ।

७- **हैदराबादी:-**

राता, बाता ,तनदाना , तुपक लेना , गाउशो ।

१- फिल्म- दुर्गादास
२- फिल्म- मीरा
३- फिल्म- नानीबाई को मायरो
४- फिल्म- मीरा
५- फिल्म- भक्त मीरा
६- फिल्म- विदेशिया
७- फिल्म- मौजी
८- फिल्म - गंगामइया तोहे पियरी चढइबो
९- फिल्म- ,,
१०- फिल्म- नदिया के पार
११- फिल्म- ,,
१२- फिल्म- मौजी
१३- फिल्म- कहानी किस्मत की तथा काश
१४- फिल्म- हिम्मतवाला ,मवाली
१५- फिल्म- साधू और शैतान तथा गुमनाम

छ- ध्वन्यात्मक शब्दावली और हिन्दी चलचित्र गीत:-

ध्वन्यात्मक शब्दों के प्रयोग से हिन्दी चलचित्र गीतों की भाषा में सजीवता एवम् चित्रोपमता आगयी है जिससे गीतों केसौन्दर्य में निखार आगया है। यथा--
घुमड-घुमड[१], छम-छम[२], सनन-सनन[३], छुन-छुन[४], रुन-झुन,[५] गुन-गुन[६], झुम-झुम[७], पग-पग,[८] झन-झनाके,[९] चिक्की-मिक्की,[१०] टिम-टिम,[११] झन-झन झनकार,[१२] रिम-झिम,[१३] झर-झर,[१४] ठुनुक-ठुनुक।[१५]

१- फिल्म- दो बीघा जमीन
२- फिल्म- घूंघट
३- फिल्म- शिकस्त
४- फिल्म- अब दिल्ली दूर नहीं
५- फिल्म- मधुमती
६- फिल्म- जुदाई
७- फिल्म- झुमरु
८- फिल्म- चलती का नाम गाडी
९- फिल्म- कठपुतली
१०- फिल्म- उसनेकहा था
११- फिल्म- चिराग कहां रोशनी कहां
१२- फिल्म- रानी रुपमती
१३- फिल्म- काला बाजार
१४- फिल्म- गंगा व तेरा पानी अमृत
१५- फिल्म- बरसात

च- अनार्थक शब्द और हिन्दी चलचित्र-गीत:-

हिन्दी चल चित्र गीतों में अनार्थक शब्दों के प्रयोग से भाषा में सरलता एवम् सहजता आ गयी है। यथा --

किवडिया [१], नगरिया [२], पायलिया [३], गगरिया [४], गठरिया [५], तलैया [६], नथनिया [७], नैया [८], पुरवा [९], विटिया [१०], खटोला [११], आदि --

---

१- फिल्म- कोहेनूर

२- फिल्म- मदर इण्डिया

३- फिल्म- नाचे मयूरी

४- फिल्म- मदर इंडिया

५- फिल्म- मदर इंडिया

६- फिल्म- गुंजन

७- फिल्म- जौहर महमूद इन गोवा

८- फिल्म- डकैत

९- फिल्म- पूरब-पश्चिम

१०- फिल्म- बाबुल

११- फिल्म- चोरी-चोरी

६- युग्म शब्द और हिन्दी चलचित्र गीत:-

युग्म शब्दों के प्रयोग से हिन्दी चलचित्र गीतों में माधुर्य एवम् लोच आ जाता है तथा सुनने में ये गीत कानों में मिठास घोलते हैं। इस सन्दर्भ में कुछ शब्दों के उदाहरण प्रस्तुत हैं जो हिन्दी चलचित्र गीतों में प्रयुक्त हुये हैं :----

नगरी-नगरी[१], नगर-नगर[२], मीठा-मीठा,[३] रोते-रोते,[४] खोया-खोया,[५] प्यार-प्यार[६], धुंआ-धुआं,[७] पात-पात[८], नयन-नयन,[९] नयन-नयन[१०] भीगा-भीगा,[११] धीरे-धीरे,[१२] लहर-लहर[१३], पग-पग[१४], जल-जल[१५], जब-जब[१६], घड़ी-घड़ी,[१७] गांव-गांव[१८], मोटी-मोटी[१९], प्यारी-प्यारी[२०], अकेले- अकेले[२१], हल्के-हल्के[२२], छुपके- छुपके[२३], चोरी- चोरी,[२४] चुपके-चुपके[२५], आदि --

---

१- फिल्म- मदर इण्डिया
२- फिल्म- नई उमर की नई फसल
३- फिल्म- फागुन
४- फिल्म- अंधा कानून
५- फिल्म- काला बाजार
६- फिल्म- छोटी सी मुलाकात
७- फिल्म- नई उमर की नई फसल
८- फिल्म- ,,
९- फिल्म- कोहरा
१०- फिल्म- नई उमर की नई फसल
११- फिल्म- सावन
१२- फिल्म- लव मैरिज
१३- फिल्म- नई उमर की नई फसल
१४- फिल्म- दोस्ती, १५- फिल्म-सावन को आने दो
१६- फिल्म- नया दौर १७- फिल्म-मधुमती
१८- फिल्म- चा चा चा १९- फिल्म-फागुन
२०- फिल्म- ससुराल २१- फिल्म-एन इवनिंग इन पेरिस
२२- फिल्म- आदमी और इंसान २३- फिल्म-तांगावाली
२४- फिल्म- जिगरी दोस्त २५- फिल्म-चकधारी

ज- विपरीतार्थक शब्द और हिन्दी चलचित्र गीत:-

जन्म-मरण[१], रोये हसे[२], अपना-पराया[३], आग-पानी[४],

गोरे- काले[५], रात-दिन,[६] मीठा-जहर[७], आदि --

इस प्रकार देखते हैं कि हिन्दी चलचित्र गीतों का शब्द भण्डार व्यापक है। चलचित्र गीतों की भाषा में प्राय: सभी भाषाओं के शब्दों से यह भी पता चलता है कि हिन्दी भाषा कितनी उदार है जो सरलता से सभी भाषाओं के शब्दों को आत्मसात कर लेती है। सभी भाषाओं की शब्दावली का प्रवेश भारत की अखण्डता का परिचायक है। गीतों की शब्दावली सांस्कृतिक, धार्मिक एकता को दर्शाती है।

विभिन्न भाषा के शब्दों के प्रयोग से इन गीतों की भाषा में न तो व्याकरणिक विसंगतियाँ एवम् कर्ण कटुता नहीं आने पायी है।

हिन्दी के प्रचार एवम् प्रसार में इन चलचित्रगीतों का योगदान अप्रतिम है। इन गीतों की लोकप्रियता विभिन्न भाषा के शब्द-प्रयोग से और बढ गई है।

१- फिल्म- चुपके चुपके

२- फिल्म- पारसमणि

३- फिल्म- अपने-पराये

४- फिल्म- बरसात की रात

५- फिल्म- बूट पालिश

६- फिल्म- तानसेन

७- फिल्म- दो आंखे बारह हाथ।

घ- हिन्दी चलचित्र गीतों की रचना प्रक्रिया: एवम् शब्द प्रयोग:-

फिल्मी गीतों की भाषा मिली जुली भाषा होती है, जिसमे उर्दू, हिन्दी, अंग्रेजी, पंजाबी, आदि भाषाओंकी शब्दावली का आधिक्य तो होता है, पर वह उच्च हिन्दी, ठेठ हिन्दी से दूर होने के कारण उसकी व्याकरणिक रूपों का अभाव पाया जाता है। कुछ फिल्में ऐसी भी हैं जिनमें ठेठ एवम् उच्च उर्दू की शैली देखने को मिलती है, इनमें विशेष रूप से 'पालकी', मेरे महबूब, बहू बेगम, पाकीजा, मुगले आजम, ताज महल, मिर्जा गालिब, छोटे नवाब, मेरे सरताज आदि है।

हिन्दी फिल्मी गीतों की भाषा की रचना प्रक्रिया का विश्लेषण निम्न शीर्षकों के अन्तर्गत कर सकते हैं --

क- हिन्दी एवम् उर्दू भाषा से निर्मित गीत:-

१- देखा न करो तुम आइना, कहीं खुद की नजर न लगे।[१]
२- जिस सुबह के अमृत की धुन में हम जहर के प्याले पीते हैं।[२]
३- ये लड़का हाय अल्ला! कैसा है दीवना।[३]
४- शीशा ऐ दिल इतना न उछालो।[४]
५- ढल चुकी शामें गम मुस्करा ले सनम।[५]
६- मस्ती भरी हवा चली खिल-२ गयी जो दिल की कली।[६]

१- फिल्म- ससुराल
२- फिल्म- फिर सुबह होगी
३- फिल्म- हम किसी से कम नहीं
४- फिल्म- दिल अपना और प्रीत परायी
५- फिल्म- कोहेनूर
६- फिल्म- काला बाजार

७- आ अब लौट चले नैन बिछाये ,बाहें पसारे ।[१]

८- माता- ओ- माता जो तू आज होती मुझे यूं बिलखता
देखलेती तेरा दिल भी टूट जाता ।[२]

९- तेरी चाल है नागन जैसी ।[३]

१०- एक से एक मिले तो कतरा बन जाता है दरिया ।[४]

ख- हिन्दी एवम् अंग्रेजी भाषा के शब्दों से निर्मित गीत:-

१- मजा आयेगा मुलाकात का ,क्या प्रोग्राम है आज रात का ।[५]

२- नोट है उसकी पाकिट बुक में सबका माल-मसाला ।[६]

३- सी०आर०ओ०डब्लू क्रो-क्रो, माने कौआ ।[७]

४- न ब्लैक मुनाफा खोरी है ना पगडी है ना चोरी है ।[८]

५- मेड इन जापान ये है लल्लू के हैं ज्ञान ।[९]

६- छिप- छिप कोई डाका डाले या करे खून हो जाये उसको
आटोमेटिक टेलीफोन ।[१०]

७- बुढ़िया तेरी खास रंगीली पाउडर रोज लगाए ।[११]

८- जरा हटके जरा बचके ये है बाम्बे मेरी जान
कहीं बिल्डिंग कहीं मोटर, कहीं मोटर ट्राम कहीं मिल।[१२]

१- फिल्म- जिस देश में गंगा बहती है

२- फिल्म- अब दिल्ली दूर नहीं

३- फिल्म- नया दौर

४- फिल्म- नया दौर

५- फिल्म- एक से बढ़कर एक

६- फिल्म- चंदन

७- फिल्म- दिल्ली का ठग

८- फिल्म- बूटपालिश

९- फिल्म- अनमोलघडी

१०- फिल्म- चन्दन

११- फिल्म- बडी बहू

१२- फिल्म- सी०आई०डी०

९- याद नहीं अब कुछ, भूल गया सब कुछ बस याद इकबात जूली । आइ लव यू ।[१]

१०- टाई लगा के माना बनगए जनाब हीरो ।[२]

११- बोल बोल माई लिटिल डव ।[३]

१२- हम डांस करना मांगता, तुमसे रोमांस करना मांगता ।[४]

१३- हां हां डार्लिंग मतलब प्यार ।

ग- हिन्दी एवं पंजाबी भाषा के शब्दों से निर्मित गीत:-

१- प्यार मांगदा इकरार मांगदा ।[५]

२- छेती छेती चन्ना लेके आ जा रे बरात ।[६]

३- सुण सुण ओ गुलाबी कली ।[७]

४- छीजो छीज गनेरिया इक तेरी इक मेरिया ।[८]

५- इस्क बन दिया किस्मां वणिये इक अम्बर दे तारे ।[९]

६- तू छत पर आजा गोरिए ।[१०]

१- फिल्म- जूली

२- फिल्म- भाभी

३- फिल्म- बाप-बेटे

४- फिल्म- पोस्ट बाक्स- ९९९

५- फिल्म- मांग का सिन्दूर

६- फिल्म- चोर मचाए शोर

७- फिल्म- सावन-भादों

८- फिल्म- इन्तजार

९- फिल्म- प्यार की प्यास

१०- फिल्म- नया दौर

७- मैं केया जी कि गल है । [१]

८- सोणियो जियो जियो, डट कर पीयो पीयो ।[२]

९- मैं कुड़ी पंजाब दी आई करने तुझसे प्यार ।[३]

१०- मैं तेरे प्यार दी प्यासे वे चन्ना मेरा इंसाफ कर ।[४]

११- सोणी ओ सोणी और न कोई मेरी होणी
रब्बा मेरा इन्साफ कर -------- ।[५]

६- लोक भाषा के शब्दों से निर्मित हिन्दी फिल्मी गीत:-

लोक गीतों से प्रभावित फिल्मी गीतों के सन्दर्भ में कहा जा सकता है कि १९४१ में निर्मित 'खजांची' चित्र से लेकर आज तक बनने वाली फिल्में किसी न किसी रूप में लोक गीतों की शब्दावली से प्रभावित है जैसे-- मदर इंडिया, गोदान, गंगा जमना, विदेसिया, नदिया के पार, बाबुल, दंगल, लोहा सिंह, हमार संसार, मौजी, तीसरी कसम, काला पानी, मेरे अपने, मेरा गांव मेरा देश , कच्चे धागे, चोर मचाए शोर, फकीरा, मुक्ति, वचन , आदि । कुछ शब्द लोक भाषा से संबंधित है जिनके आधार पर हिन्दी चलचित्र गीत आधारित हैं। यथा--

पिया, अंगना, बलमा, सजना, सजनवा, गेंदवा, पतिया, हतिया, नदिया, उमरिया, चुंदरिया, रामा, कितवा, करेजवा, नैनवा, लोगरा, मौजी, विदेसवा, आदि । इन शब्दों को हिन्दी फिल्मी गीतकारों ने आदर्श शब्द मानकर अपने गीतों में स्थान दिया है ।

१- फिल्म- जाने मन
२- फिल्म- दीदारेयार
३- फिल्म- जवां मुहब्बत
४- फिल्म- हुकूमत
५- फिल्म- सोहिनी महिवाल

७- साहित्यिक खडी बोली की शब्दावली से निर्मितगीत:-

कुछ फिल्मी गीतकारों ने अपने गीतोंमेंउर्दू की शब्दावली की उपेक्षा कर साहित्यिक खडी बोली शब्दों का प्रयोग कर अपना हिन्दी प्रेम दर्शाया है । ये गीत फिल्मों में चले पर जनमानस इन्हें हृदयंगम करने में असमर्थ रहा,ठीक उसी प्रकार से जिस प्रकार फिल्मोद्योग में कलात्मक फिल्मों का निर्माण हुआ । साहित्यिक खडी बोली की शब्दावली के कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं ----

१- हे प्राण प्रिये प्राणेश्वरी यदि आप हमें आदेश करें तो हम प्रेम
का श्री गणेश करें ।[१]

२- काला धन काला व्यापार , रिश्वत का काला बाजार
सत्य अहिंसा करे पुकार टूट गया चर्खे का तार ।[२]

३- मेरे जीवन की किरण बन के बिखरने वाली ।[३]

४- दुर्योधन दुःशासन के पाप और अनीति भरे राज में ।
लिखूंगी महाभारत नया रक्त भी भरे अश्रुओं से आज मैं ।[४]

५- आज अम्बर पर मधुर आलाप डोले ।[५]

६- जननी जन्म भूमि स्वर्ग से महान् है ।[६]

१- फिल्म- हम तुम और वो
२- फिल्म- बालक
३- फिल्म- तलाक
४- फिल्म- प्रतिघात
५- फिल्म- स्त्री
६- फिल्म- वीर दुर्गादास

७- करती ज्योति अमृत से सिंचन, मंगल घट ढुलके
अम्बर कुमकुम कण बरसाये ।[१]

८- लौ लगाती गीत गाती दीप हूं प्रीत बाती
नयनों की कामना , प्राणों की भावना
पूजा की ज्योति बन कर चरणों में मुस्काती ।[२]

च- मुहावरों एवम् लोकोक्तियों से निर्मित चलचित्र गीत:-

ऐसा वाक्यांश, जो सामान्य अर्थ का बोध न कराकर किसी विलक्षण अर्थ की प्रतीतिकराये, मुहावरा कहलाता है ।[३]

अरबी भाषा का `मुहावरत` शब्द हिन्दी में मुहावरा बन गया । उर्दू वाले `मुहाविरा` बोलते है । इसका अर्थ अभ्यास या बात -चीत है ।

मुहावरों के प्रयोग से भाषा में सरलता, सरसता, चमत्कार और प्रवाह उत्पन्न होता है , मुहावरों का काम है बात इस खूबसूरती से कहना कि सुनने वाला उसे समझ भी जाये और प्रभावित भी हो ।

मुहावरे भाषा की समृद्धि और सभ्यता के विकास के मापक हैं, मुहावरों की अधिकता अथवा न्यूनता से भाषा के बोलने वालों के श्रम, सामाजिकसम्बन्ध, औद्योगिक स्थिति, भाषा निर्माण की शक्ति,सांस्कृतिक योग्यता , अध्ययन ,मनन, और आमोदक भाव, सबका एक साथ पता चलता है। जो समाज जितना अधिक व्यवहारिक और कर्मठ होगा,उसकी भाषा में मुहावरों का प्रयोग उतना ही अधिक होगा।

१- फिल्म- भाभी की चूड़ियां
२- फिल्म- भाभी की चूडियां
३- आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना :डा०वासुदेव नन्दन प्रसाद, पृष्ठ- २९५

मुहावरों का जन्म स्थान गांव है जहां कोई भी भाषा - स्वच्छन्दता के साथ जन्मलेकर पलती और विकसित होती है। साधारणत: ग्रामीणों के बोल-चाल में मुहावरे इस तरह घुले मिले है कि उनकी वास्तविकताओं सेउन्हें निकालना असम्भव है। ये उनके दैनिक जीवन के आवश्यक अंग बन गये हैं।यही कारण है कि गांव का रहने वाला साधारण से साधारण व्यक्ति भी मुहावरों का प्रयोग किये बिना नहीं रह सकता।

हिन्दी फिल्मी गीतों की भाषा जनता की भाषा है। यह भाषा लोकभाषा के अत्यन्त निकट है। फिल्मी गीतों की भाषा पर लोक भाषा का अत्यधिक प्रभाव है, अत: फिल्मी गीतों की भाषा में मुहावरों का आ जाना स्वाभाविक है। मुहावरों के प्रयोग से फिल्मी-गीतों की भाषा के सौन्दर्य में अभिवृद्धि हुई है, उसका सौन्दर्य निखर गया है तथा भाषा में माधुर्य स्वम् लोच आ गया है। शब्दावली सरल स्वम्सुगम वन गई है। मुहावरों के सन्दर्भ में हिन्दी फिल्मी गीतों का विवेचन अपेक्षित है। मुहावरों के प्रयोग के सन्दर्भ में हिन्दी फिल्म गीतों की कुछ पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं:---

१- बजने को हैं कूच नगारा- होता है सबसे छुटकारा।[१]

२- नींद में माल गंवा बैठे।[२]

३- फिर से धधक गई छतियां।[३]

४- मालूम न था खाक में मिल जायेंगे एक दिन।[४]

१- फिल्म- स्ट्रीट सिंगर

२- फिल्म- धूप छांव

३- फिल्म- रतन

४- फिल्म- अनमोल घडी

५- के तुम सा दिल पे होते और किश्ती डूब जाती।[१]

६- वह दिन जब याद आते है तो कलेजा मुंह को आता है ।[२]

७- अपने हुए पराये दुश्मन हुआ जमाना ।[३]

८- दिल भी खाली जेब भी खाली ।[४]

९- कोई किसी की आंख का तारा ।[५]

१०- मीठी बाते बनाकर बनाते हैं यें ।[६]

११- मंजिल पर मुझे पहुँचाती हैं मैं तूफानों का पाला हूं ।[७]

१२- धरती पे चार दिन का मेहमान बन के देख ।[८]

१३- मन ही मन में लड्डू फूटे , नैनों में फुलझडिया छूटे ।[९]

१४- फूलों की सेज छोड के दौडे जवाहर लाल ।[१०]

१५- पत्थर के दिल मोम न होंगे ।[११]

१६- उसने बीडा उठाया था रे भलाई का ।[१२]

१७- हम आंसुओं को पीकर बैठे थे मुस्कराने ।[१३]

१८- किस्मत में लिखा है तेरे चूंचूं का मुरब्बा [१४]

१- फिल्म- जुगनू

२- फिल्म- ,,

३- फिल्म- प्यार की जीत

४- फिल्म- एक थी लडकी

५- फिल्म- अन्दाज

६- फिल्म- शीशमहल

७- फिल्म- बादल

८- फिल्म- बहार

९- फिल्म- आर-पार

१०- फिल्म- जागृति

११- फिल्म- फन्टूश

१२- फिल्म- तूफान और दिया

१३- फिल्म- एक ही रास्ता

१४- फिल्म- बन्दी

१९- जैसे मीठे जहर की हो मीठी छुरी ।[१]

२०- धर पर पांव रख कर भागो कटने वाला पत्ता है ।[२]

२१- दुख देके हमें जीवन भर का वे फूलों की सेज सजा बैठे । [३]

२२- उल्फत का तार छोड़ा हमें मंझधार छोड़ा ।[४]

२३- इक पल बिछुड़ना, इक पल है मिलना ये जीवन हो दो दिन का मेला।[५]

२४- लो राज खुलगया अब किसलिए छुपाते हो ।[६]

२५- खबर क्या थी होठों को सीना पड़ेगा । [७]

२६- न मैंने किसी की आंख का नूर हूं । [८]

२७- कदम- कदम पर बिछे हैं कांटे , कठिन डगरिया प्यार की ।[९]

२८- कैसी खुशी लेके आया है चांद ईद का ।[१०]

२९- मेरे अंखियो के नूर, मेरे दिल के सुरुर । [११]

३०- आ, अब लौट चलें, नयन बिछाए बाहें पसारे ।[१२]

३१- सपनो की रिमझिम में नाच उठा मन ।[१३]

३२- दिल में तूफान उठे फिर भी जुबां खुल न सकी । [१४]

१- फिल्म- दो आंखें बारह हाथ

२- फिल्म- हावड़ा ब्रिज

३- फिल्म- धूल का फूल

४- फिल्म- गूंज उठी शहनाई

५- फिल्म- रानी रूपमती

६- फिल्म- सिंगापुर

७- फिल्म- मुगले आजम

८- फिल्म- लाल किला

९- फिल्म- सिंहल दीप की सुन्दरी

१०- फिल्म- बरसात की रात

११- फिल्म- छलिया

१२- फिल्म- जिस देश में गंगा बहती है

१३- फिल्म- बरसात

१४- फिल्म- आभा

उपरिलिखित गीतों से स्पष्ट हो जाता है कि फिल्मी गीतकारों ने मुहावरों एवम् लोकोक्तियों का प्रयोग सहज एवम् अनायास रूप में किया। उद्दाम भावों की तीव्रतम अनुभूति जब सहजरूप में शब्दों की राशि बिखेरती है तो भाषा और भी सुन्दर एवम् सरल हो जाती है। फिल्मी गीतों के साथ भी यह बात चरितार्थ होती है। अत: मुहावरों के प्रयोग से भाषा का सौन्दर्य बढ़ गया है तथा भाषा की सरलता के कारण फिल्मी गीतों का माधुर्य और भी द्विगुणित हो गया है।

छ- प्रत्यय के योग से निर्मित हिन्दी फिल्मी गीत:-

गीतों में गेयता एवम् सरलता लाने के लिए हिन्दी फिल्मी गीतकारों ने अपने गीतों की शब्दावली को स्वार्थी प्रत्यय प्रधान रखा है। यथा--

क- इया प्रत्यय से निर्मित शब्द

१-	उमर + इया	उमरिया[१]
२-	अटारी+इया	अटरिया[२]
३-	मुरली + इया	मुरलिया[३]
४-	रात + इया	रतिया[४]
५-	छाती+ इया	छतिया[५]
६-	दूकान +इया	दुकनिया[६]
७-	किवाड + इया	किवडिया[७]
८-	बेटी + इया	बिटिया[८]
९-	छलना + इया	छलिया[९]
१०-	चाँदनी + इया	चंदनिया[१०]

१- उमरिया कटती जाये रे।- मदर इण्डिया

२- अटरिया पे आया चोर।- मेरा गांव मेरा देश

३- मुरलिया बाजे रे जमुना के तीर।- तूफान और दिया

४- काली काली रतियां। - मेरा नाम जोकर

५- बदन मोरा लरजे धड़क उठे छतियां। - मदर इण्डिया - शेष अगले पृष्ठ पर--

ख- 'आ' प्रत्यय से निर्मित गीत:-

१-	बालम + आ	बालमा [१]
२-	साजन + आ	साजना [२]
३-	सजन + आ	सजना [३]
४-	महक + आ	महका [४]
५-	विरह + आ	विरहा [५]
६-	प्यास + आ	प्यासा [६]
७-	प्यार + आ	प्यारा [७]
८-	गोविंद + आ	गोविंदा [८]
९-	हियर + आ	हियरा [९]
१०-	खराब + आ	खराबा [१०]

देखें - पिछले पृष्ठ ३१७ की पाद्टिप्पणी:-

६- जल जल बैठी पनवडिया दुकनिया ।- तीसरी कसम
७- मेरे दिल की किवडिया खोल सैंय्या तोरे द्वारे खडे ।- कोहनूर
८- खुशी- खुशी करदो विदा, बिटिया रानी राज करे ।-आखिरीरात
९- छलिया मेरा नाम छलना मेरा काम । - छलिया
१०- चंदनिया है रात बलम आजा । - बालक

१- बालमा मोरी लट उलझावे, बिंदिया खोगई खोगई।- तीसरी गली
२- सुन मेरे साजना, मोहे अब तु न भुलना। - आस
३- मैं प्यार से सब कुछ भूल गई सजना। - एकफूल दो माली
४- महका महका अंग तुम्हारा लम्बे लम्बे बाल ।- याराना
५- विरहा का रुप लिए तेरे द्वारे खडे ।- कोहनूर
६- एक प्यासा तुझे मैखाना दिए जाता हूँ । - नजराना
७- मोहन तो है सब का प्यारा । - मिस मेरी
८- गोविंदा आला रे मटकी संभाल ब्रज बालारे ।- इशारा
९- कि हियरा में उठत हिलोर । - गोदान
१०- प्यार में सब कुछ हो जावेगा, खून खराबा हो जायेगा ।
- प्यार किये जा ।

ग- `आई` प्रत्यय के योग से निर्मित शब्द-गीत:-

१-	कान्ह	+ आई	कन्हाई[१]
२-	सच्चा	+ आई	सच्चाई[२]
३-	लडा	+ आई	लडाई[३]
४-	गवां	+ आई	गवांई[४]
५-	बसा	+ आई	बसाई[५]
६-	पर	+ आई	पराई[६]
७-	तनहा	+ आई	तन्हाई[७]
८-	जुदा	+ आई	जुदाई[८]
९-	बना	+ आई	बनाई[९]
१०-	लगा	+ आई	लगाई[१०]

१- मदर इण्डिया

२- जिसदेश में गंगा बहती है

३- लीडर

४- मिलाप

५- भाभी

६- बाबुल

७- जहाँ आरा

८- जुदाई

९- तीसरी कसम

१०- दिल अपना प्रीत पराई

घ- `ई` प्रत्यय के योग से निर्मित शब्द:-

१- नगर + ई नगरी[१]
२- गागर + ई गगरी[२]
३- सुहाना + ई सुहानी[३]
४- बादल + बदली[४]
५- शरबत + ई शरबती[५]
६-

ङ- `उ आ` प्रत्यय के योग से निर्मित गीतों की शब्दावली:-

१- बाबू +ऊआ बबुआ[६]
लालू + ऊआ ललुआ[७]

च- `ल` प्रत्येय के योग से निर्मित शब्द :-

बाबू + ल बाबुल[८]
गई + ल गईल[९]
आई + ल आईल[१०]

१- फिल्म- बैजू बावरा
२- फिल्म- मेला
३- फिल्म- तलाश
४- फिल्म- सोहनी महीवाल
५- फिल्म- दो रास्ते
६- ,, मौजी
७- फिल्म- अनमोल घडी
८- फिल्म- बाबुल
९- फिल्म- बिदेसिया
१०- फिल्म- मौजी

छ- `रा` प्रत्यय के योग से निर्मित शब्द:-

१-	हिय + रा	हियरा[१]
२-	कज + रा	कजरा[२]
३-	जिय + रा	जियरा[३]

ज- `डा` प्रत्यय के योग से निर्मित शब्द:-

दुखडा[४]	दुख + डा
मुखडा[५]	मुख + डा

झ- `वा` प्रत्यय के योग सेनिर्मित शब्द:-

मन + वा	मनवा[६]
बदर + वा	बदरवा[७]
करेज + वा	करेजवा[८]
सजन + वा	सजनवा[९]
बलम + वा	बलमवा[१०]

१- फिल्म- गोदान

२- फिल्म- दो रास्ते

३- फिल्म- मिलन

४- फिल्म- नागमणि

५- फिल्म- दर्पण

६- फिल्म- साधना

७- फिल्म- बूट पालिश

८- फिल्म- गंगा जमना

९- फिल्म- तीसरी कसम

१०- फिल्म- समुंदर

ञ- 'ई' और 'इयत' प्रत्ययों के योग से निर्मित शब्द :-

१- कारीगर + ई कारीगरी[१]
२- इंसान + इयत इंसानियत[२]

ट- 'दर' 'गुल' और 'शाह' उपसर्गों से निर्मित फिल्मी गीतों के बोल:-

१- दर + बार दरबार[३]
२- गुल + शन गुलशन[४]
३- शाह + जादा शाहजादा[५]

ठ- 'बद' उपसर्ग से निर्मित फिल्मी गीतों के बोल :-

१- बदनाम[६]
२- बदनसीब[७]
३- बदतमीज[८]

ड- 'अन' उपसर्ग से निर्मित फिल्मी गीतों के बोल:-

१- अनमोल[९]
२- अनजाना[१०]

ढ- 'खुश' उपसर्ग से निर्मित फिल्मी गीतों के बोल:-

१- खुशबू[११] २- खुशनसीब[१२]

१- फिल्म- दसलाख २- फिल्म- गंगाजमना
३- फिल्म- अवतार
४- फिल्म- मुझे जीने दो ५- फिल्म- छलिया
६- फिल्म- बराती ७- फिल्म- दो बदन
८- फिल्म- बदतमीज ९- फिल्म- तवायफ
१०- फिल्म- सी०आई०डी० ११- फिल्म- खामोशी
१२- फिल्म- टावर हाउस

ण- अ-प्रचलित शब्दों से निर्मित गीत के बोल:-

हिन्दी फिल्मी गीतों में किन्हीं किन्हीं अप्रचलित शब्द मिलते हैं, ऐसा लगता है कि गीतकार को तुक मिलाने के लिए उनका प्रयोग करना पड़ा। जैसे --

१- बेदाद - अनीति के लिए - बरबाद के तुक के कारण
२- फानी- नश्वर के लिए - पानी की तुक के कारण
३- नाले - आर्तनाद के लिए - रखवाले के तुक के कारण
४- इशरत - आनंद के लिए
५- शम्म - बहुत थोड़े के लिए
६- नग्मे - गीत के लिए

ढ- हिन्दी चल चित्र गीत और शब्द प्रयोग:-

१- ठेठ उर्दू के शब्दों के प्रयोग में विशिष्टता :-

हिन्दी चलचित्र गीतकारों में उर्दू की शैली की विशिष्ट प्रवृत्ति भी दृष्टिगत होती है। ऐसे प्रयोगों के कारण ही भाषा ठेठ उर्दू के समीप पहुँच जाती है, जैसे --

मौजे- दरिया[१], बुते बेपीर[२], शीशए दिल[३], चश्में बद्दूर[४], मन्जूरे खुदा[५], शहीदे इश्क[६], खूने जिगर[७], इब्तिदाए इश्क[८]।

१- फिल्म- मेला २- ससुराल
३- फिल्म- दिल अपना प्रीतिपराई ४- ,,
५- फिल्म- चक्कर पे चक्कर ६- खानदान
७- फिल्म- ~~इश्क~~ आन ८- हरियाली और रास्ता

२- हिन्दी के तद्भव रूपों का विशेष प्रयोग:-

हिन्दी फिल्मी गीत कारों ने फिल्मों की धुनों में लोच, माधुर्य, स्वम् मिठास लाने के लिए तत्सम शब्दों के अपभ्रंश रूप को प्रस्तुत किया है। उदाहरण के लिए कुछ शब्द प्रस्तुत है। --

स्वपन	सपन[१]
निराश	निरास[२]
यत्न	जतन[३]
यू	जू[४]
यमुना	जमुना[५]

संस्कृत के वे शब्द जिनमें `ऋ` का प्रयोग होता है प्राय: अपने तद्भव रूप में ही प्रयुक्त हुए हैं जैसे --

हृदय	हिरदय[६]
ऋतु	रितु[७]

३- विपरीत हिन्दी की प्रवृत्ति के अनुसार व्यन्जन गुच्छों का प्रयोग:-

कहीं-कहीं ठीक विपरीत हिन्दी की प्रवृत्ति के अनुसार फिल्मी गीतकारों ने व्यंजन गुच्छों को निर्मित भी कर दिया है। जैसे- बहु प्रचलित प्यार और प्यास के समान ही प्याला को पियाला कर दिया है ---

---

१- फिल्म- बीस साल बाद
२- फिल्म- बैजूबावरा
३- फिल्म- नागिन
४- फिल्म- सोलवां साल
५- फिल्म- संगम
६- फिल्म- बहारों के सपने
७- फिल्म- मेला

४- **बोल-चाल की शब्दावली का प्रयोग:-**

बोल-चाल की शब्दावली प्राय: साहित्यिक भाषा में प्रयुक्त नहीं होती है, पर इन गीतों में बिना किसी भाषा के ऐसे शब्द आ जाते हैं। जैसे --

यों ही - यूं ही[१] के रूप मिलते हैं
एक - इक[२]
वह - वो[३]

हकार का लोप प्राय: दृष्टिगत होता है। यह प्रकृति तो कहीं-कहीं सकारण होती है, जैसे दो महाप्राणों के लगातार होने पर अन्तिम महाप्राण का लोप। जैसे ---

१- होंठ - होंट[४]
२- भूख - भूक[५]
३- झूठे - झूटे[६]
४- भीख - भीक[७]

कहीं- कहीं तुक के कारण यह भी हो जाता है जैसे- चमकते की तुक पर बिलकते।

१- फिल्म- प्यासा
२- फिल्म- आवारा
३- फिल्म- नजराना
४- फिल्म- काजल
५- फिल्म- बचन
६- फिल्म- सीमा
७- फिल्म- बूट पालिश

५- मुहावरेदार भाषा का प्रयोग:- प्रेम से सम्बन्धित भावों के कारण, 'दिल', 'आंख,' से सम्बन्धित कोई भी मुहावरा नहीं जिसका प्रयोग गीतों में न मिलता हो --

१- दिल की बात दिल में कही और रो दिये ।[१]

२- ऐ मेरे दिले नादान तू गम से न घबराना ।[२]

३- मेरा दिल तोड़ने वाले मेरे दिल की दुआ लेना ।[३]

४- अँखिया मिला के जिया भरमा के चले नहीं जाना ।[४]

५- आँखों ही आँखों में इशारा हो गया ।[५]

६- नैन लड जहियें तो मनवा माँ कसक होइवे करी ।[६]

७- आँखों में आँखे डाल के दुल्हनियाँ पी के घर जायेगी,[७]

इसी तरह निम्न मुहावरों का प्रयोग भी फिल्मी गीतों में सुन्दर बन पडा है ---

---

१- फिल्म- अदालत

२- फिल्म- टावर हाउस

३- फिल्म- मेला

४- फिल्म- रतन

५- फिल्म- सी०आई०डी०

६- फिल्म- गंगा जमुना

७- फिल्म- तूफान और दिया ।

बुनियाद उठाना[१], झूठे सिक्कों में तौलना[२], धूल फाँकना[३] मुँह तोड कर,[४] नींद हराम,[५] पाँव में छाले पडना,[६] रंग में रंगना,[७] मिट्टी में मिल जाना,[८] आग से खेलना,[९] बाहे पसारे,[१०] आदि।

इन मुहावरों के अतिरिक्त कुछ कहावतों का भी प्रयोग फिल्मी गीतों में दृष्टव्य है। जो निम्न है --

मिट्टी से सोना हो जाना,[११] मुँह पर प्यार बगल में -छुरी,[१२] लैला की उंगलियाँ,[१३] अरमानों का खून होना,[१४] दुनिया -बसा लेना,[१५] पत्ता कटना,[१६] घर फूंक तमाशा देखना,[१७] तथा सौ-सौ चूहे खाके बिल्ली हज को चली,[१८] कहावते भी मिल जाती हैं।

१- फिल्म- फिर सुबह होगी
२- फिल्म- वही
३- फिल्म- वही
४- फिल्म- बाबुल
५- फिल्म- बैजू बावरा
६- फिल्म- अम्बर
७- फिल्म- जिस देश में गंगा बहती है
८- फिल्म- वही
९- फिल्म- वही
१०- फिल्म -
११- फिल्म- ससुराल
१२- फिल्म- दिल अपना प्रीत पराई
१३- फिल्म- घर की लाज
१४- फिल्म- नजराना
१५- फिल्म- मेला
१६- फिल्म- हावडा ब्रिज
१७- फिल्म- बरसात की रात
१८- फिल्म- कलयुग की रामायण

प- नवीन उपमानों का प्रयोग:-

उपमानों की दृष्टि से फिल्मी गीतों का अध्ययन अपेक्षित है। फिल्मी गीतकारों ने रूढ़िगत उपमानों का बहिष्कार करके सर्वथा नवीन और सार्थक उपमानों का प्रयोग किया है। जैसे --

दिल का फूल[1], लहरों के होठों पर[2], दिल का दाग[3], चाँद तारों का गहना[4], छम-छम नीर बहाना[5], प्यार की माला गूथना[6], कोका कोला सी कमर[7], मीठे सांझ सबेरे[8], आले नाजुक सी कलियां,[9] शीशे की जवानी,[10] अंखियां बिल्लौर[11], चाँद सी महबूबा,[12] मस्त घटा -चादर है[13], अरमानों की कश्ती डूब गयी[14], फूल बने अंगारे[15], पागल सूरज,[16]

१- फिल्म- आवारा

२- फिल्म- जाल

३- फिल्म- अनार कली

४- फिल्म- घूंघट

५- फिल्म- आवारा

६- फिल्म- मदारी

७- फिल्म- पहचाना

८- फिल्म- राहगीर

९- फिल्म- फूल बने अंगारे

१०- फिल्म- फागुन

११- फिल्म- फागुन

१२- फिल्म- हिमालय की गोद

१३- फिल्म- बादल

१४- फिल्म- दीदार

१५- फिल्म- बैजू बावरा

१६- फिल्म- बैजू बावरा

कहीं- कहीं तो फिल्मीगीतकारों ने नये उपमानों की ऐसी झड़ी लगा दी है जिसे देखकर नए कवि भी लज्जित हो जाते हैं। यथा--

१- ककड़ी सी चाल, मकड़ी सेबाल, नारंगी सी खाल ,टमाटर से गाल (तूफान और दिया) ।

२- अदा बिजली, बदन शोला, भवें खंजर, नजर कातिल, हुस्न बिजली।

३- ये शोख नजर के खंजर
जुल्फें हैं जैसे कांध पर बादल झुके हुए
आंखें हैं जैसे मय के प्याले । (चौदहवीं का चाँद)

४- क- कमरिया कमान (बिंदिया)
ख- ननजरिया कटार (अमरदीप)
ग- फूल से गाल और फूल सा चेहरा (बरसात की रात)

६- **ध्वन्यात्मक शब्दावली का प्रयोग:-**

भाषा में ध्वन्यात्मक शब्दावली का विशेष महत्व होता है। वातावरण प्रदान करने तथा स्वाभाविकता लाने के लिए फिल्मों में तो विशिष्ट ध्वनियों का प्रयोग किया जाता है। फिल्मों में पायल तथा घुंघरु की ध्वनि का विशेष आधिक्य है। जैसे --

१- घूंघरवा बोले छम-छम ।
२- पायल मोरी बोले छन-छन ।
३- छुम छुन घुंघरु बोले
४- छम छम बाजे पायलिया ।
५- सनन सनन सन सन हवा चली ।
६- झर झर झर नीर बहाये ।

७- खुट खुट करती छम-छम करती गाडी हमरी जाय ।

८- फर-फर भागे सबसे आगे कोई पकड न पाये

९- दे दना दन -----------------।

१०- पी पी न बोल पपीहा ।

११- चुन चुन करती आई चिडिया ।

१२- छम-छम नीर बहाये

१३- लहर- लहर लहराये ------ ।

१४- मन की पायल छम-छम बोले हर एक सांझ तराना ।

१५- झर- झर झरना बहता ठन्डा-ठन्डा पानी ।

१६- घुंघरु बाजे, ठुनक- ठुनक चाल हुई मस्तानी ।

१७- फर-फर - फर - फर उडे चुनरिया घूंघट मोरा खोले ।

१८- टन- टन - टन-टन बाजी घंटी चलीरेल मस्तानी ।

१- फिल्म- जिन्दगी

२- फिल्म- फागुन

३- फिल्म- फागुन

४- फिल्म- घूंघट

५- फिल्म- कागज के फूल

६- फिल्म- गंगातेरा पानी अमृत

७- फिल्म- मदर इण्डिया

८- फिल्म- वही

९- फिल्म- नसीब

१०- ,, रतन

११- फिल्म- अब दिल्ली दूर नहीं

१२- फिल्म- बरसात

१३- फिल्म- वही

१४- फिल्म- कालाबाजार

१५- फिल्म- बरसात

१६- फिल्म- वही

१७- फिल्म- वही

१८- फिल्म- जीते हैं शान से ।

८- छायावादी तत्वों मानवीकरण का हिन्दी फिल्मी गीतों में प्रभाव स्वम् प्रयोग :-

छायावादी शैली की कुछ विशेषतायें फिल्मीगीतों में देखने को मिलती है जैसे - प्रकृति चित्रण, मानवीकरण, स्वम् गीत शैली का प्रयोग ।

क- मानवीकरण का प्रयोग :-

१- रात का आंचल ढलकेगा ।[१]
२- हवाओं के आंचल महकते रहेंगे ।[२]
३- ली प्यार ने अंगडाई ।[३]
४- हवा में खुशबू की अंगडाइयाँ ।[४]
५- हुस्न चला है इश्क से मिलने ।[५]
६- चांद को ढूढ़े पागलसूरज साँझ को ढूंढे सवेरा ।[६]
७- सावन लगा मचल गये बादल ।[७]
८- मन मेरा बावरा निस दिन गाये गीत मिलन के ।[८]

१- फिल्म- फिर सुबह होगी
२- फिल्म- बरसात की रात
३- फिल्म- घूंघट
४- फिल्म- धूल का फूल
५- फिल्म- सोहनी माहिवाल
६- फिल्म- बैजू बावरा
७- फिल्म- बम्बई का बाबू
८- फिल्म- कल्पना

प्रकृति चित्रण में भी छायावादी कवियों की भाँति इन फिल्मी गीतकारों ने अपनी कलम चलायी है , और उन्हें इस क्षेत्र में पर्याप्त सफलता मिली है। बरखा दुल्हनिया का एक चित्र देखिये --

यह चित्र कितना मनोमुग्धकारी बन पड़ा है। उसका साज-श्रृंगार भी अनुपम है। मीठी मुस्कान, हरी हरी चुनरी, कलियों का कंगना, पवन की बांसुरी , बादलों की झांजरी और बूंदों की खंजरी ने मिलकर उसे स्वाभाविक बनाकर स्वर्गिक शोभादी है। भला- सावन का दूल्हा ऐसी दुल्हन को पाकर क्यों न मगन हो उठेगा --

नन्ही नन्ही बूंदनियों की खनन् खनन् खन् ।
खंजरी बजाती आयी, देखो भाई, बरखा दुल्हनियां ।
छुप छुप छुप सैंया, आजा डालूं तेरे गले बैंयां ।

----- ------ ------

हरी हरी चुनरी साजे कलियों का कंगना बाजे ।
देख के अपनी बरखा रानी की मीठी-सी मुस्कान रे
सावन की दूल्हे की चमक उठी है शान रे -
गोरी- गोरी - बीजुरिया की चमक् चमक् चम्
झाजरी बजाती आई
रंग विरंगी झोली भर के बरन बरन
भण्डार रे लुटाती आई ।[१]

१- फिल्म- दो आंखे बारह हाथ

आलंकारिक रूप में प्रकृति वर्णन जितना सुन्दर छायावादी काव्य में मिलता है, उतना ही हिन्दी फिल्मी गीतों में भी । उदाहरणार्थ-

स्त्री , चौदहवीं का चाँद , चोरी- चोरी , भाभी की चूडियां आदि- फिल्में विशेष रूप से उल्लेखनीय है । --

प्राची के उदीयमान बालारुण से रागानुरंजित पावन उषा: काल का चित्र उक्त गीत में अंकित किया गया है । ज्योति का सिंचन हो रहा है -- घर-घर आंगन में , वन- वन उपवन में । आकाश ने मांगलिक कुम कुम के कण बरसा दिये है । फूलों की पंखुडियों पर ओस की बूंदे मुस्करा रही है । ऐसा लगता है जैसे सारा धरती का मुख उजला हो गया है । उषा ने सुख- शीतलता का आंचल फैला दिया है । बिखरी हुई ज्योति माता - यशोदा है, धरती माँ है और नीली सलोनी छवि का आकाश कृष्ण कन्हैया। मानवीकरण और सांगरूपक की कैसी सुन्दर योजना बन पड़ी है --

घर आंगन वन उपवन उपवन
करती ज्योति अमृत से सिंचन
मंगल घट ढ़लके । ज्योति कलश छलके
----- ----- ----
ऊषा ने आंचल पैलाया
फैली सुख की शीतल छाया
नीले अंचल के । ज्योति कलश छलके
ज्योति यशोदा, धरती मैया
नील गगन गोपाल कन्हैया ।[१]

१- फिल्म- भाभी की चूडियां । पं नरेन्द्र शर्मा

अध्याय - ७

हिन्दी चलचित्र गीतों का प्रयोजन एवम् उनका जनमानस पर प्रभाव

अध्याय - ७

हिन्दी चलचित्र गीतों का प्रयोजन एवं उनका जनमानस पर प्रभाव

सिनेमा आज के युग में मनोरंजन का अत्यन्त आकर्षक एवम् प्रभावशाली साधन हैं।

सिनेमा की बढ़ती हुई अप्रतिहत शक्ति की तुलना आलोचकों ने अणु- शक्ति से की है।[१] सिनेमा के प्रभाव को फिल्म-कला की संजीवनी-शक्ति भी कहा गया हैं।

कला के सन्दर्भ में सिनेमा सर्वाधिक प्रभाव जन-मानस पर छोड़ता हैं। रंग-मंच पर खेले जाने वाले नाटक भी अपनी सीमाओं में आबद्ध होने के कारण प्रभावशालिता में सिनेमा से पीछे रह जाते हैं।

चलचित्र ने आज अपने अभिनव-आकर्षणों से हमारे हृदय को इतना विमोहित कर लिया हैं कि हम उससे पृथक नहीं हो पाते। सिनेमा के अनेक उपकरण हैं -- कहानी, अभिनय, गीत, संगीत, सम्वाद, शिल्प, और फोटोग्राफी। चल-चित्र का सबसे महत्व पूर्ण अंग है -- गीत और संगीत। गीत और संगीत का सम्बन्ध हृदय से होता है और यह जीवन में रस घोलने में अत्यन्त सक्षम है। ऐसी अनेक फिल्मों का निर्माण हुआ जो गीत-हीन थीं, पर इन फिल्मों ने जन-मानस को अपनी ओर आकर्षित नहीं कर पाया भले ही दो-चार बुद्धि जीवियों ने इनकी सराहना की हो। चल-चित्र गीतों का सर्वाधिक महत्व इस बात में है कि वे साधारण से साधारण जनता का मनोरंजन कर कुछ क्षणों के लिए उसकी थकान और चिन्ताओं को भुला देते हैं।

१- साप्ताहिक हिन्दुस्तान - (संपादकीय)-फिल्म- विशेषांक-१९६१
पृष्ठ- १९६

हिन्दी चल-चित्रों में प्रयुक्त गीत और संगीत की महत्ता को प्रतिपादित करते हुए डा० ओ०प्र० माहेश्वरी कहते हैं --" जैसे देवासुर-संग्राम में कैकेयी के हाथ के स्पर्श ने राजा दशरथ की पीड़ा और थकान को खींच लिया था, उसी प्रकार हिन्दी- फिल्मों और उनमें प्रयुक्त गीत और संगीत हमारी जनता का मनोरंजन कर उसकी थकान को मिटाते हैं।"[१]

हिन्दी-चलचित्रों में गीत और संगीत का आकर्षण प्रमुख है जिससे फिल्मों को सफलता प्राप्त होती है। कविता सरकार के शब्दों में ---

"One of the most significant things in our cinema is the importance, the overwhelming importance, given to the song. Its multipurpose character, its inordinate influence on film making and its form are unique in the annals of the cinema."

१- हिन्दी-चित्रपट का गीतिसाहित्य- डा०ओ०प्र० माहेश्वरी-पृ०३४०

२- Sing A Song For Success — Kobita Sarkar. Filmfair, July 29, 1960, Page-15.

हिन्दी-चलचित्रों में गीतों की महत्ता को समझने के लिए निम्न दो बातों का अध्ययन अपेक्षित है ----

क- भारतीय- जन- जीवन में गीत और संगीत का स्थान;

ख- फिल्मों में निहित गीतों का उद्देश्य ।

क- भारतीय-जन-जीवन संगीत-प्रिय है ।जन्म से लेकर मृत्यु तक हमारे जीवन के विभिन्न अवसर और उत्सव गीतों के बोलों और संगीत के स्वरों से गुंजायमान हो उठते हैं । सावन का दर्दीला विरहा और मीठी मल्हार तथा फगुनौटी- बयार में डूबी हुई मस्ती और नाच भरी होली किसने नहीं देखी सुनी ? पुत्र- जन्म के अवसर पर सोहर, बँधावे के गीतों का आनन्द कौन नहीं लेता ? विवाह के मांगलिक- अवसर पर प्रेम के मधुर गीतों और प्यार की कोमल शहनाई ने कितने धड़कते दिलों की जुबाँ को नहीं खोला ? हमारे यहाँ के धार्मिक संस्कार भी मंत्रोच्चारण की गम्भीर और संगीतात्मक ध्वनि के साथ आये हैं । शिशुओं को सुलाने में मीठी- मीठी लोरियाँ गाकर, कुआँ के अवसर पर नाचगाकर प्रसन्नता प्रकट करना अपना विशिष्ट महत्व रखता है । यहाँ तक कि मनुष्य के मरणोपरान्त अग्नि संस्कार के समय भी मंत्रोच्चारण शोक-पूर्ण स्वर- लहरी के साथ गाया जाता है । कहने का तात्पर्य यह है कि भारतीय जीवन में हर अवसर पर खास गीतों के संगीत की व्यवस्था है । इसी विविधता के कारण ही भारत के शास्त्रीय- संगीत में सैकड़ों ताल और राग हैं जो गाने वाले के प्रत्येक भाव की अभिव्यक्ति कर सकने में सक्षम हैं ।

जन-मानस को संगीत-प्रिय बनाने में मध्यकालीन भक्त और सन्त कवियों का योगदान अछूता नहीं है ।

डा० ओ०प्र० माहेश्वरी के शब्दों में:-

"हिन्दी के मध्यकालीन कबीर और दादू जैसे- सन्तों तथा सूर , तुलसी और मीरा जैसे वैष्णव भक्तों की संगीत रचनायें आज भी हर भारतीय की जुबान पर है और उसे रस- विभोर करती रहती हैं। ये जनता के कवि थे- जनता के भावों , जनता की भाषा और जनता के संगीत को लेकर चलने वाले । इसीलिए आज भी उनके गीत और संगीत से हमारे हृदय में एक कम्पन और थिरकन पैदा हो जाती है । हम प्राय: गीतों को हर समय गाने लगते हैं । इस प्रकार भारतीय जन-मानस की जिन्दगी गीत और संगीत से युक्त है ।"[१]

ख- अभिनय , कहानी, नृत्य , हास्य, गीति, रोमांस, फोटोग्राफी आदि के कारण हिन्दी- चलचित्र कला के क्षेत्र में अपना विशिष्ट स्थान रखता है । इन सब तत्वों के बावजूद जनता हिन्दी फिल्मों में गीतों को विशेष महत्व देती है, क्योंकि गीत में संगीत की विमुग्धकारी मार्मिक - शक्ति और मन-प्राणों को भिंगो देने वाली घनीभूत सरसता का मणि - कांचन समन्वय होता है । इसलिए जनता को आकृष्ट करने की जो अचूक शक्ति गीतों में है,वह फिल्मों के अन्य उपकरणों में नहीं । इस प्रकार कहा जा सकता है कि हिन्दी चलचित्र में गीतों का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है । ये फिल्म को हिट बना कर पैसा कमाना तथा जनता को आकृष्ट करने तथा उनके मनोरन्जन में अपना बहुत बड़ा हाथ रखते हैं ।

१- हिन्दी चित्रपट का गीति साहित्य- डा०ओ०प्र० माहेश्वरी
पृष्ठ- १८४

फिल्मी- गीतों में आकर्षण शक्ति का अजस्र स्रोत होता है । यही कारण है कि इनका प्रभाव बच्चों से लेकर बूढ़ों तक, गांव से लेकर नगर तक, तथा देश से लेकर विदेश तक देखा जा सकता है । इनकी लोक-प्रियता का सबसे बड़ा प्रभाव सीलोन, विविध भारती , आल - इण्डिया रेडियो तथा दूरदर्शन के प्रोग्राम चित्रहार के प्रसारण में देखा जा सकता है ।

भारतीय- जन- मानस फिल्मी गीत और संगीत में इतना रंग गया है कि उसके अभाव में उसका जीवन चल ही नहीं सकता ।

हिन्दी-चलचित्रों में प्रयुक्त गीत विविधमुखी हैं । ये गीत सभी रसों में पगे हुए दिखलाई पड़ते हैं ।

डा० रमेश कुमार शर्मा के शब्दों में,--"हिन्दी-चलचित्र गीत 'बिहारी सतसई' के समान अनेक स्वादों से युक्त हैं । प्रत्येक व्यक्ति को उसके अनुकूल उसमें सामग्री मिल जाती है । यदि वह भक्त है तो भक्ति और नीति सम्बन्धी गीतों में अवगाहन करके कृत- कृत्य हो उठता है, यदि वह रसिक है तो श्रृंगार- सरिता में आकण्ठ निमग्न होकर झूमने लगता है , यदि देश-प्रेमी है , तो देश-भक्ति के गीतों को सुनकर देश के लिए कुछ करने के लिए उत्साहित हो जाता है ।"[१]

१- रीतिकाल और आधुनिक हिन्दी कविता - डा० रमेश कुमार शर्मा , पृष्ठ- २१६

शृंगार, भक्ति, राष्ट्रीय, सांस्कृतिक, शास्त्रीय गीतों के अतिरिक्त हिन्दी फिल्मों में पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित गीत भी देखने को मिलते हैं जो आधुनिक सभ्यता के प्रतीक के रूप में सिद्ध होते हैं ।

हिन्दी फिल्मों का मुख्य विषय प्राय: विवाह की पूर्व अवस्था के प्रेम का चित्रण रहा है । इस प्रेम के आश्रय और आलम्बन है नव-यौवन की छलकती मदिरा का पान करने वाले थिरकते प्रेमी और प्रेमिका जो नायक और नायिका होते है । एक दूसरे को देखकर उनके हृदय में प्रेम के अंकुर प्रस्फुरित हो उठते हैं और वे मस्ती में गाने लगते हैं । ऐसे गीत एकल या युगल गान के साथ में देखने को मिलते हैं ----

१- ` कौन हो तुम ?
कवि की मधुर कल्पना हो तुम
या गायक की मधुरिम तान ।
या सरिता-जल की तरंग हो ,
अरुण कमल की मधु मुस्कान ।[१]

२- जोगन बन जाऊँगी सैंया तोरे कारन,
जीत लिया तोरे गीत ने मन को ,
आग लगी मोरे बालापन को ।
नयनों में कोई आये न दूजा
करूँगी निसि - दिन प्रीतम- पूजा
भजन तोरे गाऊँगी, बनके भिखारिन ।[२]

१- फिल्म- स्त्री गीतकार - पं० भरतव्यास

२- फिल्म- शबाब गीतकार - शकील

प्रिय और प्रेमिका की प्रेमोत्पत्ति हिन्दी-फिल्मों में प्राय: प्रेमोल्लास से भरे युगल- गान की योजना से की जाती है । निम्न युगल-गीत में सुन्दर प्रेम व्यंजना का रूप देखिये :-----

मेरे जीवन में किरन बनके बिखरने वाले ,
बोलो तुम कौन हो ?

आँखों आँखों में मेरे मन में उतरने वाले
बोलो तुम कौन हो ।[१]

संयोग के अतिरिक्त हिन्दी- चलचित्र गीतों में वियोग के पक्ष को भी देखा जा सकता है । वियोग से सम्बन्धित गीत प्राय: पन्त जी की लोक प्रिय पंक्ति से प्रभावित देख पड़ते हैं और कभी-कभी अंग्रेजी कवि शैली के भी ।[२]

१- वियोगी होगा पहला कवि,
आह से उपजा होगा गान ।
उमड़ कर आंखों से चुपचाप
बही होगी कविता अनजान ।
----- पन्त

२- Our sweetest songs are those,
That tell us of saddest thoughts.
— P. B. Shelley.

हिन्दी- फिल्मी गीतों में कहानी के अनुसार एक ऐसी सिचुएशन भी प्रस्तुत की जाती है जहाँ मनुष्य संसारी बाधाओं और व दु:खों से थक कर भगवान की शरण में जाने को मजबूर हो जाता है और रक्षा के लिए वह भगवान को स्मरण करता है। और उसका यह स्मरण गीतों के माध्यम से प्रयुक्त किया जाता है। दैनिक जीवन में भी भारी मुसीबतों में बढ़कर जब मानव की शक्ति जवाब दे देती है ऐसी स्थिति में वह परम- प्रभु को याद करता है। यही स्थिति फिल्मों की कहानियों में लाकर भक्ति भावना के गीत प्रस्तुत किए जाते हैं।

हिन्दी- चल-चित्रों में कुछ परिस्थितियाँ ऐसी भी सामने लाई जाती हैं, जिनमें कुछ अन्य प्रकार के भी गीत रखे जा सकें, जैसे --- देश- प्रेम के गीत , लोरियाँ , क्लब- कोठे पर गाये जाने वाले नृत्य-गीत आदि ---

ऐतिहासिक फिल्मों में तो स्वाभाविक सिचुएशन रहती है जिससे देश- प्रेम के गीत स्वत: उनमें फिट हो जाते हैं। देश-प्रेम से भरे गीत अन्य फिल्मों में भी देखने को मिलते हैं जैसे -- `किस्मत`, `जागृति`, `वीर दुर्गादास, ` फूल बने अंगारे`, `कुन्दन`, `झाँसी की रानी` ,आदि। विद्यालयों के उत्सव आदि में किसी युवक-कवि- पात्र को मंच पर खड़ा करके उसके माध्यम से देश प्रेम के गीत प्रस्तुत होते हुये देखे जाते हैं, जैसे धर्म पुत्र , का यह गीत:-

` बगावत का खुला पैगाम देता हूँ जवानों को।
उठो , उठो मिटा दो तुम गुलामी के निशानों को।

हिन्दी फिल्म निर्माता पश्चिम से प्रभावित होकर अपनी फिल्म की कहानी में एकाध दृश्य होटल, क्लबों के डालकर नृत्य-गीत पश्चिमी धुन में प्रस्तुत करके सस्ती लोक प्रियता प्राप्त कर लेते हैं । इन नृत्यों में घोर मादकता का प्रदर्शन रहता है और गीतों का भाव होता है ---

खालो , पीलो, मौज उड़ालो ,
उल्फत का जाम पीलो ,
ये दुनियाँ दो दिन की है ।

कहीं कहीं सिचुएशन के अनुसार डिस्को पाप रम्भा-सम्भा, नृत्यप्रस्तुत करके पश्चिमी शैली के गीतों को डाल देते हैं । इन गीतों में हल्ला- गुल्ला तथा शोर- शराबा ही अधिक होता है ।

फिल्म की भाव- धारा या थीम का संकेत देने के लिए भी गीत का प्रयोग देखने को मिलता है जो फिल्म के आरम्भ में गाया जाता है । ऐसे गीत और संगीत की उपयोगिता यही कही जा सकती है कि जिस फिल्म को देखने द्रष्टा उपस्थित हुआ है, उसी के अनुसार उसका मूड बन जाये । `नया जमाना`, `कहीं दिन कहीं रात`, `श्री ४२०`, `आवारा`, `बरसात`, `बूट पालिश`, `बरसात की रात`, `कव्वाली की रात`, `कल हमारा है`, `शोले`, - आदि फिल्मों के शीर्षक गीत कुछ इसी प्रकार के हैं ।

कभी- कभी ऐसा भी देखा जाता है कि फिल्म की कहानी में गीत रखने की खातिर ही गीत का प्रयोग किया जाता है । ऐसी बेकार की भर्ती निस्सन्देह कला का गला घोंट देती है, और कथा के प्रवाह में आघात पहुँचाती है जिससे दर्शक के मन में नीरसता का वातावरण छा जाता है ।

प्रसिद्ध फिल्म निर्देशक विमल राय के शब्दों में :-

`गीत चाहे जितना अच्छा हो, यदि बिना जरूरत थोपा गया है , तो वह घटनाओं की कड़ियों को फैलाकर ढीला कर देगा और कहानी को बेजान बना देगा ।`[१]

हिन्दी फिल्मों में गीतों का प्रयोग एक और उद्देश्य से भी किया जाता है । वह है संगीत और नृत्य कला के प्रदर्शन केलिए काव्य, संगीत एवम् नृत्य की त्रिवेणी का प्रवाह-मान होना हर फिल्म में आवश्यक है । `झनक झनक पायल बाजे `, `गीत गाया पत्थरों ने `, `नाचे मयूरी`, `बैजू बावरा,` `संगीत सम्राट तानसेन `,- आदि ऐसी फिल्में हैं जिनमें गीत और संगीत का मिश्रण देखने को मिलता है । --`जल बिन मछली नृत्य बिन बिजली` ,`सुवर्ण सुन्दरी`, आदि फिल्में नृत्य और संगीत की दृष्टि से उत्कृष्ट बन पड़ी हैं ।

कुछ फिल्में ऐसी भी हैं जिनमें भक्ति और नीति के गीत संगीत के स्वर पर थिरककर आत्मा के तारों को झंकृत करने में पूर्ण सक्षम है ।

हिन्दी फिल्मों में गीतकारों ने भक्ति-गीत लिखकर स्तुत्य प्रयास किया है । इसके लिए यह आवश्यक नहीं रहा कि पौराणिक ही रही हों । पौराणिक- फिल्मों की अपेक्षा सामाजिक- फिल्मों में भी उत्कृष्ट भक्ति-रस से पूर्ण गीत देखे जा सकते हैं ।

१- गम्भीर फिल्मों में संगीत का स्थान- विमल राय, (माधुरी, १९६७) - पृष्ठ- २४-२५

ये गीत कभी- कभी जीवन से निराश, हिम्मत हारे और थके हुये, आत्म- हत्या के लिए तत्पर व्यक्ति को सत्प्रेरणा, साहस, तथा धैर्य बँधाने में भी सक्षम हैं। `घर संसार`, `नागमणि`, `जमाना`, `गृह लक्ष्मी`, `राम- श्याम`, `रामपुर का लक्ष्मण`, भाभी आदि फिल्में इस सन्दर्भ में विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

संसार की नि:सारता के विषय में सभी जानते है। संसार में आकर मनुष्य को भगवद्भजन करना चाहिये, धोखाधड़ी नहीं करनी चाहिए क्योंकि भगवान के पास जाकर अपना लेखा- जोखा देना पडता है। अत: झूठ- फ़रेब से भी मानव को दूर रहना चाहिये। इस सन्दर्भ में एक गीत की प्रस्तुत प्रसिद्ध पंक्ति -- `सजन रे झूठमत बोलो, खुदा के पास जाना है` विशेष रूप से द्रष्टव्य है। इसी प्रकार अहंकार के विषय में भी फिल्मी -गीतकारों ने अपनी सुन्दर लेखनी चलाई है-- `माटी के पुतले। मत कर तू अभिमान`, भी सुन्दर बन पड़ा है। भक्ति और नीति से सम्बन्धित गीतों में जहाँ एक ओर भक्ति-भावना का उद्दाम प्रवाह दिखलाई पड़ता है तो दूसरी ओर नीति के गीतों में चरित्र को सुधारने वाली बात।

अत: हिन्दी- फिल्मों में गीतों का सृजन परिस्थिति विशेष एवम् वातावरण के परिवेश में होता है और उसी के अनुसार उनमें गीत फिट किये जाते हैं। सारांश यह है कि फिल्मों में गीतों के प्रयोग की तमाम परिस्थितियाँ हो सकती हैं जिनका विश्लेषण और विवेचन ऊपर किया जा चुका है। इस सम्बन्ध में विख्यात और सफल फिल्म निर्देशक -विमलराय के विचार भी यहाँ उद्धृत करना अप्रासंगिक न होगा। वे लिखते हैं -- `फिल्मों में भी जब कथा की पर्तें खुल रही हों, कहीं नाटकीय (तनाव की) परिस्थिति में उसके पात्र गीतों द्वारा अपने भावों को व्यक्त कर सकते हैं और उसमें कोई भी अस्वाभाविक बात नहीं होगी। `क्योंकि जैसा हम देख चुके हैं, लोग तमाम मानसिक परिस्थितियों में गाते हैं। फिल्मों में तो गीत कभी-कभी कहानी को

आगे बढ़ाने का काम भी करसकते हैं , गीत किसीहोनेवाली घटना की सूचना दे सकते हैं । गीतों के जरिये पात्र एक दूसरे को पहिचान सकते हैं, गीत दोनों में समझौता करा सकता है, गीत किसी बिल्कुल पस्त और हिम्मत हारे हुए आदमी को प्रेरणा दे सकता है । एक गीत कहानी की तमाम मंजिलों को भी दर्शा सकता है ।[१]

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि जनरुचि की दृष्टि से ये फिल्मी-गीत अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं । इन गीतों में लोक धुनों का रस घुला हुआ है जो आज अपनी मनोहारिणी और मीठी संगीत - धुनों से हमें प्रभावित कर रहे हैं । फिल्मी गीतों का देश की राजनीतिक-सामाजिक चेतना को जगाने में भी बड़ा भारी योगदान रहा है । इस महान् कार्य की ओर बिना दृष्टिपात किये हुए आलोचक प्राय: इन गीतों की बुराइयाँ खोज खोजकर दिखाने की कोशिश करते रहे हैं । जिस समय देश में स्वाधीनता आन्दोलन चल रहा था , उस समय जन्मभूमि को गुलामी की जंजीरों से छुट-कारा दिलाने का स्वर जिन फिल्मी-गीतों ने देश भर में फैलाया था, उनके असाधारण महत्व और मूल्य को कौन अस्वीकार करेगा ? जिनका मूल्य न कभी दृष्टि से ओझल किया जा सकता है और न ही उनकी महत्ता को भुलाया जा सकता है ।

राजनीतिक- जागरण के अतिरिक्त सामाजिक-जागरण और संगठन की दृष्टि से भी फिल्मी गीतों का भारी मूल्य है । हमारे समाज की वैश्यावृति, दहेज-प्रथा ,छुआछूत के खिलाफ इन गीतों ने अपने स्वर चतुर्दिक दिखलाये हैं और जन-मन को इनके सुधार की बड़ी प्रेरणा दी है ।इसके अतिरिक्त हिन्दू- मुस्लिम एकता के लिए जो कार्य हमारे फिल्मी गीतों ने किया है वह भी बड़ा महत्वपूर्ण और मूल्यवान है । उनका सन्देश हिन्दू-मुस्लिम ,सिक्ख,ईसाई, सब भाई-भाई हैं । सभी प्रेमपूर्वक मिल जुलकर रहें । इस राम - भरत के देश में कभी आपस में कोई न लड़े-झगड़े ।

१- गम्भीर फिल्मों में संगीत का स्थान- विमलराय(कलकत्ता)
(माधुरी- १९६७) पृष्ट- २७७

हिन्दी- चित्रपट गीतों का एक और भी दृष्टि से बड़ा महत्व और मूल्य है । इन गीतों ने हिन्दी के प्रचार और प्रसार का वैसा ही जबर्दस्त कार्य किया है जैसा कि किसी जमाने में देवकी नन्दन खत्री ने `चन्द्र कान्ता सन्तति` उपन्यास में किया था । हिन्दी फिल्में अपनी लोक-प्रियता के कारण अन्य प्रादेशिक भाषाओं की अपेक्षा आज देश में सर्वाधिक संख्या में निर्मित हो रही हैं और सारे प्रदेशों में भी प्रवेश कर रही है साथ ही उनके लोक-प्रिय गीत आज भी गुन गुनाये जाते हैं इतना ही नहीं, हिन्दी चित्रों की लोक प्रियता के कारण फिल्मों को विश्व के अन्य देशों में भी प्रवेश मिल रहा है । इस प्रकार हिन्दी भारत के चारों कोनों की ही भाषा नहीं रही, वह फैलकर अब विदेशों में पहुँच गयी है ।

साहित्यिक- दृष्टि से भी विचार करने पर फिल्मी-गीतों में बहुत से ऐसे गीत सामने आये हैं जो बड़े भावपूर्ण और रसात्मक हैं और इस प्रकार वे साहित्य की मूल्यवान निधि है । हमारी जनता में जागृति और उसके साथ ही फिल्मी गीतकारों में उत्तरदायित्व की भावना से हिन्दी- चित्रपट के गीतों का भविष्य बड़ा ही उज्ज्वल दिखलाई दे रहा है ।

:-:-:-:-:-:-:

अध्याय - ८

हिन्दी चलचित्र गीतों में प्रयुक्त विभिन्न शैलियाँ

अध्याय - ८

हिन्दी चलचित्र गीतों में प्रयुक्त विभिन्न शैलियाँ:-

हिन्दी चल चित्र गीतों में गीतों की निम्नलिखित शैलियाँ प्रयुक्त हुई हैं ---

१- लोक गीतात्मक शैली

२- उर्दू शैली

क- कव्वाली

ख- गजल

ग- मुकरी एवं पहेलियाँ

घ- मुजरा

३- वर्णनात्मक शैली

४- सन्त भक्त कवियों की पद शैली

५- प्रतीकात्मक शैली ।

१- लोक गीतात्मक शैली:-

मानव हृदय का भाव विलास अपनी उत्कट स्थिति में लयात्मक अवरोहावरोहों में जब भाषा बद्ध होकर प्रवाहित होने लगा और इसी गीत परम्परा की एक धारा जब अपनी देशज बोलियों में लोक वाणी को प्रवाहित करने लगी तो उसे लोक गीत के नाम से अभिहित किया गया । लोकगीत शब्द में गायन का भाव सहज ही सामने होता है अर्थात उसका सम्बन्ध संगीत सेसीधे जुड़ता है । तब फिर प्रश्न यह उठता है कि जो संगीत की वस्तु है उसे लोक गीत में साहित्य का आरोप कैसा इसके उत्तर में यही कहना है कि संगीत और साहित्य में कलात्मक

प्रभाव का कोई अन्तर नहीं है । अन्तर है स्वर और अर्थ की प्रधानता तथा अप्रधानता का । संगीत और साहित्य दोनों का मूल अधिष्ठान नाद है। एक में वह नाद शब्दों की सीमाओं को छूकर अपने प्रभाव सम्पादन के लिए पुन: अपने स्थान की ओर लौट आता है दूसरे में नाद शब्द तक पहुँच कर अपनी अंगत प्रभाव शीलता के लिये वहीं टिक जाता है । दोनों का उद्गम हृदय है । भावमयता दोनों की ही विशेषता है , बस अन्तर यही है कि संगीत में स्वर अथवा नाद प्रधान है और शब्द का अर्थ गौण है जब कि साहित्य में अर्थ की प्रधानता है , नाद की नियमित भाव लहरियाँ गौण हैं ।संगीत अपनी प्रकृति में साहित्य अधिक है और संगीत कम और साहित्य अपनी प्रकृति में साहित्य कम और संगीत अधिक है ।संगीत में गजल और कव्वाली अपने अर्थगत विशेषताओं के कारण संगीत की अपेक्षा साहित्य के निकट अधिक हैं तथा इसी प्रकार साहित्य में पद और भजन संगीत आत्मक होने के कारण साहित्य की अपेक्षा संगीत के निकट अधिक है ।

लोकगीतों का सृजन सामूहिक चेतना द्वारा स्वाभाविक रीत से होता है । वह किसी निश्चित अथवा नियन्त्रित संगीतात्मक अथवा साहित्यिक प्रतिक्रिया का परिणाम नहीं है । जीवन की सहज क्रियाओं में लीन जन समुदाय के निश्छल, सरल और स्वाभाविक भाव, गीतों के बोल बनकर उनके कन्ठ स्वर में तैरने लगते हैं । खेत,नदी , पहाड़ , मैदान, घर सभी इनके निर्माण स्थल हैं । हल चलाते हुये,पशु चराते हुये , चक्की पीसते हुये, बर्तन मांजते हुये प्रत्येक सामान्य कार्य व्यापार के समय इन गीतों का उदय हुआ है ।

लोक गीतों में सहज स्वभाविक भावानुभूतियों के रत्नों से गीतों की लड़ियाँ सजाई जाती है । एक- एक भाव रत्न में सामान्य जन जीवन के अकृत्रिम, सरल, निश्छल, सौन्दर्य की अद्भुत कांति की अपूर्व झलक का जो वेग पूर्ण प्रवाह उमड़ा है वह परस्पर संगठित होकर विराट भाव सागर की सृष्टि कर रहा है । इस सागर की लहराती उछलातीं तरंगों में

युगायुग के मानव की कामनायें, भावनायें और अनुभूतियाँ आन्दोलित होती है , इसके कोलाहल में समस्त स्त्री पुरुषों के मार्मिक भावों के अनुरंजन, प्रेम मय पुलकन , भय मिश्रित प्रकम्पन , दुख पूर्ण क्रन्दन, उल्लास युक्त मिलन और विषादाग्रस्त बिछुडन की व्याप्ति है ।[१]

यह नगर के आडम्बरों से दूर वैभव की चमक दमक से परे , गाँवों के शान्त सरल वातावरण में , हरे- हरे लहलहाते खेतों में , घनी अमराइयों की छाया में , सरितातट की रेतीली भूमि में , मेघाच्छादित नभ मण्डल के नीचे इन गीतों की रचना होती है । प्राकृतिक तत्वों के साहचर्य में निर्मित होने के कारण प्रकृति की सम्पूर्ण मधुरता का समावेश इनमें होता है । झरने की स्वच्छता, फूलों का हास , वृक्षों की उदारता, नदी का प्रवाह, वर्षा की सजलता, बसन्त का सौरभ, सूर्य का प्रकाश , कोयल की मिठास में लोक गीतों का अस्तित्व डूबा रहता है । उनमें जीवन का सहज व नैसर्गिक आनन्द अन्तर्हित है ।[२]

राल्फ विलियम के शब्दों में :-

लोक गीत न पुराना होता है न नया । वह जंगल के एक वृक्ष के समान है जिसकी जड़ें तो दूर धरती में धंसी हुई होती है पर जिनमें निरन्तर नई- नई डालियाँ , पल्लव और फल फूल रहते हैं ।अत: लोक गीतों का जीवनअमर और अनीश्वर है । समय के घात प्रतिघातों में उनका बाह्य रूप बदलता रहता है । अत: गीतों की परम्परा सर्वथा नष्ट नहीं होती ।

१- भारतीय लोक साहित्य: श्याम परमार - पृ० ५३

२- सम्मेलन पत्रिका लोक साहित्य अंक- डा० सदाशिव फाडके , पृष्ठ- २५०

लोक गीतों में लौकिक सभ्यता, लौकिक आचार, लौकिक व्यवहार , रीति -रिवाज एवम् परम्पराओं का प्रतिबिम्ब झलकता है । इसलिये लोक में व्याप्त इन गीतों को युग का दर्पण कहा जा सकता है ।

युग - युग से चली आ रही मानवीय मूल भावनाओं का विशिष्ट भण्डार इनमें सुरक्षित है । जीवन का एक-एक पल भाव रूप धारण कर लोक गीतों में समाया हुआ है । प्रत्येक घटना प्रत्येक स्थिति अपने उल्लास विशाद अस्मक अस्तित्व के साथ लोकगीतों में निहित रहती है । जन- जीवन की निर्मल और सरल सौन्दर्यानुभूतियाँ, गीतों के स्वरों में बन्ध कर अपनी प्रभावशीलता युग व्यापी प्रसार करती है ।[१]

इस प्रकार कहा जा सकता है कि लोकगीत मानव हृदय की वह नैसर्गिक अभिव्यक्ति है , जिसमें भाव, भाषा और छन्द की नियमितता से मुक्त रह कर स्वच्छन्द रूप से नि:सृत होने लगते हैं ।

हिन्दी चलचित्र गीतों में गीतकारों ने लोक गीतों को भी स्थान दिया है । हिन्दी फिल्मी गीतों में संस्कार गीत, व्रत उपासना सम्बन्धी गीत एवम् प्रेम सम्बन्धी गीत देखने को मिलते हैं इन चल चित्र गीतों में मानव हृदय की नैसर्गिक अभिव्यक्ति मिलती है । तथा भाव भाषा और छन्द से ये गीत मुक्त होकर स्वच्छन्द रूप से नि:सृत दिखलाई पड़ते हैं ।

लोक गीतों के सन्दर्भ में निम्नलिखित फिल्में उल्लेखनीय है --

१- लोक साहित्य - डा० विद्या चौहान ,
पृष्ठ- -४५

मदर इण्डिया,[१] तीसरी कसम,[२] गोदान[३], वन्दनी ,[४] बम्बई का बाबू ;[५] काला-पानी ;[६] लावारिस ;[७] बाँवी ,[८] दो बदन [९], पुकार,[१०] मौजी ;[११] अनोखीरात ;[१२] डॉन ;[१३] सिलसिला ;[१४] अदालत ;[१५] बाबुल [१६],

---

१- क- होली आई रे कन्हाई रंग छलके सुना दे जरा बाँसुरी ।
   ख- सुन्दरिया कटती जाये रे, उमरिया घटती जायेरे ।
   ग- घूंघट नहीं खोलूंगी सय्या तोरे आगे ।

२- क- सजनवा वैरी हो गये हमार
   ख- पान खाये सय्या हमार
   ग- दुनिया बनाने वाले कैसी ये दुनिया बनाई ।

३- क- होली खेलत नन्द लाल विरज में
   पिपरा के पतवा सरीखे डोले मनवा

४- अबके बरस भेजभय्या को बाबुल सावन में लीजो बुलाय रे ।
५- चल री सजनी अब क्या सोचे, कजरा न बह जाये रोते रोते ।
६- नजर लागी राजा तोरे बंगले में ।
७- मेरे अंगने में तुम्हारा क्या काम है ।
८- झूठ बोले कौवा काटे काले कौवा से डरियो
९- मत जइयों नौकरिया छोड के ।
१०- तू मैके मत जइयो ।
११- फूल के कटोरवा में दूध भात लेने आवो ।
१२- खुशी- खुशी कर दो विदा
१३- खाके पान बनारस वाला
१४- रंग बरसे भीगे चुनर वाली रंग बरसे
१५- हमको ऐसा वैसा न समझो हम बड़े काम की चीज
१६- छोड बाबुल का घर मुझे पीके नगर आज जाना पड़ा ।

घर घर की कहानी,[१] चोर मचाये शोर,[२] शराबी,[३] छोटी बहन,[४] बाबुल[५], गंगा मइया तोहे पीयरी चढ़इबो,[६] गंगा-जमुना,[७] दूज का चाँद,[८] भाभी की चूड़ियाँ[९] – घराना[१०], एक फूल दो माली[११], – आदि आदि।

इन फिल्मों के अतिरिक्त भोजपुरी फिल्मों के सभी गीत लोकगीतों की श्रेणी में रक्खे जा सकते हैं। राजस्थानी एवम् पंजाबी चलचित्रों में भी कुछ ऐसे गीत हैं जो पूर्ण रूप से लोकरंग में रंगे हुये हैं --

---

१- दूल्हे राजा की सूरत देखो बस एक- जरा दुम की कसर है।

२- आगरे से घाघरा मंगवा दो रे पहले सय्या

३- मुझे नौ लखा मंगादे रे।

४- बागों में बहारों में इठलाता गाता आया कोई

५- तेरी भोली मुस्कानों ने मुझे बाबुल बना दिया

६- सजनवा से करदे मिलनवा हमार

७- नैन लड़ जइहे तो मनवा मां कसक होइबे करी

८- आज है करवा चौथ सखीरी मांग ले सुख का दान

९- घोड़ी नचाते मेरा लाडला समधी के दुआरे।

१०- मेरे बन्ने की बात न पूछो मेरा बन्ना हरियाला है।

११- हम भी अगर बच्चे होते नाम हमारा होता बबलू गबलू

खाने को मिलते लड्डू पेड़े - हैपी बर्थ डे टू यू।

२-क- कव्वाली:-

हिन्दी चलचित्र गीतों में प्रयुक्त शैलियों में कव्वाली भी प्रमुख है ।

सूफी धर्म के अनुसार 'कल्ब' आत्मा की वह उच्चतम स्थिति है, जो बुद्धि से सम्बन्धित है एवम् रूह और नफस के मध्य में स्थित है। कल्ब के प्रति समर्पण की भावना ने 'कौल' को जन्म दिया और कौल को गाने वाले 'कव्वाल' कहलाए। कव्वालों की गान-शैली होने के कारण कौल को 'कव्वाली' कहा जाने लगा।[१]

कव्वाली की शैली ईरान से भारत आई और सूफियों के माध्यम से यह दिन-प्रतिदिन लोक-प्रिय होती चली गयी। कव्वाली के अन्तर्गत ही नक्श, दादरा, गजल, हम्द, नात, कसीदा, रुबाई, दोहा, कल्बाना, नक्श और गुल इत्यादि का विकास और प्रसार विभिन्न मुसलमान गायकों द्वारा समय-समय पर होता रहा और इन्हीं शैलियों से प्रभावित होकर कव्वालों के द्वारा ख्याल गायन की उत्पत्ति हुई।

भारत में तेरहवीं शताब्दी में ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती ने सर्वप्रथम अजमेर में समवेत गाने के रूप में गजल और रुबाइयों का प्रयोग कव्वाली, पद्धति में किया, जो क्रमश: लोकप्रिय होता चला गया। कीर्तन और कव्वाली, भजन और नमाज की तरह ही एक दूसरे के पर्याय है।

१- संगीत (कव्वाली अंक) जनवरी - फरवरी- १९७६ - संपादकीय।

`कव्वाली` संगीत की एक विधा है । अपने मूल रूप में यह एक आध्यात्मिक काव्य था, जो फारसी या उर्दू भाषा में इस्लामधर्म से संबंधित था । इसका गायन मुस्लिम सन्तों की दरगाहों पर विशेष पर्वों (उर्स) पर हुआ करता था । कालान्तर में इसमें वाद्यों का प्रयोग होने लगा। कव्वाली में निहित दार्शनिक अथवा आध्यात्मिक चेतना धीरे-धीरे लौकिक प्रेम की ओर मुड़ने लगी । वास्तव में आध्यात्मिक प्रेम (इश्के- हकीकी) को समझने के लिए ही प्रारम्भ में सूफी सन्तो द्वारा लौकिक प्रेम (इश्के-मजाज़ी) के आख्यानों का सहारा लिया गया था किन्तु समय बीतने के साथ-साथ `कव्वाली` साधारण स्तर के श्रोताओं तक पहुँची, तो उसे उनके अनुरूप साँचे में ढलने के लिए लौकिक प्रेम को ही अपना मुख्य विषय बनाना पड़ा । यद्यपि वह अपने मूल रूप को समाप्त न कर पायी थी, किन्तु फिर भी उसमें अनेक नवीन तत्व सम्मिलित हो गए और वह नए-नए रूपों में ---- सामने आने लगी ।

कव्वाली के प्रदर्शन में दो वस्तुओं का योग होता है --

काव्य और संगीत । कव्वाली की गायिकी में सबसे मुख्य बात यह है कि यह एक समूह गान है । इसमें एक या अधिक मुख्य स्वरों के साथ कई सहायक स्वर होते हैं । `स्थायी` गाते समय तालियों का प्रयोग तथा अन्तरों की विभिन्न प्रकार से भाव दिखाते हुये ताल- रहित प्रस्तुति तथा प्रत्येक अंतरे के पश्चात् बहुत सुन्दर तथा भावपूर्ण ढंग से पुन: स्थायी में आकर ताल वादन का प्रारम्भ , कुछ विशेष प्रकार की तान तथा आलापों का प्रयोग इत्यादि ऐसे तत्व है, जिनकी उपस्थिति से आज कल किसी गीत को कव्वाली माना जा सकता है । संप्रति कव्वाली में विषय का कोई बंधन नहीं है । जब वह भक्ति मूलक थी, तो इसमें केवल एक गायक समूह पर्याप्त था , किन्तु जैसे - जैसे इसमें मनोरन्जन को प्रधानता दी जाने लगी इसमें एक होड `या` मुकाबलें का प्रारम्भ हुआ , जिसके लिए दो अलग-अलग गायक

समूहों की आवश्यकता पड़ने लगी । प्रारम्भ में कव्वाली पर पुरुष- गायकों को ही अधिकार रहा। धीरे- धीरे इस क्षेत्र में महिला- कलाकारों का भी आगमन हुआ । उनके अपने समूह थे , जिनमें सब महिला- कलाकार ही गायन और वादन का कार्य भी संभालती थी ।

कव्वाली में मुकाबला होता था । इस मुकाबले में दो समूह होते थे -- एक पुरुष वर्ग दूसरा महिला वर्ग । इस मुकाबले में पुरुष द्वारा स्त्री का `त्रिया-चरित्र` तथा महिला द्वारा पुरुष की `बेवफाई` की शिक्वा शिकायत रहती थी। एक तरफ से शिकायत पेश की जाती थी तो दूसरी ओर से उसका निराकरण । जाहिर है कि हुस्नो- इश्क, नाज़ो अंदाज, रूठने - मनाने का जो यह सिलसिला कव्वाली में चला, तो कव्वाली लोकप्रियता के शिखर पर पहुँच गयी ।

कव्वाली में तीन बातें प्रमुख होती है ---

१- काव्य (शायरी) ,
२- संगीत (मूसीकी) और
३- भाव- प्रदर्शन (अदायगी) ।

हिन्दी फिल्म वालों की दृष्टि जब कव्वाली पर पड़ी तो वे इसे बड़े प्यार से अपने यहाँ ले आये । हिन्दी फिल्मकारों ने कव्वाली को अनेक रूपों में सँवारा- सजाया । कव्वाली के फिल्मी जीवन में अनेक ऐसे अवसर आये , जबकि वह अपने फिल्म जगत में पदार्पण पर झूमकर इठला उठी होगी ।

हिन्दी फिल्मों में सर्व प्रथम कव्वाली का प्रवेश फिल्म `जीनत` से हुआ । इस कव्वाली में सभी स्त्री स्वरों का प्रयोग किया गया था । इसका विषय साधारण प्रेम ही था। आगे आने वाली कव्वालियों के

-- लिए यह मार्ग दर्शक सिद्ध हुई। अधिकतर कव्वालियाँ 'जीनत' की कव्वाली के पैटर्न पर लिखी जाती रही।[१]

फिल्म 'जीनत' की कव्वाली के उपरान्त 'अलहिलाल' फिल्म की कव्वाली भी अत्यधिक प्रसिद्ध हुई।[२]

पुरानी फिल्मी कव्वालियों में दो और कव्वालियाँ भी लगभग इसी श्रेणी की लोकप्रियता प्राप्त करने में सफल रहीं।[३]

कव्वालियों की लोकप्रियता देखते हुये कुछ फिल्में ऐसी बनी जिनमें पूर्णरूप से गीतों के स्थान पर कव्वालियों का प्रयोग किया गया, जिनमें 'कव्वाली की रात' तथा 'बरसात की रात' फिल्में प्रमुख थी।

कुछ फिल्में केवल कव्वाली के नाम पर प्रसिद्ध हुई जिनमें -

'धर्मा'

१- आहें न भरी शिकवे न किये
कुछ भी न जुबाँ से काम लिया
इस दिल को पकड़ कर बैठ गए
हाथों से कलेजा थाम लिया। -- जीनत

२- हमें तो लूट लिया, मिलके हुस्न वालो ने,
काले- काले बालों ने, गोरे-गोरे गालो ने,
---- अलहिलाल

३- मेरी तस्वीर लेकर क्या करोगे तुम -
कालासमन्दर।

`घर्मा`[१], अधिकार[२], अनोखी अदा[३], हँसते जख्म[४];

जंगल प्रिंसेस[५]; राका[६]; मुगले आजम[७]; पुतली बाई[८]; साधना[९];

१- मुहब्बत की झूठी अदाओं ---
जवानी लुटाने की कोशिश न करना
बड़े मुरव्वत है ये हुस्न वाले
इन्हें अजमाने की कोशिश न करना । ---- बदनाम

१- राज की बात कह दूँ तो
जाने महफिल में फिर क्या हो । --- घर्मा

२- जीना तो है उसी का ,जिसने ये राज जाना । - अधिकार

३- हाल क्या है दिलों का न पूछो सनम
तेरा मुस्कराना गजब ढा गया । --- अनोखी अदा

४- ये माना मेरी जाँ मुहब्बत सजा है । -- हँसते जख्म

५- कटा के बाल इंग्लैण्ड जाने वाले है । -जंगल प्रिंसेज

६- बड़ी मेहरबानी होगी --- राका

७- ये दिल की लगी क्या कम होगी
ये इश्क भला क्या कम होगा
जब रात है ऐसी मतवाली
फिर सुबह का आलम क्या होगा -- मुगले आजम

८- ऐसे बेशर्म आशिक है ये आज के
इनको अपना बनाना गजब होगया
धीरे- धीरे कलाई लगे थामने
इनको उंगली थमाना गजब होगया । --- पुतलीबाई

९- आज क्यों हम से पर्दा है ---- साधना

शंकरदादा [१], फाइव राइफल्स [२], ताजमहल [३], पालकी [४], अमर अकबर अंथोनी [५], लैला मजनूँ [६], दो ठग [७], जुर्म और सजा [८], नूरे इलाही [९], धर्म पुत्र [१०], दुश्मन [११], जन्जीर [१२], वक्त [१३], हकीकत [१४], हमराज [१५], विदेशिया [१६], बजरंग बली [१७], आरजू [१८], अपना खून [१९], आदि --

---

१- हाथ की उंगलियों पे, एक - एक का नाम गिन
ये भूल जाएँ तो आप गिनते रहियेगा हजूर
मुमताज शाँति सेमुमताज तक।

---- शंकरदादा

२- झूम बराबर झूम शराबी ---- फाइव राइफल्स

३- चाँदी का बदन सोने की नजर
उसपर ये नजाकत क्या कहिए -

---- ताजमहल

४- इधर जाऊँ या उधर जाऊँ
जान मुश्किल पे पड गई किधर जाऊँ -

---- पालकी

५- परदा है परदा परदा के पीछे इक परदानशी है
परदानशीं को बेपरदा न करदूँ तो अकबर मेरा-
नाम नहीं है -

---- अमर अकबर एंथोनी।

शेष-३६१ पर देखे →

पिछले पृष्ठ की -टिप्पणी:

६- हो के मायूस तेरे दर से सवाली न गया
झोलियाँ भर गईं सबकी कोई खाली न गया -
----- लैला मजनू ।

७- लो, आज हमने चेहरे से पर्दा हटा दिया -
--- दो ठग

८- भरी महफिल से तुझे न उठा दूँ
तो मेरा नाम नहीं
भरे बज्म न तुझे नचा दूँ तो मेरा नाम नहीं- जुर्म और सजा ।

९- दरबारे चिश्तिया में बोलो तो कुछ जबाँ से
--- नूरे इलाही

१०- काबे में रहो या काशी में
निस्बत तो उसी की बात से है
तुम राम कहो या रहीम कहो , मतलब तो उसी की बात से है।
--- धर्मयुग ।

११- सचाई छुप नहीं सकती कभी झूठे उसूलों से
खुशबू आ नहीं सकती कभी कागज के फूलों से ।
--- दुश्मन

१२- यारी है ईमान मेरा
यार मेरी जिंदगी ।
--- जंजीर

१३- ए मेरी जोहरा जबीं, तुझे मालूम नहीं
तू अभी तक है हँसी और मै जवाँ
तुझपे कुर्बान मेरी जान , मेरी जान ।
--- वक्त

देखें:शेष पादटिप्पणी अगले पृष्ठपर:--

देखे: शेष पादटिप्पणी:-

१४- होके मजबूर उसने मुझे भुलाया होगा ।

---- हकीकत

१५- तू हुस्न है , मैं इश्क हूँ , तू मुझमें है, मैं तुझमें

---- हमराज

१६- अरे इश्क करे ऊ जिसकी जेब में माल

-- विदेसिया

१७- कुछ याद करो पवनसुत अपना बालपन -

---- बजरंगबली

१८- ये इश्क छुपाये छुप न सका, ये इश्क वो चढ़ता जादू है
कुछ होश नहीं रहते कायम
इस इश्क पे किसका काबू है । -

--- आरजू

१९- मेरी जवानी को तू कैश कर ले
मौका मिला है यारों ऐश कर ले ।

---- अपनाखून

इस प्रकार फिल्मी कव्वाली ने लगभग ६० वर्षों के जीवन में अनेक भेष धरे, अनेक चोले बदले । दरगाहों पर होने वाले जलसों में अपनी मनौती पूरी होने वाले लोग उसे ले गए । किसी ने अपनी इबादतगाह में उसे इज्जत बख्शी, कभी वह घर की अल्हड लडकियों के झुंड में खोकर खिलखिला पड़ी, कभी उसे और औरत और मर्द के झगड़े का साक्षी होना पड़ा, तो कभी उसे किसी रईस की ऐशगाह में आकर जलवानशीं होना पड़ा। कभी वह तकरार का माध्यम बनी, कभी प्यार का । कभी जवानों के बीच रही , तो कभी रुई से सफेद बाल वालों में , कभी उसे किसी होटल में जाना पडा , तो कभी भारत से बाहर विदेशी स्टेजों पर , कभी उसे पुलिस वालों के बीच में रहना पडा , तो कभी चोर - डाकुओं के साथ, सभी के साथ उसने निभाया ।

फिल्म जगत के सभी संगीत निर्देशकों ने उसे स्वरों से सजाया। अनेक फिल्मी और गैर फिल्मी शायरों ने अपनी कलम से बहुत कुछ दिया कव्वाली को । लगभग सभी प्रमुख कव्वाली गायक, गायिकाओं ने उसे स्वर दिए ।

अत: कहा जा सकता है फिल्मों में कव्वालियों के प्रयोग से जनता- जनार्दन का अच्छा मनोरंजन हुआ तथा इनके प्रयोग से फिल्में भी हिट हुईं।

ख- **गज़ल :-**

हिन्दी चलचित्र गीतों में प्रयुक्त होने वाली शैलियों में गजल का अपना महत्वपूर्ण स्थान है ।

गजल में प्रेम भावनाओं का चित्रण होता है । गज़ल का शाब्दिक अर्थ- नारियों के प्रेम की बातें करना है ।[१] अत: अच्छी गजल वही

कही जाती है, जिसमें इश्को- मुहब्बत की बातें सच्चाई और असर के साथ लिखी जाती है । यह बात तभी पैदा होती है , जब उसे सरल और मीठी बोली में लिखा जाय कि वह दिल में घर कर जाय । गजल की कसौटी है -- प्रभावोत्पादकता । ग़ज़ल वही अच्छी होगी जिसमें प्रभावित करने की शक्ति के साथ- साथ मौलिकता भी हो, जिसके पढ़ने वाले समझें कि यह उन्हीं की बातों का वर्णन है ।

उर्दू कविता में `गजल` सर्वप्रिय रहा है । उर्दू, कविता का विषयगत वर्गीकरण किया जाए तो ग़ज़ल की बहुलता इसकी सर्वप्रियता को सिद्ध करनेमें पहला प्रमाण ठहरेगी ।

वैसे ग़ज़ल का साधारण अर्थ- माशूका(प्रिया) से बात करना । - प्रो० रघुपति सहाय `फिराक` ने अपनी पुस्तक `रंगारंग` के परिचय में ग़ज़ल शब्द का एक भावपूर्ण विचित्र अर्थ लिखा है ----

`इसका (ग़ज़ल ) असली अर्थ बहुत भावपूर्ण है । जब कोई शिकारी जंगल में कुत्तों के साथ हिरन का पीछा करता है और हिरन भागते भागते किसी ऐसी झाड़ी में फँस जाता है जहाँ से वह निकल नहीं सकता उस समय उसके कंठ से एक दर्द भरी आवाज निकलती है, इसी करुण स्वर को `ग़ज़ल` कहते हैं । इसी लिए विवशता का दिव्यतम रूप में प्रकट होना, स्वर का करुणतम हो जाना, यही ग़ज़ल का आदर्श है ।[2]

सांसारिक प्रेम के अलावा ग़ज़ल में तसव्वुफ और भक्ति रस का भी वर्णन होता है । बहुत से सूफियों ने इसी रंग में गजलें कही हैं । दूसरे कवियों ने भी अपनी गजलों में भक्ति रस को भी रखा है । तसव्वुफ में ~~रस-वरस-का--~~ भगवान् तक पहुँचने के लिए एक प्रेम का प्रतीक होना चाहिए

१- हिन्दी साहित्य कोश- भाग-१ (ज्ञानमण्डल)पृ०- २१७

२- रंगारंग , प्रकाशक -राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, १९६०, पृ० ५

वैसे इसमें इस बात का ध्यान रखा जाता है कि इसके प्रतीक वासनात्मक प्रभाव न छोड़े ।

ग़ज़ल का प्रमुख रस श्रृंगार माना जा सकता है । हिन्दी फिल्मों में प्रयुक्त ग़ज़ले श्रृंगारिकता के निकट अधिक देखी जा सकती है ।

प्राय: ग़ज़ल का प्रत्येक शेर स्वयं पूर्ण होता है । इसके दो बराबर के टुकडे होते हैं, जिनको `मिसरा` कहते हैं । जितने शेरों का आखिरी शब्द एक हो और उसके पहले का शब्द एक ही आवाज का हो, उनको एक साथ लिखते है, और ऐसे पाँच से सत्रह शेरों के संग्रह को ग़ज़ल कहते हैं । परन्तु इस संख्या के पालन में उर्दू में कोई खास पाबन्दी नहीं है । बहुत से शायरों ने अपनी गजलों में सत्रह से ज्यादा शेर रखें है । प्रत्येक शेर के अन्त में जितने शब्द बार-बार आए, उनको `रदीफ` और `रदीफ` के पहले एक ही आवाज वाले शब्दों को `काफिया` कहते हैं । इस सन्दर्भ में मीर की यह ग़ज़ल उल्लेखनीय है --

पत्ता- पत्ता बूटा- बूटा हाल हमारा जाने है
जाने न जाने गुल ही न जाने बाग तो सारा जाने है ।[१]

ग़ज़लकारों में नुसरती, इनशा, जौंक , जिगर, मोमिन, गालिब, अमीर मीनाई , मुनीर शिकोहाबादी , अजीज लखनवी आदि विशेष उल्लेखनीय है । इन ग़ज़लकारों ने गजल की लोकप्रियता में चार चाँद लगाए ।

हिन्दी चलचित्र गीतों में गजलों का प्रयोग देखने को मिलता है । साहिर लुधियानवी, मजरूह सुल्तानपुरी, शकील बदायूँनी ,राजामेंहदी अली खां, शम्स लखनवी, आरजू लखनवी आदि की गजले भी सरस एवम् सुन्दर बन पड़ी हैं ।

१- फिल्म- आखिरी खत - संगीत- मदनमोहन

कुछ लोकप्रिय फिल्मी गजलों के उदाहरण निम्न रूप में अवलोकनीय है --

१- चौदहवीं का चाँद हो या आफताब हो
 जो भी हो तुम खुदा की कसम ला जवाब हो ।[१]

२- अब क्या मिसाल दूँ तेरे शबाब की
 आफताब बन गई है किरन महताब की ।[२]

३- गुजरे हैं आज हम इश्क के उस मुकाम से
 नफरत सी हो गई है मुहब्बत के नाम से ।[३]

४- आज की रात मेरे दिल की सलामी लेले
 कल तेरी बज्म से दीवाना चला जायेगा ।[४]

५- भरी दुनियाँ में आखिर दिल को समझाने कहाँ जायें ।[५]

६- नसीब में जिसके जो लिखा था
 वो तेरी महफिल में काम आया ।[६]

७- जाने वो कैसे लोग थे जिनको प्यार का प्यार मिला ।[७]

१- फिल्म- चौदहवीं का चांद
२- फिल्म- आरती
३- फिल्म- दिल दिया दर्द लिया
४- फिल्म- राम और श्याम
५- फिल्म- दो बदन
६- ,, दो बदन
७- फिल्म- प्यासा

८- तुम मुझे भूल भी जाओ , तो ये हक है तुमको
मेरी बात और है मैंने तो मुहब्बत की है ।[१]

९- तू प्यार करे या ठुकरा दे हम तो है तेरे दीवानो में ।[२]

१०- सौ बार जनम लेंगे सौ बार फना होंगे
ऐ मेरी जाने वफा हम तुम से जुदा न होंगे ।[३]

११- चलो इकबार फिर से अजनबी बन जायें हम दोनों ।[४]

१२- जो बात तुझ में है तेरी तस्वीर में नहीं ।[५]

१३- मेरे महबूब तुझे मेरी मुहब्बत की कसम
फिर मुझे नरगिसी आँखों का सहारा दे दे ।[६]

१४- फिर वही शाम वही गम फिर वही तन्हाई है
दिल को समझाने तेरी याद चली आई है ।[७]

१५- हमसे आया न गया तुमसे भुलाया न गया ।[८]

१- फिल्म- दीदी
२- फिल्म- देख कबीरा रोया
३- फिल्म- उस्तादों के उस्ताद
४- फिल्म- गुमराह
५- फिल्म- ताजमहल
६- फिल्म- मेरे महबूब
७- फिल्म- जहाँ आरा
८- फिल्म- देख कबीरा रोया

१६- अगर मुझसे मोहब्बत है मुझे सब अपने गम दे दो ।
इन आँखों का हर एक आँसू मुझे मेरी कसम दे दो ।[१]

१७- हमने अपना सब कुछ खोया
प्यार तेरा पाने को +

छोड़ दिया क्यों प्यार ने तेरे दर-दर भटकाने को ।[२]

१८- तुम्हारी जुल्फ के साये में शाम कर लूँगा ।
सफर इस उम्र का पल में तमाम कर लूँगा ।[३]

१९- पल पल दिल के पास तुम रहती हो
जीवन- मीठी प्यास ये कहती है ।[४]

२०- कल रात जिन्दगी से मुलाकात हो गई ।
लब थरथरा रहे थे मगर बात हो गई ।[५]

२१- जुर्मे उलफत पे हमें लोग सजा देते हैं
कैसे नादान है शोलों को हवा देते हैं ।[६]

१- फिल्म- अपनी परछाइयाँ

२- फिल्म- सरस्वती चन्द्र

३- फिल्म- नौनिहाल

४- फिल्म- गेम्बलर

५- फिल्म- पालकी

६- फिल्म- ताजमहल

ग- पहेलियाँ स्वम् मुकरी:-

हिन्दी चल चित्र गीतों में पहेलियाँ स्वम् मुकरियों का प्रयोग भी देखने को मिलता है । इनके प्रयोगों से चलचित्र गीतों में सरसता आती है ।

आइये , पहेलियों स्वम् मुकरियों के विषय में भी जानकारी प्राप्त करते चलें --

पहेलियों को संस्कृत में ब्रह्मोदय कहा जाता है । पहेलियाँ केवल बच्चों के मनोरंजन की वस्तुएँ नहीं, ये समाज विशेष की मनोज्ञता प्रकट करती हैं तथा उसकी रुचि पर प्रकाश डालती है । ये बुद्धिमापक भी हैं । ये सभ्य और असभ्य, सभी कोटि के मनुष्यों और जातियों में प्रचिलित हैं । भारत वर्ष में तो वैदिक काल से ब्रह्मोदय का चलन मिलता है । अश्वमेध यज्ञ तो ब्रह्मोदय अनुष्ठान का ही एक भाग था । अश्व को वास्तविक बलि से पूर्व होता और ब्राह्मण पहेलियाँ पूछते थे । इन्हें पूछने का केवल इन दोनों को ही अधिकार था । इस प्रकार पहेलियों का अनुष्ठानिक प्रयोग भारत में ही नहीं, संसार के अन्य देशों में भी मिलता है ।

फ्रेज़र महोदय ने बताया है कि पहेलियों की रचना अथवा उदय उस समय हुआ होगा , जब कुछ कारणों से वक्ता को स्पष्ट शब्दों में किसी बात को कहने में अड़चन पड़ी होगी ।

पहेलियाँ यथार्थ में किसी वस्तु का वर्णन करती है --- ऐसा वर्णन, जिसमें अप्रकट के द्वारा प्रकट का संकेत होता है । अप्रकट इन पहेलियों में बहुधा वस्तु उपमान के रूप में आता है यह स्वाभाविक ही है कि गाँव की पहेलियों में ऐसे उपमान भी ग्रामीण वातावरण से ही लिए गये हैं ।

अत: पहेलियाँ एक प्रकार से वस्तु को सुझाने वाली उपमानों से निर्मित शब्द चित्रावली हैं, जिनमें चित्र प्रस्तुत करके यह पूछा जाता है कि यह किसका चित्र है, पर इससे यह न समझना चाहिए कि उपमानों द्वारा यह चित्र पूर्ण होता है, उससे अभिप्रेत वस्तु का बहुत अधूरा संकेत मिलता है, पर वह संकेत इतना निश्चित होता है कि यथासम्भव उससे किसी अन्य वस्तु का बोध नहीं होता।

पहेलियों का प्रयोग हिन्दी चलचित्र गीतों में हुआ है। इस सन्दर्भ में श्री चार सौ बीस, मेरा नाम जोकर, मिलन, ताकत, जख्मी, अनजाना, - आदि फिल्में विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

`श्री चार सौ बीस`, `मिलन` एवम् `अनजाना` में प्रयुक्त पहेली गीत अत्यन्त प्रसिद्ध हुए --

१- इचक दाना बीचक दाना
दाने ऊपर दाना
छज्जे ऊपर लड़की नाचे
लड़का है दीवाना -----
बोलो - बोलो कौन ?
भुट्टा

हरी थी मन भरी थी
राजा जी के बाग में दुशाला ओढ़े खड़ी थी
बोलो - बोलो कौन ?
मिर्च।[१]

१-फिल्म-श्री चार सौ बीस-

२- वो कौन है वो कौन है जो परदेस जाती है
राास्ता खुद घर का भूल जाती है
बोलो - बोलो कौन है ?
चिट्ठी- चिट्ठी ।[१]

३- बोल गोरी बोल तेरा कौन पिया
कौन है जिसे तूने प्यार किया
वो है भिखारी भी लेके भक्ति की भीख
बदले में जगत को मोक्ष दिया
बोल तू बोल मेरा कौन पिया ?
शिव - शिव ------।[२]

४- तीतर के दो आगे तीतर
तीतर के पीछे दो तीतर
आगे तीतर पीछे तीतर
बोलो कितने तीतर ?
तीन तीन ।[३]

५- इक सवाल मैं करूँ,
एक सवाल तुम करो
हर सवाल का सवाल ही जवाब हो ।[४]

१- फिल्म- अनजाना

२- फिल्म- मिलन

३- फिल्म- मेरा नाम जोकर

४- फिल्म- ससुराल

घ- मुकरी:-

हिन्दी चलचित्र गीतों में मुकरी का प्रयोग देखने को मिलता है । इनका प्रयोग पहेलियों की अपेक्षा अत्यल्प हैं , फिर भी एक दो-नई फिल्मों में देखा जा सकता हैं ।

यह लोकप्रचलित पहेलियों का ही एक रूप है, जिसका लक्ष्य मनोरन्जन के साथ-साथ बुद्धिचातुरी की परीक्षा लेना होता हैं । इसमें जो बाते कही जाती हैं वे द्विअर्थक या श्लिष्ट होती हैं , पर उन दोनों अर्थों में से जो प्रधान होता है, उसे मुकर कर दूसरों अर्थों को उसी छन्द में स्वीकार किया जाता है , किन्तु यह स्वीकारोक्ति वास्तविक नहीं है , हिन्दी में अमीर खुसरों ने इस लोक काव्य- रूप को साहित्यिक रूप दिया ।

मुकरी का एक उदाहरण 'बाबुल' फिल्म से प्रस्तुत है ---

नायिका:- ऊँची अटारी पलंग बिछाया मैं लेटी वो चुपके से आया
उसके आर हुआ आनन्द ।

सहेली:- का सखी साजन

नायिका:- ना सखी चन्द ,रात पूनम की गगन का चन्द ।

सहेली:- कह मुकरी कह मुकरी चतुर सयानी कह मुकरी
कह मुकरी कह मुकरी अपनी कहानी कह मुकरी ।

नायिका:- ऊँची अटारी पलंग बिछाया
निकली थी मैं भर के गगरिया घेर लिया मोहे बीच डगरिया
भीजी मोरी साडी,भीजी मोरी देह ।

सहेली:- का सखी प्रीतम

नायिका:- ना सखी मेह, बिन मौसम का बरसा मेह

सहेली:- कह मुकरी कह मुकरी -------

नायिका:- निकली थी मैं घर के गगरिया
लट बिखरावें अंचरा हटावे छेड करे और हाथ न आवे
माने न कोई रोके न कोई ।

सहेली:- का सखी बालम

नायिका:- ना सखी झोंका , हाय रे नटखट पवन का झोंका

सहेली:- कह मुकरी - कह मुकरी -----

नायिका:- लट बिखरावें अंचरा हटावे
सीने से रहे हर दम सर चुम्बन ले मेरा गोरा अंग -
से लिपटकर ।
सौतन रह जाय मन की मार ।

सहेली:- का सखी रसिया

नायिका:- ना , ना हार , बाबुल ने दिया सोने का हार

सहेली:- कह मुकरी - कह मुकरी -----

नायिका:- सीने में रहे हर दम सट कर

सहेली:- वाह री सखी हमें खूब छकाया ,
हम जानें तेरे कितने यार ।

नायिका:- का सखी कितने

सहेली :- वाह रे सखी हमें खूब छकाया ,
नाहक हमारा दिल धड़काया ,
हम जानें तेरे कितने यार।

नायिका:- कितने

सहेली:- चार— पवन , मेह , चन्दा व हार ।[१]

मुजरा:-

रईसों के मनोरंजनार्थ वेश्याओं द्वारा कोठे या दरबार में गाये जाने वाले गीत मुजरा कहलाते हैं । हिन्दी चलचित्र गीतों में इस शैली का प्रयोग हुआ है । कुछ फिल्में ऐसी भी है जो केवल मुजरे के कारण अत्यधिक हिट हुयी है । रईशों के अतिरिक्त हिन्दी चलचित्रों में डाकुओं के समक्ष भी उनके मनोरन्जनार्थ मुजरा शैली भी प्रयुक्त हुयी है । -

इस सन्दर्भ में -

१- फिल्म- बाबुल , संगीतकार - रवीन्द्र जैन -
गीतकार - रवीन्द्र जैन

साधना [१], ममता [२], उमरावजान, [३] काला-पानी, [४] मुझे जीने दो [५], साहब बीबी और गुलाम [६], सी०आई०डी०, [७] शराफत [८], अदालत [९], चौदहवीं का चाँद [१०], कल्पना [११], जानवर [१२], साहिब बीबी और गुलाम [१३], तीसरी कसम [१४], यह रात फिर न आयेगी, [१५] किस्मत [१६], पाकीजा [१७], खून-पसीना, [१८] रोटी कपड़ा और मकान [१९], बालक, [२०] संयासी [२१], तवायफ। [२२]
आदि फिल्में उल्लेखनीय हैं।

१- कहो जी तुम क्या क्या
सुनो जी तुम क्या क्या खरीदोगे
यहाँ तो हर चीज बिकती है।

--- साधना (साहिर)

२- रहते थे कभी जिनके दिल में
हम जान सेभीप्यारों की तरह
बैठे हैं उन्हीं के कूचे में हम आज गुनहगारों की तरह।

--- ममता (मजरुह)

३- दिल क्या चीज है हुजूर मेरी जान लीजिये
बस एक बार मेरा कहा मान लीजिये।

--- उमरावजान (मजरुह)

४- नजर लागी राजा तोरे बंगले पर।

--- काला पानी(मजरुह)

शेष अगले पृष्ठ पर →

देखे: पिछले पृष्ठ की शेष टिप्पणियाँ:

५- नदी नारे न जाओ श्याम पइयाँ परु।

--- मुझे जीने दो (साहिर)

६- साकिया आज मुझे नींद नहीं आयेगी, सुना है तेरी महफिल में - रत जगा है।

--- साहिब बीवी और गुलाम(शकील)

७- कहीं पे निगाहें कहीं पे निशाना

जाने दो जालिम बनाओ न दीवाना।

--- सी०आई०डी०(साहिर)

८- शराफत छोड दी मैंने।

---शराफत (साहिर)

९- उनको ये शिकायत है कि हम कुछ नहीं कहते।

---- अदालत (राजेन्द्रकृष्ण)

१०- बेदर्दी मेरे सइयाँ शबनम है कहीं शोले

बाहर से बड़े गोरे भीतर से बड़े काले।

---- चौदहवीं का चाँद (साहिर)

११- बेकसी हद से जब गुजर जाए

कोई ऐ दिल जिए कि मर जाए।

--- कल्पना(जान निसार अख्तर)

१२- आँखों आँखों में कोई बात हुई जाती है।

---- जानवर (हसरत)

देखे: अगले पृष्ठ पर ----

१३- मेरी जां ओ मेरी जां
अच्छा नहीं इतना सितम
मुझे न छोड़ सनम मर गई
- तेरी कसम ।
--- साहब बीबी और गुलाम (शकील)

१४- पान खाये सइयां हमारो
मलमल का कुरता पर छींट लाल लाल ।
--- तीसरी कसम (शैलेन्द्र)

१५- हुजूरे-वाला , जो हो इजाजत
तो हम ये सारे जहाँ से कह दें
तुम्हारी अदाओं पे मरते हैं हम ।
--- यह रात फिर न आयेगी (अजीजकश्मीरी)

१६- कजरा मुहब्बत वाला, अँखियों में ऐसा डाला
कजरे ने ले ली मेरी जान, हाय रे मैं तेरे कुरबान ।
---- किस्मत (एस० एच० बिहारी)

१७- इन्हीं लोगों ने ले लीना दुपट्टा
हमारी न मानो सइयां रंगरेजवा से पूछो
जिसने अशर्फी गज दीना दुपट्टा मेरा ।
- पाकीजा (कमाल अमरोही)

१८- राजा दिल मांगे अठन्नी उछाल के ।
--- खून पसीना (अंजान) ।

देखें - शेष अगले पृष्ठ पर ----

१९- पंडित जी मेरे मरने के बाद बस.....
........गंगा जल टपका देना ।

--- रोटी कपडा और मकान(आनंदबक्शी)

२०- चँदनिया है रात बलम रुकियो कि जइयो ।

---- बालक (भरतव्यास)

२१- शामे फुरसत का उठ गया जालारे ,
बेदर्दी बालम नहीं आया रे ।

--- सन्यासी (विशेश्वर)

२२- बहुत देर कर दी सनम आते- आते ।

---- तवायफ (साहिर)

३- **वर्णनात्मक शैली:-**

हिन्दी फिल्मी गीतों में एक शैली और मिलती है जिसे वर्णनात्मक शैली कहा जा सकता है। इस शैली के अन्तर्गत गीत आकार में लम्बे होते है और उनमें किसी कथा विशेष या घटना विशेष का वर्णन किया जाता है, ऐसी रचना के द्वारा फिल्म की कथा के उस अंश को सूचय करके दिखाया जाता है, इसका स्टेज पर प्रदर्शित होना सम्भव नहीं है। उदाहरण स्वरूप निम्नलिखित फिल्मों के गीत प्रस्तुत किये जाते हैं ---

१- निर्बल से लड़ाई बलवान की
यह कहानी है दिये और तूफान की।[१]

२- सुन ले बापू ये पैगाम,
मेरी चिट्ठी तेरे नाम,
चिट्ठी में सबसे पहले लिखता तुझको राम राम।[२]

३- ना राजा रहेगा ना रानी रहेगी
ये दुनिया है फानी और फानी रहेगी।[३]

४- सुनो सुनो ये दुनिया वालो बापू की ये अमर कहानी
बापू तो इतना निर्मल है जितना गंगा माँ का पानी।[४]

५- भारत की सीताओं के दुखड़े, जब तक होंगे दूर नहीं
ये राम तुम्हारी रामायण जब तक होगी सम्पूर्ण नहीं।[५]

१- फिल्म- तूफान और दिया गी० भरतव्यास
२- फ़िल्म- बालक - गीत० भरतव्यास
३- फिल्म- नवरंग - गीत० भरतव्यास
४- फिल्म- बापू की अमर कहानी-गी०राजेन्द्रकृष्ण
५- फिल्म- सम्पूर्ण रामायण, गी०- भरत व्यास

६- हम लाये है तूफान से किश्ती निकाल के
इस देश को रखना मेरे बच्चों सम्भाल के ।[१]

७- हे राखी बँधवाने वाले, कहाँ छिपे हो कृष्ण मुरारि,
पाँच पांडवो की पंचाली भरी सभा में करे पुकार ।[२]

८- चक्रव्यूह का चक्र घिरा है कौरव दल की चाल है
आज कल की छाती पर अभिमन्यु जैसा बाल है ।[३]

९- रोये अवध पुर वासी, वन के वनवासी
हो राजा राम चले हो राजा राम चले ।[४]

१०- ध्यान से सुनना है छोटी बात पर कितनी बड़ी
बात है भगवान की जिसने ये दुनिया गढ़ी ।[५]

११- महा कवि श्री वेद व्यास की आरती सभी उतारत है
जिनकी लेखिनी से यह महाकाव्य महाभारत है ।[६]

१२- सुनो तुम्हें सुनाते कथा आज भारत के राजस्थान की ।[७]

१३- आओ बच्चों तुम्हें दिखाये झाँकी हिन्दुस्तान की ।[८]

१- फिल्म- जागृति गीतकार- प्रदीप

२- फिल्म- महाभारत गीतकार- भरतव्यास

३- फिल्म- महाभारत गीतकार- भरतव्यास

४- फिल्म- भरतमिलाप गीतकार- भरतव्यास

५- फिल्म- महासती विहुला- गीतकार- भरतव्यास

६- फिल्म- महाभारत गीतकार- भरतव्यास

७- फिल्म- अमरसिंह राठौर- गीतकार- भरतव्यास

८- फिल्म- जागृति गीतकार- प्रदीप

४- सन्त कवियों की पद शैली:-

फिल्मी गीतों में हमारे सन्त भक्त कवियों की कुछ पद शैली को भी अपनाया गया है फिल्मों में जहाँ ईश्वर के प्रार्थना आदि की सिचुएशन आती है, वहाँ फिल्मी गीतों में कभी पुरानी भक्ती पद अपनाये जाते है । या इसी प्रकार के नये गीत लिखे जाते हैं इस प्रकार की शैली में रचित गीत वैयक्तिक भावनाओं से अनुप्राणित रहते हैं । इस सन्दर्भ में कुछ फिल्मी गीतों की बानगी प्रस्तुत है ---

१- लागा चुनरी में दाग छुपाऊ कैसे ।[१]
२- अल्ला तेरो नाम ईश्वर तेरो नाम ।[२]
३- तू राम भजन कर प्राणी दो दिन की तेरी जिन्दगानी ।[३]
४- गठरी में लागा चोर मुसाफिर ------ ।[४]
५- घूंघट के पट खोल तुझे पिया मिलेंगें ।[५]
६- जाऊँ कहा तज चरन तुम्हारे ।[६]
७- मुरलिया बाजे रे जमुना के तीर ।[७]
८- म्हाने चाकर राखो जी -----।[८]
९- मै तो आरती उतारूँ रे सन्तोषी माँ की।[९]
१०- तोरो मनवा क्यों घबराये रे ।[१०]

१-फिल्म- दिल ही तो है गीतकार- साहिर
२-फिल्म- हम दोनों गीतकार- साहिर
३-फिल्म- सन्त तुलसीदास गीतकार- राजेन्द्र
४-फिल्म- स्ट्रीट सिंगर गीतकार- सुदर्शन
५-फिल्म- जोगन गीतकार- मीरा
६-फिल्म- सन्त तुलसीदास गीतकार- तुलसी
७-फिल्म- देवता गीतकार- मीरा
८-फिल्म- मीरा गीतकार- मीरा
९-फिल्म- सन्तोषी माता गीतकार- प्रदीप
१०-फिल्म-साधना गीतकार-साहिर

१- ऐ मालिक तेरे बन्दे हम
ऐसे हो हमारे करम
नेकी से चले और बदी पर टले
ताकि हँसते हुए निकले दम ।[१]

२- जय रघुनन्दन जय सियाराम, हे रघुनन्दन तुम्हे प्रणाम ।[२]

३- तू प्यार का सागर है तेरी बूँद के प्यासे हम ।[३]

४- पित मातु सहायक स्वामी सखा ------।[४]

५- मुझे अपनी शरण में ले लो राम ।[५]

६- तूने खूब रचा भगवान खिलोनो माटी का ।[६]

५- प्रतीकात्मक शैली:-

कुछ फिल्मी गीत ऐसे भी है, जिनमें प्रतीकात्मक भाषा के प्रयोग के द्वारा सुन्दर अभिव्यक्ति की गयी है इस शैली के गीतों में -- 'तूफान और दिया', 'नागमणि', 'घर संसार', 'भाभी', 'घर सुख', 'कोरा कागज', 'रिश्ता कागज का', 'बाबुल', 'बूँद जो बन गई मोती', 'घर की लाज', 'जमाना', आदि फिल्मेंविशेष उल्लेखनीय है, इस सन्दर्भ में कुछ गीतों के उदाहरण द्रष्टव्य है --

---

१- फिल्म-दो आँखे बारह हाथ गीतकार- भरतव्यास
२- फिल्म- घराना गीतकार- शकील
३- फिल्म- सीमा गीतकार- शैलेन्द्र
४- फिल्म- महात्मा गीतकार- प्रतापनारायणमिश्र
५- फिल्म- इन्सानियत गीतकार- राजेन्द्र कृष्ण
६- फिल्म- नागमणि गीतकार- प्रदीप

१- चल उड जा रे पंछी कि अब यह देश हुआ बेगाना।[१]

२- दाने दाने पर लिखा है खाने वाले का नाम ।[२]

३- उजड़ गया पंछी अब तेरा बसेरा ।[३]

४- यहाँ कौन है तेरा मुसाफिर ।[४]

५- तुम से ही घर घर कहलाया ।[५]

६- हरी हरी वसुन्धरा --- ये कौन चित्रकार है ।[६]

७- ले लो ले लो दुआए माँ-बाप की
सर से उतरेगी गठरी पाप की ।[७]

८- मेरी आवाज सुनो दिल की आवाज सुनों ।[८]

९- मेरा जीवन कोरा कागज कोरा ही रह गया ।[९]

१०- चल चल अकेला तेरा मेला पीछे छूटा चल अकेला।[१०]

११- कसमे वादे प्यार वफा सब बाते है बातों का क्या ।[११]

१२- रात भर का है महमा है अँधेरा किसके रोके रुकेगा सबेरा ।[१२]

१-फिल्म- भाभी गीतकार- राजेन्द्र

२-फिल्म- वारिस गीतकार- राजेन्द्रकृष्ण

३-फिल्म- घर की लाज गीतकार- मजरुह

४-फिल्म- गाइड गीतकार- शैलेन्द्र

५-फिल्म- भाभी की चूडियाँ गीतकार- नरेन्द्र शर्मा

६-फिल्म- बूँद जो बन गई मोती-गीतकार- भरतव्यास

७-फिल्म- माँ-बाप गीतकार- भरतव्यास

८-फिल्म- नौनिहाल गीतकार- राजामेंहदी अली

९-फिल्म- कोराकागज गीतकार- एम॰ जी॰ हसमत

१०-फिल्म-सम्बन्ध गीतकार- प्रदीप

११-फिल्म- उपकार गीतकार- इन्दीवर

१२-फिल्म- सोने की चिड़िया गीतकार- साहिर

निष्कर्ष रूप से कह सकते हैं कि फिल्मी गीतों में प्रयुक्त विविध शैलियों ने काव्य सौन्दर्य में अभिवृद्धि तो की है, साथ ही साथ उनकी धुनों को सरल एवम् सुगम शब्दों के माध्यम से कर्ण प्रिय बनाया। इन विभिन्न शैलियों ने जन-मानस को अभिभूत किया है।

:-:-:-:-:-:-:-:
:o:

अध्याय - ६

उपसंहार

अध्याय - ६

उपसंहार

हिन्दी-चल-चित्र-गीतों की लोकप्रियता हमारे जीवन में दूर-दूर तक छा गयी है। इन गीतों में शक्ति का अनोखा स्रोत है। ये जन-मानस का मनोरन्जन कर कुछ क्षणों के लिए उनकी थकान और चिन्ताओं को भुला देते हैं। हिन्दी चलचित्र गीत और संगीत आज हमारे जन-मन में इतने बस गए हैं कि इनके अभाव में दिन प्रतिदिन का जीवन जैसे चल ही नहीं सकता।

हिन्दी चलचित्र गीतों की कड़ी से कड़ी आलोचना भले ही की जाये, पर जनता का जो मन उनमें रम गया है और जिस प्रवाह में वह बहती जा रही है, उसे रोकना किसी की सामर्थ्य नहीं। स्त्री-पुरुष, बालक-वृद्ध सबकी जुबान पर हिन्दी चलचित्र गीतों के अतिरिक्त आज कौन से गीत हैं, जिन्हें वे हर समय गुन गुनाते रहते हैं? हिन्दी साहित्य में एक युग सूर, तुलसी, कबीर, मीरा आदि का आया था। वर्तमान युग चल-चित्र गीतों का युग है। इन गीतों ने और तो और लोकगीतों को भी अपने रंग में रंगलिया है।

हिन्दी चलचित्र गीत और उनकी मनोमुग्धकारी संगीत की जन-प्रियता एवम् प्रभावात्मकता देखकर कहा जा सकता है कि ये लोक गीत के पर्याय हैं और दूसरे शब्दों में इन्हें- खड़ी बोली हिन्दी के लोक गीत कहा जा सकता है।

लोकगीतों में मानव हृदय की तीव्रतम अनुभूति, सरलतम और प्रवाहपूर्ण भाषा एवम् सहज संगीत होता है । लोक-गीत मानव-जाति के हृदय से, अपने अभावों द्वारा जन्य प्रकृति प्रदत्त आवाज के द्वारा अचानक घुमड़ कर प्रकट होने वाला संगीत है, जो हृदय के बोझ को कम करके भावों के निमित्त बोलने की अपेक्षा गाकर गीतों द्वारा व्यक्त किया जाता है।

लोकगीतों में जो सरलता, रस, माधुर्य और लय है वह सब हिन्दी चलचित्र गीतों में देखी जा सकती है । जैसे -लोकगीत जनता के होते हैं वैसे ही हिन्दी चलचित्र गीत भी जनता के गीत है, जनता के लिए लिखे गये हैं और जनता केकवियों ने लिखे हैं । इन गीतों में जन-मन के हर्ष-विषाद्, राग-विराग और रुदन-हास की अभिव्यक्ति है तथा लोक-संगीत से समन्वित नवीनतम मधुर संगीत धुनों ने उनके कलेवर को इतना सुकोमल और मधुर बना दिया है कि वे करोड़ो की जुबान पर बैठकर विश्व को अपनी गूंज से गुंजायमान कर रहे हैं ।

आज जो हिन्दी चलचित्र गीत हमारे सामने हैं वे गीत प्रत्येक अर्थ में लोक-गीत नहीं है, अपितु एक विशेष कारण से वे सामान्य बोलियों के लोक-गीतों से कुछ ऊपर उठ जाते हैं । अतः ये गीत न केवल रसिया आदि लोक-गीतों से ऊपर है, वरन् आज की अधिकांश अश्लील कविता से भी श्रेष्ठ हैं ।

देश की राज नीतिक- सामाजिक चेतना को जगाने में हिन्दी चलचित्र गीतों का योगदान अप्रतिम है ।

जन-मानस में राजनीतिक चेतना को जागृत करने में प्रदीप, साहिर, जाँ निसार अख्तर, पं०भरत व्यास ,शकील बदायूँनी ,प्रभृति गीतकारों के गीत विशेष रूप से उल्लेखनीय है । इन गीतकारों के ओजस्वी और प्रसिद्ध गीतों ने देश के लिए मर-मिटने का जो संदेश दिया है वह विस्मृत नहीं किया जा सकता ।

राजनीतिक जागरण के अतिरिक्त सामाजिक जागरण और संगठन की दृष्टि से भी फिल्मी गीतों का अपना विशिष्ट महत्व है। वेश्यावृत्ति, दहेज प्रथा तथा छुआ-छूत के विरोध में इन गीतों ने अपने स्वर चारों ओर ध्वनित किए है । हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए भी इन गीतों का महत्व कम नहीं है । उनका सन्देश है -- हिन्दी, मुस्लिम, सिक्ख , ईसाई सब भाई-भाई है । समाज-वाद और देश की भावात्मक एकता का स्वर भी इन गीतों में गुंजायमान हुआ है ।

हिन्दी चलचित्र गीतों ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु भी कार्य किया है । हिन्दी-चलचित्र गीतों की लोक-प्रियता इसी बात से पता चल जाती है कि विदेशों में भी इन्हें गाया एवम् गुनगुनाया जाता है । रूस में हिन्दी-चलचित्र गीत अत्यन्त लोक-प्रिय हैं इस प्रकार हिन्दी भारतवर्ष के चारों कोनों की ही भाषा नहीं रही, वह फैलकर अब विदेशों में पहुँच गयी है और विदेशी भी इसे बड़े उत्साह के साथ सीखने को तत्पर हैं।

काव्य एवम् कला की दृष्टि से हिन्दी चलचित्र गीत उत्कृष्ट बन पड़े हैं । ये अत्यन्त भावपूर्ण एवम् रस युक्त हैं। उनमें नवरसों का सुन्दर परिपाक देखने को मिलता है । फिल्मी गीतों में प्रयुक्त अलंकारों से उनकी भाषा की स्थिति अंगूठी में जड़े नगीने की भाँति हो गयी है । हिन्दी-फिल्मी गीतों की भाषा भी अत्यन्त सरल और प्रवाहपूर्ण हिन्दी है, परन्तु संगीत के आग्रह के कारण उसमें शब्दों के रूप विकृत रूप में प्रयुक्त हुए हैं तथा उर्दू- काव्य क्षेत्र के कवियों द्वारा अरबी, फारसी के शब्दों का प्रयोग अधिकाधिक मिलता है ।

हिन्दी- चलचित्र गीतों में प्रयुक्त विविध शैलियाँ उन्हें रोचक बनाती हैं । हिन्दी चलचित्र गीत ग़ज़ल , कव्वाली, लोक शब्दावली युक्त गीत, मुकरियाँ, पहेलियों में पगे हुये हैं जो संगीत में आबद्ध होने के कारण अत्यन्त कर्ण प्रिय हो गये हैं । गीत निर्माण प्रक्रिया एवम् शब्द-

प्रयोग भाषा विज्ञान की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण बन पड़े हैं। आज हमारे देश में आये-दिन तैयार होने वाले श्रेष्ठ फिल्मी गीतों का स्तर संसार के किसी भी देश के फिल्मी गीतों से नीचा नहीं है, ऊँचा है। के दृष्टिकोण से वे साहित्य के अत्यन्त निकट ही बैठेंगें। हिन्दी के प्रचार एवम् प्रसार में इनका योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। जितने चलचित्रों का निर्माण भारत में होता है उतना अन्य देशों में नहीं। चलचित्र गीतों की लोकप्रियता का क्या कहना? ऐसा कोई भी विदेशी स्टेशन नहीं है जहाँ से हिन्दी चलचित्र गीतों का प्रसार न होता हो। इनके प्रसारण का कारण है इनकी भाषा की सरलता, सुगमता एवम् सहज प्रवाह।

इस प्रकार फिल्मी गीतों में वे सभी तत्व मिल सकते है जो साहित्यिक गीतों के अनिवार्य तत्व है। फिल्मों के गीतों की भाषा जनता की भाषा है। इन गीतों में काव्य, संगीत और दर्शन की त्रिवेणी भी प्रवाहित हुई है।

अतः वर्तमान जन-जीवन में चलचित्रों का महत्वपूर्ण स्थान है। मनोरंजन तथा शिक्षा के क्षेत्र में तो चलचित्रों की देन है ही, पर सम्पूर्ण भारत में हिन्दी का प्रचार तथाप्रसार करने का श्रेय भी किसी भी हिन्दी प्रचारिणी संस्था के समान ही चलचित्र गीतों को दिया जा सकता है। बीसवीं शताब्दी के तृतीय दशक से जहाँ एक ओर महात्मागाँधी ने हिन्दी के प्रचार के निमित्त विधिवत् राष्ट्रभाषा प्रचार संस्थाओं के माध्यम से हिन्दी का प्रसार किया, वहीं दूसरी ओर स्वयमेव सिनेमा के प्रचार के साथ-साथ हिन्दी-फिल्में लोकप्रिय होती गयी, जिसके फलस्वरूप फिल्मों में व्यवहृत गीतों में हिन्दी का रूप भी फैलता गया। किसी भाषा का प्रसार पुस्तकों से अधिक उसके बोल-चाल के रूप से होता है, इस दृष्टि से हिन्दी-चलचित्रों के गीतों का योगदान निर्विवाद महत्वपूर्ण है।

:-:-:-:-:-:

परिशिष्ट -'क'

:

हिन्दी चलचित्र गीतों में संगीतात्मकता

परिशिष्ट – 'क'

हिन्दी चलचित्र गीतों में संगीतात्मकता

साहित्य एवम् संगीत मूलत: भिन्न होते हुये भी अनेक रूपों में अन्योनाश्रित हैं । अपना स्वतन्त्र अस्तित्व रखते हुये भी दोनों में घनिष्ठ सम्बन्ध है । वहीं कविता सबसे अधिक प्रभावशाली एवम् हृदय ग्राहिणी होती है , जिसमें सौन्दर्यमयी चेतना तथा सुकुमार भाव, संगीत की स्वर लहरियों में गुंथ कर आनन्दानुभूति को तीव्र करने वाले हैं । श्रेष्ठ काव्य में संगीत की महत्ता को प्रतिपादित करते हुए मैथिलीशरण गुप्त ने कहा है कि --

केवल भावमयी कला, ध्वनिमय है संगीत ।
भाव और ध्वनिमय उभय, जय कवित्व जय नीति ।।

वस्तुतः काव्य स्वत: संगीत है और कवि ही गायक है । गायक तथा कवि दोनों शब्दों का एक ही अर्थ है । गायक गाने वाले को कहते हैं । कवि शब्द भी 'कु' धातु से बना है जिसका अर्थ ध्वनि करना है। काव्य की अधिष्ठात्री एवम् वीणावादिनी माँ सरस्वती के उपासक गुप्त जी काव्य एवम् संगीत के समन्वय को अनिवार्य तथा कवि और गायक को एक प्राण ही मानते हैं ---

दिव्य गान के तुम गायक हो ।
कविता कान्ता के नायक हो ।।

उपनिषदों में कहागया है कि यह विशाल सृष्टि परमात्मा की कविता है । इस कविता के सौन्दर्य और महिमा की अभिव्यक्ति संगीत द्वारा ही होती है, अत: संगीत एक महान कला है ।[१]

१- Historical Development Of Indian Music
-स्वामी प्रज्ञानन्द ,पृ०- ३८६

कलाओं में संगीत का स्थान शीर्षस्थ है । संगीत की प्रभाव शक्ति अपार है । मनुष्य ही नहीं पशु-पक्षी तक इसके प्रभाव से अछूते न रह सके । बैजू बावरा के संगीत के आकर्षण की डोर में बंधे हुये उन मृगों को कौन भुला सकता है ? संगीत के सुरों में वह मिठास है , जिसमें मानव-हृदय का रंजन करने की अद्भुत शक्ति है । इसीलिए उसे मौखिक रूखी भाषा से भिन्न प्राणी की अंतरात्मा की भाषा कहागया है ।[१]

महाकवि मिल्टन काव्य और संगीत को एक दूसरे की बहिन मानते हैं ।[२] जैसे गंगा - जमुना की धाराओं का अलग-अलग बहने में तो अपना-अपना सौन्दर्य है ही , पर जब वे परस्पर मिल जाती है तो उनका अलौकिक रूप सामने आ जाता है ठीक उसी प्रकार काव्य और संगीत का अलग-अलग तो अपना माधुर्य है ही, पर जब दोनों एक दूसरे से मिल जाते हैं तो एक लोकोत्तर आकर्षण, मिठास और प्रभाव की सृष्टि होती है ।[३]

संगीत दो शब्दों से मिलकर बना है -- `सम्` और `गीत`। `सम्` का अर्थ है सम्यक् (अच्छा) और ` गीत` का अर्थ गाना है । वाद्य और नृत्य दोनों के मिलने से ही गीत अच्छा बनता है ।

` गीतं वाद्यं तथा नृत्यं त्रयं संगीतमुच्यते । `[४]

संगीत एक महान् कला है । इसके दो विशिष्ट रूप हमें दिखलाई देते हैं - शास्त्रीय संगीत और लोक संगीत ।

१- "It is the language of living-beings in Deeper Soul."
'Historical Development Of Indian Music.
-स्वामी प्रज्ञानंद, पृ० ६६

२- साहित्यालोचन- श्यामसुंदर दास, नवी आवृत्ति। २००६, पृ० २५
३- हिन्दी चित्रपट का गीति साहित्य: ओ०प्र०माहेश्वरी, पृ० २६६
४- संगीत रत्नाकर- रचयिता शारङ्गदेव, , १-२१

विभिन्न राग-रागनियों के आधार पर नियमित शास्त्र-बद्ध संगीत को शास्त्रीय संगीत की संख्या से अभिहित किया जाता है और जो संगीत नियम मुक्त हमारे लोक- हृदय से झरने की भाँति निसृत होता हुआ प्रकट होता है, उसे लोकसंगीत कहते हैं। यह लोक-संगीत भारतीय जन-जीवन का प्राणदायी स्रोत बनकर हमारी लोक-संस्कृति को अमर बनाने में सक्षम हुआ है और हमारे शास्त्रीय संगीत की उत्पत्ति भी इसी लोक संगीत से हुयी है।[१]

शास्त्रीय संगीत की परम्परा अति प्राचीन है। यह राज्याश्रित रहा और समाज के चन्द लोगों का रंजन करता रहा। मुसलमानों के आगमन पर अरबी- फारसी संगीत पद्धतियों के प्रभाव के फलस्वरूप उस शास्त्रीय संगीत की धारा हिन्दुस्तान संगीत पद्धतियों और कर्नाटक संगीत पद्धतियों के रूप में विभक्त हो गयी। दक्षिण में प्रचलित कर्नाटक पद्धति आज भी शुद्ध है, परन्तु उत्तर भारत में प्रचलित जो हिन्दुस्तानी पद्धति है, उसमें मुसलमानी संगीत का प्रभाव और मिश्रण है। ठुमरी, दादरा, टप्पा, आदि कुछ नयी लोकप्रिय शैलियों का प्रचलन परिणाम है।[२]

गीत काव्य की एक विशेषता है -- संगीतात्मकता। साहित्यिक गीतों में जहाँ भावतत्व की प्रधानता रहती है, वहां फिल्मी गीतों में भाव के साथ संगीत की मनोहारी धुनों का सौन्दर्य एवम् माधुर्य विशेष रूप से रहता है, जिसके कारण फिल्मी गीत रसात्मक होकर कर्णप्रिय हो जाते हैं।

१- सम्मेलन पत्रिका -(लोक-संस्कृति- विशेषांक), सं० २०१०, पृष्ठ- ३११

२- ,, ,, ,,

हिन्दी चलचित्र गीतों में दो प्रकार की संगीत पद्धतियों का प्रयोग देखने को मिलता है --

१- शास्त्रीय संगीत पद्धति ।

२- पश्चिमी संगीत पद्धति ।

१- शास्त्रीय संगीत पद्धति:-

अनेक हिन्दी चलचित्र गीत हैं जो शास्त्रीय संगीत पद्धति पर आधृत होने के कारण अत्यन्त लोक प्रिय हैं ।

सिनेमा के प्रारम्भिक काल में जो गीत प्रचार में आए, वे-शास्त्रीय संगीत की धुनों से अत्यधिक प्रभावित थे । उस युग के संगीतकार शास्त्रीय संगीत के मर्मज्ञ थे, अत: वे गीतों की धुनें उसी आधार पर बनाते थे। साथ ही साथ दर्शकों को वही संगीत भाता था, जो उनके संगीतकार उन्हें सुनाते थे । उन संगीतकारों में भंडे खां, श्यामसुन्दर, खेमचन्द प्रकाश, पं० अमरनाथ और सज्जाद हुसैन आदि के नाम उल्लेखनीय है । इनकी धुनों को साकार करने में जिन गायकों ने योगदानदिया, उनके नाम हैं -- के०सी०डे०, सहगल, जूथिका राय, पंकज मलिक, खुर्शीद आदि ।

धीरे- धीरे फिल्म संसार में पाश्चात्य धुनों ने प्रवेश किया और फिल्मों में निहित शास्त्रीय संगीत हलका होते -होते`लाइट म्यूजिक` बन कर रह गया । अंग्रेजी वाद्यों के प्रयोग से वृंद- वादन पुष्ट होता गया और गीत के बोल फीके पड़ते गए ।

पाश्चात्य संगीत के`रम पम् पम्` के बीच भी कुछ संगीतकार अपनी धुनों में शास्त्रीय संगीत भरते रहे । इनमें अनिल विश्वास, नौशाद, आर०सी० बोराल, हुस्नलाल- भगतराम, बसन्त देसाई, रोशन, एस०एन० त्रिपाठी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं । नौशाद, बसंत देसाई, एस०एन०

त्रिपाठी ने तो शास्त्रीय धुनों पर आधारित अनेक फिल्मी गीत प्रस्तुत किये जो अत्यन्त कर्णप्रिय स्वम् हृदय स्पर्शी थे ।

नौशाद, रोशन, सी०रामचन्द्र, एस०डी वर्मन, शंकर जयकिशन, मदन मोहन के नाम हिन्दी चलचित्र जगत शास्त्रीय धुनों के प्रयोक्ता होने के कारण अविस्मरणीय रहेंगे ।

विशुद्ध शास्त्रीय रागों पर आधृत कुछ नए- पुराने फिल्मी गीतों के उदाहरण दृष्टव्य है --

क- भैरवी:-

१- तू गंगा की मौज में यमुना की धारा
हो रहेगा मिलन हमारा तुम्हारा ।[१]

२- सुन ले बापू , ये पैगाम
मेरी चिट्ठी तेरे नाम।[२]

३- जोत से जोत जलाते चलो
प्रेम की गंगा बहाते चलो ।[३]

४- मोरी छम-छम बाजे पायलिया
मोहे आज मिले हैं सावरियाँ ।[४]

५- लागा चुनरी में दाग घर जाऊँ कैसे ।[५]

१- फिल्म- बैजू बावरा

२- फिल्म- बालक

३- फिल्म-सन्त ज्ञानेश्वर

४- फिल्म-घूंघट

५- फिल्म- दिलने फिर याद किया ।

६- मेरा नाम राजू घराना अनाम
बहती है गंगा जहाँ वहाँ मेरा धाम ।[१]

७- राजा की आयेगी बरात रंगीली होगी रात
मगन में नाचूँगी ।[२]

८- मेरा जूताहै जापानी पतलून इंगलिस्तानी
सर पे लाल टोपी रुसी फिर भी दिल है हिन्दुस्तानी।[३]

९- जीना यहाँ मरना यहाँ
इसके सिवा जाना कहाँ ।[४]

१०- मेरे देश की धरती सोना उगले उगले हीरे मोती ।[५]

ख- पीलू :-

१- हे गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इबौ ,
पिया से करइदो मिलनवा हमार ।[६]

२- लगता नहीं है दिल मेरा उजड़े दयार में ।[७]
३- जिन्दगी भर नहीं भूलेगी वो बरसात की रात ।[८]
४- मोहे पनघट पे छेड गयो नन्दलाल ।[९]
५- पीके घर आज प्यारी दुल्हनिया चली।[१०]

१- फिल्म- जिसदेश में गंगा बहती है
२- फिल्म- आह
३- फिल्म- श्री चार सौ बीस
४- फिल्म- मेरा नाम जोकर
५- फिल्म- उपकार
६- फिल्म- गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इबौ
७- फिल्म- लाल किला
८- फिल्म- बरसात की रात
९- फिल्म- मुगले आजम
१०- फिल्म- मदर इण्डिया

६- तेरे बिन सूने नयन हमारे ।[१]

७- मेरे संइया जी उतरेंगे पार नदिया धीरे बहो ।[२]

८- मत मारो श्याम पिचकारी मोरी भीगी चुनरियाँ सारी ।[३]

९- मैंने रंग ली आज चुनरियाँ तेरे रंग में श्याम।[४]

१०- ढूंढो ढूंढो रे साजना मोरे कान का बाला ।[५]

ग- दरबारी कान्हड़ा:-

१- झनक-झनक तोरी बाजे पायलिया
प्रीत के गीत सुनाये पायलिया ।[६]

२- तोरा मन दरपन कहलाये
भले बुरे कर्मों को देखे और दिखाये ।[७]

३- मुझे तुमसे कुछ भी न चाहिए
मुझे मेरे हाल पे छोड़ दो ।[८]

४- सरफरोशी की तमन्ना अब मेरे दिल में है ।[९]

५- तुम से ही घर घर कहलाया ।[१०]

६- ओ दुनियाँ के रखवाले, सुन दरद भरे मेरे नाले ।[११]

७- हम तुमसे मुहब्बत करके सनम रोते भी रहे
हँसते भी रहे ।[१२]

८- अब विनती सुनो मेरे भगवान ।[१३]

१- फिल्म- मेरी सूरत तेरी आंखें
२- फिल्म- उड़न खटोला
३- फिल्म- दुर्गेश नंदिनी
४- फिल्म- दुल्हन एक रात की
५- फिल्म- गंगा-जमना
६- फिल्म- मेरे हुजूर
७- फिल्म- काजल
८- फिल्म- कन्हैया
९- फिल्म- शहीद
१०- फिल्म- भाभी की चूड़िया
११- फिल्म- बैजू बावरा
१२- फिल्म- आवारा
१३- फिल्म- ताज

घ- केदार:-

१- दरशन दो घनश्याम श्याम आज अँखिया है प्यासी ।[१]
२- बेकस पे करम कीजिए सरकार मदीना ।[२]
३- मैं पागल मेरा मनुआ पागल ।[३]
४- कान्हा जा, जा रे ------- ।[४]

ङ - शिवरंजनी:-

१- पिया- मिलन की आस रे ---- ।[५]
२- जाने कहाँ गए वो दिन -----।[६]
३- मेरे नैना सावन- भादों ।[७]

च- सोहनी:-

१- कुहू - कुहू बोले कोयलिया ।[८]
२- झूमती चली हवा --- ।[९]
३- पायल छम-छम बाजे ---।[१०]

छ- बागेश्री:-

१- राधा ना बोले, न बोले रे ।[११]

१-फिल्म- नरसी भगत
२-फिल्म- मुगले आजम
३-फिल्म- आशियाना
४-फिल्म- बूट पालिश
५-फिल्म- पिया मिलन की आस
६- फिल्म- मेरा नाम जोकर
७- फिल्म- महबूबा
८- फिल्म- स्वर्ण सुन्दरी
९- फिल्म- संगीत सम्राट तानसेन
१०-फिल्म- बसन्त
११-फिल्म- आजाद

२- जाग दर्द - इश्क जाग ।[१]

३- डगर चलत छलके - - - -।[२]

ज- मालकोस:-

१- निर्बल से लड़ाई बलवान की
ये कहानी है दिए की और तूफान की ।[३]

२- मन तड़पत हरि दर्शन को आज ।[४]

३- सावन की रात कारी - कारी ।[५]

झ- बसंत बहार:-

१- मन की बीन मतवारी ।[६]

२- छम -छम नाचत आई बहार ।[७]

३- केतकी गुलाब जुही चंपक बन फूले ।[८]

ढ़- भीमपलासी:-

१- ऐ री मैं तो प्रेम दीवानी
मेरा दरद न जाने कोय ।[९]

२- नंदलाल गोपाल, दया करके ।[१०]

३- नैनों में बदरा छाये ।[११]

१- फिल्म- अनारकली २- फिल्म- एक राज
३- फिल्म- तूफान औरदिया ४-फिल्म- बैजूबावरा
५- फिल्म- मेहरबान ६-फिल्म- शबाब
७- फिल्म- छाया ८-फिल्म- बसंत बहार
९- फिल्म- नव बहार १०-फिल्म- साधु और शैतान
११-फिल्म- मेरा साया ।

त- कलावती:-

१- कोई सागर दिल को बहलाता नहीं।[१]

थ- पहाड़ी:-

१- चौदहवीं का चाँद हो या आफताब हो
जो भी हो तुम खुदा की कसम ला जवाब हो ।[२]

२- दीवाना तुम सा नहीं इस महफिल में ।[३]

३- इन हवाओं में आजा तुझको प्यार पुकारे ।[४]

द- हमीर:-

१- मोहे भूल गए सावरियाँ ।[६]

न- गौड मल्हार:-

१- गरजत बरसत सावन आयो रे ।[७]

ढ़- मालगुंजी:-

१- नैन सों नैन नाहीं मिलावत ।[८]

प- दरबारी पट-दीप:-

१- राधिके तूने बंसुरी चुराई ।[९]

१- फिल्म- आदमी
२- फिल्म- चौदहवीं का चाँद
३- फिल्म- तीसरी मंजिल
४- फिल्म- गुमराह
५- फिल्म- कोहनूर
६- फिल्म- बैजू बावरा
७- फिल्म- चित्रलेखा
८- फिल्म- झनक-झन पायल बाजे
९- फिल्म- बेटी - बेटे

इन रागों के अतिरिक्त अनेक चलचित्रगीत ऐसे हैं जिनमें केवल रागों का प्रभाव दीख पड़ता है। इस सन्दर्भ में कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं--

१- ठाडे रहियो ओ बाके यार (राग-माड)[१]

२- तू जहाँ- जहाँ चलेगा मेरा साया साथ होगा (राग- नंद)[२]

३- चंदन का पलना, रेशम की डोरी (रागमिश्र तिलंग)[३]

४- अगर दिलबर की रुसवाई न होती (राग- कलावती)[४]

५- जिया ले गयो री, मोरा सांवरिया (राग- कलावती)[५]

६- ज्योति कलश छलके - - - - - (राग- भूपाली)[६]

७- आ, घायल हिरनियाँ मैं बन- बन डोलू (राग - शहाना)[७]

८- रसिक बलमा , हाए दिल क्यों लगाया तोसे(राग-भूपकल्याण)[८]

९- ता थई- थई तत आ थई- थई तत, मुरली की धुन सुन आई राधे (राग-हंसध्वनि, भूपाली तथा बिलावल का मिश्रण)[९]

१०- कैसे आऊँ जमुना के तीर
पांव पड़ी जंजीर श्यामा,
पांव पड़ी जन्जीर हाय कैसे आऊँ(राग- भैरवी)

१- फिल्म- पाकीजा
२- फिल्म- मेरा साया
३- फिल्म- शबाब
४- फिल्म- खिलोना (खिलौना)
५- फिल्म- अनपढ़
६- फिल्म- भाभी की चूड़ियाँ
७- फिल्म- मुनीम जी
८- फिल्म- चोरी चोरी
९- फिल्म- परिवार
१०- फिल्म- देवता

११- कुहू - कुहू बोले कोयलिया - - - - (राग - सोहनी ,बहार, जौनपुर तथा यमन का मिश्रण)[१]

१२- गरजत बरसत सावन आयो रे (राग- छायानट)[२]

१३- ओ निर्दयी प्रीतम - (राग- भीमपलासी)[३]

१४- अजहूँ न आए बालमा - (राग- सिंधु भैरवी)[४]

१५- कभी तो मिलोगे जीवन- साथी।
बिछुड़ी रहे ना दीपक से बाती ।[५] (राग - कलावती)

१६- सखीरी,पी को नाम, नाम न पूछो ।[६]
मैं कैसे बताऊँ ये कहते लजाऊँ (बिहाग,बिहागड़ा का मिश्रण-राग)

१७- सकल बन गगन पवन चलत पुरवाई रे,गई।[७]
(बहार, जोगिया व पीलू रागों का मिश्रण

१८- अँखियाँ तरसन लागीं, मैं तो पी के दरस के प्यासी ।[८]
(गौड़मल्हार, मेघमल्हार से मिश्रितराग)

रागों के अतिरिक्त हिन्दी चलचित्र गीतों में तालों का सुन्दर प्रयोग भी देखने को मिलता है । यथा--

१- तीन ताल-

१- मधु बन में राधिका नाचे रे ।[९]
२- कुहु - कुहू बोले कोयलिया ।[१०]

१- फिल्म- सुवर्ण सुन्दरी
२- फिल्म- चित्रलेखा
३- फिल्म- स्त्री
४- फिल्म- साँझ और सवेरा
५- फिल्म- सती सावित्री
६- फिल्म- सती सावित्री
७- फिल्म- ममता
८- बूँद जो बन गई मोती
९- फिल्म- कोहेनूर
१०- फिल्म-सुवर्ण सुन्दरी

३- झनक- झनक पायल बाजे ।[१]

४- बोले रे पपीहरा ।[२]

२- अद्धा ताल :-

१- पूछो न , कैसे मैंने रैन बिताई ।[३]

२- अबहुँ न आए बालमा, सावन बीता जाय ।[४]

३- रुपक ताल:-

१- मुझे तुमसे कुछ भी ना चाहिए ।[५]

२- तुम गगन के चन्द्रमा हो मैं धरा की धूल हूँ ।[६]

३- आपकी नजरो ने समझा प्यार के काबिल मुझे[७]।

४- ओ बसंती पवन पागल ।[८]

४- झपताल :-

१- आंसू भरी हैं ये जीवन की राहें ।[९]

२- आवाज देके हमें न बुलावो ।[१०]

१- फिल्म- झनक झनक पायल बाजे

२- फिल्म- गुड्डी

३- फिल्म- मेरी सूरत तेरी आँखे

४- फिल्म- साँझ और सवेरा

५- फिल्म- कन्हैया

६- फिल्म- सती सावित्री

७- फिल्म- डा॰ विद्या

८- फिल्म- अनपढ़

९- फिल्म- परवरिश

१०- फिल्म- प्रोफेसर

५- एक-ताल :-

१- केतकी- गुलाब- जुही- चंपक बन फूले ।[१]
२- पवन दीवानी न माने ।[२]

६- दीपचंदी:-

१- पीके घर आज प्यारी दुल्हनियाँ चली।[३]
२- कल चमन था, आज इक सेहरा हुआ ।[४]
३- कहदो, कोई न करे यहाँ प्यार ।[५]

७- चारताल:-

सप्त सुरु तीन ग्राम ----- ।[६]

शास्त्रीय संगीत में गीत के कई प्रकार है --

ख्याल, ठुमरी, ध्रुवपद इत्यादि । फिल्मी संगीतकार इस क्षेत्र में भी संकुचित नहीं रहे । अधिकांश हिन्दी फिल्मीगीत ख्याल- शैली के ही हैं, किन्तु अन्य शैलियों के गीतों का बिल्कुल अभाव भी नहीं है - उदाहरणार्थ-- 'फुलगेंदवा न मारो', 'लागा चुनरी में दाग', 'हमें -; काहे को झूठी बनाओ बतिया' (ठुमरी और दादरा) ध्रुवपदों के प्रयोग में विशेष रूप से सप्त सुर तीन ग्राम अत्यन्त लोकप्रिय हैं ।

१- फिल्म- बसन्त बहार
२- फिल्म- डा० विद्या
३- फिल्म- मदर इण्डिया
४- फिल्म- खानदान
५- फिल्म- गूँज उठी शहनाई
६- फिल्म- संगीत सम्राट तानसेन

इस प्रकार कहा जा सकता है कि शास्त्रीय संगीत पद्धति पर आधारित गीत अत्यन्त सुन्दर स्वम् कर्ण प्रिय है और इन गीतों ने हिन्दी चलचित्र गीतों के काव्य सौन्दर्य में अपार अभिवृद्धि की है ।

:-:

२- पश्चिमी संगीत पद्धति:-

कुछ हिन्दी फिल्मी गीत ऐसे हैं जिसकी धुनों को पश्चिमी संगीत में बांधा गया है । `राक - स्न- रोल`, चाचा- चा, `रम्बा सम्बा` जाँज, डिस्को ,बीटल , आदि ऐसी ही विदेशी संगीत पद्धतियाँ है जिनका प्रभाव आज के हिन्दी फिल्मी गीतों में देखा जा सकता है, भारतीय संगीत में इनका प्रवेश होने से संगीत की आत्मा तो मर गई और संगीत शोर-शरावा में परिणत होगया । विदेशी धुन से प्रभावित हिन्दी फिल्मीगीत हृदय को छूने में असमर्थ है । इस प्रकार वे गीत नृत्यों में विशेष रूप से प्रयुक्त किये जाते हैं । इन गीतों में संगीत की लय पर शरीर के अंगों का उत्तेजनात्मक संचालन मात्र रहता है । भारतीय संगीत में जो गम्भीरता है और उसके नृत्यों में हृदय को भीतरी और सूक्ष्मातिरुच्य भावना का जो अभिनय सहित प्रकाशन होता है , वह विदेशी संगीत में दृष्टिगोचर नहीं होता ।[१]

"It is remelody of Indian Music alone that can express internal emotions faithfully and it is harmony of the best that can express the external emotion. Melody primarily succeeds emotion while harmony preceeds it. Harmony lets emotion in and melody lets it out."

—Historical Development of Indian Music

—Swami Prayaga Nand. Page, 393-394.

हिन्दीफिल्मों मे जो पश्चिमी धुनों पर गीत लिखे गये है, उनकी शब्दावली दोषपूर्ण है अर्थात् अनरगत शब्दों को फिट किया गया है जिससे वे गीत ना होकर हो-हल्ला, से उक्त हास्यास्पद कविता बन गयी है। पश्चिमी धुनों से प्रवाहित हिन्दी फिल्मों के कुछ गीत देखिये --

१- आर० एम० ए० डिस्को डान्सर ------ ।[१]

२- हमको मेरी नहीं मांगता हमको लिली नहीं मांगता
हमको साईनङ्राप फ्राम बादरा मांगता ।[२]

३- गर्ल्स गर्ल्स गर्ल्स
आप एम जस्ट क्रेजी अबाउट गर्ल्स
आय लव द मेन दे लव मी टू यू नो
आय लव कोरिया गर्ल, आय लव द गर्ल्स ब्लेक आइंज
ब्राउन आइंज एण्ड ब्ल्यू आइंज, ड यू लव मी ।[३]

४- हे बम्बो बम्बू बोल ।
बूढे बच्चे झूठे सच्चे बम्बू बोलो
कही की ईंट कहीं का रोड़ा
भानमती ने कुनबा जोड़ा
इंधर से थोड़ा, उधर से थोड़ा
ताल को तोड़ा सुर को मरोड़ा
मार के चाबुक हंकाया घोड़ा
सर-पट सरपट सरपट सरपट
रम्पमू पो, रम्पमू पो , हे बम्बो, बम्बू बोलो

१- फिल्म- डिस्को डान्सर - गी०- अन्जान
२- फिल्म- जीते हैं शान से - गी०- अन्जान
३- फिल्म- अभिमन्यु - गी०- अन्जान

ईना, मीना, डीका
कहाँ से प्यारे सीखा
खिलाए जाओ सबको माल `विजिटेबल घी` का

-- -- -- --

भूल जाओ भैरवी, भूल जाओ माल कोंस
भूल जाओ जोगिया, भूल जाओ चन्द्रकोंस
भूल जाओ तीन ताल , ध्रुपदताल झपताल, सबताल ।[१]

५- चा चा चा एक दो तीन चा, चा, चा, ।[२]

६- मेरा नाम चिन चिन चू बाबा चिन चिन चू `
रात चाँदनी मैं और तू हलो मिस्टर हाऊ डू यू डू ।[३]

७- सी० ए०टी० कैट, कैट माने बिल्ली
आर० ए०टी० रैट, रैट माने चूहा
अरे दिल है तेरे पंजे में तो क्या हुआ
सी०ए०टी०कैट -----
एम० ए०डी० मैड मैड माने पागल
बी०ओ०वाई बॉय, बॉय माने लड़का
अरे मतलब इसका तुम कहो तो क्या हुआ ।[४]

८- तेरा गोरा गोरा गाल, हमको एकदम पसन्द है ।
तेरा होंठ लाल लाल, हमको एक-दम पसन्द है
यह लिपिस्टिक की लालियाँ तोबाह है तोबाह है
यह आँखे चाय की प्यालियाँ तोबाह है तोबाह है

१-फिल्म- मौजी गीतकार- पं० भरतव्यास
२-फिल्म- चा चा चा गीतकार- राजेन्द्रकृष्ण
३-फिल्म- हावड़ा ब्रिज गीतकार- मजरुह
४-फिल्म- दिल्ली का ठग गीतकार- राजेन्द्र कृष्ण

यह लण्डन का माल, हमको एकदम पसन्द है
तेरा गोरा मुखडा हमको एकदम पसन्द है ।[१]

९- ईना मीना डीका डीका डे डाई डाम मीका
माका नाका माका नाका चीका पीका रोला टीका
रम पम पो , रम पम पो
इस दुनिया मे दिल न लगाना
दिल देके पड़ेगा पछताना
ये रुप के पुजारी ये दिल लेने वाले
पहले पहले होते है बड़े भोले भाले
कलेजे को थाम पुकारेंगें नाम ।[२]

१०- लाल लाल गाल, जान के हैलागू
देख देख देख दिल पे रहे काबू, चोर चोर भागे रे
- परदेशी बाबू
चोर चोर चोर यह नहीं है माल व जर के
मोर मोर मोर यह है दिल व जिगर के
पीले पीले पीले इनके बाल है निराले
नीले नीले नीले इनकी अँखियों के प्याले ।[३]

११- दम मारो दम मिट जाये गम
बोलो सुबह शाम हरे कृष्ण हरे राम ।[४]

१- फिल्म- गीतकार- डी०एन० मधोप
२- फिल्म- आशा गीतकार- राजेन्द्रकृष्ण
३- फिल्म- मि०एक्स गीतकार- जानसार अख्तर
४- फिल्म- हरे राम हरे कृष्ण गीतकार- आनन्द बख्शी

१२- द डी ,द आई द एस, द सी, द ओ
डिस्को- डिस्को- डिस्को
आई० एम०ए, डिस्को डान्सर -३
जिन्दगी मेरा गाना में किसी का दीवाना
तो झूमो, तो नाचो , ओ मेरे साथ गाओ ।[१]

१३- हरि ॐ हरि
ऐ अँखियां है लड़ी
दिल से छुटी फुलझडी
हो हो हो हो हरिॐ हरि ।[२]

हिन्दी फिल्मी गीतों में पश्चिमी धुनों का प्रयोग आज के सन्दर्भ में नई पीढी के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण बना हुआ है आज की युवा पीढ़ी भारतीय संगीत से बिचकती है और अपना मोह डिस्को, पाप, जाॅर्ज चाचा चा की तरफ अधिक दर्शाती है , कुछ भी हो भारतीय संगीत संगीत है और भारतीय एवम् पाश्चात्य धुनो से निर्मित आज का हिन्दी फिल्मी संगीत बेकार है क्योंकि यह जन-जीवन में हुई नव चेतना का संचार नहीं करता। इसमें अश्लीलता है फूहढता है यह आत्मा के दर्द को स्पर्श नहीं कर पाता क्योंकि इसका स्वरूप बुद्धि है ना कि हृदय ।

रवीन्द्र नाथ टैगोर के शब्दों में:-

' वह काव्य अमर है जिसका उत्स हृदय है। हृदय से निकलने वाला काव्य कला मयी है और ऐसे काव्य पर काल का दाग नहीं लगता । इस सन्दर्भ में जब हम शास्त्रीय संगीत अथवा लोकगीत की धुन पर आधृत हिन्दी फिल्मी गीत सुनते हैं तो झूमने लगते हैं और ये गीत आत्मा के तार को झंकृत कर देते हैं ।'

१-फिल्म- अवतार गीतकार- आनन्द बक्शी
२-फिल्म- जानी दोस्त गीतकार- अन्जान

कोई भी कला बुरी नहीं होती। परन्तु कलाकार द्वारा उसके सदुपयोग से ही वह अच्छी बुरी बन जाती है । फिल्मों में जिस संगीत का प्रयोग श्रोता स्वम् द्रष्टा के हृदय को विकारग्रस्त करने और उसकी आँखों को अन्धा बनाने के लिए किया जाता है वह संगीत त्याज्य है । क्योंकि कला का अन्तिम उद्देश्य लोक का हित करना है, अहित करना नहीं। फिल्मी संगीत में हमारे फिल्म- क्षेत्र के संगीतकारों को गम्भीरतापूर्वक विचार करना है ।

निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि हिन्दी चल चित्र गीतों में प्रयुक्त विविध संगीत शैलियों ने काव्य के सौन्दर्य में अभिवृद्धि तो की ही , साथ ही साथ उसकी धुनों को सरल और सुगम शब्दों के माध्यम से कर्ण-प्रिय बनाया । इसी कर्णप्रियता ने जन-मानस को अपनी ओर आकृष्ट किया ।

:-:-:-:-:-:

परिशिष्ट- 'ख'

-: सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-

(सन्दर्भ ग्रन्थ सूची)

अ- हिन्दी:-

१- भारतीय चलचित्र : डा० महेन्द्र मित्तल, अलंकार प्रकाशन -दिल्ली

२- भारतीय चलचित्र का इतिहास: फिरोज रंगून वाला, राजपाल एण्ड संस,- दिल्ली।

३- भारतीय फिल्मों का इतिहास: करुणाशंकर, रंगभूमि बुकडिपो, दिल्ली

४- भारतीय फिल्मों की कहानी : बच्चन श्रीवास्तव, हिंद पाकेट बुक्स, दिल्ली

५- भारतीय चलचित्र का इतिहास : श्रीधरशास्त्री, साहित्य भंडार, प्रयाग

६- हिंदी गीति काव्य : डा० ओमप्रकाश अग्रवाल, विनोद पुस्तक मण्डार - आगरा।

७- गीति काव्य : डा० रामखेलावन पाण्डेय-आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली।

८- साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध। : गंगाप्रसाद पाण्डेय, इंडियन प्रेस, प्रयाग

९- भारतीय लोक साहित्य : डा० श्याम परमार, आत्माराम एण्ड संस दिल्ली।

१०- रीतिकाल और आधुनिक हिन्दी कविता - : डा० रमेशकुमार शर्मा, विनोद पुस्तक मण्डार : आगरा।

११- शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धांत : डा० गोविन्द त्रिगुणायत, एस० चाँद कंपनी दिल्ली।

१२- पृथ्वीराज अभिनंदन ग्रंथ : संपादक देवदत्त शास्त्री, किसलय मंच, इलाहाबाद।

१३- लोक साहित्य : डा० विद्या चौहान, सरस्वती प्रकाशन, कानपुर

१४- रस रत्नाकर : डा० हरिशंकर शर्मा, साहित्य सदन, आगरा

१५- नव रस : बाबू गुलाबराय, साहित्य सदन, आगरा

१६- काव्य प्रदीप : रामबहोरी शुक्ल, इण्डियन प्रेस, प्रयाग

१७- हिन्दी चित्रपट का गीत - - साहित्य - : डा० ओ० पृ० माहेश्वरी, विनोद पुस्तक मण्डार - आगरा।

१८- हिन्दी फिल्मों में साहित्यिक उपादान : डा० विश्वनाथ मिश्र ,हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी ।

१९- नाटक,चित्रपट और समाज : पद्मारानी ,आर्यबुकडिपो ,दिल्ली

२०- हिन्दी चलचित्रों में रस : एक अध्ययन,प्रमिलात्रिपाठी(अप्रकाशित-शोध प्रबन्ध)।

२१- हिंदी चलचित्रों की सामाजिक उपादेयता । : पी०कानम्बा, मधुर प्रकाशन दिल्ली

२२- हिट हिन्दी फिल्मीगीत भाग-१
२३- ,, ,, ,,-२
२४- ,, ,, ,,-३
} डायमण्ड पाकेट बुक्स-दिल्ली

२५- हिन्दी फिल्मों में भक्ति-गीत
२६- फिल्मी कव्वालियाँ
२७- फिल्मी राष्ट्रीय गीत
२८- सांस्कृतिक फिल्मी गीत
} नूतन पाकेट बुक्स, मेरठ

२९- गाता जाये बंजारा :साहिर : मीनाक्षी प्रकाशन दिल्ली

३०- तेरे सुर मेरे गीत :भरतव्यास : डायमण्ड बुक्स -दिल्ली

३१- गीतकार भरतव्यास
३२- गीतकार- इन्दीवर
३३- गीतकार- मुकेश के गीत
३४ रफी के गीत
३५- किशोर के गीत
३६- नीरज की पाती
} डायमण्ड बुक्स, दिल्ली

३७- हिन्दी का सरल व्याकरण : डा० कृष्णजी,उद्योग प्रकाशन-मेरी

३८- काव्य के मूल स्रोत और उनका विकास । : शकुन्तला दुबे, साहित्य सदन-आगरा

३९- भारतीय संगीत : बालकृष्ण गर्ग, हाथरस

४०- भाषा-भूगोल : डा०कैलाशचन्द्र भाटिया,आर्य बुकडिपो, दिल्ली ।

ब- संस्कृत :-

१- काव्य प्रकाश : मम्मट
२- रसार्णव सुधाकर : श्री शिंगपाल
३- नाट्य शास्त्र : भरतमुनि
४- साहित्य दर्पण : विश्वनाथ
५- भाव प्रकाशन : शारदातनय
६- चंद्रालोक : :जयदेव

स- अंग्रेजी :-

१. 'Indian Cinema' by A. N. Jha
— Govt. Of India, Faridabad.
२. 'Indian Cinema Today' by Kobita Sarkar.
— Sterling Publisher Pvt. Ltd. New Delhi.
३. 'Literature And Film' by Robert Richardson.
— Indian University Press, London.
४. 'Panorama Of Indian Cinema' by B. D. Garg.
— Vikas Publication, Delhi.
५. 'Screen Year-Book And Who Is Who'
— An Express Newspaper Agency Publication. (1956) New Delhi

२- कोश :-

१- हिन्दी साहित्य कोश भाग-२ : डा० धीरेन्द्र वर्मा, ज्ञानमण्डल -काशी
२- मुकेश गीत कोश : अनन्त प्रकाशन, इन्दौर
३- हिन्दी शब्द कोश : डा० हरदेव बाहरी, लोकभारती (इलाहाबाद)
४- प्रकाशन - इलाहाबाद।
४- हिन्दी फिल्मी गीत कोश,- भाग-१,२ : सम्पादक - हरमिन्दर सिंह 'राज' गोविन्द नगर, कानपुर।
५- हिन्दी शब्द सागर : सम्पादक करुणापति त्रिपाठी, नागरी : प्रचारिणी सभा - काशी।

३- पत्र एवम् पत्रिकाएँ :-

१- माधुरी, बम्बई
२- धर्मयुग, नई दिल्ली
३- साप्ताहिक हिन्दुस्तान, नई दिल्ली
४- रविवार, कलकत्ता
५- दिनमान, नई दिल्ली
६- फिल्मफेयर (अंग्रेजी) नई दिल्ली।
७- पिक्चर पोस्ट (मद्रास)

८- भारतीय संगीत(मा०पत्रिका) -

(हिन्दी कव्वाली अंक, फिल्मी प्रेम गीत अंक, फिल्मी गजल अंक, फिल्मी शास्त्रीय, गीत - अंक) - हाथरस से प्रकाशित।

:-:-:-:-:-: